



अथ विषयानुक्रमणिका.

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|-------------------------------------|--------|--------------------------------|--------|----------------------|--------|
| पुण्याहवाचनमंत्राः | ... | गर्भाधानोक्तमंत्राः... | २४ | अर्कविवाहमंत्राः... | ३७ |
| स्थालीपाकमंत्राः... | ... | पुंसवनादिमंत्राः | २६ | अग्निह्वयमंगमंत्राः | ३७ |
| ग्रहयज्ञमंत्राः पूर्णाहुतिमंत्राश्च | ... | जातकर्ममंत्राः | २६ | सायंभातहोममंत्राः | ३८ |
| उत्सर्जनमंत्राः ऋषिपूजनमंत्राश्च | ... | नामकरणादिचीलांतमंत्राः... | २६ | आपत्कालहोममंत्राः | ३८ |
| पर्जन्यसूक्तानि | ... | उपनयनादिप्रायश्चित्तहोममंत्राः | २७ | अग्निममारोपमंत्राः | ३८ |
| अकारहकारादिमंत्राः | ... | समावर्तनमंत्राः | ३१ | पुनःसंधानमंत्राः... | ३९ |
| उपाकरणमंत्राः | ... | आपृष्यसूक्तंशसमिद्धिःसूक्तं च | ३१ | श्रवणाकर्ममंत्राः... | ३९ |
| भुवनेश्वरीअग्न्युत्तारणउदकपूरण | ... | विवाहमंत्राः | ३२ | संपचलिमंत्राः | ३९ |
| श्रीसूक्तमंत्राः | ... | मधुपर्कमंत्राः | ३३ | आ त्रुजिकर्ममंत्राः | ३९ |
| रुद्रसूक्तनिर्मंत्राश्च | ... | कन्यादानमंत्राः | ३३ | आत्रयणमंत्राः | ३९ |

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|------------------------|--------|----------------------------------|--------|
| प्रत्यवरोहणमंत्राः | ३९ | पवमानसूक्तं अ० २ | ५८ |
| सभार्यस्यप्र० अ० स० | ४० | पवमानसूक्तं अ० ३ | ६५ |
| अशुपघातादिप्र० | ४० | पवमानसूक्तं अ० ४ | ७१ |
| मंडलदेवतामंत्राः... | ४१ | वैश्वदेवसूक्तं | ७५ |
| अथशान्तिपाठः | ४२ | इंद्रस्तवसूक्तं | ७६ |
| अथ भ्रातःसंध्यामंत्राः | ४८ | ज्ञानमोक्षसूक्तं | ७६ |
| माध्यान्हसंध्यामंत्रः | ४९ | आत्मस्तवसूक्तं | ७९ |
| सार्यसंध्यामंत्राः | ४९ | विष्णुसूक्तं | ७९ |
| स्वाध्यायमंत्राः | ५० | हरिसूक्तं | ८१ |
| गणपतिसूक्तं | ५३ | द्वितीयंहरिसूक्तं | ८१ |
| पुरुषसूक्तं | ५४ | हिरण्यगर्भसूक्तं | ८३ |
| पवमानसूक्तंअध्याय १ | ५४ | सौरसूक्तं | ८३ |
| | | ब्रह्मणस्पतिसूक्तं | ९८ |
| | | देवीसूक्तं | ९० |
| | | त्रिंशद्देवाः | ९० |
| | | मन्युसूक्तं | ९२ |
| | | सरस्वतीसूक्तं | ९३ |
| | | वि०सर०सू० | ९३ |
| | | तृ०सर०सू० | ९४ |
| | | बृहस्पतिसूक्तं | ९४ |
| | | गोसूक्तं | ९७ |
| | | प्रसवप्रतिबंधनिर्मुक्तिसूक्तं... | ९७ |
| | | दुःस्वप्ननाशनमंत्राः | ९७ |
| | | रिपुरोगघ्नसूक्तं | ९८ |

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|-------------------------|--------|--------------------------------|--------|-----------------------|--------|
| विषय. | १८ | विषय. | १०६ | विषय. | ११२ |
| शंतातीयसूक्तानि | ... | वामदेव्य(वार्हस्पत्यसूक्तं)... | १०७ | विश्वदेवसूक्तं ... | ... |
| शंतातीयद्वितीयतृ०सूक्तं | ११० | ध्रुवस्तुतिसूक्तं ... | १०७ | " द्वितीयसूक्तं | ११२ |
| वाह्यश्वसूक्तं ... | १०१ | अलक्ष्मीघ्नसूक्तं ... | १०७ | " तृतीयसूक्तं... | ११२ |
| कपोतसूक्तं ... | १०१ | सपत्नघ्नसूक्तं ... | १०७ | " चतुर्थसूक्तं ... | ११३ |
| वरुणसूक्तं ... | १०२ | बृहस्पतिसूक्तं ... | १०७ | " पंचमसूक्तं ... | ११४ |
| द्वितीयवरुणसूक्तं... | १०३ | गोसूक्तं२ ... | १०८ | द्रविणोदसूक्तं ... | ११४ |
| तृ०वरुणसूक्तं ... | १०३ | अव्तिगसूक्तं ... | १०८ | इन्द्रावरुणसूक्तं ... | ११४ |
| च०वरुणसूक्तं ... | १०४ | अर्थचर्यासूक्तं ... | १०८ | वायुसूक्तं ... | ११५ |
| दुःस्वप्नसूक्तं ... | १०५ | नष्टायिगमसूक्तं ... | १०८ | क्षेत्रपालसूक्तं ... | ११५ |
| भागसूक्तं ... | १०५ | पंथासूक्तं ... | १०९ | इन्द्रसूक्तं ... | ११५ |
| नदीस्तुतिसूक्तं ... | १०५ | मृत्युनाशनसूक्तं ... | १०९ | द्यावापृथिवीसूक्तं... | ११५ |
| वामदेव्यसूक्तं ... | १०५ | आशीर्वादमंत्राः ... | १०९ | अग्न्यादिसूक्तं ... | ११६ |

| विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. | विषय. | पृष्ठ. |
|--------------------------|--------|------------------------|--------|---------------------|--------|
| सोमारुद्रसूक्तं | ... | स्फुटमंत्रप्रकरणं | ... | १ त्वंसोमप्रचि०... | १४५ |
| संग्रामसूक्तं | ... | श्रीसूक्तशेषःपरिशिष्टं | ... | २ स्वादिष्ठयाम० | १४६ |
| मित्रावरुणसूक्तं | ... | श्राद्धमंत्राः | ... | ३ स्वादोरक्षभिवयसः | १४६ |
| पृषसूक्तं | ... | अन्नस्नुतिसूक्तं | ... | ४ इंद्रासोमातपतन्० | १४७ |
| मरुतसूक्तं | ... | पिंडपितृयज्ञादिमंत्राः | ... | ५ सोमएकेभ्यः पवते० | १४८ |
| ग्रहणज्यसूक्तं | ... | अग्निश्रवणसूक्तानि | ... | श्रद्धासूक्तं | १४८ |
| औषधिसूक्तं | ... | आदौदेवसूक्तानि | ... | हविर्धानसूक्तं | १४९ |
| श्राद्धविघ्नहरसूक्तं | ... | राक्षोघ्नसूक्तेषु | ... | पितृसूक्तं | १४९ |
| यम (मनआवर्तन) सूक्तं | ... | १ कृणुष्वपाजः | ... | देवसूक्तं | १५० |
| विश्वकर्मसूक्तं | ... | २ अग्नेहेसिन्य०... | ... | अथ यत्याराधनमंत्राः | १५० |
| उषा (प्रातःस्मरण) सूक्तं | ... | ३ रक्षोहणंवा० | ... | उपनिषन्मंत्राः | १५२ |
| संज्ञानसूक्तं | ... | ४ ब्रह्मणाग्निःसंविदा० | ... | अंत्येष्टिमंत्राः | १५३ |

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथपुष्पाहवाचनमंत्राः ॥ ॐ ग
 णानांत्वागणपतिं हवामहे कुर्विकर्त्रीनामुपमश्रवस्त्वमं ॥ ज्येष्ठराजं ब्रह्मं गां ब्रह्मगस्पतऽआनःशुण्वन्न
 तिभिःसीदसादनं ॥ निषुसीदगणपते गणेपुत्त्वामाहुर्विप्रतमं कर्त्रीनां ॥ नऽऋतेत्वक्रियते किंचनारेमहा
 मर्कमघवन्त्रिचर्मर्च ॥ महीद्यौःपृथिवीचनऽइमंयज्ञंभिमिक्षतां ॥ पिपृतांनोमरीमभिः ॥ ओयधयुःसं
 वंदतेसोभेनसहाराज्ञां ॥ यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तरंजन्यारयामसि ॥ आकलशेषुधावतिपत्रेपरिपि-
 च्यते ॥ उक्थैर्यज्ञेषुवर्धते ॥ इमंमंगेयमुनेसरस्वत्युनुद्विस्तोभंसचतापरुष्या ॥ असिक्न्यामंरु
 हधेवितस्तयार्जकीयेशुणुह्यासुषोमेया ॥ गंधर्वांरंदुराधर्षीनित्यपुष्पांकरिपिणी ॥ ईश्वरीसर्वस-
 तानांतामिहोपह्वयेश्रियं ॥ याऽओपधीःपूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगंपुरा ॥ मनूनुबभूणामहंशतधामां
 नित्तसच ॥ कांडात्कांडात्प्ररोहंतीपरुषःपरि ॥ एवानोदूर्वेप्रतनुसहस्रेणशतेनच ॥ अश्वत्थेवो-
 निपदनंपणेवोवसतिष्कृता ॥ गोसाजऽइत्किलासथत्सुनवथपूरुषं ॥ स्योनापृथिविसवानृक्षरानि

८ शनी ॥ यच्छानः शर्मसप्रथः ॥ याः फलिनीर्याऽअं फलाऽअं पुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पतिप्रसूतास्ता
 नोमुंचत्वंहसः ॥ सहिरलानिदाशुषेसुवालिसविताभगः ॥ तं भागं चित्रमीमहे ॥ हिरण्यरूपः सहिरण्यसं
 दृगपांनपात्सेदुहिरण्यवर्णः ॥ हिरण्ययात्परियोनेनिषद्याहिरण्यदादंदत्यन्नमस्मै ॥ युवांसुवासाः प
 रिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवतिजायमानः ॥ तंधीरासः कवयुत्तन्नयंतिस्वाद्यो ३ मनसादेवयंतः ॥ पूर्णा
 दीविपरांपतसुपुर्णापुनरापत ॥ वस्त्रेवविक्रीणावहाऽइषमूर्जशतकतो ॥ तस्वायामिब्रह्मणावंदमानस्त
 दाशास्तेयजमानोहविभिः ॥ अहेळमानोवरुणेहबोध्युरुशंसमानऽआयुःप्रमोषीः ॥ १ ॥ मद्रं कर्णेभिः श्रु-
 णयामदेवाभद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमदेवहितं यदायुः ॥ द्रविणोदाद्र
 विणसस्तुरस्यद्रविणोदाः सनरस्यप्रथंसत् ॥ द्रविणोदावीरवतीमिषेनोद्रविणोदारोसतेदीर्घमायुः ॥ सवि
 तापश्चानात्सवितापुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् ॥ सवितानः सुवतुसर्वतात्सवितानोरारासतां
 दी ० ॥ नवौनवोभवतिजायमानोह्वकिंतुरुपसमित्यग्रं ॥ भागदेवेभ्योविदधात्यायन्नचंद्रमास्तिरतेदी ०

उच्चादिविदक्षिणावन्तोऽअस्थुर्धेऽअश्वदाःसहवेसूर्येण ॥ हिरण्यदाऽअमृतत्वंभजतेवासोदाःसोमप्रति
 रन्तऽआयुः ॥ २ ॥ पुनःपुनर्जायमानापुराणीसंमानवर्णमभिशुंभमाना ॥ श्वघ्नीवंकृत्वुर्विजऽआमिना
 नामर्तस्येदेवीज्जरयंत्यायुः॥उदीर्ध्वज्जीवोऽअसुर्नऽआगादपुप्रागात्तमऽआज्योतिरेति ॥औरुक्पथाया
 तेवेसूर्यायागेन्मयन्नप्रतिरन्तऽआयुः ॥ दक्षिणावतामिदिमानिचित्रादक्षिणावताद्विविसूर्यार्सः ॥ दक्षि
 णावन्तोऽअमृतंभजतेदक्षिणावन्तःप्रतिरन्तऽआयुः ॥ इभेभोजाऽअंगिरसोविरूपोदिवस्पुत्रासोऽअसु
 रस्यवीराः ॥ विश्वामित्रायददतोमथानिसहस्रसावेप्रतिरन्तऽआयुः ॥ यथाहृत्यद्वसवोगौर्यिचित्यदिपि
 ताममुचतायजन्नाः ॥ एवोब्धःस्मन्मुचताव्यंहःप्रतार्येप्रतन्तऽआयुः ॥यशस्करंवल्वंतंप्रमुत्वंतमेव
 राजाधिपतिर्वभूव ॥ संकीर्णनागाश्वपतिर्नाराणांसुमंगल्यंसततंदी० ॥ गोमायुरदादृजमायुरदात्सृश्रि
 रदाद्धरितो नोवसूनि ॥ गवामिंदुकाददतःशतानिसहस्रसविप्रतिरन्तऽआयुः ॥ ऋदुदरेणसख्यासचेय
 योमानरिष्येद्धयश्वपीतः॥अयंयःसोमोन्यथायस्मेतस्माऽइंद्रप्रतिरेभेम्यायुः ॥ अपत्याऽअस्थुरनिरा

अमीवा॒निर॑त्र॒स॒न्तमि॒षी॒ची॒रभै॒षुः॥आ॒सो॒मोऽअ॒स्मौऽअ॒रु॒ह॒द्वि॒हा॒याऽअ॒र्ग॒न्म॒य॒त्रप्र॒ति॒रं॒तुऽआ॒युः ॥ इ
 द्रा॒व॒रु॒णा॒सौम॒नु॒स॒म॒दृ॒सं॒रा॒य॒स्यो॒षं॒य॒ज॒म॒ने॒षु॒ध॒तं ॥ प्र॒जां॒पु॒ष्टिं॒भू॒ति॒म॒स्मा॒सु॒ध॒तं॒दी॒र्घा॒यु॒त्वा॒य॒प्र॒ति॒र
 तं॒नुऽआ॒युः ॥ वृ॒ष्टि॒द्वि॒व॒श॒त॒धा॒रः॒प॒व॒स्व॒स॒ह॒स्र॒सा॒वा॒ज॒यु॒दे॒व॒वी॒तौ ॥ सं॒सि॒धु॒भिः॒क॒ल॒शो॒वा॒व॒शा॒नः॒स
 मू॒खि॒या॒भिः॒प्र॒ति॒रं॒तुऽआ॒युः ॥ वि॒द्यु॒न्न॒या॒प॒तं॒ती॒द॒वि॒द्यो॒द्भ॒र॒ती॒मिऽअ॒प्या॒का॒म्या॒नि॥ज॒नि॒ष्टोऽअ॒पो॒न॒र्यः
 सु॒जा॒तः॒प्रो॒र्व॒शी॒ति॒र॒त॒दी॒र्घ॒मा॒युः ॥ ३ ॥ आ॒प॒ऽउ॒दं॒तु॒जी॒व॒से॒दी॒र्घा॒यु॒त्वा॒य॒व॒र्च॒से ॥ य॒स्त्वा॒हृ॒दा॒क्री॒रि॒
 णा॒म॒न्य॒मा॒नो॒म॒त्य॒म॒त्यो॒जो॒ह्वी॒मि ॥ जा॒त॒वे॒दो॒य॒शोऽअ॒स्मा॒सु॒धे॒हि॒प्र॒जा॒भि॒रग्रेऽअ॒मृ॒त॒त्व॒म॒श्यां ॥ य
 स्मै॒त्वं॒सु॒क॒ते॒जा॒त॒वे॒दऽउ॒ल्लो॒क॒म॒ग्रे॒कृ॒ण॒वंः॒स्यो॒नं ॥ अ॒श्वि॒नं॒स॒पु॒त्रि॒णं॒वी॒र॒वं॒तो॒मं॒त॒र॒धि॒नं॒श॒ते॒स्त्र॒स्ति ॥
 सं॒त्वा॒सि॒चा॒सि॒य॒जु॒पा॒प्र॒जा॒मा॒यु॒र्ध॒नं॒च ॥ ४ ॥ उ॒द्गा॒ते॒वं॒श॒कु॒ने॒सा॒म॒गा॒य॒सि॒ब्र॒ह्म॒पु॒त्रऽइ॒व॒स॒र्व॒ने॒षु॒शं॒सि
 ॥ वृ॒षे॒तो॒लै॒व॒वा॒जी॒शि॒शु॒म॒ती॒र॒पी॒त्या॒स॒र्व॒तौ॒नः॒श॒कु॒ने॒म॒द्र॒मा॒व॒द॒वि॒श्व॒तौ॒नः॒श॒कु॒ने॒पु॒ण्य॒मा॒व॒द ॥ या॒ज्य॒या
 य॒ज॒ति॒प्र॒त्ति॒र्वै॒या॒ज्या॒पु॒ण्यै॒व॒ल॒क्ष्मीः॒पु॒ण्य॒मे॒व॒ल॒क्ष्मी॑सं॒भाव॒य॒ति॒पु॒ण्यां॒ल॒क्ष्मीं॑सं॒स्करु॑ने ॥ य॒त्पु॒ण्यं

॥ मित्रं देवं मित्रधेयं नोऽअस्तु ॥ अनुराधान् हविषां वर्धयंतः ॥ शतं जीविमशरुः सर्षीराः ॥ त्रीणि त्रीणि वैदे-
वानामृद्धानि ॥ त्रीणि छंदांसि ॥ त्रीणि सवनानि ॥ त्रयऽइमे लोकाः ऋध्यामेव तद्दीर्यऽएषु लोकेषु प्रति-
तिष्ठति ॥ ७ ॥ श्रिये जातः श्रियऽआनिरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियं वसानाऽअमृ-
तत्वमायुन्मवन्ति सत्यासमिथामिन्द्रौ ॥ श्रिय एवै नंतच्छ्रियामादधाति संततमृचावषट्कृत्य संतत्यै सं-
धीयते प्रजयापशुमिर्यऽएवं वेद ॥ यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत्सर्वमेतत् ॥ अमुं च लोके मिदमूच सर्वं ॥ त-
न्नो नक्षत्रमग्निजिह्वित्य ॥ श्रियं दधात्वह्णायमानं ॥ अहे बुध्नियुं त्रमे गोपाय ॥ यमृषयश्च यि वि-
दा विदुः ॥ ऋचः सामानियजूंषि ॥ साहि श्रीरमृतांसां ॥ ८ ॥ शुक्रे भिरंगैरजंऽआत तन्वान्कतुं-
पुनानः क्विमिः पवित्रैः ॥ शोचिर्वसानः पर्यायुर्पांश्रियोमिमीने बह्वीरनूनाः ॥ तदप्येष श्लोको भिगीतो
मरुतः परिविद्यारोमरुतस्यावसन्गृहे ॥ आविक्षितस्य कामप्रैर्विश्वे देवाः समासदऽइति ॥ वास्तोष्पते
प्रतिजानीद्यस्मान्स्वविशोऽअं नमीवो भवानः ॥ यत्वेमहे प्रतिवन्नो जुषस्व शं नो भवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥

वास्तोष्पनेप्रतरणेनऽए धिगग्रस्फानोगोभिरश्वेभिरिदो ॥ अजरासस्तेसल्वेस्यामपितेवपुत्रान्प्रति
 नोजुषस्व ॥ वास्तोष्पनेशुमयासंसदातेसक्षीमहिरणत्रयागतुमथा ॥ प्राहिक्षेमऽउतयोगेवरनोयूयं
 पानस्वस्तिमिःसदानः ॥ अमीवृहवास्तोष्पलेविश्वारूपाण्यविशन् ॥ सर्वासुरेशेवऽएधिनः ॥ ९ ॥
 समुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यमध्यात्पुनानार्थंन्यनिविशमानाः ॥ इंद्रोयावृज्रीवृषमोरारादताऽआपैदिवीरिह
 मामवंतु ॥ याऽआपौदिव्याऽउतवासवनिखनित्रिमाऽउतवायास्वयंजाः ॥ समुद्रार्थायाःशूच्यःपा
 वकास्ताऽआपौ ॥ यासांराजावरुणोयातिमध्यैसत्यानृतेऽअवपथ्यन्जनानाम् ॥ मधुश्चुतःशूच्यो
 याःपावकास्ताऽआपौ ॥ यासुराजावरुणोयासुसोमोविश्वेदेवायासूर्जमदति ॥ वैश्वानरोयास्वग्निःप्र
 विष्टस्ताऽआपौ ॥ त्रार्थतामिहदेवास्त्रार्थतांमरुतांगणः ॥ त्रार्थतांविश्वाम्नूतानियथायमर्पाऽअ
 सन् ॥ आपऽइद्वाऽउमेषुजीरापौऽअमीवचातनीः ॥ आपःसर्वस्यमेषुजीस्तास्तेरूणवंतुमेषजं ॥
 हस्ताभ्यांदाशशाखाभ्यांजिह्वावाचःपुरोगवी ॥ अनामयित्तुभ्यांत्वाताभ्यांत्वोपस्पृशामसि ॥ इमाऽ

आपःशिवतमाऽइमाःसर्वस्यभेषुजीः ॥ इमारघ्नस्यवर्धनीरिमाराघ्नभृनोमृताः ॥ याभिरिंद्रमभ्यर्षि
 चत्प्रजापतिःसोमंराजानंवरुणंयमंमनुं ॥ ताभिरद्भिरमिषिंचामित्वामहंराज्ञांत्वमधिराजोभवेह ॥ म
 हांतत्वामहीनांसम्राजंचर्षणीनांदिवीजनियजन्द्वाजनियजन्द्वाजनित्रयजीजनत् ॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसेवे
 शिवंनोबाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्यामग्नेस्तेजसासूर्यस्यवर्चसेंद्रस्येन्द्रियेणामिषिंचामि ॥ बलायश्रियैयश
 सेनादाय ॥ ३० ॥ आमूरजप्रत्यावर्तयेमाःकेतुमहुंदुभिर्वावदीति ॥ समश्वपर्णाश्वरंतिनोनरोस्मा
 कंमिंद्ररथिनोजयंतु ॥ तदस्तुमित्रावरुणातदग्नेशेयोरस्मभ्यमिदमस्तुशस्तं ॥ अशीमहिगाथमुंतप्र
 तिष्ठानभौदिवेबृहतेसादनाय ॥ गृहवैप्रतिष्ठासूक्तंतप्रतिष्ठिततमयावाचाशंस्तव्यंतस्माद्यद्यपिदूर
 ऽइवंपशून्लभतेगृहनैवैनानाजिगमिषिनिगृहाहियशूनांप्रतिष्ठाप्रतिष्ठा ॥ गौरीभिमायसल्लितानितक्ष
 त्येकंपदीद्विपदीसाचतुष्पदी ॥ अद्यापदीनवपदीबभ्रुषीसहस्राक्षरापरमेव्योमन् ॥ १२ ॥ उपा
 स्मैगायतानरःपर्वमानार्येदेवे ॥ अग्निदेवाऽइयक्षते ॥ अमितेमधुनापयोर्धर्वाणोऽअशिश्रयुः ॥ देवं

देवाय देव्यु ॥ सनः पवस्व रंगवेशं जनाय शमर्षिने ॥ शंरां ज्ञोपश्रीभ्यः वृश्रेनुस्त्रनं मेरुगाय दिविस्प
 शै ॥ सोमाय गाथमर्चत ॥ हस्तं च्युने सिरदिंसिः मुनंसो भंपुनीनन ॥ मध्वावाथो वनामथु ॥ १३ ॥ प्र
 जापत्तेन त्वेवान्ध्रन्यो विशांजातानि पतितां सूव ॥ अत्कां मास्ते जुहूमस्वन्नोऽअस्नुव्यस्यां सपत्तयो
 रथीणां ॥ इळां मये पुरुदंसं मनिगोः शश्वत्तमं हर्षमाना यमाथ ॥ स्यान्नः मनुस्त्रनं यो विजावाये साते सु
 मतिर्भूत्वस्मे ॥ १४ ॥ कर्निकदज्जानुपंप्रब्रुवाणऽइयं निचात्रमस्त्रिनेवनाथं ॥ मुमंगलं शशकुने मवांसि
 मात्वा काचिदसि भाविश्व्या विदत् ॥ मात्वांश्चैनऽउद्धृष्टीन् मामुपुर्णो मात्वा विदुद्विपुमान्नीरोऽअस्ता ॥
 पित्र्यामनुमुदिश कर्निकदसुमंगलो भद्रवादी वदेह ॥ अवंकंदक्षिणतो गृह्णाणामुमंगलो भद्रवादी शं
 कुंते ॥ मानः स्वेनऽईशतु माषशंसो वृहदे मविदथ्रे मुत्रीराः ॥ १५ ॥ प्रदक्षिणिद्रमिगुणं तिकास्वोव
 योवदत्तं ऋतुशकुंनयः ॥ उमेवाचौ वदतिसामुगाऽदं वगायत्रं त्रैपुसुंचानुराजति ॥ उद्घाते वश
 कुने सामगायसि बह्यपुत्रऽईव सवनेपुशंससि ॥ द्येववाजी शिशुमेतीरुपीस्यामुर्वतो नः शकुने मद्रमावद

विश्वतोःशकुनेपुण्यमावद ॥ आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावदतूष्णीमासीनःसुमतिचिकिद्भनः ॥ यदु
 त्पत्नवदसिकर्करिथ्याब्रह्महृदंमविदथेसुवीराः ॥ १६ ॥ भद्रंवददक्षिणतोभद्रमुत्तरतोवद ॥ भद्रंपु
 रस्ताञ्चोवदभद्रंपश्चात्कर्पिंजल ॥ भद्रंवदपुत्रैर्भद्रंवदगृहेषुच ॥ भद्रमुस्माकंवदभद्रंनोऽअसभ्यंवद ॥
 भद्रमधस्ताञ्चोवदभद्रमुपरिष्ठाञ्चोवद ॥ भद्रंभद्रंनोऽआवदभद्रंनःसर्वतोवद ॥ असपत्नंपुरस्ताञ्चाः
 शिवंदक्षिणतस्कंधि ॥ असभ्यंसतंतपश्चाद्भद्रमुत्तरतोगृहे ॥ यौवनानिमहायसिजिग्युषामिवदुंडुभिः ॥
 शकुंतकंप्रदक्षिणंशतपत्रामिनोवद ॥ १७ ॥ अर्चतप्रार्चतप्रियमेधासोऽअर्चत ॥ अर्चतुपुत्रकाऽउ
 तपुरंनधृण्वर्चत ॥ युवंवस्त्राणिपीवसावसाथेयुवोरच्छिद्रामंतवोहसर्गाः ॥ अवातिरतमनृतानिवि
 श्वंऽकृतेनमित्रावरुणासचेथो ॥ अभिवस्त्रांसुवसनान्यर्षामिधेनुःसुदुधाःपूयमानः ॥ अमिचंद्राभतवेनो
 हिरण्याभ्यश्वाञ्चिथिनोदेवसोम ॥ भद्रावस्त्रांसमन्याद्देवसानोमहाक्कविनिवर्चनानिशंसन् ॥ आव
 च्यस्वचम्बोःपूयमानोविचक्षणोजागृविर्देववीतौ ॥ सतुवस्त्राण्यधेषेनानिवसानोऽअग्निर्नामांपृथि

व्याः ॥ अस्यो ज्ञानः सुखः उच्छ्रयाः पुरोहितो राजन्यजीवितेऽन् ॥ त्रिपदेऽस्मिन् शोभाय मन्त्रेऽस्मि
 भिषप्रसंगयो निमृशये ॥ वर्येणैव वासया मन्त्रनाशु चिन्त्येति शंभुः कर्णतमो हन ॥ प्रमेनानीः अग्रेऽ
 अग्रे रथानां गृह्यन्ते ति हर्षतेऽस्युः सैना ॥ मन्त्रान्कृण्वन्ति द्रव्यान्मणिभ्यः आसौ शोभयतां मन्त्रान्दि
 ते ॥ उमाऽऽर्चनं तद्विदधये विननाशु धियो वसुपसेन ॥ मन्त्रोन्नीनायाने वैभवं जोग मृदिनेऽस्युः
 आर्तसयेथे ॥ वसिन्नाहिमियेऽस्युः स्यां गृह्णाते ॥ सेमनोऽअचरं ज ॥ पुनतः कृत्वेऽप्यावसाण्य
 रूपो हर्षिः ॥ पणिऽप्याऽन्यन्न ॥ द्विनश्चिदाऽप्याऽजायमाना विजगृविः सिद्धेऽगम्यमाना ॥ मन्त्रान
 म्नायर्जुनावसानाभेयमस्मे सन्नाजापिऽव्याधीः ॥ इतस्त्वेनं रगुमश्चिन्तायुमन्कोशं निन्ति न सो मरेषु ॥
 नीचार्यमानं जगृहिनऽस्युः श्रुत्वा च्छोपगमजं भूयं ॥ निरन्वने धियोऽअस्माऽअर्षीऽस्वियाऽपुत्राय
 मातरौ वर्यति ॥ उपप्रक्षेपणो मोदमाना द्विवसुथाव्शोऽस्युः च्छे ॥ १८ ॥ इति पुरुषाह्मनाचनमंत्राः ॥

अथ स्थालीपाकः ॥ जुष्टोदमुना आर्निथिदुगेणऽऽर्षनोऽस्युः स्यात्पुष्याह्निद्विद्वत् ॥ विश्वाऽअग्नेऽ

अभियुजोविहत्याशत्रूयतामभरामोजनानि ॥ एक्ष्मऽइहहोतानिपीदादब्धःसुपुंरऽएताभवानः ॥
 अवंतात्वारोदसीविश्वमिन्वेयजामहेसौमनसाथदेवान् ॥ चत्वारिशृंगत्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षिसह
 स्तासोऽअस्य ॥ त्रिधाबुद्धोष्टषमोरोरवीतिमहोदेवोमर्त्याऽआविवेश ॥ एषहिदेवःप्रदिशोनुसर्वाः
 पूर्वोहिजातःसुगर्भोऽअंतः ॥ सविजार्यमानःसजनिष्यमाणःप्रत्यङ्मुखस्तिष्ठतिविश्वतोमुखः ॥ १ ॥
 बृहस्पतिर्ब्रह्माब्रह्मसदनऽआशिष्यतेबृहस्पतेयज्ञगोपार्यसयज्ञंपाहिसयज्ञपतिपाहिसमांपाहिभूर्भुवः
 स्वर्बृहस्पतिप्रसूतः ॥ सवितुष्ट्वाप्रसवउत्पुनाम्यच्छिद्रेणपवित्रेणवसोःसूर्यस्यरश्मिभिः ॥ विश्वानि
 नोदुर्गहाजालवेदः ॥ सिधुंननावाडुरितानिपर्षि ॥ अग्नेऽअत्रिवचमसागुणानः ॥ अस्माकंबोध्यवि
 तातनूनां ॥ यस्त्वाहृदाकीरिणामन्यमानः ॥ अमर्त्यमर्त्योजोहवीमि ॥ जातवेदोयशोऽअस्मासु
 धेहि ॥ प्रजाभिरेऽअमृतत्वमश्नां ॥ यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदऽउलोकमग्नेरुणवःस्योनं ॥ अश्विनंस
 पुत्रिणवीरवंतंगोमंतर्यिनर्षतेस्वस्ति ॥ २ ॥ अयंतऽइध्मऽआत्माजातवेदस्तेनेध्यस्ववर्धस्वचेद्धव

धयचास्मान्प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसे नान्नाद्येनसमेधयस्मां ॥ यदस्यकर्मणोत्परीरिचैयद्दान्यूनमि
 हाकरं ॥ अग्निष्टत्स्विष्टकृद्दिद्वाङ्त्सर्वस्विष्टं सुद्रुतं करोतु मे ॥ अग्नयेस्विष्टकृते सुद्रुत दुते सर्वपायश्रिता
 हुतीनां कामानां समर्थयिन्नेसर्वीचः कामान्त्समर्थयस्वा ॥ ३ ॥ अग्नाश्चाग्नेस्यनेमिशस्तीर्थसत्यमि
 त्वमयाऽअसि ॥ अयासावयसाकृतौ यासन्हव्यमृद्धिप्रेयानो धेहि मे पुजं ॥ अनाज्ञानं यदा ज्ञानं युज
 स्य क्रियते मिथु ॥ अग्नेतदस्य कल्पयस्व ॥ हिवेत्थयथा तथस्वा ॥ पुरुषसंमितो युजो युजः पुरुषसंमि
 तः ॥ अग्नेन ॥ यत्पाकत्रामनेनादीनदं शानयज्ञस्य मन्त्रेण तसि ॥ अग्निष्टद्धेतां क्रतुविद्विजान
 न्यजिष्ठो देवाश्चतुशो यजाति ॥ यद्वो देवाऽअतिपातया निवाचा च प्रयुनी देव देळनं ॥ अरायोऽअस्मां
 अग्निदुच्छुनाय ते न्यत्रा स्मन्मरुतस्तन्निधे तन ॥ ४ ॥ यन्मऽआत्मनो मिंदा भूदग्निस्तत्पनराहर्जा
 तवेदा विचर्षिणिः ॥ पुनरग्निश्चक्षुरदात्सुनरिद्रो बृहस्पतिः ॥ पुनर्मिऽअश्विनायुवं चक्षुराथ तमृक्ष्योः ॥
 तंतु न्वन्नजसोमानुमन्त्रिह्विज्योतिष्मतः पुरो रक्षत्रिया कृतात् ॥ अनुत्पुणं वयतु जोगुवा मपो मनुर्मव

ज॒नया॒दिव्य॑ज॒नं ॥ उ॒द्धृ॒द्यस्वा॒ग्नेप्र॑ति॒जागृ॒द्येन॑मि॒ष्टापूर्ते॑स॒ःसृ॒जि॒थाम॑यं॒च ॥ पु॒नः॒कृ॒ण्व॒स्त्वापि॑त॒र्यु॒
 वा॑न॒मन्वाता॑स्सी॒स्वयि॑त॒न्तुमे॑तं ॥ त्रय॑स्त्रि॒श॒त्त॒न्तवो॑ये॒वित॒तिरे॒यऽइ॒मंय॒ज्ञ॒स्वध॒याद॑दे॒तेतेषां॑छि॒न्नंप्र॑त्ये
 तद्द॒धामि॒स्वाहा॑वृ॒मेदि॒वाऽअ॒प्येतु ॥ आ॒सि॒र्गीभि॑र्यद॒तो नऽकृ॒णमा॒प्या॒यय॑हरि॒वोव॑र्ध॒मानः ॥ य॒दा
 स्तो॒तृभ्यो॑म॒हि॒गोत्रा॑रु॒जासि॑भू॒यिष्ठ॒भ्राजो॑ऽअ॒धते॑स्याम ॥ ५ ॥ पु॒र्णम॑सि॒पू॒र्णमे॑भू॒याःसु॒पू॒र्णम॑सि॒सु॒पू॒
 ण॑मे॒भूयाः॑स॒दसि॑स॒न्मे॒भूयाः॑स॒र्वम॑सि॒सर्व॑मे॒भूया॑ अ॒क्षि॒तिर॑सि॒मामे॑क्षे॒ष्टाः ॥ प्रा॒च्यांदि॒शिदे॒वाऽऋ॒त्वि॒
 जो॑मार्ज॒यंतां ॥ दक्षि॑ण॒स्यांदि॒शिमा॑साः॒पितरो॑मार्ज॒यंतां ॥ प्र॒ती॒च्यांदि॒शिगृ॑हाः॒पशवो॑मार्ज॒यंतां ॥
 उ॒दी॒च्यांदि॒श्यापऽओष॑धयो॒धन॑स्पतयो॒मार्ज॑यंतां ॥ ऊ॒र्ध्वायां॑दि॒शिय॒ज्ञःसं॑व॒त्सरः॑प्र॒जापि॑ति॒मार्ज॑यंतां ॥
 आ॒पोऽअ॒स्मान्मा॑तरःशु॒धयं॑तु॒यृते॑न॒नो॒षूत॑प्वःपु॒नंतु ॥ वि॒श्वं॒हिरि॑प्रं॒प्रव॑ह॒तिदे॒वी रु॒दिदा॑भ्यःशु॒चिरा॑पु॒
 तऽऽमि ॥ इ॒दमा॑पः॒प्रव॑० ॥ सु॒मि॒त्र्या॒नऽआ॒पुऽओष॑धयः॒संतु॑दु॒मि॒त्र्या॒स्तस्मै॑संतु॒योस्मान् ॥ द्वेष्टि॑यं
 च॒वयं॑द्वि॒ष्मस्वं॑ह॒न्मि ॥ मा॒हं॒प्रजा॑परा॒सिच॑यानः॒सया॑व॒री॒स्थन ॥ सु॒मु॒द्रे॒वो॒नि॒नया॑नि॒स्वपा॑थोऽअ॒पी॒थ

॥ ६ ॥ अग्निस्तु विश्रवस्तमंतु विव्रह्माणमुत्तमं ॥ अतूर्तश्रावयस्यति पुत्रं ददाति दाशुषे ॥ अग्निर्ददा
 तिसस्यति सासाहयो युधानृभिः ॥ अग्निरथं रघुप्यदुं जेतां रमपराजितं ॥ अग्ने त्वं नोऽअंतं मऽउत त्राता
 शिवो भवा वरूथ्यः ॥ वसुरग्निर्वसुश्रवाऽअच्छानक्षिद्युमत्तं शंघिंदाः ॥ सनो बोधिश्शुधीहृवं मुरुण्याणो
 ऽअघायतः समस्मात् ॥ तं त्वां शोचिष्ठदीदिवः सुम्नार्थे न नमीमहे सखिभ्यः ॥ मानस्तोके तनये मानं ऽ
 आयौ मानो गेषु मानोऽअश्वेपुरीरिषः ॥ वीरान्मानो रुद्रभासितो वधीर्हविष्मंतः सदमिस्त्वाहवामहे ॥
 अनृणाऽअस्मिन् अनृणाः परस्मिन् स्तूतीये लोकेऽअनृणास्याम ॥ ये देवयानाऽउत पितृयाणाः सर्वान्य
 थोऽअनृणाऽआक्षिपेम ॥ ७ ॥ ॥ इति स्थालीपाकमंत्राः समासाः ॥ अथ ग्रहयज्ञमंत्राः ॥ ॥
 ॐ आकृष्णे नृजं सार्वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ॥ हिरण्ययेन सवितारथेना देवो याति सुवर्नानि प
 श्यन् ॥ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमहृष्यं ॥ भवा वाजस्य संगृथे ॥ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्सतिः पृ
 थिव्याऽअयं ॥ अपरितानां सिजिन्वति ॥ उद्धृद्यध्वंसमनसः सवायुः समुग्निमिध्वं बृहवुः सनीळाः ॥ दृ

धिक्कामयिमुषसंचदेवीमिन्द्रावतोवसेनिह्वयेवः ॥ बहस्पतेऽअत्रियदर्योऽअर्हाद्युमद्विमातिक्रतुमंजने
 बु ॥ यद्दीदयच्छर्वसऽकृतप्रजोततदस्मासुद्रविणंधेह्चित्रं ॥ शुक्रःशुशुक्कोऽउषोनजारःप्रासमी
 चीद्विवोनज्योतिः ॥ शमभिरभिमिःकरच्छनस्तपतुसूर्यः ॥ शंवातोवात्वरपाऽअपस्त्रिधः ॥ कयान
 श्विनऽआभुवंदूतीसदाह्वयःसखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ केतुंरुणवलकेतवेशोऽमर्याऽअपेशसे ॥
 ममुषर्द्धरजायथाः ॥ १ ॥ त्र्यंबकंयजामहेसुगंधिपुष्टिवर्धनं ॥ उर्वारुकमिवब्रंधनान्मृत्योर्मुक्षीयुमा
 मृतात् ॥ गौरीमि० ॥ यदकंदःप्रथमंजायमानऽउद्यन्त्ससमुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिण
 स्यबाहूऽउपस्तुत्यंमहिजातैऽअर्वन् ॥ विष्णोर्नु० ॥ सहस्रशी० ॥ ब्रह्मणस्पतेत्वमस्यप्रं तासुक्त
 स्यबोधितनयंचजिन्व ॥ विश्वंतद्भद्रंयदर्वतिदेवाबृहद्देमविदथेसुवीराः ॥ ब्रह्मजज्ञानंप्रथमं पुरस्ता
 द्विसीमतःसुरुचोविनऽआवः ॥ सुबुध्यालुपुमाऽअस्यविद्याःसतश्चयोनिसंतश्चविवः ॥ इंद्रवोविश्वं
 तस्यरिह्वामहेजनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवलः ॥ इंद्रश्रेष्ठानिद्रविणानिधेह्चिचित्तिदक्षस्यसुमग

त्वमुस्मे ॥ पोषंरथीणामरिद्धितनूनां स्वाद्यानां वाचः सुदिनत्वमह्नां ॥ इंद्रत्वाद्यपुंभ्यं सुते सोमे हवामहे
 सपाहिमध्वोऽअंघसः ॥ यमायसोमं सुनुतयमार्यजुहुताहविः ॥ यमंहयज्ञो गच्छत्यग्निद्रूतोऽअरुक्तः ॥
 मोषुणः परापरानिर्कनिर्दुर्हणावधीत ॥ पदीद्यतृष्णयासह ॥ उयोवाजं हिवंस्वयश्चित्रोमानुपेजने ॥
 तेनावहसुकृतोऽअध्वरोऽउपयेत्वागुणंतिवह्नयः ॥ २ ॥ अग्निद्रुतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ॥ अस्य
 यज्ञस्य सुक्रतुं ॥ अप्सुमेसोमोऽअबवीदंत विश्वानिमेपजा ॥ अग्निं च विश्वशंसुवमोपश्च विश्वभेष
 जीः ॥ स्योनापृ० ॥ इदं वि० इंद्रमिद्वेवतातयऽइंद्रं प्रयत्यध्वरे ॥ इंद्रं समीके च निनो हवामहऽइंद्रं धने
 स्यसातये ॥ इंद्रं विश्वाअवीवृथन्त्समुद्रव्यं च संगिरं ॥ रथीतं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिं ॥ इंद्राणीमा
 नारिषुसुमगामुहमश्रवं ॥ नद्यं स्याऽअपरं च नजरसामस्तेपति विश्वस्मादिंद्रऽउत्तरः ॥ प्रजाप० आ
 यंगीः० ब्रह्म० ॥३॥ गुणा० ॥ जातवेदसे सुनवामसोममरातीयतो निदं ह्यतिवेदः ॥ सनपर्षदात्तदुर्गाणि
 विश्वानावेव सिंधुदुरिनात्यग्निः ॥ वायो शतं हरीणां युवस्वपोष्याणां ॥ उत वतिसहस्रिणोरथऽआयां

तुपाजसा ॥ वायोयेतसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि ॥ नियुत्वान्तसोमपीतये ॥ तववायवतस्पतेत्वधु
 र्जामातरद्भुत ॥ अवास्यावृणीमहे ॥ वायोशुक्रोऽअयामितेमध्वोऽअग्रंदिर्विष्टिषु ॥ आयाहि
 सोमपीतयेस्पाहेदिवनियुवंता ॥ आदित्यलस्येतसोऽज्योतिष्यशयंतिवासुरं ॥ पुरोयद्विह्यतेदिवा ॥
 एषोऽउषाऽअपूर्याव्युच्छतिप्रियादिवः ॥ स्तुषेवामश्विनाब्रूहत् ॥ वास्तो० कक् ॥ क्षेत्रस्यपति
 नावयंहितेनैवजयामसि ॥ गामश्वंपोषयित्वासनोमृळतीदृशे ॥ सोमधिनुसोमोऽअवतमाशुसोमो
 वीरंकर्मण्यददाति ॥ सादन्यंविदुथ्यंसमेयंपितृश्रवणंयोददाशदस्मै ॥ ४ ॥ समुद्रादूमिर्मधुमौउदार
 दुपांशुनासममृतत्वमानद् ॥ घृतस्यनामगुर्द्यंयदस्तिजिह्वोदेवानाममृतस्यनाभिः ॥ वयंनामप्रब्रवा
 माघृतस्यास्मिन्यज्ञेधारयामानमौभिः ॥ उपब्रह्माशृणवच्छस्यमानंचतुःशृंगोवमीद्वोरऽएतत् ॥ च
 त्वा० ॥ त्रिधाहितंपणिभिर्गुर्द्यमानंगविदेवांसौघृतमन्वविदन् ॥ इंद्रऽएकंसूर्यएकंजजानवेनादेकं
 स्वधयानिष्टंतशुः ॥ एताऽअर्षतिहृद्यात्समुद्राच्छतत्रंजारिपुणानवचक्षे ॥ घृतस्यधाराऽअभिचाक

शीमिहिरुण्ययेवेतसोमध्यऽआसां ॥ ५ ॥ सम्यक्स्त्रवंतिस्रितोनधेनाऽअंतह्रदाभनसापूयमानाः ॥
 एतेऽअर्षिर्यूमयोधृतस्यमृगाइवक्षिपणोरीपमाणाः ॥ सिधोरिवप्राध्वनेशूषुनासोवान्तप्रभियःपतयंति
 यत्नाः ॥ धृतस्यधारांअरुपोनवाजीकाष्ठासिंदन्मिभिःपिन्वमानः ॥ अग्निप्रवंतुसमेनेवयोपांःक
 ल्याण्यःऽस्मर्यमानसोऽअग्नि ॥ धृतस्यधाराःसुमिधोनसंतताजुपाणोह्यतिजालवेदाः ॥ कन्या
 ऽइववहनुमेतवाऽऽंज्यैजानाऽअग्निचाकशीमि ॥ यन्नसोमःसूयतेयत्रयज्ञोधृतस्यधाराऽअग्नि
 त्पवते ॥ अस्यर्षतसुष्टुतिगव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त ॥ इमंयुज्ञंनयतदेवतानोधृतस्यधा
 रामधुमत्पवते ॥ धार्मते० ॥ ६ ॥ मूर्धानं० ॥ पुनस्त्वाहित्यारुद्रावसंवःसभिधतांपुनंर्ब्रह्माणोवसुनी
 थयज्ञैः ॥ धृतेनृत्वंतनुवोवर्धयस्वसत्याःसंतुयजमानस्यकामाः ॥ सप्ततैऽअग्नेसुमिधःसप्तजिह्वाःसप्तऽ
 र्षयः सप्तधामप्रियाणि ॥ सप्तहोत्राःसप्तधात्वायजतिसप्तयोनीरारुपणस्वाधृतेन ॥ ७ ॥ यऽएकऽइ
 द्विदयतेवसुमर्तापदाशुषे ॥ ईशानोऽअप्रतिष्कृतऽइन्द्रोऽअंग ॥ उभयंशृणवच्चनुऽइन्द्रोऽअर्वागिदंवचः॥

सत्राच्यामथवासोमपीतयेधियाशाविष्टुऽआर्गमत् ॥ स्वस्तिदाविशस्पतिर्दृत्रहाविमृधोवशी ॥ दृषेद्रः
पुरऽऽनुनःसोमपाऽअभयंकरः ॥ देवस्यत्वासवितुःप्रसवे ॥ अश्विनोर्बाहुभ्यां ॥ पूष्णोहस्ताभ्यां ॥
अश्विनोर्भेषज्येन ॥ तेजसेब्रह्मवचसायासिषिचामि ॥ देवस्यत्वा० ॥ सरस्वत्यैभेषज्येन ॥ वीर्या
यात्राद्यायासिषिचा० ॥ देव० ॥ हस्ताभ्यां ॥ इंद्रस्येन्द्रियेण ॥ अथैयशसेबलायासिषिचां० देव
स्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्या ५ सरस्वत्यैवाचोयंतुर्द्युत्रेणाम्रेस्त्वासात्राज्येनाभि
षिचार्माद्रस्युबृहस्पतेस्त्वासात्राज्येनासिषि० ॥८॥ तमीशानं० ॥ त्वमिन्द्रोअसुरोमहोदिवः ॥ त्व
शर्धामारुतंपृक्षईशिषे ॥ त्वंवातैरुणैर्यासिशंगयः ॥ त्वंपूषाविधतःपांसिनुत्मना ॥९॥ तमुष्टुह्रियःस्विषुः०
क० ॥ भुवनस्यपितरंगीभिरामीरुद्रदिवार्वधयारुद्रमक्तौ ॥ बृहंतमुष्वमजरसुषुभ्रमृधंघुवेमकविनेषि
तासः ॥ १० ॥ यज्जाग्रतोदुरमुदैतिदैवंतदुसुसस्यतथैविति ॥ दूरंगमज्योतिषाज्योतिरेकंतन्मेमनः
शिवसंकल्पमस्तु ॥ येनकर्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिविदथेषुधीराः ॥ यदंपूर्वयक्षमंतःप्रजानां

तन्मे० ॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरंतरमृतंप्रजासु ॥ यस्मान्ऽकृतेकिचनकर्मक्रियतेत
 न्मे० ॥ येनेदंभूतंसुर्वनंसविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व ॥ येनयज्ञस्त्रायतेसप्तहेतातन्मे० ॥ यस्मि
 न्मृचःसामयजूः२ षियस्मिन्प्रतैष्ठितारशानाभाविवाराः ॥ यस्मिंश्चित्सर्वमोतंप्रजानांत० सुपा
 रथिरश्वानिवयंमनुष्यांचेनीयतेमीथुभिर्वाजिनंऽइव ॥ ह्यप्रतिष्ठंयदंजिरंयविष्ठंतन्मे० ॥ ११ ॥
 इंद्रत्वाष्टमंयंसुतेसोमेहवामहे ॥ सपाह्निमध्वोऽअंधसः ॥ इंद्रकतुविदंसुतंसोमंहयंपुरुष्टुत ॥ पि
 वाष्टपस्वनाटृपि ॥ इंद्रप्रणोधितावानंयुज्ञंविश्वेभिरिदेवेभिः ॥ निरस्त्वानविशते ॥ इंद्रसोमाःसुताऽ
 इमेतवप्रयंतिसत्यते ॥ क्षयंचंद्रामऽइंदवः ॥ दधिष्वजठरेसुतंसोममिंद्रवरेण्यं ॥ तवंच्युक्षासऽइंदवः
 ॥ १२ ॥ रूंपरूपंप्रतिरूपोबभूवतदेस्यरूपंप्रतिचक्षणाय ॥ इंद्रोमायाभिःपुरुरूपंऽइयतेयुक्ताहंस्य
 हरयःशतादश ॥ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पतेदेवयंतस्त्वमहे ॥ उपप्रयंतुमरुतःसुदानवऽइंद्रप्राशूर्मवासचा ॥
 अम्यारमिदद्रयोनिषिकुंपुष्करेभुं ॥ अवतस्यविसर्जनि ॥ १३ ॥ अथोत्सर्जनमंत्राः ॥ ॥ अग्नि

मीळिपुरोहितंयुज्ञस्यदेवमृत्विजं ॥ होतारंरत्नधातमं ॥ कृषुंभकस्तदंब्रवीद्द्विरेःप्रवर्तमानकः ॥ दृश्चि
 कस्यारसंविषमंसंष्टश्चिकतेविषं ॥ त्वमग्नेद्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमभमभनृस्परि ॥ त्वंवेने
 भ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वनृणांनृपतेजायसेशुचिः ॥ आवदंस्त्वंशकुनेभद्रमावदतूष्णीमासीनःसुमतिंचि
 किद्धिनः ॥ यदुत्पतन्वदसिकर्करिथंबृहद्देमविदथैसुवीराः ॥ सोमस्यमातृवसंवक्ष्यश्रेवह्विचकथं
 विदथेयजधै ॥ देवाँऽअच्छादीद्यद्युजेऽअद्रिंशमायेऽअग्नेतन्वंजुषस्व ॥ १ ॥ गृणानाजमदग्नि
 नायोनावृतस्यंसीदतं ॥ पातंसोममृताद्यथा ॥ त्वांद्यग्नेसदमित्समन्यवोदेवासोदेवमंरतिन्वैरिरऽइति
 कत्वान्येरिरे ॥ अमर्त्येयजतमत्येष्वादेवमादेवंजनतप्रचेतसंविश्वमादेवंजनतप्रचेतसं ॥ धामतेवि
 श्वंभुर्वनमधिश्चित्तमंतः समुद्रेदृद्यं१तरायुषि ॥ अपामनीकेसमित्थेयऽआमृतस्तमश्यामधुमंतंऽमि ॥
 अबोध्यग्निःसमिधाजनानांप्रतिधेनुमिवायतीमुपासं ॥ युद्धाऽइवप्रवयामुज्जिह्वानाःप्रभानवःसिखते
 नाकमच्छं ॥ गंतानोयुज्ञयंज्ञियाःसुशमिश्रोताहवमरक्षऽएवयामरुत् ॥ ज्येष्ठांसो नपर्वतासोव्योमनियु

यंतस्यप्रचेतसःस्यातदुर्धतवोनिदः ॥ २ ॥ त्वंक्षमेप्रथमोमनोनास्याधिऽअभवोदस्सहोला ॥
 त्वंसीदृषन्नकृणोदुदृहीतुसहोविश्वस्मैसहसैसहृष्यै ॥ योनःस्वोऽअरणोयश्चनिष्ठयोजिषांसति ॥
 देवास्तंसर्वे धूर्वतुब्रह्मवर्षममांतरं ॥ अग्निरोदीधितिभिरण्योर्हस्तच्युतीजनयंतप्रशस्तं ॥ दूरे
 दृशंगृहपतिमथ्यु ॥ प्रतिचक्ष्वविचक्ष्वेद्रंश्चसोमजागृतं ॥ रक्षोभ्योवधमंस्यतसशानियातुमद्भ्यः ॥
 माचिदन्यद्विशंसतुसखायोमारिषण्यत ॥ इंद्रमिस्तोलादृपंगंसचासुतेमुहुंरुक्थाचशंसन ॥
 ॥ ३ ॥ आश्रियाहिमरुत्तरवारुद्रेसिःसोमपीतये ॥ सोमर्याऽउपसुष्टुतिमादयस्वस्वर्णरे ॥
 स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोमधारया ॥ इंद्रायपातवेसुतः ॥ यत्तैराजन्धुतंहविस्तेनसोमाभिर
 क्षनः ॥ अरातीवामानस्तारीन्मोचनःकिंचनाममदिद्रायैदोपरिखव ॥ अग्रेबृहन्नृपसामूर्ध्वोऽअ
 स्थाञ्जिर्जगन्वान्तमसोज्योतिषागत ॥ अग्निमानुनाशशलास्वंगुऽआजातोविश्व्वासद्भान्यप्राः ॥
 समानीवआकृतिःसमानाहृदयानिवः ॥ समानमस्तुवोमनोयथावःसुसहासति ॥ ४ ॥ बळिरथा

पर्वतानां खिद्रं विमर्षिष्यथिवि ॥ प्रयाभूमिं प्रवत्वतिमहाजिनोषिमहिनि ॥ मावोरिषत्वनिताय
 स्मैचाहं वनामिवः द्विपचतुष्पदस्माकंसर्वमस्त्वनानुरं ॥ आर्यनेते परार्थणे दूर्वा रोहंतु पुष्पिणीः ॥
 हृदाश्रुपुंडरीकाणिसमुद्रस्य गृहाऽऽमे ॥ आतारमिद्रमवितारमिद्रहवेहवेसुहवंशूरमिद्रं ॥ ह्या
 मिश्रं पुरुहूतमिद्रं स्वस्तिनो मूषवाधात्विद्रः ॥ वृयसोमत्रतेतवमनस्तनूषुविभ्रतः ॥ प्रजावंतः संचे
 महि ॥ तत्सूर्यरोदसीऽऽमेदोषावस्तोरुपंब्रुवे ॥ भोजेस्वस्माँऽअभ्युचरासदा ॥ अयः पश्यस्वमो
 परिसंतं रापादकौहरं ॥ मातेकशङ्खकौहं शंन्तस्त्रीहिब्रह्माब्रभूवैथ ॥ ५ ॥ अक्षीभ्यंतिनासिकाभ्यां
 कर्णाभ्यां छुबुकादधि ॥ यक्षंशीर्षण्यंमस्तिष्काज्जिह्वायाविष्टहामिने ॥ ग्रीवाभ्यस्तऽऽड्ढिहाभ्यः
 कीकसाभ्योऽऽनुक्यात् ॥ यक्षं दोषण्यं १ मंसाभ्यां बाहुभ्यां विष्टं ॥ आत्रेभ्यस्तेगुदाभ्यो वानिष्टोर्ह
 द्यादधि ॥ यक्षं मंतलाभ्यां युक्रःभ्यो विष्टं ॥ नाभानामिनऽआदादेचक्षुश्चित्सूर्यसचा ॥ कवेर
 पत्यमादुहे ॥ त्वमिद्रसजोषसमर्कबिभर्षिबाहोः ॥ वज्रं शिशानुऽओजसा ॥ सोमानं स्वरं कणुहि

ब्रह्मणस्पते ॥ कक्षीर्वंतंयऽऔशिजः ॥ यःकुक्षिःसोमपातमःसमुद्रऽइवपिन्वते ॥ उर्वीरापोनकाकुदः॥
 बह्वीनांपिताबुहुरस्यपुत्रश्चिश्चाकृणोतिसर्मनावगत्य ॥ इपुयिःसंक्राःपृतनाश्चसर्वाःपृष्ठेनिन्देजयति
 प्रमूतः ॥ कुरुभ्यतिऽअष्टीवद्ध्यांपार्ष्णिभ्यांप्रपदाभ्यां॥यक्ष्मंश्रोणिभ्यांमासंदाद्धंससोविट्हामिते॥
 मेहनाह्नंकरंणाल्लोमभ्यस्तेनुलेभ्यः ॥ यक्ष्मंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविन् ॥ यस्यविश्वानिहस्तयोः
 पंचसितीनावसु ॥ स्याशयंस्त्रयोऽअस्मद्भुग्दिद्वेवाशनिर्जाहि॥ अंगादंगाल्लोमोऽजोऽजातंपर्वणिपर्व
 णि॥यक्ष्मंसर्वस्मादात्मनस्तमिदंविट्हामिते ॥ सहस्रं० ऋक् १॥१३॥यस्यविश्वानिहस्तयोःरुद्रुर्वसू
 निनिद्धिता ॥ वीरस्यपृतनाषहः॥अवतिहेल्लोवरुणमोभिरवंयज्ञेभिरिमहेहविभिः॥क्षयञ्जस्मभ्यमसु
 प्रचेनाराजन्नेनांसिशिश्रयःकृतानि ॥ उदुत्तमंवरुणपाशंमस्मदवाधुमंविमच्युमंश्रंथाय ॥ अथाव
 यमादित्यंनृतेतवानांगसोऽअदितयेस्थाम ॥ हिरण्यशृंगवरुणंप्रपद्येतीर्थमेदेहियाचितः ॥ यन्मया
 मुरुकर्मसाधूनांपापेभ्यश्चप्रतिग्रहः ॥ यन्मेभनंसावाचाकर्मणावादुष्कृतकृतम् ॥ तन्मऽइन्द्रोवरुणोबह

वज्रनाः पुनंतुवसवोधिष्या ॥ विश्वेदेवाःपुनीतमाजातवेदःपुनीहिमा ॥ प्रप्याथस्वप्रस्थदस्वसोमवि
 श्वेभिरंशुभिःदेवेभ्यऽउत्तमंहविः ॥ उपप्रियपनिमंतयुवानमाहुतीदृधं ॥ अगन्मविभ्रतो नमः ॥ अ
 लाच्यस्यपरशुर्ननाशतमापवस्वदेवसोम ॥ आखुंचिदेवदेवसोम ॥ यः पावमानीरुध्येत्यृषिभिःसंभृतं
 रसं ॥ सर्वसपुतमंश्रातिस्वदितंमातरिर्श्वना ॥ पावमानीर्योऽअध्येत्यृषिभिःसंभृतरसं ॥ तस्मैसरस्व
 तीदुहेक्षीरंसृषिर्मघूदकं ॥ पावमानीःस्वस्त्ययनीःसुदुचाहियंतुश्रुतः ॥ ऋषिभिःसंभृतीरसोबाह्यणे
 ष्वमृतंहितं ॥ पावमानीदिशंतुनऽइमंलोकमथोऽअमुं ॥ कामान्त्समर्धयंतुनोदेवैर्दवीःसमाहिताः ॥ ये
 नदेवाःपुवित्रेणास्मानंपुनतेसदा ॥ तेनसहस्रधारेणपावमान्यःपुनंतुमां ॥ प्राजापत्यंपवित्रंशतोद्या
 महिरण्यथं ॥ तेनब्रह्मविदोव्यंपुतंब्रह्मपुनीमहे ॥ इंद्रःसुनीतीसहमापुनातुसोमःस्वस्त्यावरुणः
 सृषीच्या ॥ यमोराजप्रमृणाभिःपुनातुमाजातवेदामूर्जयंत्यापुनातु ॥ १६ ॥ अंबयोयंत्यध्वमिर्जा
 मयोऽअध्वरीयतां ॥ पंचतीर्मधुनापयः ॥ अमूर्याऽअपुसूर्येयामिर्वासूर्यःसह ॥ तानोहिन्वंत्यध्वरोऽअ

पोदेवीरुपह्वयेयत्रगावःपिबंतिनः ॥ सिंधुभ्यःकर्त्तव्यहविः ॥ अप्सर्वं१तरसृत्तमप्सुभेषजमपासुतप्रशस्त
 ये ॥ देवाभवतवाजिनः ॥ अप्सुमे०इमं० ऋतंच० ॥ १७ ॥ ऋषेमंत्रकृतांस्तौमैःकश्यपोद्दुर्धयुनि
 रः ॥ सोमंनमस्यराजानंयोजज्ञेवीरुथांपतिरिंद्राधिदोपरिखव ॥ अत्रिर्यद्दामवरोहंनृवीसमजोहवीचा
 धमानेवयोषां ॥ श्येनस्यचिज्जवसानूतेनागच्छतमश्विनाशंतमेन ॥ एवानःस्पृधःसमजासुमत्स्विद्रं
 रांधिभिथतीरेदेवीः ॥ विद्यामवस्तोरवसागुणंतोभ्रद्वाजाऽउततऽइंद्रनूनं ॥ प्रसूतोभक्षमकरंचरावपि
 स्तोमंचेमंप्रथमःसूरिरुन्मृजे ॥ सुतेसातेनयद्यागंमंवांप्रतिविश्वामित्रजमदग्नीदेमे ॥ एवातेवयमिंद्र
 मंजतीनांविद्यामंसुमतीनांनवानां ॥ विद्यामवस्तोरवसागुणंतोविश्वामित्राऽउततऽइंद्रनूनं ॥ अग्नि
 त्वागोतमागिराजातवेदोविचर्षणे ॥ द्युन्नैरग्निप्रणोनुमः ॥ गृणानाजुमदं ॥ उतासिमैत्रावरुणोव
 सिष्टोर्वश्याब्रह्मन्मनसोधिजातः ॥ इप्संस्कचंब्रह्मणदौदेव्येनविश्वेदेवाःपुष्करेत्वाददंत ॥ अत्रैर्यथानु
 सूयांस्याद्दसिष्टस्याप्यरुंधती ॥ कौशिकस्ययथासतीतथात्वमपिमर्तरे ॥ देवाएतस्यामवदंतपूर्वस

मऽऋषयस्त्वपसेयेनिषेदुः ॥ श्रीमाजायाब्राह्मणस्योपनीतादुर्धादधातिपरमेव्योमन् ॥ सहस्त्रोमाः
 सहस्रदसऽआद्यतःसहस्रमाऽऋषयःससदैव्याः ॥ पूर्वेषांपथामनुदृश्यधीराऽअन्वालेभिरैरथ्योईनर
 श्मीन् ॥ अहाव्यश्रेहविरास्येतिसुचीवपृतंचम्बीवसोमः॥ वाजसनिरयिमस्मेसुवीरप्रशस्तंथेहियशसंबृ
 हतं ॥ नूसध्यानंदिव्यंनंशिदिवाभारद्वाजःसुमतिथालिहोलाआसानेभिर्यजमानोमिथैर्धैर्दवानांजन्मव
 स्युर्ववद ॥१८ ॥ अथपर्जन्यसूक्तानि ॥ ॥ तिस्रोवाचः प्रवदज्ज्योतिरग्रायाऽएतद्बृहमेधुदोष
 मूयः ॥ सवत्संरुण्वनार्मीमोषधीनांसद्योजातोहृषसोरवीति ॥ योवर्धनऽओषधीनांयोऽअपांयोवि
 श्वस्यजगतोदेवऽईशे ॥ सत्रिधानुशरणंशर्मयंसत्रिवर्तुज्योतिःस्वसिद्ययं१स्मे ॥ स्तरीरुत्वद्भवीतिसू
 तंऽऽउत्वद्यथावशंतुन्वंचक्रऽएषः ॥ पितुःपयःप्रतिगृभ्णातिमातातेनपितावर्धतेतेनपुत्रः ॥ यस्मिन्वि
 श्वानिसुर्वनानितुस्युस्तिस्त्रोद्यावस्त्रेधासत्सुरापः ॥ त्रयःकोशासऽउपसेचनासोमध्वःश्वोतंत्यभितोवि
 एषां ॥ इदंवर्चःपर्जन्यायस्वराजैहृदोऽअस्त्वतरंतञ्जोषत् ॥ मयोसुवोहृद्यःसंतस्वमेधुपिप्लवा

ऽओषधीर्देवगोपाः ॥ सरैतोधाहृषभः शश्वतीनांलस्मिन्नात्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ तन्मऽङ्कतंपांतुश
 तशारदाययूयंपातस्वस्तिमिः सदानः ॥ १ ॥ पर्जन्यायप्रगायलदिवस्पुत्रायमीळ्हुषे ॥ सनोयवस
 मिच्छतु ॥ योगर्षमोषधीनांगवांकृणोत्यर्वतां ॥ पर्जन्यःपुरुषीणां ॥ तस्माऽइदास्येहविर्जुहोताम
 धुमत्तमं ॥ इळानःसंयतंकरत् ॥ २ ॥ संवत्सरंशशायानाब्राह्मणात्रतचारिणः ॥ वाचैपर्जन्यजिन्वि
 तांप्रमंडूकाऽअवादिषुः ॥ दिव्याआपोऽअभियदेनमायन्दतिंनशुकंसरसीशयानं ॥ गवामहनमायु
 र्वत्सिनीनामंडूकानांवश्रुत्रासमैति ॥ यदीमिनौऽउशतोऽअभ्यवर्षेत्तृष्यावतःप्रावृष्यागतायां ॥
 अक्खलीकृत्यापितरंनपुत्रोऽअन्योऽअन्यमुपवदंतमेति ॥ अन्योऽअन्यमनुंगभ्यात्येनोरपांप्रसंगेय
 दमंदिषातां ॥ मंडूकोयदमिष्टंष्टःकनिष्कन्मृश्रिःसंपृङ्क्लेहरितेनवाचं ॥ यदेषामन्योऽअन्यस्यवाचंशा
 क्तस्यैववदतिशिक्षमाणः ॥ सर्वतदेषांसमृधेवपर्वयत्सुवाचोवदथनाध्यप्सु ॥ ३ ॥ गोमाथुरेकोऽअजमा
 थुरेकःप्रश्रिक्रेकोहरितऽएकऽएषां ॥ समानंनामबिभ्रतोविरूपाःपुरुत्रावाचंपिपिशुर्वदंतः ॥ ब्राह्मणा

सोऽअतिरात्रेनसोमेसरोनपूर्णमभितोवदंतः ॥ संवत्सरस्यतदहःपरिष्ठयन्मंडूकाःप्राहृषीणंब्रभू॥ ब्राह्म
 णासःसोमिनोवाचमकतब्रह्मकृण्वंतःपरिवत्सरीणां॥ अध्वर्यवोवृमिणःसिष्विदानाऽआविर्भवंतिगुह्या
 नकेचित्॥ देवहितंजुगुप्सुर्द्वाशस्यऽऽकृतुनरोनप्रभिनंयेते॥ संवत्सरेप्राहृष्यांगतायांतसाधुर्माऽअंश्रुवते
 विसर्गां॥ गोमाथुरदादजर्माथुरदात्सर्पश्ररदाद्धरितोनोवसूनि ॥ गवांमंडूकादंतः शतानिसहस्रसाविप्रति
 रंतऽआयुः॥ ४ ॥ उपप्लवदमंडूकिवृषमावदतादुरि॥ मध्येन्हदस्यप्लवस्वनिगृह्यचतुरःपुरः॥ इतिप्रथमसूक्तं
 ॥ १ ॥ अच्छावदत्वसंगीभिराभिःस्तुहिपर्जन्यंनमसाविवासा॥ कर्निकदहृषमोजीरदानुरेतोदधात्योषधी
 षुगर्मी॥ विवृशान्हृत्युतहृतिरक्षसोविश्वंविभायुसुर्वनंमहावधात्॥ उतानागाऽइषतेष्टृष्ण्यावतोयत्पर्जन्यः
 स्तनयन्हृतिदुष्कृतः ॥ रथीवकशयाश्वौऽअमिक्षिपचाविर्दतान्कणुतेवृष्यींअहं ॥ दुरास्तिहस्यस्त
 नथाऽउदीरेतेयत्पर्जन्यःकणुतेवृष्यींनभः ॥ प्रवातावांतिपतयंतिविद्युत्ऽउदोषधीजिहतेपिन्वतेस्वः॥
 इराविश्वस्मैसुर्वनायजायतेयत्पर्जन्यःपृथिवीरेतुसावति ॥ यस्यत्रतेपृथिवीनर्चमीतियस्यत्रतेशफव

जार्भुरीति ॥ यस्यन्नतऽओषधीर्विश्वरूपाःसनः पर्जन्यमहिशर्मयच्छ ॥ १ ॥ द्विवोनोवृष्टिमरुतोर
 रीध्वंप्रपिन्वतृष्णोऽषअश्वस्यधाराः ॥ अर्वाङ्ङितेनस्तनयित्नुनेह्यपोनिषिचन्नसुरःपितानः ॥ अग्नि
 कंदस्तनयगर्भमाधाऽउदुन्वतापरिदीयारथेन ॥ छत्तिंसुकर्षविषितुन्धंचसमामंबंतूदतोनिपादाः ॥
 महांतंकोशमुदंचानिषिचस्यदंताकुल्याविषिताःपुरस्तात् ॥ घृतेनद्यावापृथिवीव्युंधिसुप्रपाणंसवत्व
 इयाम्यः ॥ यत्पर्जन्यकर्निकदस्तनयन्हंसिदुक्ततः ॥ प्रतीदंविश्वमोदतेयत्किचंपृथिव्यामधि ॥
 अर्षर्विषुषुदुषूग्मायाकर्धन्वान्यत्येतवाऽड ॥ अजीजनऽओषधीर्भोजनायकमुतप्रजाभ्योविदोम
 नीषां ॥ २ ॥ द्वि० सूक्तं ॥ बळित्था० ऋ० १॥ स्तोमांसस्त्वाविचारिणिप्रतिष्टोभंत्युक्तुभिः ॥
 प्रयावाजंनहेर्षतंपेरुमस्यंस्यर्जुनि ॥ इळ्हाचिद्यावनस्पतीन्धुमयादधर्ष्योर्जसा ॥ यत्तेऽअस्यविद्यु
 तोद्विवोवर्षतिवृष्टयः ॥ वर्षतुतेविमावरिदिवोऽअस्यविद्युतः ॥ रोहंतुसर्वबीजान्यवब्रह्मद्विषोजहि
 ॥ १ ॥ ॥ प्रदेवत्राब्रह्मणेगानुरेत्वपोऽअच्छामनंसोनप्रयुक्ति ॥ मर्हीमित्रस्यवरुणस्यधासिंपृथुज

यंसेरीरथासुवृत्ति ॥ अर्ध्वर्यवोहृष्विभंत्तोहिमुताच्छापइतोशतीरुशंतः ॥ अवयाश्वेऽअरुणःसुपर्ण
 स्तमास्यर्ध्वमूर्ध्निमृद्यासुंहस्ताः ॥ अर्ध्वर्यवोपइतासमुद्रमुपानपांतहृविपायजध्वं ॥ सर्वोदददु
 र्ध्निमृद्यासुपूतंतस्मैसोमंमधुमंतसुनोत ॥ योऽअनिध्मोदीदयदृप्स्वं १ तर्ध्विप्रासऽइळतेऽअध्व
 रेषु ॥ अपानपान्मधुमतीरपोदायाभिरिंद्रोवावृधेवीर्याय ॥ याभिःसोमोमोदतेहृषतेचकल्याणीभि
 र्युवतिभिर्नमर्थः ॥ ताऽअध्वर्योअपोऽअच्छापरेहियदांसिचाऽओपधीभिःपुनीतात् ॥ १ ॥ एवेद्यु
 नेयुवतयोनमंतयदीमुशान्शुशतैरित्यच्छ ॥ संजानतेमनसांसंचिकित्रेध्वर्ध्ववोधिषणापंश्रदेवीः ॥ यो
 वोहृताभ्योऽअरुणोऽडुलोकेयोवोमृह्याऽअमिशस्तेरमुंचत् ॥ तस्माऽइंद्रायमधुमंतमूर्ध्निदेवमादंनंप्रहि
 णोतनापः ॥ प्रास्मैहिनोतमधुमंतमूर्ध्निगर्भोयोवःसिधवोमध्वउत्सः ॥ घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेषवापरिवतीःश्र
 णुताहवमे ॥ तंसिधवोमत्सरभिद्रूपानमूर्ध्निप्रहेतयऽभेऽइयति ॥ मृदच्युतंमौशानंनमोजांपरिञ्चितनु
 विचरंतमुत्सं ॥ आवर्धततीरधनुद्विधारंगोषुयथोननियवंचरंतीः ॥ ऋषेजनित्रीर्ध्वनस्पृपत्नीरपोवंदस्व

सृष्टःसयोनी ॥ २ ॥ हिनोतानोऽअध्वरैदेवयज्याहिनीतब्रह्मसनयेधनानां ॥ ऋतस्ययोगेविष्यं
ध्वमूर्यःश्रुष्टीवरीभूतनास्मभ्यमापः ॥ आपोरिवतीःक्षयथाहिवस्वःऋतुचमद्रुंविभृथांमृतं च ॥ राय
श्चस्वस्वंपत्यस्यपत्नीःसरस्वतीतद्गृणतेवयोधात् ॥ प्रतिपदापोऽअदृश्रमायतीघृतंपयांसिबिभ्रतीर्म
धूनि ॥ अध्वर्युभिर्मनसासंविदानाऽइन्द्रायसोमंसुषुतंभरतीः ॥ एमाऽअगमन्नेवतीर्जीवधन्याऽअध्वर्य
वःसादयतासखायः ॥ निबर्हिषिधत्तनसोम्यासोपांनपत्रासंविदानासंऽएनाः ॥ आगमन्नापंऽउशतीर्ब
हिरेंदन्यध्वरेऽअसदन्देवयंतीः ॥ अध्वर्यवःसुनुतेंद्रायसोममभूदुवःसुशकदिवयुज्या ॥ ३ ॥ तृ.सू. ॥
॥ बृहस्पतेप्रतिभेदेवतामिहिमित्रोवायहरुणोवासिपुषा ॥ आवित्यैर्वायदसुभिर्मरुत्वान्तसपर्जन्यंशं
तेनवेष्टपाय ॥ आदेवोदुतोऽअंजिरश्चिकित्वान्त्वेदेवापेऽअभिमामगच्छत् ॥ प्रतीचीतःप्रतिमामाव
हत्स्वदधामितेद्युमतीवाचमासन् ॥ अस्मैधेहिद्युमतीवाचमासन्बृहस्पतेऽअनमीवाभिषिरां ॥ यया
द्युष्टिशंतनवेवनावदिवोद्रप्सोमधुमाँऽआविवेश ॥ आनोद्रप्सामधुमंतोविशंत्विद्रदेव्याधिरथंसहर्षं ॥ नि

यविष्टभारती ॥ वरूत्रीधिषणां वह ॥ अधीवासंपरिमातूरिहन्नहंतुविश्रेभिः सत्वभिर्यातिविज्यः ॥
 वयोदधत्पुहत्तैरेरिहत्सदांनुशेनीसचतेवर्तनीरह ॥ अयंयज्ञोद्वेद्याऽअयंमियेधऽइमाब्रह्माण्ययभिं
 द्रसोमः ॥ स्तीर्णबहिरातुशंक्रमयाह्विषिवाणिषद्यविमुचाहरीऽइह ॥ अनीयामनिदस्त्रिःस्वस्त्रिभि
 हित्वावद्यमरातीः ॥ वृष्वीशंयोरारपऽउखिमैषुजंस्याममरुतःसह ॥ अश्ररक्षाणोऽअंहसःप्रतिष्मदेवरी
 षतः ॥ तपिष्ठैरुजरोदह ॥ १ ॥ अग्नेसवसुषुमिधासमिद्धऽउतबर्हिर्हविषियाविस्तृणीतां ॥ उतद्वारुश
 तीर्विश्रयंतामुतद्वैवाँऽउशानऽआवहह ॥ अद्यामुरीययदियातुधानोऽअस्मियदिवायुस्ततपुरुषस्य
 अथासवीरैर्दशमिर्वियूयायोमामोषुधानुधानेर्याह ॥ अष्वर्योद्वावयात्वंसोमभिद्रः पिपासतिउपनूनं
 युयुजेष्टर्षणाहरीऽआर्चजगामदृत्रहा ॥ अथिदूतंपुरोदधेहववाहमुपब्रुवे ॥ देवाँऽअसादयाद्विह ॥
 अथेबाधस्वविष्टोविदुर्गहापामीवामपरक्षांसिसेध ॥ अस्मात्समुद्राद्ब्रह्मह्नोदिवोनोपांमूमानमुपनःसह
 जेह ॥ २ ॥ विश्वेत्तानेसवनेषुप्रवाच्यायाचुकर्थमघवन्निद्रसुन्वते ॥ पारवतुंयत्पुरुसंमृतं वस्त्राद्य

णोःशुभायऽऽकापिबंधवे ॥ ३ ॥ उपाकरणमंत्राः ॥ यज्ञोपवीतंपरमंपवित्रंप्रजापतेर्यत्सहजंपुरस्ता
 त् ॥ आयुष्यमृद्यप्रतिमुचशुभ्रंयज्ञोपवीतंब्रह्मस्ततेजः ॥ १ ॥ हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाया
 संजातःकश्यपोयास्त्रिद्वेः अग्निंयागभेदधिरेविरूपास्तान्ऽआपःशश्वोनाभवंतु ॥ यामाऽराजा
 वरुणोयातिमध्यसत्यान्तेऽअवपश्यन्जनानां ॥ मधुश्चतुःशुचंयोयाः पावकास्तान्ऽआपःशश्वो
 ना० ॥ यामादिवादिःविकृण्वीतिसंक्षयाऽअंतरिक्षेयहृद्यामवति ॥ याः पृथिवी पर्यसोदंतिशुक्रास्तान्
 आपःशश्वो ॥ शिवेनमाचक्षुपापशयनापःशिवयांतुनोपस्पृशतत्वचमे ॥ सर्वाऽअग्नीऽरप्सुयदो
 हुवेवोमधिवर्चाबलमोजोनिधत्त ॥ पवमानुःसुवर्जनः ॥ पवित्रेणविचर्षिणिः ॥ यःपोतासर्धुनातुमा ॥
 पुनंतुमादेवजनाः ॥ पुनंतुमनवोधिया ॥ पुनंतुविश्वेऽआयवः ॥ जातैवदःपवित्रवत् ॥ पवित्रेणपुनाहिमा ॥
 शुक्रेणदेवदीद्यत् ॥ अश्रेकत्वाकृतुः ॥ यत्तेपवित्रंमूर्ध्नि ॥ अग्नेविततमंतरा ॥ ब्रह्मतेनपुनीमहे ॥
 उसाभ्यदिवसवितः ॥ पवित्रेणसर्वेनच ॥ इदंब्रह्मपुनीमहे ॥ विश्वदेवीपुनतीर्धव्यागात् ॥ यस्यैव

ह्रीस्तुवोवीतपुष्पाः ॥ तयामदतःसधमाद्येषु ॥ वयस्स्यामपतयोर्यीणां ॥ वैश्वानरोरश्मिभिर्मापु
 नातु ॥ वातःप्राणेनेषिरोमयोमः ॥ द्यावापृथिवीपथसापयोमिः ॥ कृतावरीयज्ञियैमापुनीतां ॥
 बृहद्भिःसवितस्त्वमिः ॥ वषिष्ठदेवमन्ममिः ॥ अग्नेदक्षैःपुनाहिमा ॥ येनेद्विनाऽअपुनत ॥ येनावो
 दिव्यंकशः ॥ तेनेदिव्येनब्रह्मणा ॥ इदं ब्रह्मपुनीमहे ॥ यःपावमानीरुध्येति ॥ कर्षिभिःसंभृतंरसं ॥
 सर्वंरसपुतमंश्रान्ति ॥ स्वदितंमातरिर्श्वना ॥ पावमानीर्योऽअुध्येति ॥ कर्षिभिःसंभृतंरसं ॥ तस्मै
 सरंस्वतीदुहे ॥ क्षीरसार्षिर्भूदूदकं ॥ पावमानीःस्वस्वयनीः ॥ सुदुघाहियस्वतीः ॥ कर्षिभिःसं
 भृतोरसः ॥ ब्राह्मणेष्वमृतंरहितं ॥ पावमानीदिशतुनः ॥ इमंलोकमथोऽअमुं ॥ कामान्त्समंर्धय
 तुनः ॥ देवीदिवैःसमामृताः ॥ पावमानीःस्वस्वयनीः ॥ सुदुघाहियुतश्रुतः ॥ कर्षिभिःसंभृतोर
 सः ॥ ब्राह्मणेष्वमृतंरहितं ॥ येनेदेवाःपुवित्रेण ॥ आत्मानंपुनतेसदा ॥ तेनेसहस्रधारेण ॥ पाव
 मान्यःपुनंतुमा ॥ प्राजापत्यंपुवित्रं ॥ शतोद्यांमंरहिरणमयं ॥ तेनेब्रह्मविदोवयं ॥ पुतंब्रह्मपुनीम

हे ॥ इंद्रः सुनीतीसहस्रापुनातु ॥ सोमः स्वस्त्यावरुणः सुमीच्या ॥ यमोरजाप्रमृणाभिः पुनातुमा ॥
 जातवामजुर्न्यस्यापुनातु ॥ १ ॥ भूरग्निचपृथिवीचमां च ॥ त्रींश्र्लोकान्तसवत्सं च ॥ प्रजाप
 तिरूत्सासादयतु ॥ तयदिवतंयांगिरस्वडुवासीद ॥ भुवोवापुंचांतरिक्षं चमां च ॥ त्रीं प्र० त० ॥ स्वरा
 दित्यंचदिवंचमां च ॥ त्रीं प्र० त० ॥ भूर्भुवः स्वश्चंद्रमसंचदशिश्रमां च ॥ त्रीं प्र० त० ॥ २ ॥ सद्यो
 जातंप्रपद्यामिसद्योजातायैव नमोनमः ॥ भवेमवेनातिमवेमवस्वमां भुवोर्द्धवायुनमः ॥ वामुदेवाय
 नमोज्येष्ठायुनमः श्रेष्ठायमौरुद्रायुनमः कालायुनमः कलविकरणायुनमो बलविकरणायुनमो बलायुनमो
 बलप्रमथनायुनमः सर्वभूतदमनायुनमो मनोन्मनायुनमः ॥ अघोरैभ्यो थघोरैभ्यो घोरघोरैतेभ्यः ॥ स
 र्वेभ्यः सर्वशैर्भ्यो नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ तत्पुरुपायविद्महे महो देवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रः प्र
 चोदयात् ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवो मेऽस्तु
 सदाशिवो ॥ ३ ॥ इ.उ.प्र.स० ॥ अथ भुवनेश्वरी मंत्राः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी

महि ॥ धियो योनः प्रचोदयात् ॥ गंध० आप्या० दधि० ॥ शुक्रमसिज्योतिरसितेजोसि ॥ देव०
 आपो० ॥ शुची० स्वस्त्य० ॥ १ ॥ सप्तिवाजं भरुंददातिवीरं श्रुत्य कर्मनिष्ठां ॥ रोदसी विचरत्समं
 जन्मारीवीरकुक्षिपुरंधि ॥ अमसः समिदंस्तु भद्रामहीरोदसीऽआविवेश ॥ एकंचोदयत्समत्सुदृत्राणि
 दयतेपुरूणि ॥ हत्यंजरंतः कर्णमावाद्भयो निरंदहज्जरुथं ॥ अत्रिचर्मऽउरुष्यदंतनुभं प्रजयात्सृजत्सं ॥
 द्राघ्विणवीरपेशाऽऽकर्षियः सहस्रासनीति ॥ द्विविहव्यमाततानधामानि विभृतापुरुत्रा ॥ उक्थैर्कृष
 यो विह्वयते नरो यामनिवाधितासः ॥ वयोऽअंतरिक्षेपततः सहस्रापरियातिगोनां ॥ विशोऽईकतेमानु
 पीर्यामनुषो नहुषो विजाताः ॥ गांधर्वापृथ्यामृतस्युगव्यूतिर्धृतऽआनिषत्ता ॥ ब्रह्मऽऽक्रभवस्तत्क्षुमं
 हामवोचामासुवृत्ति ॥ प्रावजरितारंयविष्टमहिद्विषिणमार्यजस्वं ॥ २ ॥ अग्निः सप्तिवाजं भरुंददात्य
 श्रिवारं श्रुत्य कर्मनिष्ठो ॥ अग्नीरोदसी विचरत्समं जन्मनिरीवीरकुक्षिपुरंधि ॥ अग्नेरमसः समिदंस्तु
 द्राशिमहीरोदसीऽआविवेश ॥ अग्निरेकंचोदयत्समत्सुदृत्राणि दयतेपुरूणि ॥ अग्निहृत्यंजरंतः

कर्णभावाग्रिर्द्योनिरेदहज्जरुथं ॥ अग्रिर्त्रिघर्मऽडरुष्यदंतरग्रिर्नमधप्रजयोसृजत्सं ॥ अग्रिर्द्रो
 द्विषणवीर्येशाऽअग्रिर्कपियःसहस्रासनीति ॥ अग्रिर्द्विहृव्यमाततातानाश्रेथामानिविभृतापुरुत्रा ॥
 अग्रिमुक्थैर्कपयोविह्वयतेग्रिनरोयामनिवाधितासः ॥ अग्रिवयोऽअंतरिक्षेपततोभिःसहस्रापरियाति
 गोनी ॥ अग्रिविशऽइकतेमानुषीर्याऽअग्रिमनुपोनहुंपोविजाताः ॥ अग्रिर्गोर्धवीपुथ्यामृतस्यामेग
 द्युतिघृतऽआनिपता ॥ अग्रयेब्रह्मकृमवस्ततछुराग्रिमहामवोचामासुवृत्किं ॥ अश्रेप्रावज्रितारंयवि
 द्याश्रेमहिर्द्रवैणमायंजस्व ॥ ३ ॥ अमुनीतिपुनरस्मासुचक्षुः पुनःप्राणभिहृनोधिहृमोगं ॥ ज्यो
 क्पश्येमसूर्यमुच्चरंतमनुमतेमृळयानःस्वस्ति ॥ चत्वारिवाक्परिमितापदानितानिविदुर्ब्राह्मणायमं-
 नीषिणः ॥ गुहान्नीणिनिहितानेयंतितुरीयवाचोसनुष्यावदति ॥ ४ ॥ प्रसुवंऽआपोमहिमानंमुत्त-
 मंकारुर्वोचातिसदनेविवस्वतः ॥ प्रसुसंसंश्रेधाह्विचक्रमुःप्रसूत्तरीणामतिसिधुरोजसा ॥ प्रतेरदृढ
 रूणोयातवेपथः सिधोयहाजौऽअभ्यद्रवस्त्वं ॥ भूम्याऽअधिप्रवतायासिसानुनायेदपामग्रंजगता-

मिर्ज्यसि ॥ द्विविस्वुनोर्यततेभूम्योपर्यनंतशुष्ममुदियतिमानुना ॥ अत्रादिवप्रस्तनयंतिवृष्टयः
 सिंधुयदेतिवृषभोनरोरुवत् ॥ अमित्वासिंधोशिशुमिचमातरोवाश्राऽअर्षतिपयंसेवधेनवःराजेव्यु
 ध्वानयसित्वमित्सिचौयदासामग्र्यप्रवतामिनक्षसि ॥ इमंमैंगेयमुनेसर० ऋक् १ ॥ ५ ॥ तृष्टामं
 धाप्रथमंयातवेस्रजूःसुसत्वारसयांश्वेत्याया ॥ त्वंसिंधोकुभंयागोमर्ताकुमुमेहत्वासरथंयासिरीयसि ॥
 ऋजीत्येनीरुशतीमहित्वापरिज्वर्यांसिमरतेरजांसि ॥ अदंब्यांसिंधुरपसांसपस्तमाश्वानचित्रावपुषी
 वदर्शता ॥ स्वश्वसिंधुःसुरथांसुवासांहिरण्ययीसुहृतावाजिनीवती ॥ ऊर्णावतीयुवतिःसील
 मावत्युताधिवस्तेसुभगांमधुवृधं ॥ सुखंरथयुयुजेसिंधुरश्विनंतेनवाजैसनिषदस्मिन्नाजौमहान्दस्य
 महिमापनुस्यतेदंब्यस्यस्वयंशसोविरप्शिनः ॥ ६ ॥ याः प्र० ॥ हिरण्यवर्णाहिरिणिसुवर्णरज
 तस्रजां ॥ चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोममावह ॥ ताम्ऽआवहजातवेदोलक्ष्मीमलंपगामिनीं ॥
 यस्यांहिरण्यंविदियुगामश्वंपुरुषानहं ॥ अश्वपूर्णार्यमध्यांहस्तिनादप्रमोदिनीं ॥ श्रियंदेवीमुप

ह्ये श्रीमदिवीर्जुपतां ॥ कांसोस्मितांहिरण्यप्रकारांमार्द्राज्वलतांतृसांतर्पयतीं ॥ पद्मेस्थितांपद्म
 वर्णानामिहोपह्वयेश्रियं ॥ चंद्रांप्रसासांशसाज्वलतींश्रियंलोकैकेवजुषामुदारां ॥ तांपद्मनेमि
 शरणमंहंपद्येअलक्ष्मीमिनश्यतांत्वांष्टणोमि ॥ १ ॥ आदित्यवर्णेतप्रसोधितावनस्पतिस्तवंबृहो
 थबिल्वः ॥ तस्यफलांनितपसानुदंतुमायांतरायाश्रंवाद्याऽअलक्ष्मीः ॥ उपेतुमादिवसख.कीर्तिश्च
 मणिनासह ॥ प्रादुर्भूतोसुराद्रेस्मिन्कीर्तिद्यद्विददानुमे ॥ क्षुत्पिपासामंलाज्येष्ठाऽअलक्ष्मीर्नाशया
 म्यहं ॥ अभूत्तिसंसृद्धिचसर्वाणिर्णुदेमगृहात् ॥ गंधद्वारांदुराधर्षानित्यपुष्टांकरीपिणीं ॥ ईश्वरीं
 सर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियं ॥ मनसःकाममाकूतिंवाचःसत्यमंशीमहि ॥ पशूनांरूपमन्यस्यम
 धिश्रीःश्रयतांयशः ॥ २ ॥ कर्दमेनप्रजामुतामधिसंभ्रमकर्म ॥ श्रियंवासायमेकुलेमातरंपद्ममालि
 नीं ॥ आपःखजंतुस्त्रिग्यांनिचिक्लीतवसंभृते ॥ नीचदेवींमातरंश्रियंवासायमकुले ॥ आर्द्रांपु-
 ष्करिणींपुष्टिसुवर्णहिममालिनीं ॥ सूर्याहिरण्यधींलक्ष्मींजानवेदोममावंह ॥ आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टि-

पिङ्गलोपद्ममालिनीं ॥ चंद्राहिरण्यमर्थां लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥ तांमऽआवह जानवेदो लक्ष्मीं भ-
 लंपगामिनीं ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूर्तिगावो दास्यो श्वान्विदेयं पुरुषानहम् ॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहु-
 यादाज्यमन्वहं ॥ सकंपंचदशर्ची च श्रीकामः स तु तं जपित् ॥ ३ ॥ इ० श्रीसूक्तं ॥ अथ रुद्रसूक्तानि ॥ क-
 द्द्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टं मायतव्यसे ॥ वोचेम शंतमंहृदे ॥ यथानोऽआदितिः कर्त्तृष्वे नृभ्यो यथा ग-
 वे ॥ यथानो कारुद्रिद्यं ॥ यथानो मित्रोवरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति ॥ यथा विश्वे स जोषसः ॥ गाथ-
 पतिमेधपतिरुद्रं जलाषभेपजं ॥ तच्छंयोः सुप्रमीमहे ॥ यः शुकऽइव सूयो हिरण्यमिव रोचते ॥ श्रे-
 ष्ठादिवानुवसुः ॥ १ ॥ शंनः कर्त्तृवते सुगं मे पायमिष्ये ॥ नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ अस्मे सोम श्रियम-
 धिनिर्धेहि शतस्य नृणां ॥ महि श्रवस्तु विनुष्णं ॥ मानः सोम परिबाधो मारत योजुहु रंत ॥ आनं इदो-
 वा ज्ञेभज ॥ यास्ते प्रजाऽअमृतस्य परस्मिन् धाम नृतस्य ॥ मूर्धानामासो मवेनऽआभूषतीः सोमवे-
 दः ॥ २ ॥ १ ॥ ॥ इमा रुद्राय तव सेकपार्दिने क्षयद्वाराय प्रभं रामहे मतीः ॥ यथाशमसं द्विपदे चतुष्प-

देविश्वंपुष्टंप्राप्तैऽमुस्मिन्ननंतुरं ॥ मूळानोरुद्रोनोमयस्कृधिन्नयर्द्दुर्गायनमंसाविश्रमते ॥ यच्छं च्योश्च
 मनुरायेजेपितातदश्यामनवरुद्रप्रणीतिपु ॥ अश्यामतेसुमतिदेवयज्ययाक्षयर्द्दुरस्यतवरुद्रमीद्वः ॥
 सुम्नायन्निद्विशोऽअस्माकमाचरारिष्टवीराजुहवामतेहृविः ॥ त्वेपंव्यरुद्रयज्ञासाधंवंकुं कविमवसेनि
 ह्वयामहे ॥ आरेऽअस्मद्वैव्यहेळोऽअस्यतु सुमतिमिद्वयमस्याष्टणीमहे ॥ द्विवोवंराहमरुंपकंपर्दिने
 त्वेपंरुंपनमसानिह्वयामहे ॥ हस्तेविश्रंभेपुजावार्याणिशर्मवर्मच्छर्दिस्मभ्यंयसत् ॥ १ ॥ इदंपित्रे
 मरुतामुच्यतेवचःस्वादोःस्वादीयोरुद्रायवर्धनं ॥ रास्वाचनोऽअमृतमर्तमोजनं त्मनेतोकायतनं
 यायमृळ ॥ मानोमहंतंमृतमानोऽअर्मकमानोऽउक्षंतमुनमानंऽउक्षितं ॥ मानोधधीःपितरंभोत
 मातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिपः ॥ मानंस्तोकितनयेमानुऽआर्यैमानोगोपुमानोऽअश्वेपुरीरिपः ॥
 वीरान्मानोरुद्रसामितोवधीर्हविर्भंतःसदमित्वाह्वामहे ॥ उपतेस्तोमान्पशुपाड्वाकरंरास्वापितमरु
 तांसुमस्मे ॥ मद्राहितैसुमतिमृळ्यत्तमाथव्यमवुऽइत्तेह्वणीमहे ॥ आरेतैगोम्रमुनपूरुपुत्रंक्षयर्द्दीर

सुभ्रमस्मेतैऽअस्तु ॥ मूळार्चनोऽअधिचन्द्रहिदेवाथाचनःशर्मयच्छद्विबर्हाः ॥ अर्वाचामनमोऽअस्मा
 ऽअवस्यवःशृणोतुनोहर्वरुद्रोमरुत्वान् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहन्तामर्दिःसिंधुःप्रथिवीऽउत-
 द्यौः ॥ २ ॥ इ. सूक्तं ॥ ॥ आतेपितमरुतासुभ्रमेतुमानःसूर्यस्यसंहशोयुयोथाःअग्निनो
 वीरोऽअर्वतिक्षमेतप्रजायेमहिरुद्रप्रजाभिः ॥ त्वादत्तेभीरुद्रशंतमेभिःशतंहिमाऽअशीयमेषुजेभिः ॥
 व्य१स्मद्वेषोवितरंभ्यंहोव्यमीवांश्रातयस्वाविषूचीः ॥ श्रेष्ठोजातस्यरुद्रश्रियासितवस्तमस्तवसांविज
 बाहो ॥ पर्षिणःपारमंहसःस्वस्तिविश्वाऽअमतीरपसोयुयोधि ॥ मात्वारुद्रचक्रुथामानमोभिमार्ढुः
 हुतीवृषभमासहूती ॥ उन्नोवीरोऽअर्पयमेषुजेभिर्मिषक्तंत्वाभिषजांशृणोमि ॥ हवीममिह्वतेयो
 हविर्मिर्वस्तोमैभीरुद्रदिषीय ॥ कद्रुदरःसुषवोमानोऽअस्यैवश्रुःसुशिप्रोरीरथन्मनार्थे ॥ १ ॥ उ-
 न्माममंदवृषभोमरुत्वान्त्वक्षीयमावयसानार्थमानं ॥ घृणीवच्छायामरपाऽअशीयाविवासेयंरुद्र
 स्यसुभ्रं ॥ कं१स्यतेरुद्रमृळयाकुहस्तोयोऽअस्तिभेषजोजलाषः ॥ अपमर्तारपसोदैव्यस्यामी

नुमावृषमचक्षमीथाः ॥ प्रवृत्र्वेवृषभार्यश्वितीचिमहोमर्होषुष्टुतिभारयाभि ॥ नमस्याकल्मली
 किन्नमोसिर्गुणीमसित्वेपरुद्रस्यनाम ॥ स्थिरेभिरगैःपुरुरूपऽउग्रोबभ्रुःशुकेभिः पिपिशे
 हिरण्यैः ॥ ईशानादस्यभुवनस्यसुरैर्नवाऽउयोपद्रुद्रादसुर्ध ॥ अर्हन्विमपिसायंकानिधन्वाहन्त्रिष्कं
 यजुतंविश्वरूपं ॥ अर्हन्त्रिदंदयसेविश्वमभ्वंनवाऽओजीयोरुद्रत्वदस्ति ॥ २ ॥ स्तुद्धिश्रुतंगतिसदंयुवां
 नंमृगंभीममंपहत्सुमृगं ॥ मृळार्जरित्रेहंरुद्रस्तवानोन्यतेऽअस्मन्निवंपंतसेनाः ॥ कुमारश्चित्पितरं
 वंदमानंप्रतिनानामरुद्रोपुयंतं ॥ मुरैर्दातारंसत्यनिगुणीपेस्तुतस्त्वमैपुजारास्यस्मे ॥ यावोमैपुजा
 मरुतःशुचीनिन्याशंतमाद्यपणोयामयोभु ॥ यानिमनुष्यणीतापितानुस्ताशंचयोश्चरुद्रस्यवस्मिपरि
 णोहितीरुद्रस्येष्ट्याःपरित्वेपस्यदुर्मतिर्महीगान् ॥ अवंस्थिरामुषवन्द्यस्तनुष्वमीदृस्त्रोकायुतनया
 यमृळ ॥ एवावभ्रोद्यषमचेकितानुयथादेवुनहृणीपेनर्हसि ॥ हवन्श्रुत्रोरुद्रेहवोधिबृहद्वेमविदथे
 सुवीराः ॥ ३ ॥ इ. सू. ॥ इमारुद्रार्यस्थिरधन्वनेगिरःसिप्रपवेदेवायस्ववात्रे ॥ अपांल्लहायस

हंमानायेवेधेतिगमारुधायभरताशृणोतुनः ॥ सहिक्षयेणक्षम्यस्यजन्धनःसाम्नाज्येनदिग्मस्यचे
 तंति ॥ अवन्नवतीरुपनोदुरश्वरानमीवोरुद्रजासुनोभव ॥ यानेदिद्युदवस्तृष्टादिवस्परिक्षमयाचरति
 परिसाष्टणकुनः ॥ सहस्रंतेस्वपिवातभेषजामानस्तोकेषुतनयेषुरीरिषः ॥ मानोवधीरुद्रमापरादामा-
 तेभूमप्रसिनौहीळितस्य ॥ आनोभजब्रह्मिषीवशसैस्यथपां० ॥ १ ॥ आवोरानानमध्वरस्यरुद्रंहो-
 तारिसत्यजरोदस्योः ॥ अधिपुरातंनयितोरचित्ताद्विरंणयरूपमवसेकृणुध्वं ॥ तमंष्टुहियःस्त्रिपुः
 सुधन्वायोविश्वस्यक्षयतिभेषजस्य ॥ यक्ष्वामहेसौमनसाथरुद्रंनमोमिन्द्रवमसुरंदुवस्य ॥ भुव०
 न्यै० शंन० शांताधु० ॥ अथगर्भाधानोक्तमंत्राः ॥ ॥ देवीवाचमजनयंतदेवास्तांवि-
 श्वरूपाःपशवोवदति ॥ सानोमंद्रेषमूजुंदुहानाधेनुवर्गिस्मानुपसुष्टुतनु ॥ प्रत्यवरोहजातवेदःपुनस्त्वं
 देवभ्योहृद्व्यवहनःप्रजापृष्टिरयिमस्मासुधेस्यथामवयजसानायशंयोः ॥ अयंतेयोनिर्ऋत्वियोऽथनो-
 जातोऽअरोचथाः ॥ तजानन्नमऽआसीदाथानोवर्धथांगिरः ॥ १ ॥ विष्णुर्योनिंकल्पयतुत्वष्टा

॥ आसिं च नु जप जाप नि र्थाता ग म ई द चानुने ॥ ग म ई देहि सि नी वा लि ग म ई च हि स र स्व ति ॥
 रूप गि वि रा नु ॥ अ सिं च नु जप जाप नि र्थाता ग म ई द चानुने ॥ ग म ई देहि सि नी वा लि ग म ई च हि स र स्व ति ॥
 ग म ई देहि वा वा र्थं तुं पुं क र ल जा ॥ हि र ण य वी अ र णी च नि र्म थं नो ऽ अ श्वि नां ॥ तं ते ग म ई ह वा म
 दे द श मे मा सि सू त वै ॥ २ ॥ ने ज भे पु प रां प त पुं त्रः पु न रा प त ॥ अ स्वै र्मे पु त्र रु मा थै र्ग म ई मां त्रे हि यः पु मां च ॥
 य थै यं पृ थि वी म षुं चाना ग म ई मा दृ धे ॥ ए वं नं ग म ई मा धे हि द श मे मा सि सू त वै ॥ वि ष्णोः श्रे ष्ठे न हू वे णा स्त्रां ना
 य र्ग वी न्यां ॥ पु मां सं पु त्रा ना धे हि द श मे मा सि सू त वै ॥ ३ ॥ प्र जा प ते ० ॥ अ पं ० ॥ प्र य ङ्गं दि ष्ठ ऽ ए वं प्रा
 रु धिं ॥ अ पं नः शो शुं च द्र वं ॥ मु क्षे त्रि या षुं गा तु या र्थं स या च य जा म हे ॥ अ पं ० ॥ प्र य ङ्गं दि ष्ठ ऽ ए वं प्रा
 र्मा को स श्व सू र यः ॥ अ पं ० ॥ प्र य तै ऽ अ ने सू र यो जा ये म हि प ते त्र यं ॥ अ र्गं ॥ प्र य द श्रे स हं स्व तो वि
 श्व तो यं ति मा न र्वः ॥ अ पं नः शो शुं ॥ त्वं हि विं ख नो मु व विं ख तः प रि मु र सि ॥ अ र्गं ॥ हि वे नो वि श्व
 तो मु खानि ना वे व पा र य ॥ अ पं ० ॥ स नः सिं धु मि व ना व या ति प र्पां स्तु स न ये ॥ अ पं ० ॥ ४ ॥ याः क
 लि नी र्थां ० ॥ वि धे न द स्युं प्र हि चा त र्थं स्तु व यः क ण वा न स नु न्ने षुं स्वा थै ॥ वि प पि र्थ त्त ह स पु त्र त्रे वा न् सो ऽ अं धे

पाहिनृतमवाजैऽअस्मान् ॥ वयंतेऽअग्रऽउक्थैर्विधेमवयंहव्यैःपावकमद्रशोचे ॥ अस्मेरार्थेविश्ववारं
 सामिन्वास्मेविश्वानिद्रविणानिधेहि ॥ अस्माकमग्नेऽअध्वरंजुषस्वसहसःसूनोत्रिषधस्थहव्यं ॥ वयंदेवेषु
 सुकृतःस्यामशर्मणानखिवरूथेनपाहि ॥ विश्वानिनोदुर्गहाजातवेदःसिंधुननावादुरितातिपर्षि ॥ अग्नेऽअ
 त्रिवचमसागुणानोऽस्माकंबोधयवितातनूना ॥ यस्त्वाहदाकीरिणामन्यमानोमर्त्यमर्त्योजोहवीमि ॥
 जातवेदोयशोऽअस्मासुधेहिप्रजाभिरग्नेऽमृतत्वमश्यां ॥ यस्मैत्वं० ऋक् ॥ अग्निस्तु० क०२ सूर्यो
 नोदि०वर्ग ॥ १ ॥ ॥ उदीर्ष्वालःपतिवतीत्येऽपाविश्ववसुंनमसागीभिरीळे ॥ अन्याभिच्छपि
 तृषद्व्यक्तांसतेभागोजनुषातस्यविद्धि ॥ उदीर्ष्वालोविश्ववसोनमसेळामहेत्वा ॥ अन्यामिच्छप्र
 फूर्व्यं ॥ संजायांपत्यांसुज ॥ तांपूषच्छिवतमामेरेयस्वयस्याबीजंमनुष्याऽवपति ॥ यानऽऊरुऽउ
 शतीविश्रयतियस्यामुशंतःप्रहरामुशेपं ॥ योगर्ममो० ऋ० ॥ अहंगर्ममदधामोषधीष्वहंविश्वेषुसुवने
 ष्वंतः ॥ अहंप्रजाऽअंजनयंपृथिव्यामहंजनिभ्योऽअपरीपुंपुत्रान् ॥ ६ ॥ इंद्रोऽअंगमहद्भयममीषद

पंचुच्यवत् ॥ सहिस्थिरोविचर्षिणः ॥ इंद्रश्चमृळ्यातिनो ननः पश्चाद्वर्चनं शत् ॥ ऋद्रं भवाति नः पुरः ॥ इंद्र
 आशाभ्यस्परि सर्वाभ्योऽअसंयंकरत् ॥ जेताशत्रुन्विचर्षिणः ॥ १ ॥ इति गप्ती धानमंत्राः ॥ अथ पुंसवनान
 वलोकनसीमंतोन्नयनमंत्राः ॥ अतिगर्भो धो निमैतु पुमान्वाण इवेपुधि ॥ आवीरो जायतां पुत्रस्ते दशमा
 स्वः ॥ अग्निरैतु प्रथमो देवतानां सोस्यै प्रजां मुंचतु मृत्युपाशात् ॥ तदयं राजा वरुणो नु मन्यतां ये यं स्त्रीपौत्र
 मधं नरोदात् ॥ धाता ददातु दाशुपे प्राची जीवातु मक्षिता ॥ वयं देवस्य श्रीमहिमुमतिं वाजिनीवतः ॥ धा
 ता प्रजानां मृत रायऽईशे धाते दं विश्वं मुर्वनं जजानं ॥ धाता कृष्टी रनिमिपाभिचष्टे धात्रऽइद्व्यं धृतव
 ज्जुहेत ॥ राकामहं सुहवीं सुष्टुनीं दुवे शृणोतु नः सुमगावोधं तुत्मना ॥ सीद्व्यत्त्वर्षः सूच्याच्छिद्यमानया
 ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यं ॥ यास्ते राके सुमतयः सुपेशो या मिर्ददासि दाशुपे वर्सूनि ॥ तामिनींऽअद्य सु
 मनोऽप्यागं हिसहस्रपोपं सुमगेराणा ॥ १ ॥ नेजं ३ ॥ प्रजां ० ॥ यत्ते सुशीमे हृदये हितमंतः प्रज
 पतौ ॥ मन्धेहं मांतद्विहांसं माहंपौत्रमबंधनियां ॥ सोमं राजानं संगायतां ॥ सोमो नो राजा वतुमानुपीः

प्रजानिविष्टचक्रसौ ॥ २ ॥ इतिपुंसव०समा० ॥ अथजातकर्ममंत्राः ॥ प्रतेददासिमधुनोघृ
 तस्यवेदंसवित्राप्रसूतंमघोर्नां ॥ आयुष्मान्गुप्तोदेवताभिःशतंजीवशरदोलोकैऽअस्मिन् ॥ मेधांते
 देवःस०स्रजा ॥ अश्माभवपरशुर्मवहिरण्यमस्तृतंभव ॥ वेदोवैपुत्रनामासिसजीवशरदःशतं ॥ इंद्र
 श्रे०क० ॥ अस्मेप्रथंमिभबवन्बृजीषिन्निद्रायोविश्ववारस्यमूरेः ॥ अस्मेशतंशरदांजीवसैधाऽअ
 स्मेवीरान्छश्वतऽइंद्रशिप्रिन् ॥ अंगादंगात्संभवसिस्टदयादधिजायसे ॥ आत्मावैपुत्रनामासिसजीव
 शरदःशतं ॥ इमांकुमारोजरांधयतुदीर्घमायुःप्रजीवसे ॥ अस्यैस्तनौप्रयुंजानांआयुर्वर्चोयशोबलं
 ॥ तमर्वतं० ॥ १ ॥ इतिजातक० ॥ ८ ॥ नामकरणनिक्रमणान्प्रशानचौलमंत्राः ॥ गौरीर्म० ॥
 तदस्तु० गृहवै० ॥ अन्नपूतेन्नस्यनेधिह्यनमीवस्यशुष्मिणः ॥ प्रप्रंढातारंतारिषुऽऊर्जनोधेहिद्विद्विपदेच
 तुष्पदे ॥ अग्नऽआयूर्विपवसऽआसुवोर्जमिर्बचनः ॥ अरेबांधस्वदुचुर्जुनां ॥ अग्निर्कृषिःपर्वमानः
 पांचजन्यःपुरोहितः ॥ तमीमहेमहागुणं ॥ अग्नेपर्वस्वस्वपांऽअस्मेवर्चःसुवोर्ध ॥ दधंद्रयिमथिपोषं ॥

प्रजा० ॥ अदितिः केशान्वपत्वापऽउदंतुवर्चस ॥ और्षधेत्रायसैनं ॥ स्वधित्नेभैर्नहिंसीः ॥ १ ॥ येनावप
 त्सविताक्षुरेणसोमस्युराज्ञोवरुणस्यविद्वान् ॥ तेनब्रह्माणोवपतेदमुस्यायुःमान्जुर्दप्रिर्धथासन् ॥ येन
 धाताबृहस्पतेरश्रैरिंद्रस्युचार्युपेवत् ॥ तेनतऽआयुपेवपाभिसुश्लोकप्रप्रस्वस्तये ॥ येनसूर्यश्चरा
 त्यांज्योक्चंपशयात्सूर्यं ॥ तेनतऽआयुपेवपाभिसुश्लो० ॥ प्रच्छिद्यप्रच्छिद्यं प्रागयाच्छमीवर्णैः सहमा
 त्रेप्रयच्छति तानानहुहेगोमयेनिदधानि ॥ यत्सुरेणमर्चयतासुपेशंसावसावपसिकेशान् ॥ शुंधिशिरो
 मास्यायुःप्रमोषीः ॥ ८ ॥ ॥ इतिनामक० सहचौलमंत्राः समासाः ॥ ॥ अथोपनयनमंत्राः ॥
 येयुज्ञेत्तदक्षिणयासमंक्त्वाऽइंद्रस्यसख्यममृतत्वमानुश ॥ तेभ्योभुद्रमंगिरसोवोऽअस्तुप्रतिगृणीत
 मानवंसुभेधसः ॥ यऽउंदाजन्पितरोगोमयुवंस्वतेनाभिंदनपरिवत्सरेवल् ॥ दीर्घायुत्वमंगिरसोवोऽअ
 स्तुप्रतिगृ० ॥ यऽऋतेनसूर्यमारोहयन्दिव्यमंथयन्पृथिवीमातरंवि ॥ सुप्रजास्त्वमंगिरसोवोऽअस्तु
 प्र० ॥ अयंनामावदतिवल्गुवोगृहेदेवपुत्राऽऋपयस्त्वच्छृणोतन ॥ सुब्रह्मण्यमंगिरसोवोऽअस्तुप्र० ॥

विरूपासऽइदृषयस्तऽइद्वंभीरवेषसः ॥ तेऽअंगिरसःसूनवस्तेऽअग्नेःपरिजज्ञिरे ॥ १ ॥ येऽअग्नेःपरि
 जज्ञिरेविरूपासोदिवस्परि ॥ नवंग्वोनुदशंग्वोऽअंगिरस्तमःसचादिवेषुमंहते ॥ इंद्रेणयुजानिःसृजंतवा
 घतोऽजंगोमंतमश्विनं ॥ सहस्रैमिददंतोऽअष्टकर्ण्यःश्रवोदिवेष्वंक्रत ॥ प्रनूनंजायतामयमनुस्तोक्मो
 वरोहतु ॥ यःसहस्रंशताश्वंसद्योदानायमंहते ॥ नतमश्रोतिकश्चनदिवऽइवसान्वारभं ॥ सावर्ण्यस्य
 दक्षिणाविसिंधुरिवपप्रथे ॥ उतदासापरिविषुस्मद्विष्टीगोपरीणसा ॥ यदुस्तुर्वश्रमामहे ॥ सहस्रदा
 ग्रामणीमार्षिषन्मनुःसूर्यणास्ययतमनैतुदक्षिणा ॥ सावर्णेदेवाःप्रतिरंत्वायुर्यस्मिन्नश्रान्ताऽअसनाम
 वाजं ॥ २ ॥ परावतोयेदिधिषंतुऽआप्यंमनुंप्रीतासोजनिमाविवस्वतः ॥ ययात्रैर्येनहुष्यस्यब्रह्मिषि
 देवाऽआसतेतेऽअधिभुवंतुनः ॥ विश्वाहिवोनमस्यानिवंचानामानिदेवाऽउतयज्ञियानिवः ॥ येस्थजा
 ताऽअदिनेरुद्यस्परिपृथिव्यास्तेमऽइहश्रुताहव ॥ येभ्योमातामधुमत्पिन्वत्पयःपीयूषंद्यौरदि
 तिरद्विबर्हाः ॥ उक्थशुष्मान्दृषभरान्स्वमंसस्ताऽआदित्याऽअनुमदास्वस्तये ॥ नृचक्षसो

ऽअनिमिपंतोऽअर्हणावृह्वेवासोऽअमृतत्वमानशुः ॥ ज्योतीरथाऽअहिमायाऽअनागसोदि
 वोवृष्माणवसतेस्वस्तये ॥ सम्राजोयसुदृधोयज्ञमाययुरपरिहृतादधिरेद्विविषयं ॥ तौऽआ
 विवासनमसासुवृक्तिभिर्महोऽआदित्योऽआदितिस्व० ॥ ३ ॥ कोवस्लोमंराधतियंजुजोपथविश्वे
 देवासोमनुषोयतिष्ठनं ॥ कोवोऽध्वंरंनुविजाताऽअरंकरुधोनःपर्यदत्यंहःस्वस्तये ॥ येभ्योहोत्रां
 प्रथमामयिजेमनुःसामिद्धात्रिमनसासप्तहोतृभिः ॥ तऽआदित्याऽअभयंशर्मयच्छतसुगानःकर्त
 सुपथाःस्वस्तये ॥ यऽईशिरेशुर्वनस्यप्रचैतसोविश्वस्यस्थानुर्जंगतश्चमंतवः ॥ तेनःकृतादकृता
 देनसस्पर्युद्यादेवासःपिपृतास्वस्तये ॥ मरोष्वद्रसुहवंहवामहेहोमुचंसुहृतदैव्युजनं ॥ अधिमित्रंवरु
 णंसातयेमंगद्यावापृथिवीमृतःस्वस्तये ॥ सुत्रामाणंपृथिवीद्यामनेहसंसुशर्मणमदितिंसुमणीति ॥
 देवीनावस्वरित्रामनागसमसवंतीमारहेहमास्व० ॥ ४ ॥ विश्वेयजत्राऽअधिवोचतोतयेत्रायध्वनोदुरे
 वायाऽअभिन्दुतः ॥ सत्ययावोदिवहंत्याहुवेमशृण्वतोदवाऽअवसेस्व० ॥ अपामावामपविश्वामनाहु

तिमपारातिदुर्विदत्रामषायतः ॥ आरेदेवाद्देवोऽअस्मद्युयेलनोरुणःशर्मयच्छतास्त्रस्नये ॥ अरि
 छःसमर्तोविश्वेऽएधतेप्रमृजासिर्जायनेवर्मगस्वरि ॥ यमादित्याप्तोनयानुतीतिभिरतिविश्वानिदुरि
 तास्व० ॥यदेवासोवथवाजसातौयंशूरसातामरुनोहितेधने ॥ प्रातर्यावाणंरथमिंद्रसानसिमरिष्यंतमा
 र्हिमास्त्र० ॥स्वस्तिनःपृथगसुधन्वसुस्त्रस्त्रपुसुवृजनेस्वर्त्तति ॥ स्वस्तिनःपुत्रकृथेषुयोनिबुस्वस्ति
 राथेमरुतोदधातन ॥ स्वस्तिरिद्धिप्रपथेऽश्रेष्ठारेकणस्वत्यभियावाममेति ॥ सानोऽअमासोऽअरणेनि
 पांतुस्वावेशामन्नदुदेवगोपा ॥ एवाहुतेः मूनुरंशीद्वयद्गोविश्वंऽअदित्याऽअदिनेमनीषी ॥ इशाना
 सोनरोऽअमर्त्येनास्तान्निजोदिव्योगयेन ॥ ५ ॥ बृहस्पतेप्रथमंवाचोऽअप्रंयत्पैरतनामधेयुंदधानाः॥
 यदेषांश्रेष्ठंयदरिप्रमासीत्प्रेणातदेषांनिहितंगुहाविः ॥ सक्तुभिवृत्तितंडनापुनंतोयत्रधीरामनसावाचम
 क्रंत ॥ अत्रासखायःसख्यानिजानेनेमद्रेषांलुक्ष्मीनिहिताधिवाचि ॥ युज्ञेनवाचःपदवीयंमायुन्ताम
 न्वविदृन्मृषिषुप्रविष्टां ॥तामाभृत्याव्यदधुःपुरुत्रातांससरेमाऽअभिसनवंते ॥उतत्वःपश्यन्नददर्शवाच

मुतत्वंःशृण्वन्नशृणोत्येनां ॥ उतोत्वंस्मैनुन्वं१ विसंखेजयेवपत्वंऽउरातीमुवासाः ॥ उतत्वंसख्येस्थि
रपीतेमाहुनेनहिन्वंत्यपिवालनेपु ॥ अर्धेन्वाचरतिमायैपवाचंशुश्रुवौऽअकलामंपुष्पां ॥ १ ॥
यस्त्रित्याजसंचिविदंसखायंनतस्यवाच्यपिमागोऽअस्ति ॥ यदींशृणोत्येकंशृणोतिनुहिप्रवेदमुक
तस्युपंधां ॥ असुष्वंतःकर्णवंतःसखायोमनोजवेष्वसमात्रसूनुः ॥ आदृश्यासंऽउपकक्षासं
ऽउत्वेहृदाऽइवृश्यात्वाऽउत्वेदृहश्रे ॥ तृदातृहेपुमनसोजेवेषुप्रद्व्राह्यणाःसंयजतेसखांयः ॥ अ
त्राहृत्वंविजहुर्वेद्याभिरोहंब्रह्माणोविचरंत्युत्वे ॥ इमेयेनावर्वाङ्मनप्रश्वरंतिनब्राह्मणासोनसुतेकरासः ॥
तऽएतेवाचममिपद्यपापयासिरीस्तंत्रंतन्वतेऽअप्रजज्ञयः ॥ सर्वेनंदंतियुशासोर्गतेनसमासाहेनुसख्या
सखांयः ॥ किल्विपस्पृषितुपणिक्षीयामरंहितोमवतिवाजिनाय ॥ कृचांतःपोपमास्तेपुपुष्वांगाय
त्रंत्वोगायतिशकरीषु ॥ ब्रह्मात्वोवदंतिजातविद्यांयज्ञस्यमात्रांविभिमीतऽउत्त्वः ॥ २ ॥ भ्रुवाद्यौभ्रु
वाधृथिवीभ्रुवासःपर्वताऽइमे ॥ भ्रुवंविश्वमिदंजगद्भुवोराजाविशामयं ॥ भ्रुवंतेराजावरुणोभ्रुवंदेवोवृ

हस्पतिः ॥ घ्रुवंतऽइंद्रश्चाग्निश्चरार्ध्रार्थतांघ्रुवं ॥ घ्रुवंघ्रुवेणहविषामिसोमंमृशामसि ॥ अथोतऽइंद्रः
 केवलीविशोबलिहृतस्करत् ॥ घ्रुवंव० मित्रस्यचक्षुर्धरुणंबलीयस्तेजोयशस्विस्थविरंसमिद्धं ॥ अ
 नाहनस्यंबसनंजरिष्णुपरीदंवाज्यंजिनंदधेहं ॥ यज्ञोप० अग्रआ० प्रजा० ॥ तत्संवितुर्दृणीमहेवयं
 देवस्यभोजनं ॥ श्रेष्ठंसर्वधातंमंतुरंभगस्यधीमहि ॥ देवस्य० हस्ताभ्यांहस्तैर्गृह्णामि ॥ सविततेह
 स्तमग्रभीत् ॥ अग्निराचार्यस्तवं ॥ देवसवितरेषेतेब्रह्मचारीतंगोपायसमामृतेति ॥ मित्रस्यत्वाच
 क्षुषाप्रतीक्षे ॥ कस्यब्रह्मचार्यसि । प्राणस्यब्रह्मचार्यसि । कस्त्वाकमुपनयते ॥ कायत्वापरिददा
 मि ॥ घ्रुवांसु० ॥ अग्रयैसमिधुमाहोर्षिवृहेतेजातवेदसे ॥ तयात्वमग्नेवर्धस्वसमिधाब्रह्मणावयंस्वा० ॥
 तेजसामासमनजिम ॥ मयिमेधांमार्थिप्रजामध्यग्निस्तेजोदधातु ॥ मयिमेधांमार्थिप्रजामयींद्रं
 द्वियंदधातु ॥ मयिमेधांमार्थिप्रजामयिस्त्वयोभ्राजोदधातु ॥ यत्तेअग्नेतेजस्तेनाहतेजस्वीभूयासं ॥
 यत्तेअग्नेवर्चस्तेनाहंवर्चस्वीभूयासं ॥ यत्तेअग्नेहरस्तेनाहंहरस्वीभूयासं ॥ मानस्तोके० तत्सं० ॥ मम

ब्रते हृदये तदधा मिमं चित्तमनुचित्तने अस्तु ॥ ममवाचमेकव्रतोजुषस्वबृहस्पतिष्टुवा नियुनक्तुमर्ह्यं ॥
 इयं दुर्कतात्परिबाधमानाच्छर्मवरुंथं पुनतीन आगात्र ॥ प्राणापानाभ्यां बलमासंती प्रिया देवानां सुप्त
 गमिखलेयं ॥ ऋतस्य गोप्त्री तपसः परस्पीघ्नती रक्षःसहमान अरंतीः ॥ सानुः समंतमनुपरीहि भद्रयांशु
 तीरस्ते मे खले मारिषाम ॥ स्वस्तिनो ॥ १ ॥ तैवदन्मथुमा ब्रह्म किल्बिषे कूपारः सलिलो मोत रिश्वां ॥
 वीळुहं रास्तपः उग्रो मंथो मूरापो देवीः प्रथमजाऽऋतेन ॥ सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छद
 हृणीयमानः ॥ अन्वर्तितावरुणो मित्रऽआसीदुग्रिठेता हस्तं गृह्यानिनाय ॥ हस्तेनैव ग्राह्यं आधि
 स्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन् ॥ नदुतार्य प्रथेत स्थरुषातथारुद्रं गुपितं क्षत्रियस्य ॥ देवाऽऽतस्या
 मवदंत पूर्वसप्तऽऋषयस्तपस्यैरिनिषेदुः ॥ श्रीमाजाया ब्राह्मणस्योपनीतादुर्धा दधाति परमेव्योमन् ॥
 ब्रह्मचारी चर ॥ पुनर्वदेवाऽअददुः पुनर्मनुष्याऽउत ॥ राजानः सत्यं कृण्वान ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ॥
 पुनर्दायं ब्रजायां कृत्वीद्वैर्निकिल्बपं ॥ ऊर्जपृथिव्या भक्तायोरुगायमुपासते ॥ २ ॥ सदसस्पतिम

द्रुतंप्रियमिंद्रस्यकाम्यं ॥ सन्निमेधामयासिषं ॥ सुश्रवःसुश्रवाअसिषयात्वंसुश्रवःसुश्रवाऽअस्यैवं
 मांसुश्रवःसौश्रवसंकुरु ॥ यथात्वंदेवानांयज्ञस्यनिधिपोस्यैवमहंमनुष्याणांविदस्यनिधिपोभूयासं ॥
 ॥ ३ ॥ मेधांमह्यमंगिरसोमेधांससर्षयोददुः ॥ मेधामिंद्रश्चाग्निश्चमेधांघाताद्ददातुते ॥ मेधांमेवर्षुणो
 राजामिधांदेवीसरस्ती ॥ मेधातेऽअश्विनौदेवावार्त्तापुष्करसजा ॥ यामेयाऽअप्सरःसुगंधर्वेषुचय
 न्मनः ॥ देवीयामानुषीमेधासामायाविशतादुमांयन्मेनोक्तंतद्रमतांशकैयंपदंनुब्रुवे ॥ निशामंतंनिशा
 मयमथिन्नतंसहन्नतेनंभूयांसंब्रह्मणोसंगमेमहि ॥ शरीरेमेविचक्षणंवाङ्मेमधुमद्गुहा ॥ अहंद्धमहमसौसू
 र्योब्रह्मणआणीस्थश्रुतंमेमाप्रहासी ॥ मेधांदेवीमनसारेजमानांगंधर्वजुष्टांप्रतिनोजुषस्व ॥ मह्यं
 मेधांवद्मह्यंश्रियंवद्मेधावीभूयासमजरांजरिणुः ॥ सदसस्पतिं० ऋक् ॥ यामेधांदेवगणाःपितरं
 श्रोपासते ॥ तयामामेधयामेधाविनंकुरु ॥ मेधाव्यहंसुमनाःसुप्रतीकःश्रद्धामनाःसत्यमतिःसु
 शेवः ॥ महायशाधारयिष्णुःप्रयुक्तंभूयासमर्यैस्वधयाप्रयोगे ॥ ४ ॥ सुःस्वा० भुवःस्वा० स्वःस्वा०

नाषाद्संभासाहं धनं जयं ॥ सर्वाः समग्राः क्रद्धयो हिरण्ये स्मिन्समाहिताः ॥ शूनमहं हिरण्यस्य स्यपितु
मनिवजग्रभं ॥ तेनेमांसूर्यत्वचमर्करंपूरुषु प्रियं ॥ सम्राजं च विराजं चाभिष्टिर्याच मे भ्रुवा ॥ लक्ष्मी
राष्ट्रस्य यामुखेन यामामिन्द्रसंसृज ॥ १ ॥ अग्नेः प्रजातं परियद्धिरण्यममृतं जज्ञे अधिमर्त्येषु ॥ यए
नेद्वेदसइदेनमहं तिजरा मृत्युर्भवति यो ब्रिभर्तिये द्वेदराजावरुणो यद्वेदेवीसरस्वती ॥ इन्द्रो यद्वृत्रहवेद
तन्मेवर्चस आयुषे ॥ नतद्रक्षांसि न पिशाचाश्चरंति देवानामोजः प्रथमं जं ह्येते तत् ॥ यो बिभर्ति दाक्षा
युषं हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ यदा बभन्दाक्षा युषाणां हिरण्यं शतानी
कायसुमनस्यमाना ॥ तत्रऽआबभामि शतशो रदायायुष्मान्जरदृष्टिर्यथासत् ॥ घृतादुर्लुक्तं मधुमत्सु
वर्णीयं न जयं धरुणं धारयिष्णु ॥ वृणक्सपत्नानधरांश्च कृण्वदारो हमां महते सौभगाय ॥ प्रियं माकुरु देवे
षु प्रियं राजसुमाकुरु ॥ प्रियं विश्वेषु गोप्त्रेषु मथि धेहि कुरु चारु च अभिर्ये न विराजति सूर्यो येन विराजति ॥
विराड्येन विराजति तेनास्मान्ब्रह्मणस्पते विराजसुमर्दकुरु ॥ २ ॥ स्मृतं निदाच विद्या च श्रद्धा प्रज्ञा च

पंचमी ॥ इष्टदत्तमधीतुंचकृतं संत्यंश्रुतव्रतं ॥ १ ॥ स्मृतंचमेऽस्मृतंचमेतन्मनुभयव्रतं ॥ निंदा
 चमेअनिंदाचमेत० ॥ विद्याचमेअविद्याचमेत० ॥ श्रद्धाचमेअश्रद्धाचमेत० ॥ प्रज्ञाचमेअप्रज्ञा
 चमेअकृतंचमेतन्मनुभयव्रतं ॥ दत्तंचमेअदत्तंचमेत० ॥ अधीतंचमेअनधीतंचमेत० ॥ कृतं
 मे० ॥ यदभेसंद्रस्यंसप्रजापतिकस्यसऽऽकषिकस्यसऽऽकषिराजन्यस्यसपितृकस्यसपितृराजन्यस्यसम
 नुष्यस्यसमनुष्यराजन्यस्यसाकाशस्यसातीकाशस्यसानूकाशस्यसप्रतीकाशस्यसदेवमनुष्यस्यसगं
 धर्वाप्सरस्कस्यसहारण्यैश्वर्यपशुभिर्ग्राम्यैश्वर्यन्मआत्मनआत्मनिव्रतं तन्मेसर्वव्रतमिदमहमभेसर्वव्रतो
 भवामिस्वाहा ॥ २ ॥ ममशिवर्चोविह्वेष्वस्तुवयं त्वेधानास्तन्वंपुषे म ॥ मर्ह्यं नमंतां प्रदिशश्चतस्रस्त्व
 याध्यक्षेणपुतं नाजयेम ॥ ममदेवाविह्वेष्वस्तु सर्वं इव्रंतो मरुतो विष्णुरग्निः ॥ ममांतरिक्षमुरुलोक
 मस्तुमह्यं वातः पवतां कामेऽअस्मिन् ॥ मयिदेवाद्रविणमायं जंतां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ॥ दे

व्याहोतारोवनुषंतपूर्वरिष्टास्यामनुन्वासुवीराः॥मर्ह्ययंजंतुममयानिहव्याकृतिःसत्यामनसामेअस्तु ॥
 एनोमानिर्गाकनमच्चनाहंविश्वेदेवासोऽअधिबोचतान् ॥ देवीःषकुर्वीरुहर्नःरुणोतुविश्वेदेवासऽइहवी
 र्यध्वं ॥ माहास्महिप्रजयामातनुसिर्भारधामद्विषुनेसोमराजन् ॥ १ ॥ अग्नेमन्युंमंतिनुदन्परैषामद
 न्योगोपाःपरिपाहिनस्त्वं ॥ प्रत्यं योयंनुनिगुतःपुनस्तेइमैषांचितंप्रबुधांविनेशत् ॥ धाताधातृणांभुव
 नस्ययस्फतिद्वैवंत्रातारमभिसामातिषाहं ॥ इमंयज्ञमश्विनोभांबृहसरातिर्देवाःपांतुयजंमानंन्ययथात् ॥
 उरुव्यचानोमहिषः शर्मयंसदस्मिन्हवैपुरुहूतःपुरुशुः ॥ सनःप्रजायैहर्यश्वमृद्धेद्रुमानोरीरिषोमाप
 रादाः ॥ येनःसपत्नाऽअपतेसंबंत्विद्राशिम्यामर्षवाधामहेतान् ॥ वसंवोरुद्राऽअदित्याउपरिस्पृशं
 मोग्रंचेत्तारमधिराजमकन् ॥ अर्वाचमिद्रंममृतोहवामहेयोगेजिद्धेनुजिदंश्वजिद्यः ॥ इमंनोयज्ञं
 विद्वेजुषस्वास्यकुलमोहरिवोमेदिनत्वा ॥ २ ॥ उदुत्तमर्व० ॥ अथविवाहमंत्राः ॥
 अनुसारा० ॥ अर्वाचीसुमगेसवसीतेवंदामहेत्वा ॥ यथानःसुभगासंसियथानःसुफलासंसि ॥ प्रहृ

गमंताधियसानस्यसक्षणिवरोभिर्वरौऽअमिषुप्रसीदतः ॥ अस्माकभिर्द्रुंमयैजुजोषतियत्सोम्य
 स्यांधसोबुबोधति ॥ १ ॥ हिङ्कणवतीवसुपत्नीवसूनावत्समिच्छंतीमनसाभ्यागात् ॥ दुहामशिवभ्यां
 पयोऽअष्टयंसावर्धतांमहतेसौमगाय ॥ समिद्धस्यश्रयमाणःपुरस्ताद्ब्रह्मवन्वानोऽअजरसुवीरं
 आरेऽअस्मदमतिवार्धमानऽउच्छ्रयस्वमहतेसौमगाय ॥ वनस्पतिशतवंलशोविरोहसहस्रंलशोवि
 वयंरहेम ॥ यंत्वामयंस्वधितिस्तेजमानःप्रणिनायमहतेसौमगाय ॥ इंदुदेवानामुपसख्यमाय
 न्त्सहस्रधारःपवतेमदाय ॥ नृमिःस्नवानोऽअनुधामपूर्वमगन्निद्रंमहनेसौ ॥ अस्यपिबलुमत
 प्रस्थितस्यैद्रुसोमस्यवरमासुतस्य ॥ स्वस्तिदामनसामादयस्वार्वाचीनोरेवतेसौमं ॥ घृतादुडुसंम
 धुमसुवर्णयनंजयंधरणंधारयिष्णु ॥ वृणक्सपत्नानधरांश्चकृणवदारोहमामहनेसौ ॥ २ ॥ इतिवा
 ग्वानमंत्राः ॥ अथमधुपर्कमंत्राः ॥ अहंइर्भसंजातानांविद्युतमिवसूर्यः ॥ इदंत्वमधितिष्ठाभियो
 माकश्चाग्निदासति ॥ अस्मिन्नाष्ट्रेश्रियमावेशयाम्यतोदेवीःप्रतिपश्याम्यापः ॥ दक्षिणंपादमवने

निजेस्मिन्नाष्ट्रद्वयं दधामि ॥ सव्यं पादुमवनेनिजेस्मिन्नाष्ट्रद्वयं वर्धयामि ॥ पूर्वमन्यमपरमन्यं पा
 दाववनेनिजे ॥ देवाराष्ट्रस्य गुह्या अभयस्यावरुध्यै ॥ आपुपादावनेजनी द्विषंतं निर्दहंतु मे ॥ १ ॥
 देवस्य त्वास ० ॥ हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ॥ मधुवाताऽऽकृताय ते मधुक्षरं तिसिंधवः ॥ माध्वीर्नः संत्वोषधीः ॥
 मधुनक्तं मुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः ॥ मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्त्रो वनुस्पतिर्मधुमौऽअस्तु सूर्यः ॥
 माध्वीर्गोवो भवंतु नः ॥ वसवस्त्वागायत्रेण छंदसा भक्षयंतु ॥ रुद्रास्त्वात्रैष्टुभे न छं ॥ आदित्यास्त्वा
 जागते न छंदसा भक्षयंतु ॥ विश्वेत्वा देवाऽऽनुष्टुभे न छंदसा भक्षयंतु ॥ भ्रूतेभ्यस्त्वा ० ॥ विराजो दोहोसि ० ॥
 विराजो दोहो मशीया ॥ मयि दोहः पद्यायै विराजः ॥ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां ॥ २ ॥ माता रुद्राणां दु
 ह्निता वसुंतां स्वसादित्यानां मृतस्य नाभिः ॥ प्रनुवौ च चिकित्नुषे जनायुभागामनां गामिदिति वधिष्टा ॥ ३ ॥
 इति मधुपर्कः ॥ अथ कन्यादानमंत्राः ॥ अभ्रातृर्ग्रीवरुणापतिर्ग्रीवहस्पते ॥ इंद्रापुत्रर्ग्रीवलक्ष्म्यं
 तामस्यै सवितः सव ॥ सत्ये नोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः ॥ कृतेनादित्यास्तिष्ठंति द्विविसेमोऽ

अधिश्रुतः ॥ सोमेनादित्याबलिनः सोमेनपृथिवीमही ॥ अथोनक्षत्राणामेषामुपस्थेसोमऽआहितः ॥
 सोममन्यतेपिवाव्यत्सोमं पिबत्योषधि ॥ सोमंयंब्रह्माणोविदुर्नतस्यार्थातिकश्चन ॥ आच्छद्विधाने
 र्गुपितोबाह्वैः सोमरक्षितः ॥ ग्राव्णामिच्छुण्वन्तिष्ठसिनैऽअश्रातिपार्थिवः ॥ यस्वदिवप्रपिबंति
 तऽआप्यायसेपुनः ॥ वायुः सोमस्यरक्षितासमानामासऽआकृतिः ॥ १ ॥ रेभ्यासीदनुदेयीनाराशं
 सीन्योचनी ॥ सूर्यायामद्रमिद्वासोगाथयैतिपरिष्कृतं ॥ चित्तिराऽउपबर्हणंचक्षुराऽअभ्यर्जनं ॥
 द्यौर्भूमिः कोशऽआसीद्यदयात्सूर्यापतिं ॥] स्तोमाऽआसन्प्रतिययः कुरीरंछंदऽओपशः ॥ सूर्या
 याऽअश्विनावराशिरासीत्युरोगवः ॥ सोमोवधूरमवदश्विनास्तामुमावरा ॥ सूर्यायत्पत्येशसंतीमनं
 सासवितार्ददात् ॥ मनोअस्याऽअनऽआसीद्यौरासीदुतच्छदिः ॥ शुक्रवर्नद्वाहावास्तांयदयात्सूर्यागृहं
 ॥ २ ॥ ऋक्सामाभ्यामभिहितैर्गवैतेसामुनावितः ॥ श्रोत्रंतेचक्रेऽआस्तांदिविपंथांश्चराचरः ॥
 शुचंतेचक्रेयात्याव्यानोऽअक्षऽआहतः ॥ आनोमनुस्मर्थसूर्यरोहत्प्रयतीपतिं ॥ सूर्यायावहतुः

प्रागात्सवितायमवासृजत् ॥ अथासृहन्त्येते गवोर्जुन्योः पर्युद्यते ॥ यदंशिवनापुच्छमानावयानं त्रिच
 केणवहतुंसूर्याः ॥ विश्वेदेवाऽअनुनहाम जानन्पुत्रः पितरावदृणीतपुषा ॥ यदयानं युभस्सतीवरे
 यंसूर्यामुप ॥ कैकचक्रंवांमासीत्क्रेष्ट्रायनस्ययुः ॥ ३ ॥ हेतैचकेसूर्येब्रह्माण्डं चतुयाविदुः ॥
 अथैकचक्रंयहुहातवद्वातयुऽइद्विदुःसूर्यायैद्रेभ्योमित्रायवरुणायच ॥ येसूतस्यप्रचेतसऽइदंतेभ्यो
 करंनमः ॥ पूर्वापरंचरतोमाययैतौशिशूकीकंतौपरियातोऽअध्वरं ॥ विश्वान्यन्योसुवंनाभिचष्टंक्र
 तूरन्योविदथज्जायतेपुनः ॥ नवोनवोम० क्र० ॥ सुक्रियुंकरंशलमलिंश्वरूपंहरिण्यंत्रंगंसुदतं सु
 चक्रं ॥ आरोहसूर्येऽअमृतस्य लोकरं स्योनं तयैव इतुं कणुष्व ॥ ४ ॥ उदीर्ष्वीतः पतिवनीखेऽषाविश्व
 वंसुंनमसागीभिरीळे ॥ अन्याभिच्छपितृषुंष्वत्संसागोजनुधातसंविद्धि ॥ उदीर्ष्वीतोविश्वव
 सोनमसेळामहेत्वा ॥ अन्याभिच्छप रुंष्वी संजायांपत्यासृज ॥ अनुभ्रा० क्र० ॥ प्रत्वांमुंचामिव
 र्शणस्यपाशाद्येनत्वावघातसविनासुरोवः ॥ क्रतस्य योनौ सुकृतस्य लोके रिक्षांत्वासृहप्रत्यादधामि ॥ प्रेतोमुं

चाग्निनामृतः सुवद्धाममुत्स्करं ॥ यथे रमिद्रमीढः सुपुत्रामुभगासति ॥ ५ ॥ पूषात्वेतो नयनुहस्नग
 ह्याश्विनत्वाप्रवदतारथेन ॥ गृहान्गाच्छगुहपरनीययासोत्रशिनीत्वंविदथमावदासि ॥ इहप्रियं प्रजया
 तेसमृद्धयतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि ॥ एनापत्यात्तन्वंसंहजस्वाधाजिबीविदथमावदाथः ॥
 नीललोहितं संवतिहृत्प्यासक्तिर्व्यज्यते ॥ एधैतेऽअस्याज्ञातयः पतिर्ब्रैवेबुवष्यते ॥ परदेहिशामुल्यं
 ब्रह्मभ्योविमजावसु ॥ कृत्येषापुहतीमूल्याजायाविशनेपतिं ॥ अश्रीरातनूर्मवतिहाराणीपापयामु
 या ॥ पतिर्यद्ब्रह्मोऽवांससास्वमंगमभित्सते ॥ ६ ॥ येवर्ध्वंश्चंद्रं ब्रह्मं तु यक्षमार्यं तिजनादनु ॥ पुन
 स्तान्युज्ञियादेवानर्यंतुयतऽआगताः ॥ माविदन्नरिपंथिनोयऽआसीदंतिदंपती ॥ सुगमिर्दुर्गमती
 तामपद्रांत्वरातयः ॥ सुमंगलीरियंवधूरिमांसमेतपश्यत ॥ सौभाग्यमस्यैदुस्वायाथास्तंविपरेतन ॥
 वृष्टमेतत्कदुकमेतदपाष्टवं द्विषवन्नैतदत्तवे ॥ सूर्यायोब्रह्माविद्यारसऽइहाधूमर्दति ॥ आशसंनवि
 शसन्मरथोऽअधिविकर्तनं ॥ सूर्यायाः पश्यरूपाणि तादिब्रह्मानुधुधति ॥ ७ ॥ गुभ्यामितेसौ ० ऋ० ॥

तांपूषच्छिवतमामरेयस्वयस्यांबीजमनुष्यांश्चपति ॥ यानऽऽकुरुऽऽउशतीविश्रयातियस्यामुशतःप्र
हरामशेषं ॥ तुभ्यमग्नेपर्यवहन्त्सूर्यावहनुनासह ॥ पुनःपतिभ्योजायांदाऽअग्नेप्रजयासह ॥ पुनः
पत्नीमग्निरदादायुषासहवर्चसा ॥ दीर्घायुरस्यायःपतिर्जीवातिशरदःशतं ॥ ८ ॥ सोमःप्रथमोविवि
देगंधर्वोविविदऽउत्तरः॥तृतीयोऽअग्निष्टेपतिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः॥सोमोददद्वंधर्वायंगंधर्वोदददग्ने॥
रयिंचपुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथोऽइमां ॥ इहेवस्तंमाविष्यौष्टंविश्वमायुर्व्यश्रुतं॥क्रीळतौपुत्रैर्नसृभिर्मोदं
मानौस्वेगृहे॥आनःप्रजांजनयतुप्रजापतिराजरसायसमनत्कर्तुमा॥अर्दुर्मगलीःपतिलोकमाविशशनो
भवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ अधोरचक्षुरपतिद्वयेधिशिवापशुभ्यःसुमनाःसुवर्चाः ॥ वीरसूदेवकामास्योना
शनोम० ॥ इमांत्वमिंद्रमीढुःसुपुत्रांसुभर्गांक्वणु ॥ दशास्यांपुत्रानार्धेहिपतिमेकादशंक्वधि ॥ सम्रा
ज्ञीश्वशुरेभवसम्राज्ञीश्वश्रवांभव ॥ ननादरिसम्राज्ञीभवसम्राज्ञीऽअधिदेह्यु ॥ समंजंतुविश्वेदेवाःस
मापोहृदयानिनौ ॥ संमत्तरिश्वासंथातासमुद्वेष्टीदधातुनौ ॥ ९ ॥ अविधवाभंववर्षाणिशतंसाग्रंतु

सुव्रता ॥ तेजस्वीचयशस्वीचधर्मपत्नीपतिव्रता ॥ जनयद्बहुपुत्राणिमाचदुःखंलभेत्कचित् ॥ मना
तेसोमपानित्यंभवेद्धर्मपरायणः ॥ अष्टपुत्रामवत्वंचसुमगाचपतिव्रता ॥ मर्तुश्चैवपितुश्चानुर्हृदयानं
दिनीसदा ॥ इंद्रस्यतुर्येद्राणीश्रीधरस्ययथाश्रिया ॥ शंकरस्ययथागरीतद्भर्तुरपिभर्तारि ॥ अत्रे
र्थथानु० ॥ भ्रुवैधिपोष्यामयिमर्ह्येतादाद्बृहस्पतिः ॥ मयापत्यामजावतीसंजीवशरदःशतं ॥ अत्रे
प्रसुग्मंताधियमानस्यसक्षणिवरेभिर्वरौऽअभिषुमसीदंतः ॥ अस्माकमिद्रऽउभयैजुजोषतियत्सोम्य
स्यांधसोबुबोधति ॥ वीक्ष्यासिदिव्यानिरोचनाविपार्थिवानिर्जसापुरुषुत ॥ यत्वावर्हतिमुर्धुरध्वरौऽ
उपतेसुवन्वतुवग्वनौऽअंराधसः ॥ तदिन्मेच्छत्सद्दुषोवपुंष्ट्रंपुत्रोयज्जानंषितोरधीयति ॥ जाया
पतिवहतिवभुनासुमत्युसऽइद्भद्रोवेहतुःपरिष्कृतः ॥ तदित्सधस्थमभिचारुंदीधयगावोयच्छासन्वहतु
नधेनवं ॥ मातायन्मर्तुर्युथस्यपुर्व्यामिवाणस्यससर्थातुरिज्जनः ॥ प्रवोच्छारिचेदेवपुष्पदेमेकोरु
द्रेभिर्यानितुर्वणिः ॥ जुरावायेष्वमृतेषुदानेपरिविऽऊमेभ्यःसिंचतामधु ॥ १ ॥ निधीयमानमपगू

ब्रह्मपुत्रप्रभेदेवानां व्रतपाऽऽवाच ॥ इंद्रो विद्वाँऽऽनुहित्वा च क्षतेनाहमग्रेऽऽनुशिष्टऽऽआर्गां ॥ अक्षे
 त्रवित्सेत्रविदेद्यप्रादस्रैतिक्षेत्रविदानुंशिष्टः ॥ एतद्देवमद्रमनुशासनस्योत्सृजति विदयं जसीनां ॥
 अद्येदुप्राणीदममन्त्रिमाहापीबतोऽअथयन्मातुरुधः ॥ एमेनमापज रिमायुवानमहेळन्वसुः सुमनाबमू
 व ॥ एतानि मद्राकंलशक्रियामकुहंश्रवणददर्दतोमृधानि ॥ दानश्चोमषवानः सोऽअस्त्वयंचसोमो
 हृदियं बिभंसि ॥ २ ॥ अ० नृ० क्ष० क० ॥ कऽऽइदं कस्माअदामः कामायादात्कामोदाताकामः प्र
 नियतीतकामंसमुद्रमौविशकामेनत्वाप्रतिपुण्ड्रामिकमैनेतेदृष्टिरसिद्यौस्त्वाददातुपृथिवीप्रतिगृह्णातु
 ॥ १ ॥ यत्कृशीवांसंवननंपुत्रोऽअंगिरसामवेत् ॥ तेनेनोद्यविश्वेवाः संप्रियांसमंजीजनन् ॥ अ० ना० हृ
 छमस्यनाद्युष्यं देवानामो जोऽअग्निशस्तिपाः ॥ अ० न० भि० श० स्यंजंसासत्यमुपगेषांस्वितेमांथाः ॥ २ ॥
 परिस्वागिर्वणो गिरऽऽइमामं वंतु विश्वतः ॥ वृद्धायुमनुद्युयो जुह्वामं वंतु जुष्टयः ॥ तान्वोमृहोमरुत
 एवयान्नोविष्णोरेषस्यप्रभृत्येहवामहे ॥ हिरण्यवर्गान्ककुहान्ननु वोब्रह्मण्यं नः शंस्रार्थऽइमहे ॥

दशावनिभ्योदशकक्षेभ्योदशयोक्त्रेभ्योदशयोजनेभ्यः ॥ दशाभीशुभ्योऽअर्चताजरेभ्योदशधुरोद
 शयुक्तावहम्भः ॥ तेऽअद्रयोदशयंत्रासऽआशवस्तेषामाधानंपर्येतिहृतं ॥ तऽऽसुतस्यसोम्यस्यां
 धसोशोःपीयूषप्रथमस्यमेजिरे ॥ तेसोमादोहरीऽइंद्रस्यनिसेत्तेशुदुहंतोऽअध्यासलेगवि ॥ तेभिर्दुग्धं
 पपिवान्तोम्यंमध्विद्रोवर्धतेप्रथनेष्टपायते ॥ दृषावोऽअंशुर्नकिलारिषाथनेळवंतःसदमित्स्थना
 शिताः ॥ रैवत्येवमहसाचारवंःस्थनयस्यग्रावाणोअजुषस्वमध्वरं ॥ १ ॥ अग्नेविश्वैसिःस्वनीकद्वे
 वैरूणवंतंप्रथमःसीदयोनिं ॥ कुलायिनंपुतर्वतंसवित्रेयुज्ञानययजमानायसाधु ॥ भगोमेकामःस
 सृष्टयतां ॥ यज्ञोमेकामःसमू ॥ त्रियोमेकामःस ॥ धर्मोमेकामःस ॥ प्रजामेकामःस ॥
 यशोमेका ॥ १ ॥ त्वमर्युमाभवसियत्कनीनांगामस्वथावुन्गुहविसर्षि ॥ अंजंतिमित्रंमुधितंन
 गोभिर्यदंपत्नीसमनसाहृणोषि ॥ अर्यमणंनुदेवंकन्याऽअग्रिमयक्षत ॥ सहमादिवोअर्यमाप्रेतोमुंचा
 तुनामुनःस्वा ॥ वरुणंनुदेवंकन्या ० सहमादिवोवरुणःप्रे ॥ पूषणंनुदेवंक ० सहमादिवःपूषाप्रे ॥

अमोहमस्मिन्सात्वमस्यमोहं द्यौरहं पृथिवीत्वंसामाहृत्स्वंतविहविवहावहे ॥ प्रजांप्रजनयाव
हैसंप्रियैरोचिष्णसुमनस्यमानौजीवेवशरदःशतं ॥ इममश्मानमारोहाशमेवत्वंस्थिराभव ॥ सहस्व
पृतनायतोभितिष्ठपृतन्यतः ॥ २ ॥ इषऽएकपदीभवसामामनुव्रताभव ॥ पुत्रान्विदावहैबहूस्ते
संतुजरदृष्टयः॥ ऊर्जद्विपदीभवसा०॥रायस्पोषायत्रिपदीभवसा०॥मायोभव्यायचतुष्पदीभवसा०॥
प्रजाभ्यःपंचपदीभवसामा०॥ ऋतुभ्यःषट्पदीभवसा०॥ सखासप्तपदीभवसा० ॥३॥ मांगल्यतंतु
नानेनमर्तृजीवनहेतुना ॥ कंठेवधामिसुभगेसाजीवशरदःशतं ॥ इतिविवाहमंत्राःसमासाः ॥
अथार्कविवाहमंत्राः ॥ ॥ संगोभिरांगिरसोनक्षमाणोभगऽइवेदयर्मर्णनिनार्य ॥ जनैमित्रो नदं
पतीअनाक्तिबहस्पतेवाजयाशूरिवाजौ ॥ यस्मैत्वंकामकामायवृयंसुभ्राड्यजामहे ॥ तंमस्मभ्यं
कामंदत्त्वाथेदंत्वंघृतंपिब ॥ १ ॥ अधिद्वयसंसर्गमंत्राः ॥ अधिमीळे० वर्ग २ ॥ अयंतेयो
निर्ऋत्वियोयतोजातोअशोचथाः ॥ तंजानन्नग्रऽआसीदाथानोवर्धयांगिरः ॥ प्रत्यवरो० ॥ अ

प्रावृत्तिप्रविष्टः कर्षीणांपुत्रो अधिराजः एषः ॥ तस्मै जुहोमिह विपाघृते नुमादिवानां मोसुहृद्भाग
 धेयुं मोऽअस्माकं मोसुहृद्भागधेयं ॥ अग्निनाग्निः सन्धिते कृविर्गृहपतिर्युवा ॥ हव्यवा इजुह्वस्यः ॥
 दागर्भः इव सुधितो गभिणीषु ॥ दिवे दिव इड्यो जागृवद्भिर्विष्मद्भिर्मनुष्यैः किरुन्निः ॥ अरण्यो निहितो जातवे
 वंसराचिकित्वान्तस्यः प्रवीताद्यं गजजान ॥ अरुपस्तपोरुशंसदस्य पाजुऽदब्बायास्पुत्रो वपुने जनिष्ट ॥
 पाहि नोऽअगुऽएकं यापाह्यं तु द्वितीयया ॥ पाहि गीभिस्तिष्ठभिर्रुजांपते पाहि चतुस्तुभिर्वसो ॥ पा
 हि विश्वं समाद्रक्षसोऽअरावणः प्रस्मवा जेपुनो व ॥ त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतां तयऽआपिनक्षामहे दृधे ॥ पा
 ह्यत्सामं क्षत्रमृद्वृद्धं ष्णायं त्रिभोजः शुभितमुग्रवीरं ॥ इन्द्रस्तोमै नपंचदशे न मध्यमिदं वाते नुसगरेण ॥ २ ॥ इ
 रक्ष ॥ १ ॥ अथ सायं प्रातर्होमं त्वाः ॥ तंतुं लुन्वन्नजसो भानुमन्विह्योतिष्मतः पृथोरंक्षाधि

याकृतान् ॥ अनुल्बणं वयतजोगुवामपोमनुर्भवजनयादिव्यंजनं ॥ हिरण्यगुर्भःसमवर्त्तताग्नेभूतस्य
 जातःपतिरेकऽआसीत् ॥ सदाधारपृथिवीद्यामुतेमांकस्मैदेवायंहविषाविधेम ॥ १ ॥ अथाप
 त्कालहोममंत्राः ॥ हविष्यांतमजरस्वर्विदिविस्पृश्याहुतंजुष्टमग्नौ ॥ तस्युभर्मणेभुर्वनायद्दे
 वाधर्मणेकंस्वधयापप्रथत ॥ गीर्णभुर्वनंतमसापंगुळ्हमाविःस्वरभवज्जातेऽअग्नौ ॥ तस्यदेवाःपृ
 थिवीद्यौरुतापोरण्युन्नोषधीःसख्येऽअस्य ॥ देवेभिन्विषितोयुज्ञियेभिरुग्निस्तोषाण्युजरंबृहत् ॥
 योभानुनापृथिवीद्यामुतेमामातानरोदसीऽअंतरिक्षं ॥ योहोतासीत्प्रथमोदेवजुष्टोयंसमांजन्नाज्ये
 नाष्टणानाः ॥ सपत्नीत्वंस्थाजगद्यच्छुत्रमग्निरुणोज्जातवेदाः ॥ यज्जातवेदोभुर्वनस्यमूर्धन्
 तिष्ठोऽअग्नेसुहरोचनेन ॥ तंत्वाहेममतिभिर्गीभिरुक्थैःसयुज्ञियोऽअभवोरोदसिमाः ॥ १ ॥
 अथाग्निसमारोपमंत्राः ॥ अयंते० ॥ यातेऽअग्नेयुज्ञियांतनूस्तयेह्यारोहात्मात्मानमच्छावसू
 निकृष्वन्नस्मेनर्यापुरुणि । युज्ञोभूत्वायज्ञमासीद्विस्वाथोनिजातवेदोभुवऽआजायमानःसक्षयऽइहि ॥

पुनःसंधानं० ॥ इदं॒ऽएकं॒परऽकृतं॒ तीये॒न॒ज्योति॒पासं॒विश॒स्व ॥ संवेश॒नेन॒न्व१ श्राहरे॒धिप्रियो
 दे॒वानां॑प॒रमे॒जनि॑ ॥ १ ॥ त्वंमे॒संप्रयो॑ऽअसि॒जुष्टो॒हेता॒वेरण्यः ॥ त्वया॒युज्ञं॑वित॒न्वते ॥ योऽअधि
 दे॒ववी॒तये॒हृविष्मो॑ऽआ॒विवा॒सति ॥ तस्मै॑पा॒वक॒मृळ्य ॥ त्वंनो॑ऽअ॒श्रेत॒वदे॒वपा॒युभिर्म॑घो॒नोर॒क्षत्नं
 श्रवं॒द्य ॥ त्रा॒तातो॒कस्य॒तन॒यि॒गवा॑म॒स्यनि॑मे॒पूर॒क्षमा॒णस्त॑वं॒वते ॥ २ ॥ अथ॑श्र॒वणा॒कर्म॑मंत्राः ॥
 ॥ अ॒श्रेन॑यं॒सुप॒थारा॑येऽअ॒स्मान्नि॒श्वानि॒देव॒व्युनानि॑वि॒द्वान् ॥ युयो॒र्ध्व१स्म॒ज्जु॒हुरा॒णमे॒नो॒मूयि॑ष्ठान्ते
 नमऽउ॒क्तंवि॒धेम ॥ अ॒श्रेत्वंपा॑र॒यान॒व्योऽअ॒स्मान्स्व॒स्ति॒भिर॒तिदु॑र्गा॒णिवि॒शवा ॥ पू॒श्वपृ॒थ्वीव॑हु
 लान्ऽउ॒र्वीभ॒वातो॒काय॑त॒नया॒ग्रशं॑योः ॥ अ॒श्रेत्व॒मस्म॑धुं॒योर्ध्वमी॒वाऽअ॒न॒ग्रि॒त्राऽअ॒भ्यम॑त॒कृष्ठीः ॥
 पु॒नर॒स्मभ्यं॑सु॒वित्ता॑ये॒देव॒क्षांवि॒श्वेभिर॑मृ॒तेभिर्य॑जत्र ॥ प्रा॒हि॒नोऽअ॒ग्नेपा॒युभिर॑ज॒सैरु॒तप्रि॒येस॑दं॒नऽआ
 शु॒शुक्वा॑न् ॥ मा॒तेस्य॑जं॒रितारं॑य॒विष्टु॑नं॒विद॒न्माप॑रं॒संह॒स्वः ॥ मानो॑ऽअ॒ग्नेर्व॑सृ॒जोऽअ॒घायां॑वि॒ष्यवे
 रि॒पवै॑दु॒च्छुना॑थि ॥ मा॒द॒त्वते॒दश॑ति॒माद॑ते॒नोमा॑री॒पते॑स॒हसा॑न्परा॒दाः ॥ १ ॥ शं॒नोसं॑वंतु॒वाजि॒नो

हवेषु देवतातामितद्रवः स्वर्काः ॥ जंभयंतो हिं हृत्करं क्षीं सि सनेम्यद्युयवचमीवाः ॥ २ ॥ सर्पवलिमंत्राः
 ॥ ये सर्पाः पार्थिवाये अंतरिक्ष्याये दिव्याये दिश्यास्ते भ्य इमं बलिमाहर्षते भ्य इमं बलिमुपाकरोमि ॥ सर्
 पोसि सर्पतां सर्पाणामधिपतिरस्यन्नेन मनुष्यांश्चायसे पूषेन सर्पांश्च ज्ञेन देवांस्त्वयि मासंतं त्वयि संतः सर्पा
 माहिं सिषुर्भुवांते परिद्वामि भुवांते परिद्वामि ॥ १ ॥ अथाश्वयुजीकर्ममंत्रः ॥ ऊनं
 मे पूर्यतां पूर्णमिमोपसदत्पृषातकाय ॥ अथाग्रयणमंत्राः ॥ सजूर्ऋतुभिः सजूर्वि
 धामिः सजूरिद्राग्निभ्यां ॥ सजूर्ऋतुभिः स० विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥ सजू० द्यावापृथिवीभ्यां
 ॥ १ ॥ प्रजापतये त्वाग्रहं गृह्णामि मह्यं श्रिये मह्यं शसे मह्यं मन्नाद्याय ॥ सद्रानुः श्रेयः समनैषु दे
 वांस्त्वया वृसे न समं शीमहि त्वा ॥ सनो मयो भूः पितृवा विशे ह शानो भव द्विपदेशं चतुष्पदे ॥ १ ॥
 अमोसि प्राणतद्वत् ब्रवीम्यमासि सर्वा नसि प्रविष्टः ॥ समेजरारोगमपनुद्य शरीरादमामुधिमामृथा
 मं इंद्र ॥ २ ॥ अथप्रत्यवरोहणमंत्राः ॥ अपश्चेतपदाजहि पूर्वेण चापरेण च ॥

सप्तचवारुणीरिमाःसर्वाश्रराजबांधवीः ॥ नवैश्वेतश्चाध्यागारेहिर्जघानकिंचन ॥ श्वेतायवैदा
र्वायनमः ॥ असंयनप्राजापत्येभ्योभूयात् ॥ १ ॥ ॥ समार्यस्यप्रवासेअभिसमा० मंत्राः ॥
गृहामाविभीतोपवःस्वरत्येवोस्मासुंचप्रजायध्वंमाचवोगोपतीरिषत् ॥ गृहानहंसुमनसःप्रपद्येवी
रघ्नोवीरवंतःसुवीरान् ॥ इरावहंतोघृतमुक्षमाणतेष्वहंसुमनाःसंविशानि ॥ अंगादंगात्संसवसिंहद
यादधिजायसे ॥ आत्मवैपुत्रनामासिसजीवशरदःशुत्रं ॥ असंयवोभयंमेस्तु ॥ १ ॥ आथाभ्यु
पघातादिप्रायश्चित्तमंत्राः ॥ पुनस्त्वादित्यैःरुद्रावसंबःसमिंधलांपुनर्ब्रह्माणोवसुनीथयुज्ञैः ॥
घृतेनत्वंतनुवोवर्धयस्वसत्याः संतुयजमानस्युकामाः ॥१॥ त्तंतंऽआपुस्लदुतायतेपुनःस्वादिष्टायीति
रुचथावशस्यते ॥ अयंस्समुद्रऽउतंविश्वमेषजःस्वाहृकृतस्यसमुत्पुण्णुर्मवः ॥ २ ॥ यन्मऽआ
त्मनोमिदामूद्भिस्तत्पुनराहाजानवेदाविचर्षणिः॥३॥पुनरग्निश्चक्षुरदात्पुनरिद्रोबृहस्पतिः ॥ पुनर्मऽअ
श्विनपुवंचक्षुरार्धत्तमुक्ष्योः ॥ ४ ॥ त्वमग्नेअयास्ययासन्मनसाहितः ॥ अयासंन्वव्यमूह्विषेयानोधि

हिमेषजं ॥५॥ इदंतुलकंपरुतुलकंतृतीयेनज्योतिषासंविशस्व ॥ संवेशनस्तनुवैचारैधिप्रियोदेवा
 नीपरमेसधस्थे ॥ ६ ॥ आभिर्गीभिर्यदतोनकुनमाप्यायहरिवोवर्थमानः ॥ यदास्तोतृभ्योषहि
 गोत्रारुजासिभूयिष्ठभाजोअधतेस्याम ॥ ७ ॥ मनोज्योतिर्जुर्दितोमाज्यंविच्छिन्नंयज्ञसमिमंद
 धातु ॥ याइष्टाउषसोनिश्रुचश्चताःसंदधामिहविषाघृतेन ॥ आश्रावितमत्याश्रावितंवषट्कृत
 मत्यनूकंचयज्ञे ॥ अतिरिक्तकर्मणोयच्चहीनंयज्ञःकर्माणप्रतिरभैतिकल्पयन्त्स्वाहाकृताहुतिरेतुदे
 वान् ॥ ९ ॥ स्वस्तिदाविशस्पतिर्द्वित्रहाविमृधोवृशो ॥ वर्षेद्रःपुरतुनःस्वस्तिदाअमयंकरः ॥ १० ॥
 यत्रवेत्थवनस्पतेदेवानांगुह्यानामानि ॥ तत्रहव्यानिगामय ॥ ११ ॥ त्वनोअग्नेवरुणस्यविद्वान्देव
 स्येहेढोवयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवन्हितमःशोशुचानोविश्वेष्टेषांसिप्रमुग्ध्यस्मत् ॥ १२ ॥ सत्वंनो
 अग्नेवमोसंबोतीनेदिष्टोअस्याउषसोव्युष्टौ ॥ अवयक्ष्वनोवरुणर्राणोवीहिमृडीकसुहवोनएधि
 ॥ १३ ॥ सत्वेपयांसिसमयंतुवाजाःसंरुण्यान्यमिमातिषाहः ॥ आप्यायमानोअमृतायसोमदि

वत् ॥ अर्वाग्रथंसमनसानिर्यच्छतं ॥ ओमासश्रवर्षणीधृतोविश्वेदेवासऽआगत ॥ द्वाशंसासौदाशु
 षःसृतं ॥ अमित्यदेवंसवितारमोण्योःकविक्रतुमर्चामिसत्यसंखल्लधाममिप्रियमतिक्रवि ॥ ऊर्ध्वा
 यस्यामतिर्माऽअद्विद्युत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमीतसुक्रतुःरूपास्वः ॥ आर्यगोः० ॥ अप्सर
 सांगधर्वाणामृगाणांचरणेचरन् ॥ केशीकेतस्यविह्वान्त्सखास्वादुर्मदिन्तमः ॥ कुमारमातायुवतिः
 समुब्धंगुह्याविभर्तिनर्ददातिपित्रे ॥ अनीकमस्यनमिनज्जनासःपुरःपश्यन्तिनिहितमरुतौ ॥ ऋषभं
 मासमानानांसपत्नानांविषासर्हि ॥ इंतांशत्रूणांरूधिविराजंगोपतिगवां ॥ अदितिर्ह्यजनिष्टदक्ष
 यादुहितातव ॥ तादेवाऽअन्वजायंतभद्राऽअमृतबंधवः ॥ तामभिवर्णां० ॥ इदंवि० ॥ उदीरता० ॥
 परंमृत्योऽअनुपरेह्रिपंथायस्तेस्वऽइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतैब्रवीमिमानःप्रजांशीरिषोमोत
 वीरान् ॥ गणानां० ॥ शंनोद्रे० ॥ मरुतोयस्यृहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ॥ ससुगोपातमोजनः॥
 स्योनापृ० ॥ इमंमैग० ॥ याम्नोयाम्नोरजन्त्रितोवरुणोमुच ॥ यदापोअघ्याऽइतिवरुणेतिशर्पामहे

ततोवरुणनोमुंच ॥ मयिवापोमोषधीर्हिसीरतोविश्वव्यचाभूस्त्वेतोवरुणनोमुंच ॥३१॥ इतिमंडलदे
 वतामंत्राः ॥ ॥ अथशांतिपाठः ॥ ॥ आनोभद्राःऋतवोयंतुविश्वतोदंबथासोअपरीतासऽडु
 न्निदः ॥ देवानोयथासदमिद्धुधेऽअमन्त्रप्रायुवोरक्षितारोदिवेदिवे ॥ देवानाभद्रासुमतिर्भजूयतांदे
 वानांशामिरभिनोनिवर्ततां ॥ देवानांसख्यमुपसेदिमावयंदेवानुऽआयुःप्रतिरंतुजीवसे ॥ तान्पूर्वया
 निविदाहूमहेवयंसर्गमित्रमदिर्निदक्षमसिधं ॥ अयमणवरुणंसोममश्विनासरस्वतीनःसुभगाभय
 स्करत् ॥ तन्नोवातोमयोभुवानुमेषजंतन्मातापृथिवीतत्पिताधौः ॥ तद्गवाणःसोमसुतोमयो
 भुवस्तदश्विनाशृणुतंधिष्णयायुवं ॥ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेवयं ॥
 पूषानोयथावेदसामसंहृथेरक्षितापायुरदंब्यःस्वस्तये ॥ १ ॥ स्वस्तिनुऽइंद्रोवृद्धश्रवाःस्वस्ति
 नःपुषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनुस्नाक्षर्योऽअरिष्टनेमिःस्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधानु ॥ पृषदश्वामरुतः
 पृथिश्चिमातरःशुभ्रंयावानोविदेथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वाभनवःसूरचक्षसोविश्वेनोदेवाऽअवसागम

चिह्न ॥ सद्रंकर्णोमिःशृणुयामदेवाभद्रं पश्येमाक्षमिष्यजत्राः ॥ स्थिरैरैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशो
 मदेवहित्यदार्युः ॥ शतमिन्नुशुखदोऽअतिदेवायत्रानश्चक्राजरसंतनूनां ॥ पुत्रासोयत्रपितरोम
 वंतिमानोमध्यारीरिषतायुर्गतोः ॥ अदितिचौरदितिरिक्षमदितिमातासापितासपुत्रः ॥ विश्वेदे
 वाऽअदितिःपंचजनाअदितिर्जातिमदितिर्जनित्वं ॥ २ ॥ स्वस्तिनोमिमीतामश्विनाभगःस्वस्तिदेव्य
 धितिरनुर्वणः॥स्वस्तिपूषाऽअसुरोदधातुनःस्वस्तिद्यावापृथिवीसुचेतुनां ॥ स्वस्त्येवायुमुपब्रवामहसो
 मस्वस्तिभुर्वनस्युयस्पतिः ॥ बृहस्पतिंसर्वगणंस्वस्त्येस्वस्त्येऽआदित्यासोमवंतुनः ॥ विश्वेदेवा
 नोऽअद्यास्वस्त्येवैश्वानरोवहुरग्निःस्वस्त्ये ॥ देवाऽअंतृभवःस्वस्त्येस्वस्तिनोरुद्रःपातवंहसः ॥
 स्वस्तिमित्रारुणास्वस्तिपथ्यैरेवति ॥ स्वस्तिनऽइंद्रश्चाग्निश्चस्वस्तिनोऽअदितिकृधि ॥ स्वस्तिपथ्याम
 नुचरेमसूर्याचंद्रमसाविव ॥ पुनर्द्वताघ्नतानुतासंगमिह ॥ १ ॥ स्वस्त्ययंनृताक्ष्यमरिष्टनेमिसृहृद्वंत्वा
 यूसंदेवतानां ॥ असुरघ्नमिंद्रसखंसुबृहद्यशोनावमिवाहहेम ॥ अंहोमुचंमांगिरसंगयंचस्वस्त्यात्रे

यंमनसाचतार्क्ष्यं ॥ प्रयतपाणिःशरणंप्रपद्येस्वस्तिसंवाधेष्वमयंनोअस्तु ॥ २ ॥ शंनऽइंद्राग्नीमं
 तामवोभिःशंनऽइंद्रावरुणारानहंब्या ॥ शमिद्रासोमसुवितायशंयोःशंनऽइंद्रापूपावाजसतो ॥
 शंनोभगःशमुनःशंसोऽअस्तुशंनःपुरेधिःशमुसंतुरायः ॥ शंनःसत्यस्यंसुयमस्यशंसःशंनोऽअश्रुमापुरुजा
 नोऽअस्तु ॥ शंनोधाताशमुधुतनोऽअस्तुशंनऽउरुत्रीभंवतुस्वधाभिः ॥ शंरोदसी दृढनीशंनोअद्रिःशंनो
 देवानांसुहवानिसंतु ॥ शंनोऽअश्रिज्योतिरनीकोऽअस्तुशंनोमित्रावरुणावशिवनाशं ॥ शंनःसुह्रतांसु
 क्तानिसंतुशंनऽइपिरोऽअभिवानुवातः ॥ शंनोद्यावापृथिवीपूर्वहूतौशमंतारिंसंद्रशयेनोअस्तु ॥
 शंनोपधीर्विनोभवंतुशंनोरजमस्पतिरस्तुजिष्णुः ॥ १ ॥ शंनऽइंद्रोवसुभिर्देवोऽअस्तुशमादित्ये
 मिर्वरुणःसुशंसः ॥ शंनोरुद्रेरुद्रेभिर्जलापःशंनस्वष्ट्यामिर्हिहृशृणोतु ॥ शंनःसोमोभवतुब्रह्मशं
 नःशंनोग्रावाणःशमुसंतुयुजाः ॥ शंनःस्वरुणांमितयोभवंतुशंनःप्रस्वश्राम्भस्त्वुत्रेदिः ॥ शंनःसूर्यऽउरुत्र
 ष्ठाऽउदेतुशंनश्चतस्रःप्रदिशोभवंतु ॥ शंनःपर्वताध्रुवयोभवंतुशंनःसिंधवःशमुमन्त्रापः ॥ शंनोऽअदिति

भवतु ब्रह्मेशिः शंनो भवतु मरुतः स्वर्काः ॥ शंनो विष्णुः शमुपपा नोऽस्तु शंनो भवित्रं शम्बस्तु वायुः ॥ शंनो
 देवः सवित्रायमाणः शंनो भवतु षसो विभातीः ॥ शंनः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शंनः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शं
 भुः ॥ २ ॥ शंनो देवा विश्वदैवा भवतु शंसरस्वती सहधी भिरस्तु ॥ शमभिषाचः शमुरातिषाचः शंनो दिव्याः पा
 र्थिवाः शंनोऽअप्याः ॥ शंनः सत्यस्य पतयो भवतु शंनोऽअर्वितः शमुसंतु गावः ॥ शंनऽऽकृमवः सुकृतः
 सुहस्ताः शंनो भवतु पितरो हवेपु ॥ शंनोऽअजऽएकपादेवोऽअस्तु शंनो हिर्बुद्ध्यः १ शंसमुद्रः ॥ शंनो अपां
 नपतिरुरस्तु शंनः पृथिर्भवतु देवगोपा ॥ अग्निदित्यारुद्रावसवोजुषतेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ॥ शृण्वंतु नो
 दिव्याः पार्थिवा सो गोजाताऽउत ये यज्ञियासः ॥ ये देवानां यज्ञियां यज्ञियां नार्थं जत्राऽअमृता क्त
 ज्ञाः ॥ ते नो रासंता मुरुगा यमद्य यूयं पां ० ॥ ३ ॥ शंर्वतीः पारथं ये ते तं पृच्छंति वचो युजा ॥ अभ्यारंतं यमाकेतु
 यऽएवेदमिति ब्रवन् ॥ आसाकेतुं परिब्रुतं भारतीर्ब्रह्मवर्धनीः ॥ संजानानामहीमातायऽएवेदमिति
 ब्रवत् ॥ इन्द्रस्तं किं विभुं प्रभुं आनुनेर्यं सरस्वती ॥ धेनं सूर्यमरोचयद्येनेमरोदसीऽभे ॥ जुषस्वाग्ने अंगिरः का

प्वमेध्यातिथिं ॥ मात्वासोमस्यवर्षहसुतस्यमधुमत्तमः ॥ त्वमग्नेअगिर्ःशोचस्वदेववीतमः ॥ आशि
 तमशंतमासिर्भिःशांतिंस्वस्तिकुर्वत ॥ शंनःकनिक्रदेद्वेवःपर्जन्योअभिवर्षतु ॥ शंनोद्यावापृ
 थिवीशंप्रजाभ्यःशंनंएधिद्विपदेशंचतुष्पदे ॥४॥ यतइंद्रमयामहेततोऽअभयंकधि ॥ मघवन्कृषि
 तवतञ्ऊतिभिर्विद्विपोविमृथोजहि ॥ त्वंहिराघस्पतेराधसोमहःक्षयस्यासिंविधुतः ॥ तंतावयंमव
 वान्निद्रगिर्वणःसुतावंतोहवामहे इंद्रःस्पळुनवंत्रहापरस्वानोवैरेण्यः॥सनोरक्षिपच्चरुंसमव्युंससपुश्यात्पा
 तुनःपुरः ॥ त्वंनःपश्चाद्धरादुत्तरात्पुरइंद्रनिपाहिविश्वतः ॥ आरेऽअस्मत्कणुह्रिद्वैव्यंस्यमारेहेतीर
 देवीः ॥ अद्याद्याश्वःश्वइंद्रत्रास्वंपुरेचनः ॥ विश्वाचनोजरितृन्त्सत्पतेऽअहादिवानकैचरक्षिपः ॥
 प्रभंगीशूरौमघवातुवीमधुःसंमिंश्लोवीर्यायुकं ॥ उभातैवाहूदृष्यणाशतक्रतोनियावज्रंसिमिक्षतुः ॥
 मद्रंनोऽअपिवालयुमनः ॥ १ ॥ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोधनाघुनःक्षोभणश्चर्पणीनां ॥ संक्र
 दंनोनिमिषऽएकवीरःशतसेनाऽअजयत्साकमिद्रः ॥ संक्रदंनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेणदुश्चयवृने

नधृष्णुना ॥ तदिद्रेणजयततत्सहध्वंयुधोनरइषुहस्तेनदृष्णां ॥ सइपुहस्तैःसनिर्बगिभिर्विशीसंखष्टास
 युधइद्रोङ्गणेन ॥ संसृष्टजित्सोमपाबाहुशुर्धुग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ बहस्पतेपरिदीयारथे
 नरक्षोहामित्रौऽअपवार्धमानः॥ प्रभंजन्सेनाःप्रमृणोयुधाजयन्त्रस्माकमेधयवितारथानां॥ बलविज्ञा
 यःस्थविरुःप्रवीरःसहस्वान्वाजीसहमानउग्रः ॥ अमिर्वीरोऽअभिसत्वासहोजैत्रमिद्रथमार्तिष्ठगोवि
 त् ॥ गोत्रमिदंगोविद्वज्रबाहुजयंतमजमप्रमृणंतमोजसा ॥ इमंसंजाताऽअनुवीरयध्वमिद्रंसत्वायो
 ऽअनुसंरमध्वं ॥ १ ॥ अमिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोवीरःशतमन्युरिद्रः ॥ दुश्च्यवनः
 पृतनाषाळयुध्योऽस्माकंसेनाऽअवतुप्रयुत्सु ॥ इन्द्रऽआसानेताबृहस्पतिर्दक्षिणायज्ञःपुरऽऽनुसोमः ॥
 देवसेनानामभिमंजतीनांजयंतीनांमरुतौयंत्वग्रं ॥ इन्द्रस्यदृष्णोवरुणस्यराज्ञऽआदित्यानंमरुतां
 शर्धऽउग्रं ॥ महामनसांभुवनच्युवानांघोषैर्देवानाजयंतामृदुस्थत् ॥ उद्धर्षयमघवन्नायुधा
 न्युत्सत्वंनामामकानांमनांसि ॥ उद्धृत्रहन्वाजिनांवाजिनांन्युद्रथानांजयतांयंतुघोषाः ॥ अस्मा

कर्मिद्रःसमृतेषुःष्वजेःस्माकंयाऽइषेवस्नाजयंतु ॥ अस्माकंवीराऽउत्तरेभवंत्वस्माऽउदेवाऽअव
 ताहवेषु ॥ अमीषीचित्तंमंतिलोभयंतिगृह्णाणांगान्येष्वेपरेहि ॥ अभिप्रेहिनिरुहकुत्सुशोकरं
 धेनामित्रास्त्रमसासचंतौ ॥ प्रेताजयंतानरऽइंद्रोवःशर्मयच्छतु ॥ उग्रवैःसंतुबाहवोनाधृष्यायथा
 संथ ॥ असौयासेनामरुतःपरेषामभैतिनुऽओजसास्पर्धमाना ॥ तांगूहृतमसापवतेनयथा
 मीषामन्योऽअन्यनजानीत् ॥ अंधाऽअभित्रांसवतारशीर्षाणाऽअहयऽइव ॥ तेषांवोऽअग्निदग्धा
 नामग्निमूब्धानामिंद्रोहंतुत्रंवरं ॥ २ ॥ रात्रीव्यख्यदार्यतीपुरुत्रादेव्यः१क्षभिः ॥ विश्वाऽअग्निशि
 योधित ॥ ओर्विप्राऽअमत्यानिवतेदिव्युऽइतैः ॥ ज्योतिषात्राघतेतमः ॥ निरुस्वसारमस्कतोषसदि
 व्यायती ॥ अपेदुहासनेतमः ॥ सानोऽअचेधैस्यैवयंनितेयामुनविक्षमहि ॥ वृक्षेनवसुतिवयः ॥ निग्रामा
 सोऽअविक्षतुनिपूहंतोनिपूक्षिणः ॥ निश्चेनासश्चिद्वार्थिनः ॥ यावयावृक्यैः१वृक्यवयस्तेनमूर्ध्नि ॥ अथा
 नःसुतरासवा ॥ उपमापेपिशत्तमःकृष्णव्यक्तमस्थित ॥ उर्बऽकृणेवयातय ॥ उपतेगाऽइवाकरंरुणीष्वदु

हितर्दिवः ॥ रात्रिस्तोमं नजिग्युषे ॥ १ ॥ आरात्रिपार्थिवर्जः पितरः प्राग्रुथामसिः ॥ द्विवः सदासिद्धहनी
 वितिष्ठसऽआत्वेपर्वतेतमः ॥ येतेरात्रीनृचक्षसोद्युक्तसो नवतिर्नव ॥ अशीतिः संत्वरघाउतोतेसससस
 तीः ॥ रात्रौप्रपद्येजननीसर्वभूतनिवेशनी ॥ भद्रांभुगवतीकृष्णांविश्वस्यजगतोदिशां ॥ संवेशनीसंयु
 मिनीगृहनेक्षत्रमालिनी ॥ प्रपञ्चोहृशिवांरात्रौमद्रेपारमशीमद्वीमद्रेपारमशीमद्योजमः ॥ स्तोष्या
 मिप्रयतोदेवीशरण्यौबह्वचप्रियां ॥ सहस्रसंमितादुर्गाजातेवेदसेसुनवामुसोमं ॥ शांस्युर्थतद्विजातीनामृ
 पिभिः सोमपाश्रिताः ॥ ऋग्वेदेत्वंसंमुत्पन्नामरातीयुतो निदहान्वेदः ॥ यत्वादेवीप्रपद्यतिब्राह्मणा
 हव्यवाहनीः ॥ अविद्यावह्विद्यावासनः पर्यदतिदुर्गाणि विश्वा ॥ येऽअग्निवर्णांशुभांसौम्यांकीर्ति
 धिष्यन्ति येहिजाः ॥ तां तारयतिदुर्गाणि न विवर्षि संधुं दुर्गितायुभिः ॥ २ ॥ दुर्गेषु विपमेघोरेसंग्रामेरि
 पुसंकटे ॥ अग्निचोरनिपातेपुदुष्टग्रहनिवारेणदुष्टग्रहनिवारण्योनमः ॥ दुर्गेषु विपमेपुत्वंसंग्रामेषु
 वनेषु च ॥ मोहयित्वा प्रपद्यन्तेतेपामिऽअस्यं कुरुतेपामिऽअस्यं कुर्वी नमः ॥ केशिनीं सर्वमृतानां

पंचमीतिचनमंच ॥ सामांसमानिशादिवांसर्वतःपरिरक्षतुसर्वतःपरिरक्षत्वानमः ॥ तामुग्रिवर्णाल
 पसाज्वलंतीविरोचनीकर्मफलेषु जुष्टां दुर्गादिर्वीशरणमहंप्रथे सुतरसितरसेनमः सुतरसितरसेनमः ॥ दुर्गा
 दुर्गेषु स्थानेषु शनो दिवीरसिद्धेय इमं दुर्गास्तं वपुण्यरात्रौ रात्रौ सदापठेत् ॥ रात्रिः कुशिकसो भरो रात्रि
 स्तपो गायत्री ॥ रात्रिसूक्तं जपेन्नित्यं तत्कालं उच्यते ॥ ३ ॥ उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि
 श्वयातुमुतकोकयातुं ॥ सुपुर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृपदैवप्रमृणरक्षइंद्र ॥ ४ ॥ पिशंगं भृष्टिमं मृण
 पिशाचिमिंद्रमृण ॥ सर्वरक्षोनिबर्हय ॥ ५ ॥ यमस्यं त्वाजरायुणाशालेपरिव्ययामसी ॥
 उत्तहृदोहि नो भुवो भिर्ददातु भेषजं ॥ शीतहृदोहि नो भुवो भिर्ददातु भेषजं ॥ अंतिकामग्रिमं जर
 दूर्वादिः शिशुरागमत् ॥ अजानपुत्रपक्षयात्तृदयं मंहूयते ॥ विपुलं वनं बह्वाकाशं चरं जातवेदः का
 माय ॥ मां चरक्षपुत्रांश्च शरणमभक्तव ॥ पिंगाक्षलोलिह्रियवकृष्णवर्णनमोस्तुते ॥ अस्यां निबर्ह
 णस्योनां सागरस्योर्मयोयथा ॥ इंद्रक्षत्रंददातुवरुणमभिषिंचतु ॥ शत्रवो निधनं यातु जयस्त्वं ब्रह्मते

जसौ ॥ कपिलजटीसर्वसुक्ष्माग्निप्रत्यक्षदैवतं ॥ वरुणंचवशाम्यग्रेममपुत्रांश्वरक्षतुममपुत्रांश्वरक्ष
 त्वोनमः ॥ १ ॥ साग्रं वर्षशतं जीवपिबखादचमोदच ॥ दुःखितांश्चद्विजांश्चैव प्रजांचपशुपालय ॥
 योर्विदादित्यस्तपतियावद्भ्राजतिचंद्रमाः ॥ यावद्भ्रामकं थालकैलावद्राज्यं विभीषणे ॥ यावच्चंद्रश्चसूर्य
 श्रतावत्तिष्ठतिभेदिनी ॥ यावद्वायुः शुंवायतीतां वज्जीवजयांजय ॥ येनकेनप्रकारेणकोविनामनुजी
 वति ॥ परेषामुपकारार्थं यज्जीवतिसजीवति ॥ एतां वैश्वानरीं भूत्वासर्वदेवनमोस्तुते ॥ नचौरभयंनच
 सर्पभयंनचव्याघ्रभयंनचमृत्युभयं ॥ यस्यापमृत्युर्नचमृत्युः सर्वलभतेसर्वजयते ॥ २ ॥ रक्षाणो
 अश्रेतवरक्षणे सोरारक्षाणः सुंमखप्रोणानः ॥ प्रतिष्ठुरैविरुंजत्री इंद्रहो जहिरक्षोमहिचिद्वाटथानं ॥ ब्रह्मच
 तेजोतिवेदोनमश्चेयंच्चैगीः सद्विमिद्धर्षनीमूत् ॥ रक्षाणो अश्रेतनर्यां नितोकारक्षतेनस्तन्वोऽअप्रयुच्छन्
 ॥ १ ॥ गुणानां त्वा० ऋक् ॥ जातवैदसे सुनवामसांभरानीयतो निदंहातिवेदः ॥ सनः पर्षदेतिदुर्गा
 णि विश्वानवेवसिंधुं दुरितात्यग्निः ॥ क्षेत्रस्यपतिनावर्याहृतैनेवजयामसि ॥ गामश्वंपोषयित्वासनो

मृळातीदृशे ॥ २ ॥ वास्तोष्पतेप्र० ऋक् ॥ ४ ॥ स्वमःस्वमोधिकरणेसर्वनिष्वापयार्जनं ॥ आसू
 र्धमन्यान्स्वापयद्द्यूळ्ळंजाभियादहं ॥ अर्जरोनामसर्पःसर्पिरविपोमहात् ॥ यस्मिन्दिदसर्पःसुधि
 तस्नेनत्वास्वापर्यामसि ॥ सर्पःसर्पोऽजगरःसर्पिरविपोमहात् ॥ यस्यसर्पारिसिधवस्तस्यगंधिमशी
 महि ॥ कालिकोनामसर्पोनुवनांगसहस्रवलः ॥ यमुतुहदेहसोजातोऽयोनारायणवाहनः ॥ यदिका
 लिकंदूतस्ययदिकाः कालिकाद्भयात् ॥ जन्मसूमिर्मतिक्रांतोनिर्विपोयातिकालिकः ॥ आयाद्दिन्द्र
 पृथिभिरीळितेभिर्युद्धामिमनोसागधेयंजुपस्व ॥ तुसांजहुमंतुलस्येवयोपांसागस्तपैतृष्वसेयीवपार्भि
 व ॥ यशस्कंवलवंतंप्रसुतंतमेवराजाधिपतिर्वसूव ॥ संकीर्णनागाश्वपतिर्नराणांसुमंगलधंसततंदी
 र्धमायुः ॥ कर्कोटकोनामसर्पोद्योदृष्टीविषुऽउच्यते ॥ तस्यसर्पस्यसर्पुतंतस्मैसर्पनमोस्तुते ॥ नमो
 ऽअस्तुसर्पभ्योयेकचपृथिवीमनु ॥ येअंतरिक्षेदिवितेभ्यःसर्पभ्योनमः ॥ १ ॥ माविसेर्नमरिष्यसि
 परित्वापामिसर्वतः ॥ घनेनुहन्मिच्छथ्रिकमहंदेहेनागतं ॥ आदित्यरथवेगेनविष्णोर्वाहुवलेनच ॥

गरुडपक्षनिपातेन भूमिगच्छमहायशाः ॥ गरुडस्य जातमात्रेण त्रयो लोकाः प्रकंपिताः ॥ प्रकंपिता
 मही सर्वा सशैलवनकानना ॥ गर्गनंधंचंद्रार्कज्योतिषेण प्रकाशते ॥ देवताभयभीताश्चमारुतो नहु
 वार्थतिमारुतौ नहुवायत्यौ नमः ॥ २ ॥ भो सर्पभद्रभद्रं तैदुंगं च्छमहायशाः ॥ जन्मे जयस्य यज्ञान्ते
 आस्तीकवचनं स्मर ॥ आस्तीकवचनं श्रुत्वा यः सर्पानि निवर्तते ॥ शतधा भिद्यते मूर्ध्नि शिशुक्षफुलं
 धंथा ॥ नर्मदायै नमः प्रातर्नर्मदायै नमो निशि ॥ नमोस्तु नर्मदे तुभ्यं त्राहि मां विषसर्पतः ॥ योजरत्कारुणा
 जातो जरत्केन्यां महायशाः ॥ तस्य सर्पापभद्रं तैदुंगं च्छमहायशाः ॥ ३ ॥ आरुष्णेनेत्यादि नवमं
 त्राः ॥ ३ ॥ मुंचामित्वाह विषाजीवंनायकमज्ञातयुक्षमादुतराजयुक्षमात् ॥ ग्राहिर्जग्राहयदिवैतदेनं
 तस्य इन्द्राग्नीप्रमुक्तमेनं ॥ यदि क्षिनायुर्दिवापैतो यदि मृत्योरंतिर्कनीतऽएव ॥ तमाहं रामिनिर्कतेरुप
 स्थादस्पाषिमेनं शतशारदाय ॥ ४ ॥ सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषाह विषाहार्षिमेनं ॥ शतंथे मंशरदो
 नयातीन्द्रो विश्वस्यदुरितस्य पारं ॥ शतं जीवशरदोवर्धमानः शतहं मत्तान्छतमुवसंतान् ॥ शतभिद्राग्नी

सविताहस्पतिः शतायुषाहविषेभंपुनर्दुः ॥ आहर्षित्वाविदंत्वापुनरागाःपुनर्नव ॥ सर्वागसर्वते-
 वक्षुःसर्वमार्युश्रतेविदं ॥ ५ ॥ त्यमुपुवानिनदेवजंतसहावानंतरुतारंरथानां ॥ अरिष्टनेमिपृतनाजं
 माशुंस्वस्तयेताश्चमिहाहुवेम ॥ इंद्रस्येवरतिमाजोहुवानाः स्वस्तयेनावमिवारुहेम ॥ उर्वीनपृथ्वी
 बहुल्लेगभीरेमावासेतौमापेतौरिपाम ॥ सद्यश्चिद्यः शवसापंचकृष्टीः सूर्येऽइवज्योतिपापस्ततान ॥
 सहस्रसाः शतसाऽअस्यरंद्दिनस्मावतेयुवतिनशयी ॥ ६ ॥ महित्रीणामवोस्तुद्युक्षंमित्रस्यार्युम्णः॥
 दुरार्धवर्षणस्य ॥ नहितेषाममाचननाध्वंसुवारणेपु ॥ ईशेरिपुरघशंसः ॥ यस्मैपुत्रासोऽअदि-
 तेः प्रजीवसेमर्त्याय ॥ ज्योतिर्यच्छंत्यजलं ॥ ६ ॥ तच्छंयोरारुणीमहेगानुंयज्ञायगानुंयज्ञपंतये-
 देवस्वस्तिरस्तुनः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगानुभेपुजंशर्नोऽअसुद्धिपदेशंचतुष्पदे ॥ नमोब्रह्म-
 णेनमोऽअस्वग्रयेनमः पृथिव्यैनमऽओपधीभ्यः ॥ नमोवाचेनमोवाचस्पतयेनमोविष्णवेमहते
 करोमि ॥ ७ ॥ शांतापृथिवीशिवमंतरिंद्भ्योर्नदिव्यमयनोऽअस्तु ॥ शिवादिशः प्रदिशऽउद्दिशो

नऽआपोविद्युतः परिपांतुसर्वतः ॥ शान्तिः ॥ ३ ॥ ८ ॥ तमर्वतंनसान्निसिमरुषंनदिवः शिशुं ॥
 ममृज्यतैदिवेदिवे ॥ बोधद्यन्माहृरिभ्यांकुमारः साहदेव्यः ॥ अच्छानहुतऽउदरं ॥ उतत्पार्यजता
 हरीकुमारात्साहदेव्यात् ॥ प्रयतासद्यऽआददे ॥ एववदेवावशिवनाकुमारः साहदेव्यः ॥ द्वीर्षा
 युरस्तुसौमकः ॥ तंयुवंदेवावशिवनाकुमारंसाहदेव्यं ॥ द्वीर्षीयुंपरुणोतन ॥ ९ ॥ सहस्राक्षेणशत० ॥
 सर्वस्यास्यैसर्वस्यजित्यैसर्वभुवतेनामोतिसर्वजयति ॥ श्रीर्वचस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पर्वमा
 नमह्वीयते ॥ धान्यधनंपशुं बहुपुत्रलाभशतसंवत्सरंदीर्घमायुः ॥ १० ॥ इति शान्तिपाठः ॥
 अथे प्रातःसंध्यामंत्राः ॥ आपोहिष्ठास्योभुवस्तानंऊर्जेदयातन ॥ मृहेरणायचक्षसे ॥ योवः
 शिवत्तमोरसस्तस्यमाजयतेहनः ॥ उशतीरिवभातरः ॥ तस्माअरंगमामवाथेस्यक्षयायुजिन्वथ ॥
 आपोजनयथाचनः ॥ शनोद्विवीरुभिद्युऽआपोभवंतुपीतये ॥ शंयोरुभिस्त्वंतुनः ॥ इशानावा
 यीणांक्षयतीश्वर्यणीनां ॥ अपोयांचामिभेषुजं ॥ अप्सुमेसोमोऽअबवीदंतविश्वानिभेषुजा ॥

अग्निचविश्वशंभुं ॥ आपःपृणीतमैष्वजंवरुथन्वेहंमं ॥ उग्रोक्चसूर्यदृशे ॥ इदमापःप्रवहत्
 यत्किंचदुत्तंमयि ॥ यद्वाहमभिदुद्रोह्यदशिभुतानृतं ॥ आपोऽअद्यान्वचारिपंरसेनसमंगस्महि ॥
 पर्यस्वानग्नागहितंमांसंमृजुवर्चसा ॥ सस्रुपीस्तदपसोदिवानक्तंचस्रुपीः ॥ वरेण्यक्रनूरुह
 मादेवीरवसेहुने ॥ १ ॥ प्रातर्देवीमर्दिर्तेजोहवीमिमुधयंदिनुअदित्तासूर्यस्य ॥ रायेभित्रावरुणास
 र्वतातेळेतोकायुतनेयायशंयोः ॥ उतायातंसंगवेप्रातरह्नोमधयंदीनुअदित्तासूर्यस्य ॥ दिवानक्तमव
 साशंतेभेनुनेदानोपीतिरुश्विनाततान ॥ मोष्वद्यदुर्हणांवान्सायंकद्वारेऽअस्मत् ॥ अश्रीरइवजा
 मता ॥ २ ॥ मित्रोजनान्यातयतिब्रुवाणोमित्रोदांधारपृथिवीमुतद्यां ॥ मित्रःकृहीरनिमिषामि
 च्छेमित्रायह्वयंपुतवञ्जुहोत ॥ प्रसामित्रमर्नोऽअस्तुप्रथस्वान्यस्तंऽआदित्यशिक्षंतिवृतेन ॥ नह
 न्यतेनजीयतेत्वोत्तैनिनुमहोऽअश्रोत्यंतितोनदूरात् ॥ अनमीवासइळ्यामदंतोमितंज्ञवोर्वीरमुन्ना
 पृथिव्याः ॥ आदित्यस्यंजतमुंपक्षियंतोवयंमित्रस्यसुमतौस्याम ॥ अयंमित्रोर्नमस्यःसुशेवोराजा

सुक्षत्रोऽजनिष्टवेधाः ॥ तस्यैवयसुंमतोयुद्धियस्यापिभद्रसौमनसेस्याम ॥ महौऽआदित्यो नम
सोपसद्योयातयज्जनोगुणतेसुशेवः ॥ तस्मांतुतपन्यतमायुजुष्टमथौमित्रायहविराजुं होत ॥ १ ॥
मित्रस्यैवर्षणीधृतोवोदेवस्यसानसि ॥ द्युभ्रंचित्रश्रवस्तमं ॥ अभियोमहिनादिवंमित्रोबभूवसप्र
थाः ॥ अभिश्रवोमिःपृथिवी ॥ मित्रायपंचयेमिरेजनाऽअमिष्टिशवसे ॥ सदेवान्विशोन्वि
मर्ति ॥ मित्रोदेवेष्वायुषुजनायवृक्तवर्हिषे ॥ इषंइष्टव्रताऽअकः॥२॥ तद्वोदिवोदुहितरोविष्मातीरुप
ब्रुवउषसोयुज्ञकेतुः॥ वयस्यामयशसो जनेषुतद्द्वौश्रधत्तांपृथिवीचदेवी॥३॥ ॥ अथ माध्याह्नसंध्या
मंत्रः॥ ॥ आपःपुनंतुपृथिवीपृथिवीपूतापुनातुमां ॥ पुनंतुब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपुनापुनातुमां ॥ यदुच्छिष्टं
ममोऽयंयद्दादुश्चरितंममं ॥ सर्वपुनातुमामापोसनांचप्रतिग्रहस्वाहा॥१॥ ॥ अथ सायंसंध्यामंत्राः॥
यच्चिदितेविशोयथाप्रदेववरुणमृतं ॥ मिनीमसिद्यविद्यवि ॥ मानोवुथार्थहृत्नवेजिहीळानस्यरीरयः॥
माळणानस्यमन्यवे ॥ विमृळीकायतेमनोरथीरखंनसंदितं ॥ गीर्भिवरुणसीमहि ॥ पराहिमेविमन्यवः

पतंतिवस्यइष्टये ॥ वयोर्नर्वसतीरुप ॥ कदाक्षेत्रश्रियंनरमावरुणकरामहे ॥ मूळीकायोरुचक्षसं ॥ १ ॥
 तदित्समानमाशात्वेवंगतानप्रयुच्छतः ॥ धृतव्रतायदाशुपे ॥ वेदाद्येवीनांपदमंतरिक्षेणपततां ॥
 वेदनावःसमुद्रियः ॥ वेदमासोधृतव्रतोद्वादशप्रजावतः ॥ वेदायलंपुजायते ॥ वेद्वार्तस्यवर्तनिमुरो
 कृष्वस्यबृहत् ॥ वेदायेअध्यासते ॥ निपसादधृतव्रतोवरुणःपुस्त्याइस्वा ॥ सात्राज्यायसुकृतुः ॥ २ ॥
 ॥ इति सायंसंध्यामंत्राः ॥ अथस्वाध्यायमंत्राः ॥ ॐ अग्निमीळे ॥ अग्निःपूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो
 नूतनैरुता ॥ सेद्ववौऽएह्रवक्षति ॥ अग्निनारयिमंश्रवत्पोपमेवदिवेदिवे ॥ यशसंवीरवत्तमं ॥ अश्रेयंयज्ञ
 मंभ्वरंविश्वतःपरिमूरसि ॥ सद्वेदेषुगच्छति ॥ अग्निर्हीताकविकृतुःसत्याश्चित्रश्रवस्तमः ॥ देवोदेवे
 भिरागमत् ॥ १ ॥ यदंगदाशुपेत्वमग्नेमद्रंकरिष्यसि ॥ तवेत्तत्सत्यमंगिरः ॥ उपत्वाग्नेदिवेदिवेदोपा
 वस्तार्थियाव्यं ॥ नमोभरंतुऽएमसि ॥ राजंतमध्वराणांगोपासृतस्युदीदिवि ॥ वर्धमानंस्वेदमे ॥ सनः
 पितृवसूनवेभ्येसूपायनोभव ॥ सचस्वानःस्वस्तये ॥ २ ॥ वायवायाह्निदशतिमेसोमाअरुहताः ॥ ते

षाँपाहिश्रुधीह्वं ॥ वायुउक्थेभिर्जस्तेत्वामच्छाजरितारः ॥ सुतसोमाऽअहर्विदः ॥ वायोतवप्रपृच्वती
 धेनाजिगतिदाशुषे ॥ उरुचीसोमपतिथे ॥ इंद्रवायुऽइमेसुताउप्रयोभिरागतं ॥ इंद्रवोवामुशंतिहि ॥
 वायुर्विद्रश्चेतथःसुतानाँवाजिनीवसू ॥ तावायातुभुपद्रवत् ॥ ३ ॥ वायुर्विद्रश्चसुन्वतआयातमुप
 निष्कृतं ॥ सृष्टिर्वत्त्याधियानरा ॥ मित्रंहुवेपुतदंस्रंवरुणंचरिशादसं ॥ धिययूतार्चिसार्धता ॥ ऋते
 नमित्रावरुणाहताहृथाहृतस्पृशा ॥ क्रतुंबृहंतमाशाथे ॥ कवीनोमित्रावरुणानुविजाताउरुतक्षया ॥
 दक्षंदयातेऽअपसं ॥ ४ ॥ अश्विनायजर्वरीरिपोद्रवत्पाणीशुभस्पती ॥ पुरुमुजाचनुस्यतं ॥ अ-
 श्विनापुरुदंससानराशवीरियाधिया ॥ धिष्य्यावनंतुंगिरः ॥ दत्तायुवाकवःसुतानासंत्यावृक्तवर्हिषः ॥
 आयातंरुद्रवर्तनी ॥ इंद्रायाहिचित्रभानोसुताऽइमेत्वायवः ॥ अपर्वीभिस्तनोपुतासः ॥ इंद्रायाहि
 धियेषितोविप्रजूतःसुतावतः ॥ उपब्रह्माणिवाघतः ॥ इंद्रायाहितूतुजानुऽउपब्रह्माणिहरिवः ॥ सुते
 दधिष्वनुश्वनः ॥ ५ ॥ ओमांसश्वर्षणीघृतोविश्वेदेवासुऽआगत ॥ द्वाश्वंसौद्राशुषःसुतं ॥

विश्वेदेवासोऽअसुरःसुतमार्गतर्णयः ॥ उखाऽईवस्वसंराणि ॥ विश्वेदेवासोऽअस्त्रिधृष्टहिमांयासोऽ
 अद्भुहः ॥ मेधंजुपंतवह्यः ॥ पावकानःसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञवंष्टुधियावसुः ॥
 चोदयित्रीसूतानांचेततीसुमतीनां ॥ यज्ञंधिसरस्वती ॥ महोऽअर्णःसरस्वतीप्रचेतयतिकेतुनां ॥
 धियोविश्वविराजति ॥ ६ ॥ सुरूपकृत्तुमूतयेसुदुघामिवगोदुहै ॥ जुहुमसिचविद्यवि ॥ उपनः
 सवनागहिसोमस्यसोमपाःपिब ॥ गोदाऽइद्रेवतोमदः ॥ अथात्तेऽअंतमानांविद्यामसुमतीनां ॥
 मानोऽअतिरव्यऽआगहि ॥ परेहिवियमस्तृतमिंद्रपृच्छाविपश्चितं ॥ यस्तेसखिभ्यऽआवरं ॥ उत
 ब्रुंवंतुनोनिदोनिरन्यतश्चिदारत ॥ दधानाऽइंद्रइदुवंः ॥ ७ ॥ उतनःसुभगौअरिर्वीचेयुर्दस्मकृष्टयः ॥
 स्यामेदिंद्रस्यशर्मणि ॥ एमाशुमाशेवसरयन्नश्रियंनुमादंनं ॥ पृतयन्मदयत्सवं ॥ अस्यपीत्वाशंतक
 तोषुनोवृत्राणामभवः ॥ प्रावोवाजेपुवाजिनं ॥ तंत्वावाजेपुवाजिनैवाजयामःशतकतो ॥ धनाना
 मिंद्रसातये ॥ योरायो ३ वनिर्महान्सुपारः सुन्वतःसखां ॥ तस्माऽइंद्रायगायत ॥ ८ ॥ आत्वेता

निषीदतेद्रमभिप्रणायत ॥ सखायः स्तोमवाहसः ॥ पुरुतमंपुरुणामीशानंवार्याणां ॥ इंद्रसोमेसचा
सुते ॥ सर्धानोयोगआभूत्सरायेसपुरंध्यां ॥ गमद्वाजेभिरासनः ॥ यस्यसंस्थेनवृणवतेहरीसमस्तु
शत्रवः ॥ तस्माऽइंद्रायगायत ॥ सुतपान्नेसुताड्मेशुचयोयंतिवीतये ॥ सोमासोदध्याशिरैः ॥ १ ॥
त्वंसुतस्यपीतयेसद्योवृद्धोऽअजायथाः ॥ इंद्रज्यैष्ठ्यायंसुक्तो ॥ आत्वाविशंत्वाशवःसोमांसइंद्र
गिवणः ॥ शतैसंतुप्रचेतसे ॥ त्वांस्तोमाऽअवीवृधन्त्वामुक्त्वाशतक्तो ॥ त्वावर्धंतुनोगिरैः ॥ अक्षितोतिः
सनेदिंसंवाजाभिद्रःसहस्रिणीं ॥ यस्मिन्विश्वानिपौस्या ॥ मानोमर्ताऽअभिद्रुहन्तूनानाभिद्रगिवणैः ॥
ईशानोयवयावधं ॥ १० ॥ युंजंतिब्रह्मरूपचरंतंपरितस्थुपः ॥ रोचतेरोचनानादिवि ॥ युंजत्यस्य
काम्याहरीविषक्षसारथे ॥ शोणाधृष्णतृवाहसा ॥ केतुकृष्व० ऋक् ॥ आदहस्वधामनुपुनर्गभत्व
भेरि ॥ दधानानामयद्विधं ॥ वीळुचिदारुजलुभिर्गुहाचिदिद्रवद्विभिः ॥ अविदडुखियाऽअनु ॥
॥ ११ ॥ देवयंतोयथामतिमच्छाविददंसुगिरैः ॥ महामनुपतश्रुतं ॥ इंद्रेणसंहिदक्षसेसंजग्मानोअ

विभ्युपा ॥ मंदूसमानवर्चसा ॥ अनुवचैरुसिद्युभिर्मखःसहस्वदर्चति ॥ गुणैरिंद्रस्युकोम्यैः ॥ अतः
 परिज्मन्नागहिदिवोवरीचिनादधि ॥ समस्मिन्नुजनेगिरः ॥ इतोवासातिमीमहेदिवोवापाधिवादधि ॥
 इंद्रमहेवारजसः ॥ १२ ॥ इंद्रमिहाथिनोवृहदिंद्रमकेभिरुकिणः ॥ इंद्रवाणीरनूपत ॥ इंद्रइन्द्रयोः
 सचासंमिभ्लऽआवचोयुजां ॥ इंद्रोवञ्चीर्दिरणययः ॥ इंद्रोदीर्घायुचक्षसऽआसूरीरोहयद्विवि ॥
 विगाभिरद्विमैरयत् ॥ इंद्रवाजेपुनोवसहस्रप्रथनेपुच ॥ उग्रउग्राभिरूतिभिः ॥ इंद्रवयंमहाधनइंद्रमर्भ
 हवामहे ॥ युजँहृत्रेपुवञ्जिणं ॥ १३ ॥ सनोहृपञ्चमुंचुरुसत्रादावृत्रपाद्यधि ॥ अस्मभ्यमप्रति
 ष्कृतः ॥ तुंजेतुंजेयउत्तरिस्तोमाइंद्रस्यवृञ्जिणः ॥ नविधिअस्यसुष्टुतिं ॥ हृपायुथेववंसगःकृष्टीरि
 यूर्योर्जसा ॥ ईशानोऽअप्रतिष्कृतः ॥ यरुकंश्वर्पणीनावसूनामिरुज्यति ॥ इंद्रःपंचक्षितीनां ॥
 इंद्रवोविश्वतुस्परिह्वामहेजनेभ्यः ॥ अस्माकमस्तुकेवल् ॥ १४ ॥ इंद्रसानुसिरुधिंसजित्वानंस
 दासहं ॥ वर्षिष्ठमृतयेसर ॥ नियेनमुष्टिहृत्ययानिहृत्रारुणधामहे ॥ त्वोतांसोन्यर्वता ॥ इंद्रत्वोतांस

ऽआवधं वञ्चुनाददीमहि ॥ जयेमसंयुधिस्पृधः ॥ वयंशूरोभिरस्तृभिरिद्रत्वयायुजावयम् ॥ सासह्यामं
 पृतन्यतः ॥ महौइंद्रः परश्चनुमहित्वमस्तुवज्जिणे ॥ द्यौर्नप्रथिनाशवंः ॥ १५ ॥ समोहेवायऽआशं
 तनरस्तोकस्यसनितौ ॥ विप्रसोवाधियायवंः ॥ यःकुक्षिःसोमपातमःसमुद्रइवपिन्वते ॥ उर्वीरापोनं
 काकुदः ॥ एवाह्यस्यसूनृताविरुषीगोमतीमही ॥ पक्वाशाखानदाशुपे ॥ एवाहितेविभूतयजुतयइंद्रमा
 वते ॥ सद्यश्चित्संतिदाशुपे ॥ एवाह्यस्यकाम्यास्तोमउक्थंचशंस्या ॥ इंद्रायसोमपीतये ॥ १६ ॥ इंद्रेहिम
 त्स्थंथसोविश्वेभिःसोमपर्वभिः ॥ महौऽअभिःछिरोजसौ ॥ एमेनंरजतासुतेमंदिमिद्रायमंदिने ॥ चक्रिंवि
 श्वानिचक्रये ॥ मत्स्वासुशिप्रमंदिभिःस्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ॥ सचैषुसर्वनेष्वा ॥ असृग्रमिद्रतेगिरःप्र
 तित्वामुदंहासत ॥ अजौषाहृषमंपतिं ॥ संचोदयचित्रमर्वाग्रार्धइंद्रवरैण्यं ॥ असदिनेविभु
 प्रभु ॥ १७ ॥ अस्मान्मुतत्रचोदयेद्ररायेरमंस्वतः ॥ तुविद्युश्रयशंस्थतः ॥ संगोमदिंद्रवाजवद्
 स्मेपथुश्रवोबृहत् ॥ विश्वायुर्ध्वद्यक्षितं ॥ अस्मेधेहिश्रवोबृहद्द्युधंसहस्रसातमं ॥ इंद्रताएथिनी

रिषः ॥ वसोरिद्रवसुपतिगीभिर्गुणतं कृमिथं ॥ होमंगंतारमृतधे ॥ सुतेसुतेन्योक्तसेवृद्ध्वनर
 दरिः ॥ इंद्रायशूषमर्चति ॥ १८ ॥ गार्थित्वागायत्रिणोर्चत्युक्तमर्किणः ॥ ब्रह्माणस्त्वाशतक्र
 तऽउदंशमिवयेमिरे ॥ यत्सानोःसानुमारुहद्वूर्यस्पष्टकल्पी ॥ तदिंद्रोऽअर्थचेततियूथेनवृष्णिरे
 जति ॥ युक्ष्वाहिकेशिनाहरीद्वर्षणाकक्ष्यप्रा ॥ अथानइंद्रसोमपागिरामुपश्रुतिंचर ॥ इहिस्तो
 मीऽअभिस्वरामिगुणीश्वारुव ॥ ब्रह्मचनोवसोसचेद्रयज्ञंचवर्धय ॥ उक्थमिंद्रायशंस्यंवर्धनंपुरु
 निःषिधे ॥ शक्रोयथासुतेषुणोरारणत्सख्येषुच ॥ तमित्संखित्वईमहेतरुयेतंसुवीर्ये ॥ सशक्र
 उत्तनः शक्रदिंद्रोवसुदयमानः ॥ १९ ॥ सुवित्तसुनिरजमिंद्रत्वादातुमिद्यशः ॥ गवाम
 पत्रजंघधिकणुष्वराथोऽअद्रिवः ॥ नहित्वारोदसीउभेऽकंधायमाणमिन्वतः ॥ जेपुःस्वर्वतीरुपः
 संगअस्मभ्यंधूनुहि ॥ आश्रुत्कर्णश्रुधीहवंनूचिदधिष्वमेगिरः ॥ इंद्रस्तोममिमंसमंकृष्वायुजश्चि
 दंतंरं ॥ विद्महित्वाद्वर्षन्तमुंवाजेषुहवनुश्रुतं ॥ द्रषन्तमस्यहूमहऽकृतिंसहस्रसातमां ॥ आतूनंइ

द्रकौशिकमंदसानःसूतंपिव ॥ नव्यमायुःप्रसूतिरकृधीसंहस्रसामृषिं ॥ परित्वागिर्वणोगिरि
 ऽडमाभवंतुविश्वतः ॥ बृद्धायुमनुष्टंश्रोजुष्टाभवंतुजुष्टयः ॥ २० ॥ इंद्रविश्वाऽअवीवृधन्त्समुद्र
 व्यचसंगिरः ॥ रथीतभरथीनांवाजानांसपतिपतिं ॥ सख्येतइंद्रवाजिनोमाभेमशवसस्पते ॥
 त्वासुभिप्रणोनुमोजेतारुमपराजितं ॥ पूर्वीरिंद्रस्यरातयोनिविदंस्यंत्युतयः ॥ यदीवाजस्यगोम
 तःस्तोतृभ्योभंहेतेमधंपुराभिंदुयुवाकृविरमितौजाऽअजायत ॥ इंद्रोविश्वंस्यकर्मणोधृतविञ्ची
 पुरुष्टुतः ॥ त्वंबलस्यगोमतोपांवरद्विवोविलं ॥ त्वादेवाऽअविभ्युपस्तुज्यमानासऽआविपुः ॥
 तवाहंशूरतिभिःप्रत्यायंसिंधुमावदन् ॥ उपातिष्ठंतगिर्वणोविदुष्टेतस्यकार्वः ॥ मायाभिरि
 द्रमायिनंत्वंशुष्णमवातिरः ॥ विदुष्टेतस्यमेधिरास्तेपांश्रवांस्युत्तिर ॥ इंद्रमीशानुमोजसाभि
 स्तोमाऽअनूपत ॥ सहस्रंयस्यरातथंउतवासंतिभूयसीः ॥ २१ ॥ ॥ इतिस्वाध्यायमंत्राः ॥
 ॥ अथ गणपतिमूर्त्तं ॥ आतूनंइंद्रक्षुर्मंतं चित्रंग्रामंसंगंभाय ॥ महाहस्तीदक्षिणेन ॥ विद्याहित्वानु

विक्रमिन्नुविद्वेषां तुवीमघं ॥ तुविमात्रमवोभिः ॥ नदित्वाशूरदेवानमतीसोदित्तं ॥ श्रीमंनगांवार
 यंते ॥ एतोन्विद्वंस्तवामेशानंस्वःस्वराजं ॥ नराधंसामधिपन्नः ॥ प्रस्तोपद्रुपंगासिपच्छवत्सामगी
 यमानं ॥ अमिराधंसाजुगुत् ॥ १ ॥ आनोमएवक्षिणेनामिसुव्येनुप्रमृश ॥ इन्द्रमानोवसोर्निर्मा
 क् ॥ उपकमस्वामंरधृषुताधृष्णोजनानां ॥ अदाशूष्टरस्यवेदः ॥ इद्रयऽउनुतेऽअस्तिवाजोविभ्रेभिः
 सनित्वः ॥ अस्माभिःसुतंसनुदि ॥ सुद्योजुवंस्तेवाजाऽअस्मभ्यंविश्वश्रंद्राः ॥ वैशैश्रमसूजंते ॥ २ ॥
 ॥ अथपुरुषसूक्तं ॥ सहस्रशीर्षांपुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात् ॥ समूर्ध्विश्वतोदृत्वात्यतिष्ठदशांगुलं ॥
 पुरुषएवेदसर्वयद्भुतंयच्चमव्यं ॥ उतामृतृत्वस्येशानोयदनेनानिरोहति ॥ एतावानस्यमहिमतोज्यायां
 श्रपूरुषः ॥ पादोस्यविश्वामृतानित्रिपादस्यामृतंदिवि ॥ त्रिपादूर्ध्वउदैपुरुषःपादोस्येहासंवत्सुनः ॥
 ततोविष्वङ्ब्यंक्रामत्साशानशनेऽअमि ॥ तस्माद्विराळजायतविराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातो
 ऽअत्यरिच्यतंपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ १ ॥ यत्पुरुषेणहविषविवाययज्ञमतंचत ॥ वसुंतोऽअस्यासीदा

विश्वचर्षणिरमियो निमयो हतं ॥ दुर्णामथस्थमासदत् ॥ वरिवोधातमोमत्रमंदिष्टोवृत्रहन्तमः ॥
 परिधोधोनां ॥ अभ्यर्षमहानां दिवानां वीनिमंशसा ॥ अमित्राजंमूनश्रवः ॥ त्वामच्छाचराम
 सितदिवर्धिवोदिवे ॥ इंदोत्वेनंऽआशसः ॥ १ ॥ पुनातितेपरिखुंतुंसोममूर्धस्यदुहिता ॥ वोरंश
 श्वनातनां ॥ तमीमर्षवीःसमर्धेऽआगृभ्णंति योषणोदशं ॥ स्वसारःपार्थद्विवि ॥ तमींहिन्वंत्युग्रुवोधमं
 तिवाकुरंहतिं ॥ त्रिधातुंवारुणंमधुं ॥ अमींममद्वयांजुतश्रीणंतिधेनवःशिशुं ॥ सोमभिद्रायुपातवे ॥
 अस्येदिदोमदेष्वविश्वानृत्राणिजिघ्रते ॥ शूरोमन्नाचंमंहते ॥ २ ॥ पर्वस्वेदेववीरतिपवित्रंसोमं
 ह्या ॥ इंद्रंभिद्रोह्यपाविश ॥ आवच्यस्वमहिप्सरोदृपेन्दोद्युन्नत्रत्तमः ॥ आयोनिधर्णीसिःसदः ॥
 अधुसतप्रियंमधुधारासुतस्येवेधसः ॥ अपेवसिष्ठसुकृः ॥ महान्तंत्वामहोरन्वापोअर्षतिंसिधवः ॥
 यद्गोभिर्वासिष्ण्यसे ॥ समुद्रोऽअप्सुमांष्टजेविष्टंभोधरुणोदिवः ॥ सोमःपवित्रेऽअस्म्युः ॥ ३ ॥
 अचिकदहृपाहृरिर्भृहान्मित्रोनदर्शतः ॥ संसूयणरोचने ॥ गिरस्तइंद्रोऽओजसामसृज्यंतैऽअपु

स्युर्वः ॥ याभिर्मदायशुंभसे ॥ तंत्वामदायघृष्वयऽउलोककृत्तुमीमहे ॥ तवप्रशस्तयोमहीः ॥
 अस्मभ्यमिदंविद्रुमर्ध्वःपवस्वधारया ॥ पुर्जन्योद्वष्टिमौऽइव ॥ गोषाईदोनृषाऽअस्यश्वसावा
 जसाउत ॥ आत्मायज्ञस्यपूर्यः ॥ ४ ॥ एषदेवोऽअमर्त्यःपर्णवीरिवदीयति ॥ अभिद्रोणान्या
 सदै ॥ एषदेवोविपाकृतोनिह्वरसिधावति ॥ पवमानोऽअदाभ्यः ॥ एषदेवोविपन्युभिःपवमानऽक
 त्रायुभिः ॥ हरिर्वाजायमृज्यते ॥ एषविश्वानिवाय्यशूरोयन्निवसत्त्वभिः ॥ पवमानःसिषासति ॥
 एषदेवोरथर्यतिपवमानोदशस्यति ॥ आविष्कणोतिवग्वनुं ॥ ५ ॥ एषविप्रैरभिष्टुतोपोदेवोवि
 गाहते ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ एषदिवंविधावतिरिरोरजांसिधारया ॥ पवमानःकनिःकदत् ॥
 एषदिवंब्यासरत्तिरोरजांस्यस्थृतः ॥ पवमानःस्वध्वरः ॥ एषप्रत्नेनजन्मनादेवोदेवेभ्यःसुतः ॥
 हरिःपवित्रेऽअर्षति ॥ एषउस्यपुरुन्नतोजज्ञानोजनयन्निषः ॥ धारंयापवतेसुतः ॥ ६ ॥ सना
 चसोमजेषिचपवमानमहिश्रवः ॥ अथानोवस्यसस्कधि ॥ सनाज्योतिःसनास्वर्गविश्वाचसोमसौ

भंगा ॥ अथानो० ॥ सनादक्षं मुतक्रतुमर्पसोममृधोजहि ॥ अथानो० ॥ पर्वीतारः पुनीतनु
 सोममिद्रायपातवे ॥ अथा० ॥ त्वंसूर्यनुऽआभजतवृकत्वातवोतिभिः ॥ अथानो० ॥ ७ ॥
 तवृकत्वातवोतिमिज्ज्यैर्वपश्येसूर्य ॥ अथा० ॥ अम्यर्पस्वायुधसोमद्विवर्हसूर्यि ॥ अथा० ॥
 अम्यर्पानपच्युतोर्यिससमत्सुसांसहिः ॥ अथा० ॥ त्वांयज्ञैरवीचधन्पवंमानविधर्मणि ॥ अथा० ॥
 र्येनीश्वित्रमश्विनमिदोविश्वायुमाभर ॥ अथा० ॥ ८ ॥ समिद्धोविश्वतस्पतिः पवंमानोविराजति ॥
 प्रीणन्वृषाकनिक्रदत् ॥ तनूनपात्पवंमानः शृगेशिशानोऽअर्पति ॥ अंतरिक्षेणरारजत् ॥ इच्छेन्न्यः पवंमा
 नोर्यिविराजतिद्युमान् ॥ मयोर्धाराभिराजसा ॥ बर्हिः प्राचीनमोजसापवंमानःस्तुणन्धरिः ॥ देवे
 षुदेवईयते ॥ उदातैर्जिहतेबृहहारेदिवीर्हिरण्ययीः ॥ ९ ॥ पवंमानेनसुहुताः ॥ १ ॥ सुशित्पेवृहतीम्
 हीपवंमानोवृषण्यति ॥ नक्तोषासानदर्शते ॥ उभादेवानूचक्षसाहोतारोदेव्याहुवे ॥ पवंमानुइद्रोद्यवा ॥
 भारतीपवंमानस्यसरंस्वतीळामही ॥ इमनोयुज्ञामार्गमन्तिखोदेवीः सुपेशसः ॥ त्वष्टारमयुजांगोपां

मिसृत्योअध्वरः ॥ परियत्काव्याकविर्नृम्णावसानोऽअर्षति ॥ स्वर्वाजीसिपासति ॥ पर्वमानो
 ऽआमिस्पृधोविशोराजेवसीदति ॥ यदीमृष्वंतिवेधसः ॥ १३ ॥ अन्वयोवारेपरिप्रियोहृरिविनेषुसी
 दति ॥ रेभोवन्नुण्यतेमती ॥ सवायुमिद्रंमश्विनासाकंभेदनगच्छति ॥ रणायोऽअस्यथर्मभिः ॥
 आमित्रावरुणासंगंमध्वःपवंतुरुर्मयः ॥ विदानाऽअस्यशश्वर्मभिः ॥ अस्मभ्यरोदसीरयिमध्वोवा
 जस्यसातये ॥ श्रवोवसूनिंसंजितं ॥ १४ ॥ एतेसोमाऽअभिप्रियमिद्रस्यकाममक्षरन् ॥ वर्धतो
 ऽअस्यवीर्यं ॥ पुनानासंश्वमूषदोगच्छंतोवायुमश्विना ॥ तेनोधांतुसुवीर्यं ॥ इंद्रस्यसोमुराथसेपुना
 नोहार्दिबोदय ॥ कृतस्ययोनिसादं ॥ सृजंतित्वादशक्षिपोहिन्वंतिससथीतयः ॥ अनुविमा
 ऽअमादिषुः ॥ देवेभ्यस्त्वामदायुकंसृजानमतिमेभ्यः ॥ संगोभिर्वासियामसि ॥ १५ ॥ पुनानःकलशे
 ष्वावस्त्राण्यरुषोहरिः ॥ परिगव्यान्यव्यतामृधोनऽआपवस्त्रनोज्जिह्विश्वाऽअपृद्धिषः ॥ इंद्रोसर्वायुमा
 विशा ॥ वृष्टिदिवःपरिस्रवद्युमंपृथिव्याऽअधि ॥ सहोनःसोमपृतसुधाः ॥ नृचक्षंसत्वावयमिद्रंपीतंस्वविदं ॥

म॒ह्नीम॒हिप्र॒जा॒मिषं ॥ १६ ॥ परि॒प्रिया॒दिवः॒क॒विर्व॑यांसि॒न॒स्योर्हितः ॥ सु॒वानो॒यातिक॒विक्र॑न्तुः ॥
 प्र॒क्षया॑य॒पन्य॑से॒जना॑य॒जुष्टोऽअ॒द्रुहे ॥ वी॒त्यर्ष॑च॒निष्ठ॒या ॥ स॒सुनु॑र्मा॒तरा॒शुचि॑र्जा॒तो॒जतिऽअ॒रोच॑
 यत् ॥ म॒हान्म॒होऽ॒कृता॒वृथा ॥ स॒स॒स॒धी॒तिभि॑र्हितो॒नद्योऽअ॒जिन्व॑द॒द्रुहः ॥ या॒एक॑म॒क्षिवा॒वृधुः ॥
 ताऽअ॒भिसं॑त॒मस्त्व॑तं॒महे॒युवा॑न॒माद॑धुः ॥ इ॒दुर्भि॑द्र॒तव॑त्र॒ने ॥ १७ ॥ अ॒भिव॑ह्नि॒रम॑त्यः॒स॒स॒प॒श्यति॒वाव॑
 हिः ॥ क्ति॒र्वि॒द्वी॒रि॒त॒र्प॒यत् ॥ अ॒वा॒क॒ल्पे॑षु॒नःपु॒म॒स्त॒मांसि॑सो॒मयो॑ध्या ॥ ता॒नि॒पु॒ना॒नज॑ण॒नः ॥ नू॒न॒व्य
 से॒नवी॑य॒सेसू॒क्ताय॑सा॒धया॒पथः ॥ प्र॒ल॒व॒द्रौ॒चया॑रु॒चः ॥ प॒र्व॒मा॒न॒महि॑श्र॒वो॒गाम॑श्व॒रासि॑वी॒रव॑त् ॥ स॒ना
 मे॒धांस॒ना॒स्वः ॥ १८ ॥ प्र॒स्वा॒ना॒सो॒रथाऽइ॒वा॒र्वी॒तो॒नश्र॑व॒स्यवः ॥ सो॒मांसो॒रा॒येअ॑क्र॒मुः ॥ हि॒न्वा॒ना॒सो
 रथा॑इ॒वद॒धन्वि॑रे॒गभ॑स्त्योः॥भ॒रांसः॑का॒रिणा॑मि॒व ॥ राजा॑नो॒नप्र॑श॒स्तिभिः॑सो॒मासो॒गोभि॑र॒जते ॥ य॒ज्ञो
 न॒स॒था॒वृभिः ॥ परि॑सु॒वाना॑स॒इ॒द्वो॒मदा॑य॒ब॒र्हणा॑गि॒रा ॥ सु॒ताऽअ॑र्ष॒ति॒धार॑या ॥ आ॒पा॒ना॒सो॒वि॒व
 स्व॑तो॒जन॑तऽउ॒षसो॑भ॒गं ॥ सू॒राऽअ॑ण्वं॒वित॑न्वते ॥ १९ ॥ अ॒प॒द्दारा॑म॒तीना॑प्र॒त्नाऽकृ॑ण्वं॒तिकार॑वः ॥

वृष्णोहरसऽआयवं ॥ समीचीनासेऽआसनेहोतारःससजाभयः ॥ पृदमेकस्युपिप्रतः ॥ नाभानाभिं
 नऽआवदेचक्षुश्चित्सूर्येसचा ॥ कवेरपत्यमाडुहे ॥ अभिप्रियादिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहोहितं ॥ सूरः
 पश्यतिचक्षसा ॥ २० ॥ उपास्मिगायतानरःपवंमानार्थदेवे ॥ अभिदेवोऽइयक्षते ॥ अग्निनेमधुनाप
 योर्थर्वाणोऽअशिश्रयुः ॥ देवंदेवार्यदेव्युः ॥ सनःपवस्वशंगवेशंजनायशमवति ॥ शंराजन्नोपंधी
 भ्यः ॥ बभ्रवेनुस्वतंवरुणार्यदिविस्पृशे ॥ सोमायगाथमर्चत ॥ हस्तच्युतेभिरद्रिभिःसुतंसोमंपु
 नीतन ॥ मधावाधांवलामधु ॥ २१ ॥ नमसेदुपसीदतद्वेदभिश्रीणीतन ॥ इंदुमिद्रेदधातन ॥
 अमित्रहाविचर्षणिःपवंस्वसोमशंगवे ॥ देवेभ्योऽअनुकामकृत् ॥ इंद्रायसोमपातवेमदायपरिषिच्य
 से ॥ मनश्चिन्मनंसस्पतिः ॥ पवंमानसुवीर्यर्यसोमरिरीहिनः ॥ इंद्रविद्रेणनोयुजा ॥ २२ ॥ सोमा
 ऽअष्टग्रामिदवःसुताऽकृतस्यसादने ॥ इंद्रायमधुमत्तमाः ॥ अग्निविप्राऽअनूषतगावोवृत्सनमातरः ॥
 इंद्रंसोमस्यपीतये ॥ मदच्युत्क्षेत्तिसादनेसिधोऽरुर्माविपुश्चित् ॥ सोमोगैरीऽअधिश्चितः ॥ दिवोना

भाविचक्षणोव्योवोरमंहीयते ॥ सोमोयःसुकृतःकृविः ॥ यःसोमःकलशेष्वोऽअंतःपुंवित्रोऽओहितः॥
 तमिदुःपरिषस्वजे ॥ २३ ॥ प्रवाचमिदुरिष्यतिसमुद्रस्थायिष्विष्टिषि ॥ जिन्वन्कोशमधुश्रुतं ॥ नि
 त्यस्तोत्रोवनस्पतिर्धीनामंतःसंबर्दुषः ॥ हिन्वानोमानुषायुगा ॥ अभिप्रियादिवस्पदासोमोहि
 न्वानोऽअर्षति ॥ विप्रस्युधारयाकृविः ॥ आपवमानधारयर्थिसहस्रवर्चसं ॥ अस्मेऽइंदोस्वामुवं॥
 ॥ २४ ॥ ॥ प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ ॐ सोमःपुनानोऽअर्षतिसहस्रधरोऽअत्यविः॥
 वायोरिंद्रस्यनिष्कृतं॥ पवंमानमवस्यवोविप्रमृभिप्रगायत॥सुष्वाणंदेववीतये॥पवंतेवाजसातयेसोमाः
 सहस्रपाजसः॥गृणानदेववीतये॥उतनोवाजसातयेपवंस्वबृहतीरिषः॥द्युमदिंदोसुवीधी॥तेनःसहस्रिणं
 रथिपवंतामामुवीधी॥ सुवानादेवासइंदवः॥१॥ अत्याहियानानद्रुभिरस्रुंवाजसातये ॥ विवारमव्य
 माशवः ॥ वाश्राऽअर्पुतीदंवोभिवत्संनधेनवः ॥ दधन्विरेभस्त्योः ॥ जुष्टइंद्रायमत्सरःपवंमानक
 निक्रदत् ॥ विश्वाऽअपृहिषौजहि ॥ अपृंत्तोऽअरावणःपवंमानाःस्वर्दृशः ॥ योनाहृतस्यसीदत

॥ २ ॥ परिप्रासिन्धवत्कविःसिधोरुर्मावधिश्रितः ॥ कारंविश्रैतपुरुस्पृहं ॥ गिरायदीसवंधवःपंचत्रो
 ताअपुस्यवः ॥ पुरिष्कण्वर्तिघर्णसि ॥ आदस्यशुष्मिणोसेविश्वेदेवाऽअमत्सत ॥ यदीगोभिर्वसा
 यते ॥ निरिणानोविधावतिजहच्छर्याणितान्वा ॥ अत्रासंजिघत्तेयुजा ॥ नसीभिर्योविवस्वतःशु
 भ्रोनमामृजेयुवा ॥ गाःकृण्वानोननिर्णिजं ॥ ३ ॥ अतिश्रितीतिरश्र्वतागव्याजिगात्यणव्या ॥ वमु
 भियतियंविदे ॥ अस्मिस्त्रिपुःसमगमनमूर्जयतीरिषस्पतिं ॥ वृष्टागृभ्णतवाजिनः ॥ परिदिव्यानिम
 र्मशद्विश्वानिसोमपाथिवा ॥ वसूनियाह्यस्मयुः ॥ ४ ॥ एषधियायात्यणव्याशूरोरथेभिराशुभिः ॥
 गच्छन्निद्रस्यनिष्कृतं ॥ एषपुरुधियायतेबहनेद्वतातये ॥ यत्रासृतासऽआसते ॥ एषहितोविनी
 यतेनःशुभ्रावतापथा ॥ यदितुंजंतिमूर्णयः ॥ एषभृंगाणिदोधुवच्छशीतेयथ्योईवषा ॥
 नृम्णादधानऽओजसा ॥ एषरुक्मिभिरियेतवाजीशुभेभिरंशुभिः ॥ पतिःसिधूनांभवनं ॥
 एषवसूनिपिब्दनापरुषाययिवाऽअति ॥ अवशदेवुगच्छति ॥ एतंमृजंतिमर्ज्यमुपद्रोणेष्वायवः ॥

प्रचक्राणमहीरिषः ॥ एतमुत्पदंशक्षिपोमूर्जतिससधीतयः ॥ स्वायुधंमदिन्तमं ॥ ५ ॥ प्रतेसोता
 रंऽओण्योइरसंमदायुष्वव्ये ॥ सर्गानतुत्तयेतेशः ॥ क्रत्वादक्षस्यरथ्यमपोवसानमंधसा ॥ गोपा
 मण्वेषुसश्विम ॥ अनसमपुष्टुष्टुरसोमंपवित्रऽआसृज ॥ पुनीहिंद्रायुपातवे ॥ प्रपुनानस्यचेतसा
 सोमःपुवित्रेऽअर्षति ॥ क्रत्वासुथस्थमासंदत् ॥ प्रत्वानमोभिरिद्वइद्रसोमाऽअसृक्षत ॥
 महेमरायकारिणः ॥ पुनानेरूपेऽअव्ययेविश्वाऽअर्षन्नाभिश्चित्रयः ॥ शूरोनगोषुतिष्ठति ॥ द्विवो
 नसानुपिप्युषीधारासुतस्यवेधसः ॥ हथापुवित्रेऽअर्षति ॥ त्वंसोमविपश्चित्तनोपुनानऽआयुषु ॥
 अव्योवारुविधावसि ॥ ६ ॥ प्रनिम्नेनवसिंधोघ्नतोवृत्राणिभूर्णयः ॥ सोमाअसृग्रमाशवः ॥ अभि
 सुवानासइंदवोवृष्टयःपृथिवीमिव ॥ इंद्रसोमासोऽअक्षरन् ॥ अत्यूर्मिमत्सरोमदुःसोमःपुवि
 त्रेऽअर्षति ॥ विघ्नबक्षीसिदेव्युः ॥ आकलशेषुधावतिपुवित्रेपरिषिच्यते ॥ उक्थैर्यज्ञेषुवर्धते ॥
 अतित्रीसोमरोचनारोहन्त्राजसेदिव ॥ इष्णन्सूर्यनचोदयः ॥ अभिविमाऽअनूपतमूर्धन्यज्ञ

स्यंकारवः ॥ दधानाश्रक्षसिप्रियं ॥ तमुत्वावाजिनंनरोधीसिर्विप्राऽअवस्यवः ॥ मूर्जलिदेवता
 तये ॥ मथोर्धारामनुक्षरतीमःसुथस्थमासदः ॥ चारुर्क्षुनार्थपीतये ॥ ७ ॥ परिसुवानोगी
 रिष्ठाःपवित्रेसोमोऽअक्षाः ॥ मर्देषुसर्वथाऽअसि ॥ त्वंविप्रस्त्वंकविर्मधुप्रजातमंधसः ॥ मर्दे
 षु ॥ तवविश्वेसजोषसेदेवासःप्रीतिमाशत ॥ मर्देषु ॥ आयोविश्वानिवायुर्विसूनिहस्त
 योर्द्वे ॥ मर्देषु ॥ यद्भमेरोदसीमह्रीसंमातरैवदोहते ॥ मर्देषु ॥ परियोरोदसीउभेसद्योवा
 जेमिर्षति ॥ मर्देषु ॥ सशृष्मीकृलशेष्वापुनानोऽअचिक्रदत् ॥ मर्देषु ॥ ८ ॥ यत्सोम
 चित्रमुक्थ्यदिव्यंपार्थिवंसु ॥ तन्नःपुनानऽआभर ॥ युवंह्रिस्थःस्वर्पतीइंद्रश्रसोमगोप
 ती ॥ ईशानापिष्यतंधियः ॥ वृषापुनानऽआयुषुस्तनयुन्नधिब्रह्मिणि ॥ हरिःसन्धोनिमा
 संदत् ॥ अवावशंतधीतयोष्टषमस्याधिरत्सि ॥ सुनोर्वत्सस्यमानरः ॥ कुविद्वृष
 ण्यंतंभ्यःपुनानोगर्ममादधत् ॥ याःशुक्रंदुहतेपयः ॥ उपशिक्षापत्स्थुषोभियसमाधेद्विशत्रुषु ॥

पवमानविदारयि ॥ निशत्रोःसोमवृष्णयंनिशुष्मंनिवयंस्तिर ॥ दूरेवासतोऽअंतिवा ॥ ९ ॥ प्रकृवि
 र्देववीतयेव्योवारेभिरर्षति ॥ साह्वान्विश्वाऽअभिसृथः ॥ सहिष्माजरितृभ्यऽआवाजंगोमंतामिन्व
 ति ॥ पवमानःसहस्रिणं ॥ परिविश्वानिचेतसामुशसेपवसेमती ॥ सनःसोमश्रवोविदः ॥ अभ्यर्षष्ट
 हृद्यशौमववङ्गयोऽभुवरयि ॥ इषंस्तोतृभ्यआभर ॥ त्वराजैवसुन्नतोगिरःसोमाविवेशिथ ॥ पुनानोवले
 ऽअद्भुत ॥ सवह्निरप्सुदुष्टरोमज्यमानोगभस्त्योः ॥ सोमश्चमूपुसीदति ॥ क्रीळुर्मखोनमंह्युःपवित्रंभो
 मगच्छसि ॥ दधस्तोत्रेप्सुवीर्यि ॥ १० ॥ एतेधावन्तीदंबुःसोमाऽइंद्रायुष्वयः ॥ मत्सरासःस्वर्विदः ॥ प्रवृण्वं
 तोअभियुजःसुष्वयेवरिवोविदः ॥ स्वयंस्तोत्रेवयस्कृतः ॥ वृथाक्रीळंतइंदवःसुधस्थमभ्येकमिदं ॥ सिं
 धोरूमान्वयक्षन् ॥ एतेविश्वानिवार्युपवमानासऽआशत ॥ हितानससंयोरथे ॥ आस्मिन्पिशंगमिद
 वोदधानावेनमादिशे ॥ योऽअस्मभ्यमरोवा ॥ ऋभुर्नर्थ्यंनवंदधानाकेतमादिशे ॥ शुक्राःपवध्व
 मर्णसा ॥ एतउत्येऽअवीवशन्काष्ठावजिनोऽअकत ॥ सतःप्रासाविषुर्मति ॥ ११ ॥ एतेसोममांसआ

शवोरथाडवप्रवाजिनः ॥ सर्गाःसृष्टाऽअहेपत ॥ एतेवाताडवोरवःपर्जन्यस्थेववृष्टयः ॥ अथेरेव
 अमाद्यथा ॥ एतेपूतार्विपथितःसोमासोद्व्याशिरः ॥ विषाव्यानशुर्धियः ॥ एतेमृष्टाऽअमर्त्याः
 समुवांसोनशश्रमुः ॥ इयंसंतःपृथेरजः ॥ एतेपृष्टानिरोदसोविप्रयंतोव्यानशुः ॥ एतेदमुत्तमं
 रजः ॥ तंतुतन्वानमुत्तममनुप्रवतंऽआशत ॥ एतेदमुत्तमाद्यं ॥ तंतोमपृणिभ्यऽआवसुगव्या
 निधारयः ॥ तंतंतंतुमचिक्रदः ॥ १२ ॥ सोमाऽअसृष्टप्रशवोमद्योर्दस्यधारया ॥ अभिवि
 श्वानिकाव्या ॥ अनुप्रत्नासंऽआयवःपदंनवीयोऽअक्रमुः ॥ रुचेजंतसूर्ध ॥ आर्पवमाननोमरा
 योऽअदाशुपुगेथं ॥ कृधिप्रजावंतीरिपः ॥ असिसोमासऽआयवःपर्वतेमद्यंमदं ॥ अमिकोरां
 मधुश्रुतं ॥ सोमोअर्पतिघर्णसिर्दधानइंद्रियसं ॥ सुवीरोऽअमिशस्तिपाः॥इंद्रायसोमपवसेद्वेभ्यःस
 धुमाद्यः॥इंद्रोवाजंसिपाससि॥अस्यपीत्वामदानाभिर्दोवृत्राणमप्रति॥जघानजघनंचनु॥१३॥प्रसोमा
 सोऽअधन्विपुःपवंमानासइंदवः ॥ श्रीणानाऽअप्सुर्द्वजत ॥ अभिगवोअधन्विपुरापोनप्रवताय

तीः ॥ पुनानांद्रमाशत ॥ प्रपवमानधन्वसिसोमैंद्रायपालवे ॥ नृभिर्यतोविनीयसे ॥ त्वंसोमनृमा
 दंतःपर्वस्वचर्षणीसहै ॥ सस्त्रियोऽअनुमाद्यः ॥ इंद्रोषदद्रिमिःसुतःपुवित्रंपरिधावसि ॥ अरुमिद्रं
 स्युधास्रै ॥ पर्वस्ववृत्रहन्तमोक्थेभिरनुमाद्यः ॥ शुचिःपावकोऽअद्भुतः ॥ शुचिःपावकउच्यतेसोमः
 सुतस्युमव्वः ॥ देवावीरंघशंसाहा ॥ १४ ॥ पर्वस्वदक्षसाधनोदेवेभ्यःपीतयेहरे ॥ मरुभ्योवायवेम
 दं ॥ पर्वमानधियाहितोश्भियोनिकर्त्तृदत् ॥ धर्मणावायुमाविश ॥ संदेवैःशोमतेवृषाकविर्योना
 वधिप्रियः ॥ वृत्रहादेववीतमः ॥ विश्वांरूपाण्याप्तिशन्पुनानोयातिहर्यतः ॥ यत्रामृतांसऽआसते ॥
 अरुषोजनयुन्गिरःसोमःपवतऽआयुषक् ॥ इंद्रगच्छन्कविक्रंतुः ॥ आपवस्वमदिन्तंमपुवित्रंधारं
 याकवे ॥ अर्कस्ययोनिसासदं ॥ १५ ॥ तममृक्षंतवाजिनमुपस्थेऽअदितेरधि ॥ विप्रांसोऽअण्वा
 धिया ॥ तंगार्वोऽअभ्यन्पूषतसहस्रंधारुमक्षिनं ॥ इंद्रुधतीरुमाद्विवः ॥ तंवेधांमेधयाह्यन्पर्वमानमधि
 धारि ॥ धृणसिभूरिंथायसं ॥ तमह्यन्सुरिजोधिंयासंवसानंविवस्वतः ॥ पतिंवाचोऽअदाभ्यं ॥ तं

सान्नावधिजामयोहरिंहिन्वंत्यद्रिभिः ॥ हूर्यतंभूरिचक्षसं ॥ तंत्वाहिन्वंतिवेधसःपवंमानगिरावृधं ॥
 इंद्रविंद्रायमत्सरं ॥ १६ ॥ एपकविरभिष्टुतःपवित्रेऽअधिनोशते ॥ पुनानोम्रन्नपस्त्रिधः ॥ एपइंद्राय
 वायवेस्वजित्परिपिच्यते ॥ पवित्रेदक्षसाधनः ॥ एपनृमिर्विनीयतेदिवोमूर्धाचपसुतः ॥ सोमोवने
 षुविश्ववित् ॥ एपगव्युरेचिककदत्पवंमानोहिरण्ययुः ॥ इंद्रुःसत्राजिदस्तृतः ॥ एपसूर्येणहासतेपवंमा
 नोऽअधिद्यवि ॥ पवित्रेमत्सरोमदः ॥ एपशुष्म्यसिष्यददंतरेक्षेचपाहरिः ॥ पुनानइंद्रुरिंद्रमा ॥ १७ ॥
 एषवाजीहितोनुमिर्विश्वविन्मनसस्पतिः ॥ अव्योवारंविधावति ॥ एपपुवित्रेऽअक्षरत्सोमोद्वेभ्यः
 सुतः ॥ विश्वाधामान्याविशन् ॥ एपदेवःशुभायुतेधियोनावमर्त्यः ॥ वृत्रहोद्वैववीतमः ॥ एपचपुवर्कनिक
 ददृशभिर्जामिभिर्यतः ॥ अमिद्रोणांनिधावति ॥ एपसूर्यमरोचयुत्पवंमानोवित्रर्षिणिः ॥ विश्वाधामानिवि
 श्ववित् ॥ एषशुष्म्यदाभ्यःसोमःपुनानोऽअर्षति ॥ देवावीरवशंसहा ॥ १८ ॥ प्रास्यधाराऽअक्षरन्वृष्णःसुत
 स्थौजसा ॥ देवाऽअनुप्रमूषतः ॥ सार्धिमृजंनिवेधसोगुणतःकारवोगिरा ॥ ज्योतिर्जज्ञानमुक्थं ॥

सुषह्वांसोमतानिपुनानायप्रभूवसो ॥ वर्धासमुद्रमुक्थ्यं ॥ विश्वावसूनिंसंजयन्पवंस्वसोमधारया ॥ इ
 नेद्वेषांसिसंध्यक् ॥ रक्षासुनोऽअरंरुषःस्वनात्समस्युकस्यचित् ॥ निदोयत्रमुमुच्चमहे ॥ इंदोपा
 थिवंरथिदिव्यंपवस्वधारया ॥ द्युमंतंशुष्ममाभर ॥ १९ ॥ प्रधाराऽअस्यशुष्मिणोदृथापवित्रेऽ
 अक्षरत् ॥ पुनानोवाचमिष्यति ॥ इंदुर्हियानःसोतृभिर्मृज्यमानःकनिकदत् ॥ इयतिवयुमिंद्रि
 यं ॥ आनःशुष्मनृपाह्यंवीरवंतंपुरुस्पृहं ॥ पवस्वसोमधारया ॥ प्रसोमोऽअतिधारयापवमानो
 असिष्यदत् ॥ अभिद्रोणान्यासदं ॥ अप्सुत्वामधुमत्तमंहरिंहिन्वत्याद्रिमिः ॥ इंदविद्रायपीतये ॥ सुनो
 त्तामधुमत्तमंसोममिद्रायवज्जिणे ॥ चारुशार्थायमत्सरं ॥ २० ॥ प्रसोमासःस्वाध्यः१पवमानासोअक्र
 मुः ॥ रयिकृण्वंतितेनं ॥ दिवस्पृथिव्याऽअधिमर्वेदोद्युन्नवर्धनः ॥ भवावाजानांपतिः ॥ तुभ्यंवाता
 अग्निप्रियस्तुभ्यमर्षतिंसिधवः ॥ सोमवर्धतितेमहः ॥ आपर्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमदृण्यं ॥ स
 वावाजंस्यसंगथे ॥ तुभ्यंगावोधृतंपयोबभ्रौदुदुहेऽअक्षितं ॥ वर्षिहेऽअधिसानवि ॥ स्वायुधस्य

तेसतोभुवनस्यपतेव्यं ॥ इदोसखित्वमुशमसि ॥ २१ ॥ प्रसोमासोमदृच्युतःश्रवसेनोमघोनः ॥ सु
 ताविदथैऽअक्रमुः ॥ आदीत्रितस्ययोषणोहरिह्रिन्वत्यद्रिभिः ॥ इदुमिद्रायपीतये ॥ आदीह्रिसो
 यथागणंविश्वस्यैवीवशन्मति ॥ अत्योनगोमिरज्यते ॥ उमेसोमावुचाकशनुमुगोनतक्तोऽअर्षे
 सि ॥ सीदञ्चुतस्ययोनिमा ॥ अभिगवोऽअनूषतयोषाजारभिवप्रियं ॥ अगन्नाजियथाहिते ॥ अ
 स्मेधेह्रिद्युमद्यशोमघवन्द्यश्चमर्थेच ॥ सनिमेयामुतश्रवः ॥ २२ ॥ प्रसोमासोविपुश्रितोपांनयंत्य
 र्भयः ॥ वनानिमहिषाइव ॥ अभिद्रोणानिबश्रवःशुक्राऽऋतस्युधारया ॥ वाजंगोभंतमक्षरन् ॥
 सुताइद्रायवायवेवरुणायगरुद्भ्यः ॥ सोमाऽर्षतिविष्णवे ॥ तिस्रोवाचउदीरतेगवोभिमन्तिधेनवः ॥
 हरिरितिकनिकदत् ॥ अभिबह्नीरनूषतयुह्वीऽऋतस्यमातरः ॥ मर्मुज्यतेद्विवःशिशुं ॥ रायःसमुद्रां
 श्रुतुरोस्मभ्यंसोमविश्वतः ॥ आपवस्वसहस्रिणः ॥ २३ ॥ प्रमुवानोधारयातनेदुहिन्वानोअर्षति ॥
 रुजदृब्धान्योजसा ॥ सुतइद्रायवायवेवरुणायमरुद्भ्यः ॥ सोमोऽअर्षतिविष्णवे ॥ दृषाणंदृषभिर्य

तंसुन्वंति सोममाद्रिभिः ॥ दुहंति शकम्नापर्यः ॥ सुवंचितस्य मज्ज्यो भुवदिद्रायमत्सरः ॥ संस्रुपैरज्य
 तेहरिः ॥ अभीमृतस्य विष्टपंदुहतेष्टश्रिमातरः ॥ चारुप्रियतमंहविः ॥ समेनमहुंताइभागिरोऽअ
 र्धतिसस्रुतः ॥ धेनुर्वाश्रोऽअवीवशत् ॥ २४ ॥ आनः पवस्वधारंश्यापवमानरुधिपृथु ॥ ययाज्यो
 तिर्विदासिनः ॥ इंदोसमुद्रमखयपवस्वविश्वमेजय ॥ रायो घृतानिऽओजसा ॥ त्वयावीरेणवीखोभि
 ष्यामपृतन्यतः ॥ क्षराणोऽअमिवायै ॥ प्रवाज्जमिंदुरिष्यतिसिर्षासन्वाजसाऽऽक्षपिः ॥ व्रताविद्वा
 नऽआयुधा ॥ तंगीभिर्वाचमखयपुनानंवासयामसि ॥ सोमंजनस्यगोपति ॥ विश्वोयस्यत्रतेजनो
 दाधारधर्मणस्पतेः ॥ पुनानस्यप्रभूसोः ॥ २५ ॥ असंजिरथ्योयथापवित्रेचस्वोःसुतः ॥
 कार्पमन्वाजीन्यकमीत् ॥ सवाह्निःसोमजागृविःपवस्वदेववीरति ॥ अभिकोशंमधुश्रुतं ॥ सनोज्यो
 तीपिपुव्युपवमानुविरोचय ॥ ऋवेदक्षोयनोहिनु ॥ शुभमानऽऽकृतायुभिर्मृज्यमानो गमंस्योः ॥ पवति
 वारोऽअव्ययै ॥ सविश्वादाशुपेवसुसोमोदिव्यानिपार्थिवा ॥ पवंतामंतारिध्या ॥ आदिवस्पृष्ट

मश्वर्युगन्वयुःसोमरोहसि ॥ वीर्युःशवसस्पते ॥ २६ ॥ ससुतःपीतयेष्टपासोमःपुवित्रेऽअर्पति ॥
 विघ्नक्षीसिद्वयुः ॥ सपुवित्रैवचक्षुणोहरिरर्पतिधर्णसिः ॥ असियोर्निकर्णिक्रदत् ॥ सवाजी
 रोचुनादिवःपवंमानोविधावति ॥ रक्षोहावारमव्ययं ॥ सत्रितस्याधिसानेविप्वमानोऽअरोचयत् ॥
 जामिभिःसूर्यसह ॥ सहत्रहावृषासुतोवरिवेविददाभ्यः ॥ सोमोवाजमिवासरत् ॥ सदेवःकृ
 विनेषितोऽमिद्रोणानिधावति ॥ इंदुरिद्रायमंहना ॥ २७ ॥ एपउस्यवृपारथोव्योवारेभिर
 र्षति ॥ गच्छन्वाजसहस्रिणीं ॥ एतंत्रितस्ययोपणोहरिंहिन्वृत्याद्रिभिः ॥ इंदुमिंद्रायपीतये ॥ एतं
 त्यहरितोदशममृज्यंतेऽअपस्युवः ॥ याभिमदायशुंसते ॥ एपस्यमानुपीष्वाश्वेनोनविशुसीद
 ति ॥ गच्छन्जारोनयोषितं ॥ एपस्यमद्योरसोर्वचष्टेदिवःशिशुः ॥ यइंदुवारिमाविशत् ॥
 एपस्यपीतयेसुतोहरिरर्पतिधर्णसिः ॥ कंडून्योर्निमुमिप्रियं ॥ २८ ॥ आशुरर्षबृहन्मतेपरिप्रि
 येणधाम्ना ॥ यत्रदेवाइतिवर्बन् ॥ परिष्कृण्वन्ननिष्कृतंजनाययातयन्निषः ॥ वृष्टिदिवःपरिस्रव ॥

सुतः तिपुत्रिः ऽ आत्विषिदधानः ऽ ओजसा ॥ विचक्षणो विरोचयन् ॥ अर्यसग्रो दिवस्पारिः घुयामां प
 वित्रः ऽ आ ॥ सिधोरुर्माव्यक्षरत् ॥ आविवांसन्परावतोऽ अर्थोऽ अविवतः सुतः ॥ इन्द्राय सिच्यते मधु ॥ स
 मीचीनाऽ अनूपतुहरीं हिन्वत्यद्रिभिः ॥ योनावृतस्यसीदत ॥ २९ ॥ पुनानोऽ अंक्रमीदसि विश्वासु
 धोविचर्षणिः ॥ शुभंतिविप्रधीतिभिः ॥ आयोनिमरुगोरुं हृद्गमदिद्रं चर्षासुतः ॥ ध्रुवेसदसिसीदति ॥
 नूरोरधिमुहामिन्द्रोऽस्मभ्यसोमविश्वतः ॥ आपवस्वसहस्रिणं ॥ विश्वासोमपवमानद्युम्नानीदवाभर ॥
 विदाः सहस्रिणीरिषः ॥ सनः पुनानऽ आमरयिस्तोत्रे सुवीर्यं ॥ जरितुर्वर्धयारिः ॥ पुनानइदवाभर
 सोमद्विबर्हसंरधि ॥ हर्षन्निदोनउक्थं ॥ ३० ॥ प्रयेगावोनभूर्णयस्वेषाऽ अयाऽ सोऽ अक्रमुः ॥
 ध्रंतः कृष्णामपुत्वचं ॥ सुवितस्यमनामहेतिसंतुदुराव्यं ॥ साहांसोदस्युमव्रतं ॥ शृण्वेष्टृष्टेरिवस्वनः
 पवमानस्यशुष्मिणः ॥ चरंतिविद्युनोद्वि ॥ आपवस्वमहामिषंगोमादिदोद्विरण्यवत् ॥ अश्वोवद्वा
 जवत्सुतः ॥ सर्पवस्वविचर्षणऽ आमहरीरोदसीपृण ॥ उषाः सूर्यो नरशिभिः ॥ परिणः शर्मयंत्याथार

यासोमविश्वतः॥सरांसेवविहृषं ॥३१॥ जनयंञ्चोचनादिवोजनयंञ्चप्सुसू॥वसानोगाऽअपोहरिः॥
यासोमविश्वतः॥सरांसेवविहृषं ॥३१॥ जनयंञ्चोचनादिवोजनयंञ्चप्सुसू॥वसानोगाऽअपोहरिः॥
एषप्रत्नेनमन्मनादेवोद्वेभ्यस्परि ॥ धारयापवतेसुतः॥वाष्टधानायतूर्वयेपवनेवाजंसातये॥सोमःसह
एषप्रत्नेनमन्मनादेवोद्वेभ्यस्परि ॥ धारयापवतेसुतः॥वाष्टधानायतूर्वयेपवनेवाजंसातये॥सोमःसह
स्वपाजसः ॥ दुहानःप्रत्नभित्पयःपवित्रेपरिषिच्यते ॥ ऋदन्देवोऽअजीजनत् ॥ अग्निविश्वानिवा
स्वपाजसः ॥ दुहानःप्रत्नभित्पयःपवित्रेपरिषिच्यते ॥ ऋदन्देवोऽअजीजनत् ॥ अग्निविश्वानिवा
र्याग्निदेवोऽऋताहृषः ॥ सोमःपुनानोऽअर्षति ॥ गोमन्त्रःसोमवीरवृश्वोद्वह्रावृहाजवसुतः ॥ पवस्व
र्याग्निदेवोऽऋताहृषः ॥ सोमःपुनानोऽअर्षति ॥ गोमन्त्रःसोमवीरवृश्वोद्वह्रावृहाजवसुतः ॥ पवस्व
बृहतीरिषः ॥ ३२ ॥ योऽअत्यइवमृज्यतेगोभिर्मदायहृयतः ॥ तंगीभिर्वासयामसि ॥ तंनोविश्वो
बृहतीरिषः ॥ ३२ ॥ योऽअत्यइवमृज्यतेगोभिर्मदायहृयतः ॥ तंगीभिर्वासयामसि ॥ तंनोविश्वो
ऽअवस्युवोगिरःशुंमतिपूर्वथा ॥ इंदुर्मिद्रायपीतये ॥ पुनानोयातिहृयतःसोमोगीर्भिःपरिष्कतः ॥
ऽअवस्युवोगिरःशुंमतिपूर्वथा ॥ इंदुर्मिद्रायपीतये ॥ पुनानोयातिहृयतःसोमोगीर्भिःपरिष्कतः ॥
विप्रस्यमेध्यानियेः ॥ पवमानविदारुयिमस्मभ्यसोमसुश्रियं ॥ इंदोसहस्रवर्चसं ॥ इंदुरत्योनवा
विप्रस्यमेध्यानियेः ॥ पवमानविदारुयिमस्मभ्यसोमसुश्रियं ॥ इंदोसहस्रवर्चसं ॥ इंदुरत्योनवा
जसृत्कनिकंतिपुत्रिऽआ ॥ यदक्षारतिदेवयुः ॥ पवस्ववाजंसातयेविप्रस्यगुणतोद्वे ॥
जसृत्कनिकंतिपुत्रिऽआ ॥ यदक्षारतिदेवयुः ॥ पवस्ववाजंसातयेविप्रस्यगुणतोद्वे ॥
सोमरास्वसुवीर्यं ॥ ३३ ॥ इतिहिलीयोद्व्यायः ॥ ॥ ॐ प्रणइंदोमहेतनंऽभिनि
सोमरास्वसुवीर्यं ॥ ३३ ॥ इतिहिलीयोद्व्यायः ॥ ॥ ॐ प्रणइंदोमहेतनंऽभिनि
विश्वदर्षसि ॥ अग्निदेवोऽअयास्यः ॥ मतीष्टिजोधुयाह्वितःसोमोहिन्वेपरावति ॥ वि
विश्वदर्षसि ॥ अग्निदेवोऽअयास्यः ॥ मतीष्टिजोधुयाह्वितःसोमोहिन्वेपरावति ॥ वि

प्रस्यधारयाकृविः ॥ अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्रऽआ ॥ सोमो याति विचर्षणिः ॥ सनः
 पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरं ॥ बर्हिष्मोऽआ विवासति ॥ सनो भगायवायवे विप्रवीरः सदा बृधः ॥
 सोमो देवेष्वार्यमत् ॥ सनोऽअद्य वसुतये कतु विद्रातु वित्तमः ॥ वाजजैषि श्रवो ब्रूहत् ॥ १ ॥ सपवस्वम
 दायकं नृचक्ष दिववीतये ॥ इद्र विद्राय पीतये ॥ सनोऽअपुर्मिदुत्थं १ त्वमिद्रायतो शसे ॥ देवा
 न्सखिभ्युऽआवरं ॥ उत त्वामं रुणवुं यगो भिरज्जमो मदायकं ॥ विनोरायेदुरो वृधि ॥ अत्युप
 विन्नमकमी द्वाजीधुरं नयामनि ॥ इंदु देवेषु पत्यते ॥ समी सखायोऽअस्त्रन्वने क्रीळतमत्यवि ॥
 इंदुनावाऽअनूपत ॥ तया पवस्वधारयाया पीतो विचक्षसे ॥ इदोस्तोत्रे सुवीर्यं ॥ २ ॥ असू
 ग्रन्देववीतये त्यासः कृत्वया इव ॥ क्षरंतः पर्वतादृधः ॥ परिष्कनास इंदवो योषेव पित्र्यावती ॥ वा
 युंसोमाऽअसूक्षत ॥ एते सोमास इंदवः प्रयस्वंतश्च मूसुताः ॥ इंद्रवर्धनिकर्ममिः ॥ आधावतासुह
 स्तयः शुक्नागृभ्णीतमंथिना ॥ गोभिः श्रीणीतमत्सरं ॥ सपवस्वधनं जयप्रयुं ताराधसोमहः ॥ अस्मभ्यं

सोमगानुवित् ॥ एतंमृजन्तिमज्ज्थ्र्यपवमानंदशक्षिपः ॥ इंद्रायमत्सरमदं ॥ ३ ॥ अयासोमःसुकृत्य
 यामहश्चिदभ्यवर्धत ॥ मंदानउद्वृषायते ॥ कृतानीदस्यकत्वर्चितेदस्युतर्हणा ॥ ऋणाचधृष्णुश्च
 यते ॥ आत्सोमइंद्रियोरसोवञ्च सहस्रसाम्भुवत् ॥ उक्थयदस्यजायते ॥ स्वयंकविर्विधुर्तारिविप्राय
 रत्नमिच्छति ॥ यदीममृज्यतेधियः ॥ सिपासतूर्यीणांवाजेष्वर्षतामिव ॥ भरेपुजिग्युपांसि ॥ ४ ॥
 तंत्वानृम्यानिविभ्रंतंसधस्थेषुमहोदिवः ॥ चारुसुकृत्ययेमहे ॥ संवृक्तघृष्णमुक्थंममामहिव्रतंमदं ॥
 शतंपुरोरुरुक्षणिं ॥ अतस्त्वारयिमभिराजानंसुक्तोदिवः ॥ सुपर्णोऽअव्यथिर्भरत् ॥ विश्वस्माइत्स्वदं
 शेसाधारणंरजस्तुरं ॥ गोपामृतस्यविर्भरत् ॥ अर्धाहिन्यानइंद्रियंजयायोमहित्वमानशे ॥ अग्निष्टिक
 द्विचर्षणिः ॥ ५ ॥ पर्वस्वष्टिमामुनोपामुमिदिवस्परि ॥ अयुक्ष्माबृहतीरिषः ॥ तथापवस्वधारे
 याययागावईहागमेन् ॥ जन्यासउर्पनेगृहं ॥ धृतंपवस्वधारेयायज्ञेपुदेववीतमः ॥ अस्मभ्यंहृ
 क्षिमापव ॥ सनकुर्जेव्यश्वथंपवित्रंधावधारेया ॥ देवासःशृणवन्धिकं ॥ पवमानोऽअसिष्यद

द्रक्षींस्थपुजंघनत् ॥ प्रलवद्दोचयुञ्जुचः ॥ ६ ॥ उत्तेशुष्णमांसईरतेसिंधोर्हूर्भरिवस्वनः ॥ वाणस्यचोद
 यापुविं ॥ प्रसवेतउदीरतेतिलोवाचौमखस्युत्रः ॥ यदव्युलषिसानंवि ॥ अव्योवारेपरिप्रियंहरिंहि
 न्वंत्याद्रिभिः ॥ पर्वमानंमधुश्रुतं ॥ आरवस्वमदिन्तमपुवित्रंधारंयाकत्रे ॥ अर्कस्ययोनिमासदं ॥ स
 पवस्वमदिन्तमगोभिरंजानोऽअक्तुमिः ॥ इंदविंद्रायपीतये ॥ ७ ॥ अश्वर्योऽअद्रिभिःसुतंसोमंपु
 वित्रऽआसृज ॥ पुनीर्हीद्रायपातवे ॥ दिवःपीथूपमुत्तमंसोममिद्रायवृज्जिणे ॥ सुनोतामधुमत्तमं ॥
 तवत्यईद्रोऽअंधसोदेवामधोव्यश्रते ॥ पर्वमानस्यमरुतः ॥ त्वंहिसोभवर्थयन्सुतोमदायुमूर्णये ॥
 हृषन्स्तोतारंसूतये ॥ अभ्यर्षविचक्षणपुवित्रंधारंयासुतः ॥ अग्निवाजंसुतश्रवः ॥ ८ ॥ परिद्युक्षः
 सनद्रथिर्मरुद्वाजंनोऽअंधसा ॥ सुवानोऽअर्षपुत्रिऽआ ॥ तवप्रत्नेभिरश्वैभिरव्योवारेपरिप्रियः ॥
 सहस्रधारोयात्तनां ॥ चरुर्नयस्तमीत्विथेदोनेदानमीखय ॥ वृधैर्वधस्रवखिय ॥ निशुष्णमभिवदे
 षांपुरुहूतजनानां ॥ योऽअस्माँऽआदिदेशति ॥ शतंनंइदुक्रुतिभिःसहस्रंशुचीनां ॥ पवस्वमंह

यद्गयिः ॥ १ ॥ उत्तेशुष्मासोऽस्थूरक्षोभिन्दतोऽअद्विवः ॥ नुदस्वयाःपरिस्पृधः ॥ अयानिजिघ्रि
 रोजसारथसंगेधनेहिते ॥ स्ववाऽअविभ्युषाहृदा ॥ अस्यत्रतानिनाधेपवंमानस्यदृढया ॥ रुजय
 स्वापृतन्यति ॥ तंहिन्वतिमदच्युतंहरिन्दीर्घुवाजिनं ॥ इंदुमिद्रायमत्सरं ॥ १० ॥ अस्यप्रत्नामनुद्यु
 तंशुकंदुदुहेऽअह्वयः ॥ पर्यःसहस्रसामृषिं ॥ अयंसूर्यइवोपदृग्यंसरांसिधावति ॥ सप्तप्रवत्ऽआदि
 वम् ॥ अयंविश्वानितिष्ठतिपुनानोभुवन्नोपरि ॥ सोमोदिवोनसूर्यः ॥ परिणोदिववीनयेवाजाऽअ
 र्षसिगोमतः ॥ पुनानंईदवद्भ्युः ॥ ११ ॥ यवंयवंनोऽअंधसापुष्टंपुष्टंपरिस्त्रव ॥ सोमविश्वाचसौमगा ॥ इ
 द्यथातवस्तवोयथतेजानमंधसः ॥ निबृहृषिप्रियेसदः ॥ उतनो गोविदश्ववित्पवस्वसोमांधसा ॥ मृक्षूत
 भेभिरहृभिः ॥ योजिनानिजीयतेहृतिशत्रुमभीत्य ॥ सपवस्वसहस्रजित् ॥ १२ ॥ परिसोमऽऽकृत
 बृहदाथुःपवित्रेऽअर्षति ॥ विघ्नक्षसंसिदेव्युः ॥ यत्सोमोवाजमर्षतिशतंधाराअपस्युवः ॥ इंद्रस्य
 सुख्यमाविशन् ॥ अमित्वायोषणोदशजारंनकन्यानुषत ॥ मृज्यसेसोमसातये ॥ त्वमिद्रायवि

ष्वविस्वादुरिदोपरिस्रव ॥ नृन्स्तोतृन्प्राद्यंहसः ॥ १३ ॥ प्रलेधाराऽअसश्वतोदिवोनयंतिवृह्यः ॥
 अच्छावाजंसहस्रिणं ॥ अभिप्रियाणिकाव्याविश्वाचक्षाणोऽअर्षति ॥ हरिस्तुंजानऽआयुधा ॥
 समर्मृजानआयुभिरिभोरजेवसुत्रतः ॥ श्येनोनवंसुषीदति ॥ सनोविश्वादिवोवसुतोपृथिव्याऽअ
 धि ॥ पुनानइदवाभर ॥ १४ ॥ तरत्समंदीधावतिधारासुनस्यांधसः ॥ तरत्समंदीधावति ॥ उसावै
 दवसूंनांमर्तस्यदेव्यवंसः ॥ तर० ॥ ध्वस्योःपुरुषंत्योरासहस्राणिदद्यहे ॥ तर० ॥ आययोश्चिशतं
 तनासहस्राणिचदद्यहे ॥ तर० ॥ १५ ॥ पर्वस्वगोजिदंश्वजिदंश्वजित्सोमरणयुजित्वा ॥ प्रजावृद्भ्रमाभर ॥
 पर्वस्वाभ्योऽअदाभ्यःपर्वस्वौषधीभ्यः ॥ पर्वस्वधिपणाभ्यः ॥ त्वंसोमपर्वमानोविश्वानिदुरिततर ॥
 कविःसौदुनिब्रह्मिपि ॥ पर्वमानस्वविंदोजायमानोभवोमहान् ॥ इंदोविश्वोऽअभीदसि ॥ १६ ॥
 प्रगायत्रेणगायतपर्वमानंविचर्षणि ॥ इंदुंसहस्रचक्षसं ॥ तंत्वांसहस्रचक्षसमथोसहस्रमर्णसं ॥ अ
 तिवारंमपाविषुः ॥ अतिवारान्पर्वमानोऽअसिष्यदत्कलशोऽअसिधावति ॥ इंद्रस्यहाहार्धाविशन् ॥

इन्द्रस्यसोमराधिशेषवस्वविचर्पणे ॥ प्रजावद्रेतऽआभर ॥ १७ ॥ अयावीनीपरिस्रवयस्तइंद्रोमद्रे
 ष्वा ॥ अवाहन्नावतीर्नव ॥ पुरःसद्यड्त्थाधिबोदासायशंवरं ॥ अधत्यंतुर्वशंयडुं ॥ परिणोऽअ
 श्वमश्वविद्वोमदिदोहिरण्यवत् ॥ क्षरसहस्त्रिणीरिपः ॥ पवमानस्यतेवयंपवित्रमभ्युदतः ॥ सखि
 त्वमावृणीमहे ॥ येतेपवित्रमूर्मयोमिक्षरंतिधारया ॥ तेभिर्नःसोममृळय ॥ १८ ॥ सनःपुनानऽ
 आभररयिवीरवतीमिषं ॥ ईशानःसोमविश्वतः ॥ एतमुत्यंदशक्षिपोमृजंलिसिंधुमातरं ॥ समादि
 त्येभिरख्यत ॥ समिद्रेणोतवायुनसुतएतिपुवित्रऽआ ॥ संसूर्यस्यरुशिमिभिः ॥ सनोभगायवायवे
 पूष्णेपदस्वमधुमान् ॥ चारुमित्रैवरुणेच ॥ उच्चतेजानमंधसोद्विविपद्भूम्याददे ॥ उग्रशर्ममहि
 श्रवः ॥ १९ ॥ एनाविश्वान्यूर्यऽआद्युम्नानिमानुपाणां ॥ सिषासंतोवनामहे ॥ सनुइंद्राय
 यज्यवेवरुणायमरुद्भयः ॥ वरिवोवितपरिस्रव ॥ उपोपुजातमुसुरंगोभिर्मंगपरिष्कृतं ॥ इंदुं
 देवाऽअयासिषुः ॥ तमिद्वर्धतुनोगिरेवत्संसंशिश्वरीरिव ॥ यइंद्रस्यहृदंसनिः ॥ अर्पाणःसो

मशंगवैधुक्षस्वपिप्युपीमिपं ॥ वर्धासमुद्रमुक्थ्यं ॥ २० ॥ पर्वमानोऽअजीजनद्विवश्चि
 न्ननतन्यतुं ॥ ज्योतिर्वैश्वानरंबृहत् ॥ पर्वमानस्यतेरसोमदौराजन्नदुच्छूनः ॥ विवारमव्यमर्पति ॥
 पर्वमानरमुस्तवदक्षोविराजतिद्युमान् ॥ ज्योतिर्विश्वंस्वर्द्विशे ॥ यस्तेमदोवरेण्यस्तेनापवस्वांधसा ॥
 देवावीरंधशंसहा ॥ जाद्विर्वृत्रममिन्त्रियंसस्त्रिवाजंदिवेदिवे ॥ गोपाडंऽअश्वसाऽअसि ॥ २१ ॥ सं
 मिश्लोऽअरुपोभंवसूपस्थाभिर्नधेनुभिः ॥ सीदन्च्छेनोनयोनिमा ॥ सपवस्वयऽआविथेद्रंष्टुत्राय
 हंतवे ॥ वत्रिवांसंमहोरपः ॥ सुवीरासोवयंधनाजयेमसोममीद्वः ॥ पुनानोवर्धनोगिरः ॥ त्वोतासस्त
 वावसास्यामंवन्वंतंऽआमुरः ॥ सोमंन्नतेपुंजागृहि ॥ अपन्नपवतेमृधोपसोमोऽअरावणः ॥ गच्छ
 न्निद्रस्थनिष्कृतं ॥ २२ ॥ महोनोरायऽआभरंपवमानजहीमृधः ॥ रास्वैदोवीरुचशः ॥ नत्त्राशतं
 चहुनोराथोदित्संतमामिनन् ॥ यत्पुनानोमंखस्यसे ॥ पवंस्वैदेवपांसुतःकृधीनोयशसोजने ॥
 विश्वाऽअपह्निषोजहि ॥ अस्येतेसखेवयंतवैदोद्युन्नडत्तमे ॥ सासह्यामपृतन्यतः ॥ यातेभीमा

न्यायुघोनिगमानिसंतिधूर्वणे ॥ रक्षासमस्यनोनिदः ॥ २३ ॥ एतेऽअसृग्रमिंदवस्तिरःपवित्रमाश
वः ॥ विश्वान्यमिसौभगा ॥ विघ्नतोदुरितापुरुसुगतोकार्यवाजिनः ॥ तनोदृणवतोऽअवति ॥ कु
ण्वतोवरिवोगेभ्यर्षेतिस्तुति ॥ इळांमस्मभ्यंसंयतं ॥ असाव्यंशुर्भदायापुदक्षोगिरिष्ठाः ॥
श्रेनोनयोनिमासदत् ॥ शुभ्रमंधेदिववातमपुसुधुतोदृभिःसुतः ॥ स्वदंतिगावःपयोभिः ॥ २४ ॥
आदीमश्वंनहेतारोशशुभ्रंनमृताय ॥ मध्वोरसंसधमादे ॥ यास्तेधारोमधुश्रुतोसृग्रमिदकुतये ॥
ताभिःपवित्रमासदः ॥ सोऽअपैद्रायपीतयेतिरोमाणयव्यया ॥ सीदन्त्योनावनेष्वा ॥ त्वमिदोप
रिस्रवस्वादिष्टोऽअंगिरोभ्यः ॥ वरिवोविह्वनंपयः ॥ अयंविचर्षेणिर्हितःपवमानःसचेतति ॥ हिन्या
नऽआप्यंबूहत् ॥ २५ ॥ एपदृषादृपत्रतःपवमानोऽअशस्तिहा ॥ कसृदसूनिदाशुभे ॥ आपवस्व-
सहस्त्रिणंराधिगोमंतमश्विनं ॥ पुरुश्रंद्रंपुरुसृहं ॥ एषस्यपरिषिच्यतेममृत्युयमानऽआयुभिः ॥
उरुगायःकविक्रुः ॥ सहस्रोतिःशुतामघोविमानोरजसःकविः ॥ इंद्रायपवलेमदः ॥ गिराजातइ

तमः ॥ तमीमृजंत्यायवोहरितदीर्घुवाजिनं ॥ इंदुमिद्रायमत्सरं ॥ आपवस्वहिरण्यवदशवावत्सो-
 मवीरवत् ॥ वाज्रगोभंतमाभरं ॥ परिवाजेनवाज्युमव्योवारैषुसिंचत ॥ इंद्रायमधुमत्तमं ॥ कर्विमृजं
 तिमज्ज्यधीभिर्विप्राऽअवस्यवः ॥ वृषाकनिकदर्षति ॥ ३३ ॥ वृषणंधीभिरसुरसोममृतस्युधारया ॥
 मतीविप्राःसमस्वरन् ॥ पर्वस्वदेवापुषगिंद्रगच्छनुतेमदः ॥ वायुमारोहधर्मणा ॥ पर्वमाननितोशसेर-
 थिसौमश्रवाथ्यं ॥ प्रियःसमुद्रमाविश ॥ अपुघ्नन्पर्वसेसृधःऋतुवित्सोममत्सरः ॥ नूदस्वोदेवयुंजनं ॥
 पर्वमानाऽअसृक्षतसोमाःशुक्रासइंदवः ॥ अग्निविश्वानिकान्या ॥ ३४ ॥ पर्वमानासऽआशवःशु-
 आऽअसृग्रभिंदवः ॥ घ्नतोविश्वाऽअपद्धिषः ॥ पर्वमानादिवस्पर्यतरेिक्षादसृक्षत ॥ पृथिव्याऽअधि-
 सानवि ॥ पुनानःसोमधार्येदोविश्वाऽअपसिधः ॥ जहिरक्षांसिसुक्रतो ॥ अपुघ्नन्त्सोमरक्षसोभ्य
 र्षकनिकदत् ॥ द्युमंतंशुष्ममुत्तमं ॥ अस्मेवसूनिधारयसोमदिव्यानिपार्थिवा ॥ इंदोविश्वानि-
 वार्या ॥ ३५ ॥ वृषांसोमद्युमौऽअसिवृपादेववृषव्रतः ॥ वृषाधर्माणिदधिपे ॥ वृष्णस्तेवृष्णयंशवो

वृषावनृष्टषामर्दः ॥ सत्यंष्टषन्ष्टषेदसि ॥ अश्वोनचक्रदोष्टषासंगाईदोसमर्वतः ॥ विनौरायेदुरोवृ
 धि ॥ असृक्षतप्रवाजिनोगव्यासोमसोऽअश्वया ॥ शुक्रासौवीर्याशवः ॥ शुभ्रमानाऽकलायुभि
 मृज्यमानागमस्योः ॥ पर्वतेवारैऽअव्यये ॥ ३६ ॥ तेविश्वाद्वाशुपेवसुसोमादिव्यानिपाथिवा ॥ पर्व
 तामानरिंक्षया ॥ पर्वमानस्यविश्वविप्रतेसर्गीऽअसृक्षत ॥ सूर्यस्येवन्रश्मयः ॥ केतुंरुणवन्दिवस्प
 रिविश्वारूपाम्यर्षसि ॥ समुद्रःसोमपिन्वसे ॥ हिन्वानोवाचमिष्यसिपवमानविधर्मणि ॥ अक्रा
 न्देवोनसूर्यः ॥ इंदुःपविष्टचेतनप्रियःकवीनामती ॥ सृजदश्वरुथीरिव ॥ ३७ ॥ ऊर्मिर्धस्तेपुवित्रऽआ
 देवावीःपर्यक्षरत् ॥ सीदंभ्रतस्थयोनिमा ॥ सनोऽअर्षपुवित्रऽआमदोयोदेववीतमः ॥ इंदुर्विद्राय
 पीतये ॥ इषेपवस्वथारयासृज्यमानोमनीषिभिः ॥ इंदोरुचाभिगाईहि ॥ पुनानोवरिवस्कथ्यूर्जज
 नायगिर्वणः ॥ हरैसृजानऽआशिरं ॥ पुनानोदेववीतयुइंद्रस्ययाहिनिष्कृतं ॥ द्युतानोवाजिभिर्य
 तः ॥ ३८ ॥ प्रहिन्वानासइंदुवोच्छासमुद्रमाशवः ॥ धियाजूताऽअसृक्षत ॥ मसृजानासऽआथवोहृ

थासमुद्रमिदं वः ॥ अगमं भ्रूतस्य योनिमा ॥ परिणोयाह्यस्मयुर्विश्वावसून् योजसा ॥ पाहिनः
 शर्मवीरवत् ॥ मिमांतिवह्निरेतशः पदं युजानऽक्वक्वमिः ॥ प्रयत्समुद्रऽआहितः ॥ आयद्योनिं हि
 ण्ययमाशुर्कृतस्य सीदति ॥ जहात्यप्रचेतसः ॥ ३१ ॥ अभिवेनाऽअनूपतेयक्षंतिप्रचेतसः ॥ मज्जं त्य-
 विचेतसः ॥ इंद्रायेंदोमुरुत्वलेपवंस्वमधुमत्तमः ॥ ऋतस्य योनिमासदं ॥ तं त्वाविप्रोवचोविद्रः परिष्क
 ण्वंतिवेषसः ॥ संत्वामृजंत्यायवः ॥ रसंते मित्रोऽअर्यमापि धंतिवरुणः कवे ॥ पवंमानस्य मरुतः ॥ त्वंसो
 मविपृथ्वितं पुनानोवाचं मिष्यसि ॥ इंद्रोसहस्रं भर्णसं ॥ ४० ॥ उतोसहस्रं भर्णसं वाचंसो मम त्वस्युवं ॥
 पुनानं इंद्रवासरं ॥ पुनानं इंद्रवेपां पुरं हूतजनानां ॥ प्रियः संमुद्रमाविश ॥ दविद्युतत्यारुचापरिद्योमं
 त्याकृपा ॥ सोमाः शुक्रागवाशिरः ॥ हिन्वानो हेतुभिर्यतऽआवाजं वाज्यं क्रमीत् ॥ सीदंतो वनुषो य
 था ॥ ऋधक्सोमस्वस्तये संजमानो दिवः क्विः ॥ पर्वस्वसूर्यो दृशे ॥ ४१ ॥ इति पवमाने तृतीयो
 ध्यायः ॥ ३ ॥ ॐ हिन्वंति सूरमुख्यः स्वसरोजामयस्पतिं ॥ महामिदुं महीयुवः ॥ पर्वमानरुचारुचादे

वोदेवेभ्यस्परि ॥ विश्वावसून्याविश ॥ आपवमानसुष्टुतिष्टाष्टदेवेभ्योदुवः ॥ इषेपवस्वमंत्रयतम् ॥
 दृष्टात्थासिमानुनाद्युर्मतैत्वाहवामहे ॥ पवमानस्वाध्व्यः ॥ आपवस्वसुवीर्यमंदमानःस्वायुध ॥ इहो
 धिद्ववागेहि ॥ १ ॥ यद्वन्द्रिःपरिष्विच्यसैमृज्यमानोगमस्योः ॥ इण्णासधस्थमश्रुपे ॥ प्रसोमाय
 व्यश्वत्सवमानायगायत ॥ महेसहस्रचक्षसे ॥ यस्यवर्णमधुश्रुतंहरीहिन्वंत्यद्रिभिः ॥ इंदुमिद्रा
 यपीतये ॥ तस्यतेवाजिनोवयंविश्वाधनानिजिग्युषः ॥ सखित्वमाहणीमहे ॥ हृषापवस्वधारंयाम
 रुत्वंतेचमत्सरः ॥ विश्वाद्धानुऽओजसा ॥ २ ॥ तंत्वाधतारिमोण्योःइपवमानस्वहृशं ॥ हिन्वेवाजे
 षुवाजिनं ॥ अयाचित्तोविपानयाहरिःपवस्वधारंया ॥ युजंवाजेषुचोदय ॥ आनइंदोमहीमिषंप
 वंस्वविश्वदर्शतः ॥ अस्मभ्यंसोमगानुवित् ॥ आकृलशाऽअनूषतेदोधाराभिरोजसा ॥ इंद्रस्यपीत
 येविश ॥ यस्यतेमद्यंसतीवंदुहंत्यद्रिभिः ॥ सपवस्वामिमातिहा ॥ ३ ॥ राजमिधाभिरोयतेपवमा
 नोमनावधि ॥ अंतरिक्षेणयतवे ॥ आनइंदोशतृग्विनंगवांपोषंस्वश्व्यं ॥ वह्नाभगत्तिमूतये ॥

आनःसोमसहो जुवोरूपं नवर्चसेभर ॥ सुष्वाणो देववीतये ॥ अर्षसोममद्युत्तमो मिद्रोणा निरो
 रुवत् ॥ सीद्रन्ध्ये नोनयो निमा ॥ अप्सा इंद्राय बायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ॥ सोमोऽर्षनि विष्णवे ॥ ४ ॥
 इषं तो काप नो दधत्स्मभ्यं सोम विश्वतः ॥ आपव स्वसहस्रिणीं ॥ ये सोमासः पराव त्रियेऽर्वाव तिसुन्विरो ॥
 ये वा दः शर्यिणावति ॥ यऽआर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्येपस्त्यानां ॥ थेवा जनेषु पंचसु ॥ ते नो वृष्टिदिव
 स्परिपवतामा सुवीर्यं ॥ सुवाना देवास इंदवः ॥ पर्वते ह्यर्थतो हरि रूपा नोजमदग्निना ॥ हिन्वानो गोर
 थित्वचि ॥ ५ ॥ प्रशुक्रासौ वयोजुवो हिन्वाना सो नसस्यः ॥ श्रीणा नाऽअप्सु मृजत ॥ तंत्वांसु ते ष्वा
 सुवो हिन्विरे देवता तये ॥ सर्पवस्वानया रुचा ॥ आते दक्षं मयो सुवं वह्निमद्या वृणीमहे ॥ पांतु मापूरुस्पृ
 ह ॥ आमं द्रमावरेण्युमा विप्रमामनीषिणीं ॥ पांतु मा ० ॥ आरथिमा सुचेतु न मा सुकतोत नूष्वा ॥ पांतु मा ० ॥
 ॥ ६ ॥ पर्वस्व विश्वचर्षणे मि विश्वानिकाव्यां ॥ सखासा खिभ्य इंदव्यः ॥ ताभ्यां विश्वस्य राजसिधेपवमा
 नधामनी ॥ प्रतीची सोम तस्थतुः ॥ परिधामानिया निते त्वसो मासि विश्वतः ॥ पर्वमानऽकृतुमिः कवे ॥

पर्वस्वजनयन्निपोमिचिश्वांनिवार्या ॥ सखासखिभ्यङ्गतये ॥ तवशुक्रासोऽअर्चयोदिवस्पृष्टेवित-
 न्चते ॥ पवित्रंसोमयामसिः ॥ ७ ॥ तवेमेसससिधवःप्रशिपंसोमसिखते ॥ तुभ्यंधावंतिधेनवंः ॥ प्र-
 सोमयाहिधारंयासुतइंद्रायमत्सरः ॥ दधानोऽअक्षितिश्रवः ॥ समुत्वाधीभिरंस्वरन्हृन्वतीःससजा-
 मयः ॥ विप्रमाजाविवस्वतः ॥ मृजंतित्वासमयुवोव्येजीरावधिष्वणि ॥ रेभोयदृज्यसेवेने ॥ पर्वमा-
 नस्यतेकवेवाजिन्सर्गऽअसृक्षत ॥ अर्वातो नश्रवस्यवः ॥ ८ ॥ अच्छाकोशंमधुश्रुतमसृयुंवारोऽअ-
 व्यये ॥ अवावंशंतधीतयः ॥ अच्छांसमुद्रमिद्वोस्तंगावोनधेनवंः ॥ अगमंचूतस्ययोनिमा ॥ प्रण
 इदोमहेरणऽआपोऽअर्षतिंसिधवः ॥ यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ अस्यतेसरुवेवयमियक्षंतस्त्वोतयः ॥
 इदोसखित्वमुशसि ॥ आपवस्वगविष्टयेमहेसोमनृचक्षसे ॥ इंद्रस्यजठरेविश ॥ ९ ॥ महाऽअसिसोमज्ये
 छंडग्राणामिदुऽओजिष्ठः ॥ युध्वासन्छश्वंज्जिगेथा ॥ यउग्रेभ्यश्चिदोजीयान्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः ॥ भूरिदा
 भ्यश्चिन्महीयाच ॥ त्वंसोमसूरुएषस्तेकस्यसातातनूनां ॥ वृणीमहेसुख्यार्थवृणीमहेयुज्याय ॥ अ

ब्रऽआथूपिपवसऽआसुवोर्जमिपंचनः ॥ अरेबाधस्वदुच्छुनां ॥ अमिर्चषिःपवमानःपांचजन्यःपुरो
 हितः ॥ तमीमहेमहागुयं ॥ १० ॥ अग्नेपवस्वस्वपाऽअस्मेवर्चःसुवीर्यं ॥ दधद्रथिमथिपोषं ॥ प
 वमानोऽअतिस्त्रिधोभ्यर्पतिसुष्टुतिं ॥ सूरोनविश्वदर्शतः ॥ समर्मृजानऽआयुभिःप्रयस्वान्प्रयसे
 हितः ॥ इंदुरत्योविचक्षणः ॥ पवमानऽऋतंबृहच्छुक्रंज्योतिरजीजनत् ॥ कृष्णातमांसिजंयनत् ॥
 पवमानस्यजंघ्नतोहरेश्चंद्राऽअसृक्षत ॥ जीराऽअजिरशोचिपः ॥ ११ ॥ पवमानोरुथीतमःशुश्रेभिः
 शुश्रशस्तमः ॥ हरिश्चंद्रोमरुहणः ॥ पवमानोव्यंश्रवद्रश्मिभिर्वाजसातमः ॥ दधत्स्तोत्रेसुवीर्यं ॥
 प्रसुवानइंदुरक्षाःपवित्रमत्यव्ययं ॥ पुनानइंदुरिंद्रमा ॥ एषसोगोऽअधित्वचिगवांक्रीळ्यद्रिभिः ॥
 इंद्रमदायुजोहुवत् ॥ यस्यतेद्युभ्रवत्पयःपवमानाभृतंदिबः ॥ तेननोमृळजीवसे ॥ १२ ॥ त्वंसोमा
 सिधारयुर्मंद्रऽओजिष्ठोअध्वरे ॥ पवस्वमंहयद्रयिः ॥ त्वंसुतोनुमादनोदधन्वान्मत्सरिन्तमः ॥ इंद्रो
 यस्मूरिंधसा ॥ त्वंसुब्वाणोऽअद्रिभिरभ्यर्पकनिकदत् ॥ द्युमंतंशुष्ममुत्तमम् ॥ इंद्रोहिन्वानोऽअर्प

मा॒ग्नि॒ह॒॥ प॒र्व॒मा॒न॒वि॒त॒ज्जा॒हि॒॥ प॒र्व॒मा॒नः॒सोऽ॒अ॒द्य॒नः॒प॒वि॒त्रे॒ण॒वि॒च॒र्ष॒णिः॒॥ यः॒प्रो॒ता॒स॒पु॒ना॒तु॒नः॒॥ य॒त्ते॒प॒वि॒
 त्र॒म॒र्चि॒ष्य॒त्रे॒वित॑त॒म॒तरा॒॥ ब्र॒ह्म॒ते॒न॒पु॒नी॒हि॒नः॒॥ य॒त्ते॒प॒वि॒त्र॒म॒र्चि॒व॒द॒भ्र॒ते॒न॒पु॒नी॒हि॒नः॒॥ ब्र॒ह्म॒स॒वैः॒पु॒नी॒
 हि॒नः॒॥ उ॒सा॒भ्यां॒दे॒व॒स॒वि॒तः॒प॒वि॒त्रे॒ण॒स॒वे॒न॒च॒॥ मां॒पु॒नी॒हि॒वि॒श्व॒तः॒॥ १७॒॥ त्रि॒भि॒ष्ट्वे॒द॒व॒स॒वि॒त॒र्व॒
 षि॒ष्टैः॒सो॒म॒घा॒मं॒भिः॒॥ अ॒ग्ने॒द॒क्षैः॒पु॒नी॒हि॒नः॒॥ पु॒न॑तु॒मां॒दे॒व॒ज॒नाः॒॥ पु॒न॑तु॒व॒स॒वो॒धि॒या॒॥ वि॒श्वे॒दे॒वाः
 पु॒नी॒त॒मा॒जा॒त॒वे॒दः॒पु॒नी॒हि॒मा॒॥ प्र॒थ्वा॒य॒स्व॒प्र॒स्य॑द॒स्व॒सो॒म॒वि॒श्वे॒भि॒रं॒शु॒भिः॒॥ दे॒वे॒भ्य॑उ॒त्त॒मं॒द्व॒विः॒॥
 उ॒प॒प्रि॒थं॒प॒नि॒म॒तं॒यु॒वा॒न॒मा॒हु॒ती॒दृ॒धं॒॥ अ॒ग॒न्म॒वि॒श्र॑तो॒न॒मः॒॥ अ॒ला॒द्य॒स्य॒पर॑शु॒र्न॒ना॒श॒त॒मा॒प॒व॒स्व॒दे॒व
 सो॒म॒॥ आ॒खुं॒चि॒दे॒वे॒दे॒व॒सो॒म॒॥ यः॒पा॒व॒मा॒नी॒रु॒धे॒त्य॒पि॒भिः॒सं॒भृ॒त॒र॒सं॒॥ स॒र्व॑स॒प॒त॒मं॒श्रा॒ति॒स्व॒द्वि॒त॒मां
 त॒रि॒श्व॒ना॒॥ पा॒व॒मा॒नी॒र्योऽ॒अ॒ध्ये॒त्य॒पि॒भिः॒सं॒भृ॒त॒र॒सं॒॥ त॒स्मै॒स॒र॑स्व॒ती॒दु॒हे॒क्षी॒र॒स॒पि॒र्मि॒धू॒द॒कं॒॥ १८॒॥
 पा॒व॒मा॒नीः॒स्व॒स्त्य॒थ॒नीः॒सु॒दु॒घा॒हि॒धृ॒त॒श्रु॒तः॒॥ ऋ॒पि॒भिः॒सं॒भृ॒तो॒र॒सो॒ब्रा॒ह्म॒णे॒ष्व॒मृ॒त॑हि॒तं॒॥ पा॒व॒मा॒नी॒र्दि
 शं॒तु॒न॒इ॒मं॒लो॒क॒म॒थोऽ॒अ॒मुं॒॥ का॒मा॒न्त्स॒म॒र्धं॒तु॒नो॒द्वै॒र्वे॒दीः॒स॒मा॒हि॒ताः॒॥ ये॒न॑दे॒वाः॒प॒वि॒त्रे॒णा॒त्मा॒नं॒पु॒न

तेसदा ॥ तेनसहस्रं धारेणपविमाल्यः पुनंतुमां ॥ प्राजापत्यंपवित्रैशतोद्योमं हिरण्यं ॥ तेनबह्ववि
 दौवयंपुतंबह्वपुनीमहे ॥ इंद्रःसुनीतीसंहमापुनातुसोमःस्वस्त्येवरुणःसमीच्यां ॥ यमोराजाप्रमुणा
 भिःपुनातुमाजातेवेदामूर्जयैतयापुनातु ॥ १९ ॥ कर्षयस्नुतेपस्तेपुःसर्वैस्वर्गजिगीषवः ॥ तपस
 तस्यचयच्चापिचवर्धतेमेतत्पावमानीभिरहंपुनामि ॥ यन्मेगर्भेवसतःप्रापेमुग्रयज्जायमानस्यचाकिंचिदन्यत् ॥ जा
 बभूव ॥ विश्वस्यतत्प्रदृषितंवचोभिनत्पाव ॥ गोघ्रात्तस्करात्स्त्रीवधाद्यच्चकिल्वषं ॥ प्रापकंचचर
 णेभ्यस्तत्पावमानी ॥ बालघ्नान्मोतृपितृवधाद्भूभितस्करात्सर्वैर्णगमनैथुनसंगमात् ॥ प्रापेभ्यश्च
 प्रतिग्रहात्सद्यःमहर्त्तिसर्वदुष्कर्तृतां ॥ बह्ववधात्सुरांपानात्स्वर्णस्त्रेयाह्वेषेच्छिगमनै ॥ गुरो
 दीराङ्घ्रिगमनाच्चतृतां ॥ कथविक्रयाद्योनिदोषामद्भ्राद्धेज्यात्प्रतिग्रहात् ॥ असंभोजनाच्चापि
 नृशंसंत्याव ॥ २० ॥ दुर्यधुंरुंभीतंपापंपयचाज्ञानुनोक्तं ॥ अयाजिताश्रांसंयाज्यास्तत्पाव ॥ अमं

त्रमन्त्रैयत्किञ्चिद्धूयते बहुताशने ॥ सर्वत्सरहंतं पापंतत्पाव ० ॥ क्रुतस्य योने यो मृतस्य धाम विश्वदिवेभ्यः
 पुण्यगंधाः ॥ तान् ५ आपः प्रवहति पापं शुद्धागच्छामि सुकृतां मुल्लोकं तत्पां ० ॥ पावमानीः स्वस्त्ययनी
 र्याभिर्गच्छति नादुनं ॥ पुण्यं श्वभक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ पावमानीः पितृन्देवान्ध्यायेद्य
 श्वसरस्वतीं ॥ पितृस्तस्योपनिष्ठे तत्क्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पावमानं परं ब्रह्मशुक्रं ज्योतिःसनातनं ॥ क्र
 षिस्तस्योपनिष्ठे तक्षीरं सर्पिर्मधूदकं ॥ पावमानं परं ब्रह्मये पठंति मनीषिणः ॥ सप्तजन्मभवे द्विप्रोधनाढ
 यो वैदपारंगः ॥ दशोत्तराण्युवांचैव पावमानीः शतानि पदा ॥ एतज्जुह्वजपेन्मंत्रं घोरं मृत्युमयं हरित् ॥ २ १ ॥
 चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ अथ वैश्वदेवसूक्तं ॥ न तमंहोनदुर्दितं देवांसोऽअष्टमर्त्यं ॥ सजोपसोयमर्थमा
 मित्रो न रथं तिवरुणो अतिद्विषः ॥ तद्विब्रयदृणीमह्वरुणमित्रार्थमन् ॥ येना निरंहंसोयुयं पाथनेथाचम
 र्यमतिद्विषः ॥ तेनूनोयमूतयेवरुणो मित्रो अर्थमा ॥ नयिष्ठाउनेनेपणीपयिष्ठाउनः पर्पण्यतिद्विषः ॥
 युयं विश्वं परिपाथवरुणोमि ० ॥ युष्माकं शर्मणिप्रिये स्याम सुप्रणीतयो निद्विषः ॥ आदित्यासोऽअति

स्त्रियोवरुणोमि० ॥ उप्रंमरुद्धीरुद्रुवेमेद्रमग्निस्वस्तयेतिद्विपः ॥ नेतारुपुणंस्त्रिरोवरुणोमि० ॥ अ
 तिविश्वानिदुरिताराजानश्रपर्षणीनामतिद्विपः ॥ शुनमस्मभ्यंमृत्येवरुणोमि० ॥ शर्मयच्छंतुसप्रथं
 आदित्यासोयदीमहेऽअतिद्विपः ॥ यथाहृत्यहंसवोगैर्यचित्पदिपिताममुचतायजत्राः ॥ एवोष्व
 स्मन्मुचताव्यंहःप्रतार्येभेप्रतरंनुऽआयुः ॥ १ ॥ ३ ॥ अथैद्रस्तवसूक्तं ॥ इतिवाइतिमेमनेगा
 मशंसनुयामिति ॥ कुवित्सोमस्यापापामिति ॥ प्रवाताइवदोधतउन्मापीताऽअयंसत ॥ कुवित्सोमस्या० ॥
 उन्मापीताऽअयंसतरथमश्वाइवाशवंः ॥ कुवि० ॥ उपमामतिरस्थितवाश्रापुत्रामिवप्रियं ॥ कुवि० ॥
 अहंतधेवबंधुंपर्यचामित्वादामतिं ॥ कुवि० ॥ नहिमेअक्षिपच्छनाच्छान्तसुःपंचकृष्टयः ॥ कुवि० १ ॥
 नहिमेरोदसीउमेऽअन्यंपक्षंचनप्रति ॥ कुवि० ॥ अमिद्यामहिनाभुवमसीइमांपृथिर्विमही ॥ कुवि० ॥
 हंनारुपृथिवीमिमानिदधानीहवेहवा ॥ कुवि० ॥ ओषमित्पृथिवीमंहजंधनानीहवेहवा ॥ कुवि० ॥
 दिविमेऽअन्यःपक्षोइधोऽअन्यमचीकृषं ॥ कु० ॥ अहमस्मिमहामहोभिन्नभ्यमुदीषितः ॥ कु० ॥

गृहोयाम्यरंक्तोद्वेभ्योह्वयवाहनः ॥ कुवि० ॥ २ ॥ अथज्ञानमोक्षसूक्तं ॥ अस्यवामस्यर्षपलित
 स्युहोतुस्तस्यभ्रातामध्यमोऽअस्यश्वः ॥ तृतीयोभ्रातोवृत्पृष्ठोअस्यात्रोपशयंविशपतिसप्तपुत्रं ॥
 सप्तपुत्रंतिरथमेकचक्रमेकोऽअश्वोवहति सप्तनामा ॥ त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वयत्रेमाविश्वामुवना
 धितुस्थुः ॥ इमंरथमधिसप्तसुतस्थुःसप्तचक्रं सप्तवंहत्यशवाः ॥ सप्तस्वसारोऽअभिसंनवंतेयत्रगवांनिहिता
 सप्तनामं ॥ कोदंदर्शप्रथमंजायमानमस्थन्वंतंयदंनस्थविर्मति ॥ भूम्याऽअसुरसृगात्माकवस्वित्को
 विद्वांसमुपगात्प्रटुमेतत् ॥ पाकःपृच्छामिमनुसाविजानन्देवानोमेनानिहितापदानि ॥ वत्सेबृष्कये
 धिसप्ततंतुन्विततिरेकवयऽओतवाड ॥ १ ॥ अचिकित्वान्चिकितुर्पश्चिदत्रंक्रवीन्पृच्छामिबिद्मने
 नविद्मान् ॥ विद्यस्तुसंभृषळिमारजांस्यजस्यरूपेकिमपिस्विदेकं ॥ इहमंत्रीतुयईमंगवेदास्थवाम
 स्युनिहितंपुद्वेः ॥ शीर्ष्णःक्षीरंदुहतेगवोऽअस्यवृन्विसानाउदकंपदापुः ॥ मातापितरंमृतऽआव
 भाजधीत्येयमनस्रासंहिजग्मे ॥ सार्वभृत्सुर्गभरसा निविद्मानमस्वंतुइदुपवाकंभीथुः ॥ युक्तमाता

सौन्दुरिदक्षिणायाऽअनिष्ट्रुर्भौहजनीम्बतः ॥ अभीमेद्वत्सोऽअनुगामपश्यद्विश्चरुत्त्रिपुयोजनेपु ॥
 त्रिषोसुतस्त्रीन्पितृन्विभ्रदेककुर्वन्स्तस्थौनेमवगलपेयति ॥ मंत्रयतेदिवोऽअमुष्यपृष्ठेविश्वविद्ववाच
 मविश्वमिन्वा ॥ २ ॥ द्वादशानुहितज्जरायुवर्तित्चक्रंपरिद्यामृतस्य ॥ आपुत्राऽअग्नेमिथुनोसो
 ऽअत्रसप्तशतानिविशतिश्वतस्थुः ॥ पंचपादंपितरंद्वादशाकृतिदिवऽआहुःपरेऽअर्धपुरीषिण ॥ अ
 धेऽअन्येऽपरैरेविचक्षणंससचक्रेषळऽआहुरपितं ॥ पंचरिचक्रेपरिवर्तमानेतस्मिन्नातस्थुर्भुवना
 निविशवा ॥ तस्यनाक्षस्तप्येतेभूरिभारःसुनदिवनरीर्यतेसनाभिः ॥ सनेमिचक्रमजर्विवाहृतउत्ता
 नायांदेशयुक्तवहति ॥ सूर्यस्यचक्षुरजसैत्याहंततस्मिन्नापिताभुवनानिविशा ॥ साकंजानांसस
 थमाहुरेकजंषळिद्यमाऽऋषयोदेवजाहति ॥ तेषामिष्टोनिविहितानिधामशःस्थानेऽजतेविहंतानि
 रूपशः ॥ ३ ॥ स्त्रियःसुतीस्तौडेभ्युऽआहुःपश्यदक्षणाचविचेतदंधः ॥ क्विर्यःपुत्रःसईमाचि
 केतयस्तार्विजानात्सपितुष्पितासंत ॥ अवःपरेणपुरेणपुदावत्संबिभ्रंतुगौरुदस्थत् ॥ साकृद्गीची

कंस्विदर्थपरागात्क्वस्वित्सूतेनहियुथेऽअंतः ॥ अवःपरेणपितरंयोऽअस्यानुवेदंपरएनवरेण ॥
 कवीयमानःकइहप्रवोचद्देवंमनःकुतोऽअधिप्रजातं ॥ येऽअर्वाचस्ताँऽउपरांचऽआहुर्येपरांचस्ताँऽअ
 र्वाचऽआहुः ॥ इंद्रश्चयाचक्रथुःसोमतानिधुरानयुक्तारजसोवहति ॥ द्वासुपर्णासयुजासखायासमानं
 वृक्षंपरिपस्वजाते ॥ तयोरन्यःपिप्पलंस्वाहृत्त्यनश्नन्नन्योअभिचाकशीति ॥ ४ ॥ यत्रासुपर्णाअमृ
 तंस्यभागमनिमेषंविदथाभिस्वरति ॥ इनोविश्वस्यभुवनस्यगोपाःसमाधीरःपाकमत्राविवेश ॥ यस्मि
 न्बुधेःसुपर्णानिविशतेसुवतेचाधिविश्वे ॥ तस्येदाहुःपिप्पलंस्वाहृत्प्रेतन्नोन्नश्चःपितरंनवेद ॥ य
 द्वायत्रेऽअधिगायत्रमाहितंत्रैष्टुभाद्वात्रैष्टुभंनिरतक्षत ॥ यद्वाजगज्जगत्याहितंपदंयइत्तद्विदुस्तेऽअ
 मृतत्वमानशुः ॥ गायत्रेणप्रतिमिमीतेअर्कमूर्केणसामत्रैष्टुभेनवाकं ॥ वाकेनवाकंद्विपदाचतु
 ष्षदाक्षरेणमिमतेसप्तवर्णाः ॥ जगतासिंधुदिव्यस्तमायद्रथंतरेसूर्यपर्यपश्यत् ॥ गायत्रस्यसमिध
 स्त्रिंशत्सऽआहुस्ततोमहाप्ररिरिचेमहित्वा ॥ ५ ॥ उपह्वयेसुदुर्घाधेनुमेतांसुहस्तांगोधुगतदोहृदेनां ॥

श्रेष्ठसंप्रसवितासाविषत्रोभीद्धोघर्मस्तदुपुप्रबोचं ॥ ह्रिङ्कुण्वतीवसूपत्नीवसूनांवत्ससिच्छंतीमनसा
 भ्यागात् ॥ दुहामशिवभ्यांपयोअद्भ्येयंसावर्धतांमहतेसौभगाय ॥ गौरमीमेदनुवत्संसिंपतंमूर्धानंहि
 डुःरुणोन्मातुवाड ॥ रुक्माणघर्मसमिवावशानामितामायुंपयतेपयोभिः ॥ अयंसशिङ्गयेनगौरमी
 हंतामितामायुं ध्वसनावधिश्रिता ॥ साचित्तिभिर्निहिवृकार्मत्यवियुद्धवंतीप्रतिवत्रिमौहत ॥
 अनच्छयेतुरगांतुजीवमेजच्छुवंमध्यऽआपस्त्यानां ॥ जीवोमृतस्यंचरतिस्वधाभिरमर्त्योमर्त्यनासयो
 निः ॥६॥ अपश्यंगोपामनिपद्यमानुमात्रपरांचपथिसिश्चरंतं ॥ ससद्भीचीःसविषूचूर्विर्सानुऽआवरीव
 तिमुवनेष्वंतः ॥ यद्द्विकारुनसोऽअस्यवेदयद्ददुर्गहिरुगिञ्जुतस्मात् ॥ समानुर्योनापरिर्वीतोऽ
 अंतर्बहुप्रजानिर्कृतिमाविवेश ॥ द्यौर्मपिताजनिनानाभिरत्रबंधुर्भूमातापृथिवीमहीयं ॥ उत्तानयो
 श्रम्बोर्इयोनिर्तरत्रापितादुहितुर्गर्भमाधात् ॥ पृच्छामित्वापरमंतंपृथिव्याःपृच्छामियत्रभुवंनस्युना
 भिः ॥पृच्छामित्वाहृणोऽअश्वस्यरेतःपृच्छामिवाचःपरमंय्योम ॥इयंवेदिःपरोऽअंतःपृथिव्याऽअयंय

चक्षते संवत्सरे वपतु एक एषां ॥ विश्वमेकोऽभिर्धृष्टशचीभिर्ध्राजिरेकस्य दहशेन रूपं ॥ चत्वारि वाक्प
 रिमितापदानि विदुर्ब्राह्मिणा ये मनीषिणः ॥ गुहात्रीणि निहितानि गंयन्ति तुरीये वाचो मनुष्या वदन्ति
 चिकेत ॥ इन्द्रमित्रं ० ऋ. १ ॥ ९ ॥ आत्मस्तवसूक्तं कृष्णं नि ० ऋ. १ ॥ द्वादशप्रथमश्च क्रमेण त्रीणि नभ्यां निकउत
 विश्वापुष्यसि वार्याणि ॥ योरत्नधावंसु विद्यः सुदत्रः सरस्वति नमिह धातवेकः ॥ यस्ते स्तनः शशयो यो मयो भूर्भुव
 समानमेतदुदकमुच्चैत्यवचाहमिः ॥ भूर्भिर्पुर्जन्याजिन्वैति दिवं जिन्वत्युग्रयः ॥ द्यज्ञेन युज्ञ ० ॥
 संब्रह्मं मपांगभीदर्शतमोषधीनां ॥ अमीपतो वृष्टिभिस्त्पर्यंतं सरस्वतं मवंसे जोहवीमि ॥ १० ॥
 ॥ अथ विष्णुसूक्त ॥ अतो दिवाऽअवंतु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ॥ पृथिव्याः ससधामंतिः ॥ इदं वि
 ष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदं ॥ समूळ्ढमस्य पांसुरे ॥ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदांभ्यः ॥
 अतो धर्माणि धारयन् ॥ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो ब्रूतानि पस्पशे ॥ इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ तद्विष्णोः

परमंपदंसदापश्यंतिसूर्यः ॥ दिवीवचक्षुरातंतं ॥ तद्विप्रांसोविपन्यवोजागवांसःसमिंघते ॥ विष्णो
 र्यत्परमंपदं ॥ १ ॥ विष्णोनुंकवीर्याणिप्रवोचंयःपार्थिवानिविमभेरजांसि ॥ योऽअस्कंभायदुत्तरं
 सधस्थंविचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ प्रतद्विष्णुःस्तवतेवीर्येणमृगोनभीमःकुंचरोर्गिरिष्ठाः ॥ यस्योरुषु
 त्रिषुविक्रमणेष्वधिष्ठियन्तिभुवनानिविश्वा ॥ प्रविष्णवेशुषभेतुमन्मगिरिरिक्षितंउरुगायायदृष्णो ॥ यद्
 दंदीर्यंप्रयंतंसधस्थमेकोविममेत्त्रिभिरित्पदेभिः ॥ यस्यत्रीपूर्णमधुनापदान्यक्षीयमाणस्वधयामदं
 ति ॥ यत्त्रिधातुंपृथिवीमुतद्यामेकोदाधारभुवनानिविश्वा ॥ तदस्यप्रियमभिपार्थोऽअश्यांनरोयत्र
 देवयवोमदंति ॥ उरुक्रमस्यसहिवंधुरित्थाविष्णोःपदेपरमेमध्वत्सः ॥ तावांवास्तन्युश्मसिगमंध्यै
 यत्रगावोभूरिश्रृंगाऽअयासः ॥ अत्राहतदुरुगायस्यदृष्णःपरमंपदमवभालिभूरि ॥ २ ॥ प्रवःपांतमं
 धंसोधिषायतेमहेशूरायविष्णवेचार्चत ॥ यासानुनिपर्वतानामदाभ्यामहस्तस्थतुरर्वतेवसाधुना ॥
 त्वेपमित्थासमरणंशिमीवतोरिद्रांविष्णुसुतपावांमुरुष्यति ॥ यामर्त्यायप्रतिधीयमानमिच्छशानोरस्तु

रसनमुंरुष्यथः ॥ ताईवर्धतिमह्यस्यपौस्त्र्यंनिमातरानयतिरेतसेभुजे ॥ दधातिपुत्रोवरंपरंपितुर्नाम
 तृतीयमाधरोचनेदिवः ॥ तत्तद्विदस्यपौस्त्र्यंगुणीमसीनस्यत्रातुरवृकस्यमीच्छुषः ॥ यःपार्थिवानिन्त्रि
 म्भिरिद्विगामभिरुरुक्रमिद्योरुगायायजीवसे ॥ द्वेइदस्यक्रमणेस्वर्दृशोभिरव्यायुमर्त्योभरणयति ॥ नृ
 तीयमस्यनकिरादधर्षतिवयश्चनपतयंतःपतत्रिणः ॥ चतुर्भिःसाकंनवतिचनार्मभिश्चक्रंनवृत्तंव्यतीरवी
 विपत् ॥ बृहच्छरीरोविमिमानुऽऽकक्रभिर्युवाकुमारःप्रत्येत्याहव ॥ ३ ॥ भर्वाभिन्त्रोनशेव्योघृतासुति
 धिभूतद्युम्राएवयाडसप्रथाः ॥ अथातेविष्णोविदुषाचिदर्थःस्तोमोयज्ञश्चराध्योहृविष्मता ॥ यःपुव्यायं
 वेधसेनवीयसेसुमज्जानयेविष्णवेददाशति ॥ योजातमस्यमहृतोमह्विब्रवृत्सेदुश्रवोभिर्युज्यचिदभ्य
 सत् ॥ तमुस्तोतारःपुर्व्ययथाविदच्छनस्यगर्भजनुषापिपर्तन ॥ आस्यजानंतोनार्मचिद्विवक्तनमहस्ते
 विष्णोसुमर्तिमजामहे ॥ तमस्यराजावरुणस्तमश्विनाक्तुंसचंतमारुतस्येवेधसं ॥ दाधारदक्षमुत्त
 ममहृर्विद्वंजंचविष्णुःसखिवौऽअपोर्णते ॥ आयोविवार्यसचथार्थयदैव्यइंद्राद्यविष्णुःसुहृतेसुहृ

त्तः ॥ वेधाऽअजिन्वत्रिषधस्थआर्यमृतस्थम्रगोधजमानमभजत् ॥ तवश्रियेमरुतोमर्जयंतरुद्र
 यत्तेजनैमचारुचित्रं ॥ पदंयद्विष्णोरुपमंनिचायितेनपासिगुह्यंनमगोनीं ॥ ४ ॥ संवांकर्मणा
 समिषाहिंनोर्मीद्राविष्णुऽअपसस्पररेऽअस्य ॥ जुषेथांयुद्गांद्रविणंचधत्तमरिद्धैर्नःपृथिमिःपारयता ॥
 याविश्वासांजनितारांमतीनामिंद्राविष्णुकूलशासोमधानां ॥ प्रवांगिरःशुस्यमानाऽअवंतुप्रस्तोमा
 सोगीयमानासोऽअकैः॥ इंद्राविष्णुमदपतीमदानामासोर्भयातुंद्रविणोदधाना॥ संवामंजत्वक्तुमिर्मती
 नांसंस्तोमासःशुस्यमानासउक्थैः ॥ आवामर्श्वसोऽअभिमातिषाहइंद्राविष्णूसधमादोवहंतु ॥ जु
 षेथांविश्वाहर्वनामतीनामुपब्रह्माणिशृणुतंगिरोमे ॥ इंद्राविष्णुतत्पन्याद्यथंवांसोर्भस्यमदुचरुचक्रमा
 थे ॥ अकृणुतमंतरेक्ष्वरीयोप्रथतंजीवसेनोरजांसि ॥ इंद्राविष्णूहविषावाद्यधानाग्राद्दानानमंसारा
 तहन्या॥ घृतांसुतीद्रविणंधतमस्मेसंमुद्रःस्थःकूलशःसोमधानः ॥ इंद्राविष्णुपिबंतमध्वोऽअस्यसोमं
 स्यदत्ताजठरंपृणेषां॥ आवामंधांसिमद्विराण्यगमुचुपब्रह्माणिशृणुतंहर्वमे ॥ उमाजिग्यथुर्नपराजयेथे

नपराजिगयेकतरंश्चनैः ॥ इन्द्रश्चविष्णोपदपस्पृधेयांत्रेधासहस्रं वितदैरयेथां ॥५॥ पुरोमात्रंयातन्वा
वधाननतैमहित्वमन्वश्चुवन्ति।उमेतैविव्यरजसीपृथिव्याविष्णोदेवत्वंपरमस्यवित्से ॥ नतैविष्णोजाय
मानोनजातोदेवमहिम्नःपरमंतमाप ॥ उदस्तभ्रानाकमृण्वंबृहंतंदाधथुंम्राचींकुकुर्मंपृथिव्याः ॥ इरां
वतीधेनुमतीहिमूतंसंयवसिनीमनुषेदरास्या ॥ व्यस्तभ्रारोदसीविष्णवेतेदाधार्थपृथिवीमभितोमयू
खैः ॥ उरुयज्ञायचक्रथुरुल्लोकंजनयंतासूर्यमुपासंमग्नि ॥ दासस्यचिहूपशिप्रस्यंमायाजघ्नथुर्नरापृ
तनाज्येषु ॥ इन्द्राविष्णुंहृंहिताःशंवरस्यनवपुरेनवतिचंभथिष्टं ॥ शतवर्चिनःसहस्रंचसाकंहथोऽअप्रत्य
सुरस्यवीरान् ॥ इयंमनीषाहृहतीबृहतीरुक्नुमातवसावर्धयती ॥ रेवांस्तोमंविदथेषुविष्णोपिन्वत्तमि
षोष्टुजनैष्विन्द्र ॥ वर्षदत्तेविष्णवाऽआकृणोमितन्मैजुपस्वशिपिषिष्टहव्यं ॥ वर्धतुत्वासुष्टुतयो गिरोमे
युयंपातंस्वस्तिभिःसदानः ॥६॥ नूमतोदयतेसनिष्पन्थोविष्णवउरुगायायुदाशतं ॥ प्रथःसुत्राचामनंसा
यजातएतावतंनर्यमाविवासात् ॥ त्वंविष्णोसुमतिंविश्वजन्यामप्रयुताभेवयावोमतिदाः ॥ पर्वोयथानः

सुवितस्य मूरेश्वावतः पुरुश्चंद्रस्य रायः ॥ त्रिदेवः पृथिवीमेष एतां विचक्रमेशतर्चसमहित्वा ॥ प्रविष्णुर
 स्तुतवसस्तवीयान्त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम ॥ विचक्रमेष पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषेदशस्यन् ॥
 ध्रुवांसोऽस्य क्रीरयो जनास उरुक्षिति सुजनिमाचकार ॥ प्रतत्तेऽअद्य शिपि विष्टुनामार्यः शंसामिव
 युनानि विद्वान् ॥ तं त्वागुणामित्वसमत्तव्यान्क्षयतमस्य रजसः पराके ॥ किमित्तै विष्णोपरिचक्षयं
 मस्य यद्द्वंक्षे शिपि विष्टोऽअस्मि ॥ मावर्षोऽअस्मदपंगूह एतद्यदन्य रूपः समिथे बभूथ ॥ वर्षदत्ते ०
 क्र० ॥ ७ ॥ इति विष्णुसूक्तं ॥ अथ हरिसूक्तं ॥ आया ह्यर्वाङ्गुपबंधुरेष्ठा स्तवेदनुप्रदिवः सोम
 पेयं ॥ प्रियासखाया विमुचोपबर्हिस्त्वामिमेहव्यवाहो हवंते ॥ आया हि पूर्वो रतिचर्षणीरोऽअर्यऽआ
 शिपु उपनो हरिभ्यां ॥ इमा हित्वा मतयः स्तोभत घां इंद्र हवति सख्यं जुषाणाः ॥ आनो यज्ञं न मोक्षधंस
 जोषा इंद्रे देव हरिभिर्यो हितूयं ॥ अहं हित्वा मतिभिर्जोहवीमि धृत प्रयाः सधुमाद्रे मधूनां ॥ आचत्वा
 मेनाक्षर्षणावहानो हरी सखाया सुधुरास्वंगो ॥ धानावर्दिद्रः सर्वं नं जुषाणः सखासख्युः शृणवद्दं नानि ॥

कुविन्मागोपांकरसेजनस्यकृविद्राजानंमघवचृजीपिन् ॥ कुविन्मऽऽकपिंपिवांसंसुतस्यकुविन्मेव
 स्वोऽअमृतस्यशिक्षाः ॥ आत्वाबृहंतोहरोयुजानाऽअर्वागिंद्रसधुमादोवहंतु ॥ प्रथेद्विनाद्विवऽ
 व्रंजंत्याताःसुसंमृष्टासोष्टृषमस्यमुराः ॥ इंद्रपिवृष्टषधृतस्यृष्टणऽआयतैश्वेनऽउशतेजमारं ॥ य
 स्यमदैच्यावयसिंप्रैकृष्टीर्यस्यमदेऽअपगोत्रावृथं ॥ शुनंह्रुवेममघवान्मिंद्रमस्मिन्भरेचृतंमंवाज
 सातौ ॥ शृण्वंतंमुग्रमृतयेसुमत्सुप्रतंवृत्राणिंसंजितंथनानां ॥ १ ॥ अयंतेऽअस्तुहृत्यतःसोम
 ऽआहरिंसिःसुतः ॥ ज्युषोणंइंद्रहरिंसिर्नआगृह्यातिष्ठहरित्तिरथं ॥ हर्यचृषसंमर्चयःसूर्यहर्यचरोच
 यः ॥ विद्वांश्चिक्त्वान्हर्यश्ववर्धसइंद्रविश्वोऽअभिश्रियः ॥ द्यामिंद्रोहरिघायसंपृथिवीहरिवर्षसं ॥
 अथारयद्धरितोर्भूरिमोजनंययोंतर्हरिश्चरत् ॥ जज्ञानोहरितोष्टृपाविश्वमासातिरोचनं ॥ हर्यश्वोह
 रितंपत्तुऽआयुधुमावज्जंबाहोहरिं ॥ इंद्रोहर्यतंमर्जुनंज्जंशुकैर्मीहंतं ॥ अपाष्टृणोद्धरिंसिराद्रिभिःसु
 तमुद्गाहरिंसिराजन ॥ २ ॥ आमैर्द्रेरिंद्रहरिंसियांहिमयूरोरमभिः॥मात्वाकेचिन्त्रियमल्विनपाशिनोत्तिथ

न्वेवताऽइहृत्त्रवादोवलंरुजःपुराद्रमोऽअपामजः ॥ स्यात्तारथस्यह्योरमिस्वरइंद्रोदृढ्वाचिदा
 रुजः ॥ गंभीरोऽर्द्धोरेवकृतं पुष्यसिगाइव ॥ प्रसुगोपायवसंधेनवोयथाहृदंकुल्याइवाशत ॥ आनस्तु
 जंर्यमरांशंनप्रतिजानते ॥ वृक्षंपक्ष्मंकीवधूनुहोद्रंसंपारणंवसु ॥ स्वयुरिंद्रस्वराळसिस्महिष्टिःस्व
 यशस्तरः ॥ सवोद्यधानऽओजसापुरुष्टुतमवानःसुश्रत्रस्तमः ॥ ३ ॥ प्रतेमहेविदथेशंसिषुहरीप्रतेवन्वेव
 नुषोहृथंमदं ॥ घृतंनयोहरिमिश्राहुसेचतऽआत्वाविशंतुहरिवर्षसंगिरः ॥ हरिंहियोनिममियेसमस्व
 रन्हन्वतोहरीदिव्ययथासदः ॥ आर्यपुणंतिहरिमिर्नधेनवुद्रायशुषुहरिवंतमर्चत ॥ सोऽअस्यवज्रो
 हरितोयऽआयुसोहरिर्निकामोहरिरागभस्थोः ॥ द्युम्नीसुशिप्रोहरिमन्युसायकइंद्रेनिहूपाहरितामि
 मिक्षिरे ॥ दिविनेकेतुरधिथायिहृथतोविष्यच्चहृत्त्रोहरितोनरत्वा ॥ तुददाहृहरिशिप्रोयऽआयुसः
 सहस्रशोकाऽअमवद्धरिभरः ॥ त्वंत्वमहृथथाउपस्नुतःपूर्वमिद्रिद्रहरिकेशयज्वमिः ॥ त्वंहृयसि
 तवविश्वंमुक्थ्यं १ मसाभिराधोहरिजातहृथं ॥ १ ॥ तावज्जिणंमंदिनुंस्तोम्यमदुइंद्रथेवहतो

ह॒र्य॒तां॒ह॒री॒पु॒रु॒ण्य॒स्मै॒सर्व॒ना॒नि॒ह॒र्य॒त॒इ॒द्रा॒य॒सो॒मा॒ह॒र॒यो॒द॒ध॒न्वि॒रे ॥ अ॒रु॒का॒मा॒य॒ह॒र॒यो॒द॒ध॒न्वि॒रे॒स्ति॒रा॒य॒
 हि॒न्व॒न्ह॒र॒यो॒ह॒री॒तु॒रा ॥ अ॒र्व॒ञ्चि॒र्यो॒ह॒रि॒भि॒र्जो॒ष॒मी॒य॒ते॒सो॒ऽअ॒स्य॒का॒मुं॒ह॒रि॒वंत॒मा॒न॒शे ॥ ह॒रि॒श्म॒शा॒रु॒
 ह॒रि॒केश॒ऽआ॒य॒स॒स्तु॒र॒स्पे॒ये॒यो॒ह॒रि॒पा॒ऽअ॒व॒र्ध॒त ॥ अ॒र्व॒ञ्चि॒र्यो॒ह॒रि॒भि॒र्वा॒जि॒र्न॒व॒सु॒र॒त्वि॒श॒वां॒दु॒रि॒ता॒पा॒रि॒
 ष॒द्ध॒री ॥ सु॒वे॒व॒य॒स्य॒ह॒रि॒णी॒वि॒पे॒त॒तुः॒शि॒मे॒वा॒जा॒य॒ह॒रि॒णी॒द॒वि॒ध्व॒तः ॥ प्र॒य॒त्क॒ते॒च॒म॒से॒म॒र्मु॒ज॒ऽद्ध॒री॒
 पी॒त्वा॒म॒द॒स्य॒ह॒र्य॒त॒स्यां॒ध॒सः ॥ उ॒त्स्म॒स॒न्न॒ह॒र्य॒त॒स्य॒प॒स्त्यो॒ऽइ॒त्यो॒न॒वा॒जं॒ह॒रि॒वां॒ऽअ॒चि॒क्र॒दत् ॥ म॒ही॒चि॒
 द्वि॒धि॒ष॒णा॒ह॒र्य॒दो॒ज॒सा॒बु॒ह॒द॒यो॒द॒धि॒बे॒ह॒र्य॒त॒श्चि॒दा ॥ २ ॥ आ॒रो॒द॒सी॒ह॒र्य॒मा॒णो॒म॒हि॒त्वा॒न॒व्य॒न॒व्य॒ह॒र्य॒सि॒
 म॒न्म॒नु॒प्रि॒यं ॥ प्र॒प॒स्त्य॒म॒सु॒र॒ह॒र्य॒तं॒गो॒रा॒वि॒ष्क॒धि॒ह॒र्ये॒सू॒र्या॒य ॥ आ॒त्वा॒ह॒र्य॒तं॒प्र॒यु॒जो॒ज॒न॒नां॒र॒थे॒व॒हं॒तु॒ह॒रि॒
 शि॒प्र॒भि॒द्रा॒पि॒बा॒य॒था॒प्र॒ति॒भू॒त॒स्य॒म॒ब्धो॒ह॒र्य॒न्य॒ज्ञं॒सं॒ध॒मा॒दे॒शो॒णि ॥ अ॒पाः॒पूर्॒व॒पां॒ह॒रि॒वः॒सु॒ता॒ना॒म॒थो॒इ॒दं॒
 स॒र्व॒न॒के॒व॒लं॒ते॒॥ म॒मु॒द्वि॒सो॒मं॒म॒धु॒मं॒तं॒भि॒द्र॒स॒त्रा॒हं॒ष॒ज्ज॒ठ॒ऽआ॒हं॒ष॒स्व॒॥ ३ ॥ इ॒ति॒द्वि॒ती॒यं॒ह॒रि॒सू॒क्तं॒॥ २ ॥ हि॒र॒
 ण्य॒ग॒र्भ॒सू॒क्तं॒॥ हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः॒स॒म॒व॒र्त॒ता॒ग्रे॒भू॒त॒स्य॒जा॒तः॒प॒ति॒रे॒क॒ऽआ॒सी॒त्॥ स॒दा॒धा॒र॒पृ॒थि॒र्वी॒द्या॒मु॒ते॒मां॒क॒स्मै

देवार्यहविषाविधेम ॥ यऽआत्सदाबलदायस्यविश्वेऽउपासतेप्रशिष्यस्यदेवाः ॥ यस्यह्यायामृत्य
 स्यमृत्युःकस्मैदे० ॥ यःप्राणतोनिमिषतोमहित्वैकइद्राजाजगतोबभूव ॥ यईशेऽअस्यद्विपदश्रतुष्वदः
 कस्मै० ॥ यस्येमेहिमवंतोमहित्वायस्यसमुद्रंसयासहाहुः ॥ यस्येमाःप्रदिशोयस्यबाहूकस्मै० ॥ ये
 नद्यौरुप्रापृथिवीचट्टळ्हायेनस्वःस्तभितयेननाकः ॥ योऽअंतरिक्षेरजसोविमानुःकस्मै० ॥ १ ॥ यं
 क्रंदसीऽअवसातस्तमानेऽअभ्यैक्षेतामनसुरेजमने ॥ यत्राधिसूरुदितोविभातिकस्मै० ॥ आपोह
 यदृहतीर्विश्वमायुन्गर्भदधानाजुनर्थतीरग्नि ॥ ततोदेवानांसमवर्ततासुरैःकस्मै० ॥ यश्चिदापोमहिना
 पर्यपश्यदक्षंदधानाजुनर्थतीर्यज्ञ ॥ योदेवेष्वधिदेवएकऽआसीत्कस्मै० ॥ मानोहिंसीज्जानितायः
 पृथिव्यायोवादिवंसत्यधर्माजुजान ॥ यश्चापश्रंद्राबृंहतीर्जजानकस्मै० ॥ प्रजापतेन० ऋक् ॥ २ ॥
 ॥ अथसौरसूक्तं ॥ उदृत्यंजातवेदसंदेवंहंतिकेनवः ॥ इशेविश्वायसूर्थ ॥ अपत्येतायवोयथानक्ष
 त्रायंत्यकुभिः ॥ सूरायविश्वचक्षसे ॥ अदृश्रमस्यकेतवोविरश्मयोजनौऽअनु ॥ ब्राजंतोऽअग्रयो

रिधावापृथिवीयैतिसद्यः ॥ तत्सूर्यस्यदेवत्वन्महित्वमध्याकर्णवित्तंसंज्ञमार ॥ यदेदयुक्तहरितः
 सधस्थादाद्रात्रीवासस्वनुतेसिमस्मै ॥ तन्मित्रस्यवरुणस्याभिचक्षेसूर्योरूपकणुतेद्योरुपस्थै ॥ अ
 नंतमन्यदुशेदस्यपार्जःकृष्णमन्यहरितःसंभरति ॥ अद्यादेवाउदितसूर्यस्यनिरंहसःपिपृतानिरव
 द्यात् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमामहंतामदितिःसिंधुःपृथिवीउतद्यौः ॥ ३ ॥ इंद्रमित्रवरुणमभिमहूर
 थोदिव्यःससुपर्णोगरुत्मान् ॥ एकंसद्विप्राबहुधावंदत्यग्निप्रियमंमातरिश्वानमाहुः ॥ कृष्णंनियानं
 हरयःसुपर्णाऽअपोवसानादिवमुत्पंतति ॥ तऽआवष्टत्रन्त्सदंनानृत्सयादिद्रुतेनंपृथिवीव्युद्यते ॥ हं
 सःशुचिषहसुरंतरिक्षसद्भोतावेदिषदतिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद्वंसदृत्सहयोमसदृजगोजाकृतजा
 ऽअद्रिजाऽकृतं ॥ यस्वासूर्यस्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ॥ अक्षेत्रविद्यथामुग्धोभुवनान्यदीधयुः
 ॥ ४ ॥ यद्वयसूर्यब्रवोनागाउद्यन्मित्रायवरुणायसत्यं ॥ वयदेवत्रादितेस्यामतवंप्रियासोऽअर्यमन्
 गृणंतः ॥ उतसूर्योबृहदूर्ध्वश्रेयुरुविश्वानिममानुषाणां ॥ समोदिवाददृशेरोचमानःकत्वांकृ

तःसुकृतःकर्तृभिर्भूत् ॥ ससूर्यप्रतिपुरोऽङ्गाःस्तोत्रैर्भित्तेशेभिरैः ॥ प्रनोमित्रायवरुणायवो
चोनांगसोऽअर्यम्णोऽअश्रयेच ॥ विनःसहस्रैशुरुधोरदंत्तृतावानेवरुणोमित्रोऽअग्निः ॥ यच्छंतुचं
द्राऽऽपमंनोऽअर्कमानःकामंपूरुस्तवानाः ॥ ५ ॥ उद्धृतिसुभगोविश्वर्चक्षाःसार्धारणःसूर्योमा
नुषाणां ॥ चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्यदेवश्चर्मवयःसमविष्यक्तमांसि ॥ उद्धृतिप्रसवीताजनानामहान्केतु
रणवःसूर्यस्य ॥ समानंचक्रंपर्याविष्टसन्धेदेतशोवहतिध्रुवयुक्तः ॥ विभ्राजमानउषसांपुपस्थोऽग्ने
सदेत्यनुमुद्यमानः ॥ एषमेदेवःसविताचच्छंदयःसमानंप्रमिनातिधाम ॥ द्विवोरुक्मंडरुचक्षाउदेति
दूरेअर्थस्तरणिभ्राजमानः ॥ नूनंजनाःसूर्येणप्रसूताऽअयन्नर्थानिहृणवन्नपसि ॥ यत्राचक्रुमृता
गातुमंसैश्चेनोऽदीयन्नन्वेतिपाथः ॥ ६ ॥ उदुत्यद्वर्शतंबपुदिवर्षतिप्रतिवहरे ॥ यदीमाशुर्वहतिदेवदत्त
शोविश्वस्मैचक्षसेऽअरं ॥ शीर्ष्णःशीर्ष्णोऽजगतस्तस्युषस्पतिंसमयाविश्वमारजः ॥ सप्तस्वसारःसु
विनायसूर्यवहतिहृत्तिरेथे ॥ तच्चक्षुर्देवहितंशुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदःशतंजीविमशरदःशनं ॥ ब

णमहौऽअसिसूर्यबळादित्यमहौऽअसि ॥ महस्तेसुतोर्महिमापनस्यतेद्वादिवमहौऽअसि ॥ बद्सूर्यश्र
 वसामहौऽअसिसत्रादेवमहौऽअसि ॥ मन्हादेवानामसूर्यःपुरोहितोविभुज्योतिरदाभ्यं ॥ ७ ॥ नमो
 भिन्नस्यवरुणस्यचक्षसेमहोदेवायतद्गतसंपर्यत ॥ दुरेदशेदेवजातायकेतवेदिवस्पुत्राप्रसूर्यायशंसत ॥
 सामासत्योक्तिःपरिपातुविश्वतोद्यावाचयत्रंततनन्नहानिच ॥ विश्वमन्यन्निविशतेयेदेजतिविश्वाहा
 पोविश्वाहोदेतिःसूर्यः ॥ नेतेऽअदेवःप्रदिवोनिवासतेयेदेतशेभिःपतरैरथर्यसि ॥ प्राचीनमन्यदनुवर्तते
 रजउदन्येनज्योतिषायासिसूर्य ॥ येनसूर्यज्योतिषावाधसेतमोजगच्छविश्वमुदियर्षिभानुना ॥ तेना
 स्मद्विश्वामनिरामनाहुतिमपार्मिवामपदुःष्वप्यसुर्वे ॥ विश्वस्यद्विप्रेपितोरक्षसिन्नतमहेळ्यन्नुच्चरसि
 स्वधाऽअनु ॥ यदद्यत्वांसूर्योपृब्रवांमहेतनेद्विवाऽअनुमंसीरतक्रतुं ॥ तंनोद्यावापृथिवीतन्नऽआपृइ
 द्रःशृण्वंतुमरुतोहवंचः ॥ माशुनेभूमसूर्यस्यसंदृशिभद्रजीवतोजरणामशीमहि ॥ ८ ॥ विश्वाहा
 त्वासुभनसःसुचक्षंसःप्रजावतोऽअनमीवाऽअनांगसः ॥ उद्यंतत्वाभिन्नमहोदिवेदिवेज्योग्जीवाःप्रति

पश्येमसूर्य ॥ महिज्योतिर्बिभ्रतं त्वाविचक्षणं भास्वं तं च क्षुषे च क्षुषेमयः ॥ आरोहंतं बृहत्तः पाजं सूर्ये
 रिव्यं जीवाः प्रतिपश्येमसूर्य ॥ यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्रचेत्ते निचर्चिशतेऽ अक्षुभिः ॥ अ
 नागास्त्वेने हरिकेशसूर्याह्ना नो वस्यसावस्य सोदिहि ॥ शनो भवक्षसाशनोऽ अह्ना शंभानुनाशां हि
 माशं घृणेन ॥ यथाशमध्वं छमसं दुरोणे तत्सं द्रविणधे हि चित्रं ॥ अस्माकं देवा उभययजन्मने
 शर्मयच्छत द्विपदे चतुष्पदे ॥ अदत्पि बर्दूर्जयमानमाशितं तदस्मेशयो रपोदधातन ॥ यद्वेदे वाश्च
 कुमजिह्वया गुरुमनसो वा प्रयुती देवहेळनं ॥ अरावा योनोऽ अमिदुच्छुनायेत तस्मिन् देवो वसवो
 निधेतन ॥ ९ ॥ सूर्यो नो दिवस्पातु वानोऽ अंतरिक्षात् ॥ अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः ॥ जोषास
 वितर्यस्यते हरः शतं सवैऽ अर्हति ॥ प्राहि नो दिद्युतः पतंत्याः ॥ चक्षुर्नो देवः स विता चक्षुर्न उत पर्व
 तः ॥ चक्षुर्नो दिवसादधातुनः ॥ चक्षुर्नो धिहि चक्षुषि चक्षुर्विख्येत्तनूभ्यः ॥ संचेदं विचपश्येम ॥
 सुसं दर्शं त्वावयं प्रतिपश्येमसूर्य ॥ विपश्येम नृचक्षंसः ॥ १० ॥ विश्राद्बृहत्पिबतु सोम्यं म

ध्वायुर्दधद्यज्ञपत्नाविह्वृतं ॥ वातजतूतोयोऽभिरक्षंतित्मनाप्रजाःपुपोषपुरुधाविराजति ॥ विभ्राद्ब्रु
 हत्सुभृतंवाजसातमंधर्मन्दिबोधरुणसत्यमर्षितं ॥ अमित्रहातृत्रहादस्युहंतमज्योतिजज्ञेऽअसूरहा
 संपत्नहा ॥ इदंश्रेष्ठंज्योतिषंज्योतिरुत्तमंविश्वजिध्दन्जिदुच्यतेबृहत् ॥ विश्वभ्राद्भ्राजोमहिसूर्योऽह
 शरुरुपमथेसहऽओजोऽअच्युतं ॥ विभ्राजन्ज्योतिपास्व१रगच्छोरोचनदिवः ॥ येनेमाविश्वाभुवन्ना
 न्याभृताविश्वकर्मणाविश्वदेव्यावता ॥ १ ॥ आर्यगैःपृश्निक्रमीदसदन्मातरंपुः ॥ पितरंचप्रयन्स्वः ॥
 अंतश्चरतिरोचुनास्यप्राणादंपानती ॥ व्यख्यन्महिपोदिवं ॥ त्रिशद्धामविराजतिवाक्पतंगायधीयते
 प्रतिवस्तोरहद्युभिः ॥ १ २ ॥ ऋतंचसत्यंचाभीध्दात्तपसोध्वंजायत ॥ ततोरार्यंजायतततःसमुद्रोऽ
 अर्णवः ॥ समुद्रार्दणवादिधिसंवलसरोऽअजायत ॥ अहोरात्राणिविद्यद्द्विष्वस्यमिषुनोवशी ॥ सूर्यांच
 द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् ॥ दिवंचपृथिवीचांतरिक्षमथोस्वः ॥ सविताप० ॥ १ ३ ॥ ॥ अथब्रह्म
 णस्पतिसूक्तं ॥ सोमानंस्वरंरुणुद्विब्रह्मणस्पते ॥ कृशीवंतंयऽऔशिजः ॥ योरेवान्योऽअमीवहावमु

विपुष्टिवर्धनः। सनः सिष कुयस्तुरः॥ मानः शंसोऽररुभो धूर्तिः प्रण्ड्मर्त्यस्याः। रक्षाणे ब्रह्मणस्पते ॥ सघा
 वीरो नरेण्यतियभिद्रो ब्रह्मणस्पतिः ॥ सोमो हि नोति मर्त्य ॥ त्वं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्य ॥ दक्षिणा
 पात्वंहंसः ॥ १ ॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयंतस्त्वेमहे ॥ उपप्रर्षतु मरुतः सुदानव इन्द्रप्रशू र्मवासाचा ॥ दक्षिणा
 मिद्धिसहसस्पुत्रमर्त्य उपब्रूते घनेहिते ॥ सुवीर्यमरुतः आस्वश्व्युं दधीत यो वेऽ आचके ॥ प्रेतु ब्रह्मणस्प
 तिः प्रदेव्येतु सुनता ॥ अच्छा वीरं नर्यं पृक्तिरां घसं देवायुज्ञं नयंतु नः ॥ यो वा षते ददाति सूरं वसुसधत्ते
 अक्षिति श्रवः ॥ तस्मा इळां सुवीरामायं जामहे सुप्रतूर्ति मनेहसं ॥ प्रननं ब्रह्मणस्पतिर्मंत्रवदत्युक्थ्यं ॥
 यस्मिन्निद्रोवरुणो मित्रोऽअर्यया देवाओकासिचक्रिरे ॥ २ ॥ तमिद्धोचेमा विदथेपुशं भुवं मंत्रदेवाअ
 नेहसं ॥ इमांच्च वाचं प्रतिहर्यथानरो विश्वेद्दामावोऽअभवत् ॥ को देवयंतमभवज्जानं को वृकत्रहिंषं
 प्रमदाश्वान्पुस्त्यासिरस्थितां तृवीवत्सथदधे ॥ उपसृत्रं पृचीत हंति राजसिर्मथेचित्सुक्षितिं दधेनास्य
 वृानतं रुनामहाघनेनाभोऽअस्ति वृजिणः ॥ ३ ॥ गुणानां त्वा० ऋ. ॥ १ ॥ देवाश्चित्तेऽअसुर्यप्रचे

जिन्व ॥ विश्वंतद्भद्रं यदवतिदेवाबूहद्वेदमविदथेऽसृतीराः ॥ ७ ॥ सेमामविद्धिप्रभृति यद्देशिषेयावि
धेमनवयामहागिरा ॥ यथानोमीद्वान्स्त्वतेसखातवबृहस्पतेसीषधः सोतनोमति ॥ योनंत्त्रान्यन
मरुयोजसोतार्दर्मन्युनाशं वराणिवि ॥ प्राच्यावयदच्युताब्रह्मणस्पतिराचाविशदधुमंतं विपर्वतं ॥
तद्देवानां देवतं मायकत्वमश्रं भृष्टृब्ध्वात्रदंतवीक्रिता ॥ उद्गाअजुदमिनुद्ब्रह्मणावल्लमगूहत्तमोव्यच
सपुत्स्वः ॥ अश्मांस्यमवतंब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभियमोजसातृणत् ॥ तमेव विश्वेषपिरेस्वर्दृशो ब
हुसाकंसि सचुरुत्समुद्रिणं ॥ सनाताकाचिद्भुवंनामवीत्वामाद्भिः शरद्भिर्दुरोवरंतवः ॥ अयंतं ताच
रतोऽअन्यदैन्यदिचाचकारं वयुनाब्रह्मणस्पतिः ॥ ८ ॥ अभिनक्षतोऽअभियेतमानं शुनिधिप
णीनांपरमंगुहाहितं ॥ तेविद्वांसः प्रतिचक्ष्यान्तृतापुनर्यतेऽआयन्तद्दुदीयुराविशं ॥ ऋतावानः प्रति
चक्ष्यान्तृतापुनरात्ऽआतस्थुः क्रवयो महस्पथः ॥ तेबाहुभ्यां धमितमग्निमर्मनिनकिः षोऽअस्वरं
णोजुद्बुद्धितं ॥ ऋतज्येनक्षिप्रेणब्रह्मणस्पतिर्यत्रवष्टिप्रतदं श्रोतिधन्वना ॥ तस्यसाध्वीरिषवोया

शिरस्थनिचक्षसोद्दृशथिकर्णयो नयः ॥ संसंतयःसविनयःपुरोहितःससुधृतःसयुधिब्रह्मणस्पतिः ॥
 चाक्षमोयद्वाङ्मतेमतीधनादित्सूर्यस्तपनितप्यनुर्ध्या ॥ विमुप्रमुप्रथममेहनवानोबृहस्पतैःसुविद
 नाणिरार्था ॥ इमासानानिवेन्यस्यवाजिनोयेनजनउभयेमुंजतेविशः ॥ ९ ॥ योर्वेद्वृजनेविश्व
 थाविमुर्महामुरण्वःशर्वसाववक्षिथ ॥ सदेवोऽद्वैवान्प्रतिप्रथेपृथुविश्वेदुतापरिसूर्ब्रह्मणस्पतिः॥विश्व
 सत्यंभववानायुवोरिदापश्चनप्रमिनंतिन्नवं ॥ अच्छेद्राब्रह्मणस्पतीहविर्नांयुजैववाजिनांजिगातं ॥
 उताशिष्टाऽअनुश्रृण्वंतिवक्ष्यःसभेयोविप्रोसस्तेमतीधना ॥ वीळ्वेष्टाऽअनुवशऽऽङ्गणमाद्रुदिःसहवाजी
 समिथेब्रह्म ॥ ब्रह्मणस्पतेरसवद्यथावृशंसत्योमन्युर्महिकर्मकरिष्यतः ॥ योगाउदाज्जत्सदिवेविचामज
 न्महीवरीतिःशर्वसासरुदृथक् ॥ ब्रह्मणस्पतेसुयमस्यविश्वहारायःस्यामरुध्योर्देवयस्वतः॥वृरेषुवीरौड
 पृथग्विचनुस्त्वयदीशानोब्रह्मणावेषिमेह्व ॥ ब्रह्मणस्पतेत्व ० १ ० ॥ इंधानोऽअग्निर्वनवदनुष्यतःकृतब्रह्मा
 शशुवद्भानहंन्यइत् ॥ ज्ञातेनज्ञातमतिसमसद्येयंयुजैरुणुतेब्रह्मणस्पतिः ॥ वृरेभिर्वीरान्वनवदनु

व्यतो गोभीरधिपप्रथद्वोधतिस्मना ॥ लोकं च तस्य तनयं च वर्धते यं धुंयुः ॥ सिंधुर्नक्षोदः शिर्षीवोऽक्र
 धायतो ह्येषेव धीरमिदृष्ट्यो जसा ॥ अग्नेरिव प्रसितिर्नाहवर्तव्यं यं युः ॥ तस्मात्स अर्षति दिव्या अं
 सश्चतः ससर्वाभिः प्रथमो गोपुंगच्छति ॥ अनिमृष्टत विषिर्हृत्यो जसा यं युः ॥ तस्माद्द्विध्वेषु नयंतसि
 धवोच्छिद्रा शर्मदधिरेपुरुणि ॥ देवानां सुम्ने सुमगः स र्धते यं युः ॥ ११ ॥ ऋजुरिच्छसौ वनवदनुष्य
 तो देवयन्निदेवयंतमभ्यंसत् ॥ सुप्रावीरिहं नवत्पृसुदुष्टं यज्वेदये जयोर्विमजातिभोजनं ॥ यजस्व
 वीरुप्रविहिमनायतो भद्रं मनः कृणुष्व च तूयं ॥ हविष्कृणुष्व सुमगो यथासं सि ब्रह्मणस्पते र्वऽआ
 वृणीमहे ॥ स इज्जने न स विशासजन्मना सपुत्रैर्वीजं मले धनानृभिः ॥ देवानां यः पितरमाधिवास
 ति श्रद्धामनाह विषा ब्रह्मणस्पतिं ॥ योऽअस्मै ह नैर्युतवद्भिरविधत्प्रतं प्राचानयति ब्रह्मणस्पतिः ॥
 उरुष्यतीमं ह सोरक्षतीरिपोऽहो श्रिदस्मा उरुचक्रिद्धतः ॥ १२ ॥ तमृज्येषुं नमसा हविभिः सुशेवं
 ब्रह्मणस्पतिं गृणीये ॥ इंद्रं श्लोकोमहि देव्यः सिषक्तुयो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ॥ इयं वा ब्रह्मण

स्पतेसुवृत्तिर्ब्रह्मद्रायवृज्जिणेऽअकारि ॥ अविधंधिधोऽजिगृतंपुरंधीर्जजस्तमयोवनुपामरातीः ॥
 चत्तोडुतश्चत्तामुलःसर्वाभ्रुणान्यारुपी ॥ अराय्यंत्रह्रस्पतेतीक्ष्णशृंगोद्वपन्निति ॥ अदोयदारु
 ह्रवतेसिंधोःपारेऽअंपूरुपं ॥ तदारंमस्वदुर्दणोतेनगच्छपरस्तरं ॥ अत्रियेनविराजतिसूर्यो
 येनविराजति ॥ विराड्चेनविराजतितेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेविराजसमदंकुरु ॥ १३ ॥ इतिब्रह्म
 णस्पतिसूक्तं ॥ अथदेवीसूक्तं ॥ अंहंरुद्रेमिर्वसुमिश्राम्यहमादित्यैरुतविश्वदैवैः ॥ अंहंसिन्ना
 वरुणोमविमर्षहृभिद्रात्रीऽअहमश्विनोमा ॥ अंहंसोमंमाहनसंविमर्ष्यंहंवद्वारमुतपपुणंभगं ॥
 अंहंधामिद्रविणंहविष्मतेसुप्राव्येश्यजमानायसुन्वते ॥ अंहंराष्ट्रीसंगमनीवसूनांचिकित्नुपीप्रथ
 मायुद्घियानां ॥ तामादेवाव्यदधुःपुरुत्रामूरिस्थात्रामूर्यविशयती ॥ मयासोऽअन्नमत्ति
 योविपश्यतियःप्राणितियईशुणोत्पुक्तं ॥ अमंतवोमांतउपक्षियंतिश्रुधिश्रुतश्चद्धिवंतवदामि ॥
 अहमेवस्वयमिदं वदामिजुष्टदेवैमिरुतमानुपेमिः ॥ यंकामयेतंतमुयंरुणोमितं ब्रह्माणंतमृपितंसु

मेधां ॥ १ ॥ अहंरुद्रायधनुरातनोमिब्रह्मद्विपेशवेहेतवाउ ॥ अहंजनायसुमंदंरुणोम्युहंघ्यावा
 पृथिवीऽआविवेश ॥ अहंसुवेपितरमस्यमूर्धन्ममयोर्नैरुस्वंग्रतःसंमुद्रे ॥ ततोवितिष्ठेभुवनानुविश्वो
 तामून्धावूर्ध्मणोपस्थशामि ॥ अहमेववर्तइवप्रवाभ्यारसंमाणभुवनानिविश्वापरोदिवापरएनाधृथि
 व्यैतावतीमहिनासंबंभू ॥ २ ॥ इति. देवी ॥ अथत्रिशदेवाः ॥ नमोमहद्भ्योनमोऽअर्भकेभ्यो
 नमोयुवभ्योनमऽआशिनेभ्यः ॥ यजामदेवान्यदिशक्रवाममाज्यायंसःशंसुमाहृक्षिदेवाः ॥ १ ॥ मम
 दुर्नःपरिज्मावसहामित्तुवातोऽअपावृषणवान् ॥ शिशीतमिन्द्रापर्वतायुवंनस्तत्रोविश्वेवरिवस्यंतु
 देवाः ॥ २ ॥ कथानैऽअमेशुचर्यंतऽआयोर्ददाशुर्वाजैमिराशुपाणाः ॥ उभेयत्तोकेतनयेदधा
 नाऽऋतस्यसामंन्नणर्थतदेवाः ॥ ३ ॥ युज्ञेनयुज्ञ० ॥ ४ ॥ परांशुभ्राऽअयासोयुध्वासाधारण्येव
 मरुतोमिमिथुः ॥ नरोदसीऽअपनुदंतघोरजुषंतवृधंसरव्यायदेवाः ॥ ५ ॥ त्वेरायइंद्रतोरातमाः
 प्रणेतारःकस्यचिद्वतायोः ॥ तेषुणोमरुतोमृळ्यंतुयेस्मापुरागांतूयंतवीदेवाः ॥ ६ ॥ उसाशंसान

र्थाममविद्यामुभेसाम्भूतीऽअवसासचेतां ॥ भूरिचिद्वर्धःसुदास्तराश्रेषामदंतइपथेभेदेवाः ॥ ७ ॥
 उतर्नईमरुतोवृद्धसेनाःस्मद्रोदंतीसमनसःसदंतु ॥ पृषदश्वासोवनयोनरथारिशार्दसोमित्रयुजोनदे
 वाः ॥८॥ तवस्यामपुरुवीरस्यशर्मन्धुरुशंसंस्थवरुणप्रणेनः ॥ यूर्धनःपुत्राऽअदितेरदवथाऽअभिक्ष
 मध्वंयुज्यायेदेवाः ॥ ९ ॥ दिवश्चिदातेरुचयंतरोकाउपोविंमतीरनुंमासिपूर्वीः ॥ अपोयदंमउशश्च
 ग्वनेषुहोतुर्मीद्रस्यपुनर्थंतेदेवाः १० ॥ २ ॥ शंसामुहामिंद्रंयस्मिन्विश्वाऽआकृष्टयःसोमपाःकामुमव्यन् ॥
 यंसुकर्तुधिषणैविश्वतृष्टंघ्नंघृत्राणांजनयंतदेवाः ॥ ११ ॥ त्रिरुत्तुमादूणशरोचनानित्रयोरारजंत्यसुर
 स्ववीराः ॥ ऋतावानइषिरादूळमांसखिरादिवोविदथेसंतुदेवाः ॥ १२ ॥ नापांभूतनवोतीवृषामानिःशस्ता
 ऽकृमवोयज्ञोऽअस्मिन् ॥ समिद्रेणमदथसंमरुद्धिःसंराजंमीरत्नधेयायदेवाः ॥ १३ ॥ अर्धतीतोजयत्सिं
 धनांनिप्रतिजन्यान्युतयासजन्या ॥ अबुस्यवेयोवरिवःकृणोतिब्रह्मणेरजातमंवंतिदेवाः ॥ १४ ॥ कोव
 छातावसवःकोवहृताथावाभूमीऽअदितेनासीथानः ॥ सहीयसोववरुणमित्रमर्तृत्कोवोध्वस्वरिवोथानि

मन्युं विशईळतेमानुपीर्याः प्राहिनो मन्योतपसासजोपाः ॥ अर्भीहिमन्योतवसस्तर्वयान्तपसायुजा
 विजहिशत्रून् ॥ अमित्रहाहत्रहाहस्युहाच विश्वावसून्याभरात्वनः ॥ त्वंहिमन्योऽअभिभूत्योजाः
 स्वयंभूर्भामोऽअभिमतिप्राहः ॥ विश्वर्चर्पणिः सङ्हरिः सहावानुस्मास्वोजः पृतनासुधेहि ॥ अभागः
 सन्नपपरेतो अस्मितवक्त्वातविषस्यप्रचेतः ॥ तंत्वांमन्योऽअक्तुजिहोळाहं स्वातनूर्बलदेयायमेहि ॥
 अर्थेते अस्प्युपमेह्यर्वाङ्ग्रंतीचीनः सङ्हरे विश्वधायः ॥ मन्योवञ्जिअभिमामावदस्वह्नोवदस्यूरुतवो
 ब्यापेः ॥ अभिप्रेहिदक्षिणतो भवाभेवावृत्राणि जघनावभूरि ॥ जुहोभिते धरुणं मध्वोऽअग्रमुसाउपां
 शुभ्रथमार्पिवाव ॥ १ ॥ त्वयोमन्योसरथंमारुजंतोहर्षमाणसोधृपितामरुत्वः ॥ त्रिभेषवऽआयुधा
 संशिशानाऽअभिप्रथंतुनरोऽअस्मिरुषाः ॥ अग्निरेवमन्योत्वषितः सहस्वसेनानीर्नः सङ्हरेह्रुतर्धेहि ॥
 हत्वायशत्रून्विभजस्वेवऽओजोमिमानोविमृधोनुदस्व ॥ सहस्वमन्योऽअभिमतिमस्मेरुजन्मणन्प्र
 मूणन्प्रेहिशत्रून् ॥ उग्रंतेपाजौनन्वारुधेवशीवशनयसएकजत्वं ॥ एकोबहुनामसिमन्यवीळितोवि

शंविशंयुधयेसंशिशायि ॥ अहंतरुक्त्वयायुजावयंचुमंतोषोर्षेविजयायैरुणमहे ॥ विजेषकृदिंद्रइवा
 नवब्रवोईस्माकमन्योऽअधिपामवेह ॥ प्रियंतेनामसहुरेणीमसिचिच्चान्तमुत्संयतऽआबभूथ ॥ आ
 मृत्यासहजावञ्जसायकसहोविसर्ष्यभिमूत्तरं ॥ कर्त्तानोमन्योसहमेद्येधिमहाधनस्यंपुरुहूतसंसृ
 ऽअपनिलयंतां ॥ २ ॥ ॥ अथसरस्वतीसूक्तं ॥ मियंदधानात्सहृदयेषुशत्रवःपराजितासो
 यंदाशुषे ॥ याशशंतमात्रत्वादावसंपूणितातेदात्राणितविषासरस्वति ॥ इयमददाद्रसमृणच्युर्तुदिवोदासंवध्युश्वा
 जत्सानुगिरीणांविषेभिःसूभिः ॥ पारावतृघ्नीमवसेसुबृक्तिभिःसरस्वतीमार्बिवासेमधीतिभिः ॥
 सरस्वतिदेवनिद्रोनिर्बह्यप्रजाविश्वस्यबृस्यस्यमायिनः ॥ उनक्षितिभ्योवनीरार्विदोविषमेभ्योऽअ
 त्रवोवाजिनीवति ॥ प्रणोदेवीसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवनी ॥ धीनामविज्यवतु ॥ यस्वादेविसर
 स्वत्युपब्रूतेधनेहिते ॥ इंद्रंनद्वंत्तूर्ये ॥ १ ॥ त्वदेविसरस्वत्युवाजेषुवाजिनि ॥ रदापुषेवनःसर्नि ॥

॥ तृ० सर० सू० ॥ पावकानः सरस्वतीवाजे सिर्वाजिनीवती ॥ यज्ञं वष्टुधिया वसुः ॥ चोदयित्रीसु
 नृतानां चैतती सुमतीनां ॥ यज्ञं देधे सरस्वती ॥ महोऽअर्णः सरस्वती प्रवेतयति केतुनां ॥ धियो वि
 श्वाविराजति ॥ १ ॥ अंबितमेनदी तमे देवितमे सरस्वति ॥ अप्रशस्ता इव समसि प्रशस्ति मंबनस्क
 धि ॥ त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायै पिदेव्यां शूनहोत्रेषु मत्स्वप्रजादे विदिदिदिठनः ॥ इमा ब्रह्म सरस्वति जुष
 स्ववाजिनीवति ॥ यत्ने मन्मगृत्समुदाऽऽंतावरिप्रिया देवेषु जुहति ॥ २ ॥ यांगुगूर्या भिनीवाली
 याराकाया सरस्वती ॥ इंद्राणी मंह्रुकृतयेवरुणानीं स्वस्वये ॥ ३ ॥ सरस्वती देवयंतो हवते सरस्वती
 मध्वरे लायमानि ॥ सरस्वती सुकृतोऽअव्हयंत सरस्वती दाशुषे वार्थदात् ॥ सरस्वति यासुरथं यथाथस्व
 धाभिर्देवि पितृभिर्मंदनी ॥ आसद्यास्मिन्बर्हिषिमादयस्वानमीवाहपऽआधे ह्यस्मे ॥ सरस्वतीयां
 पितरो हवते दक्षिणायज्ञमभिनक्षमाणाः ॥ सहस्रार्धमिक्केऽअत्रमांगरायस्पोषं यजमानेषु धेहि ॥ १ ॥
 चत्वारिवाक्प० ॥ १ ॥ ॥ अथ बृहस्पति सूक्तं ॥ अनुर्वाणं हृपमं मद्रिजं बृहस्पतिं वर्धयानव्यमूर्कैः ॥

गाथान्यः सुरचोयस्यदेवाऽआशुष्वंतिनवमानस्यमर्नाः ॥ तमृत्वियाउपवाचः सचन्तेसगोनयोदवयता
 मसर्जि ॥ बृहस्पतिः सद्यजोवरांसि विभ्वाभवंत्समुतेमातरिश्वा ॥ उपस्तृतिनमसुदद्यतिचश्लोकैयंस
 त्सवितेवप्रबाहू ॥ अस्यक्तवाहन्योऽथोऽअस्तिमृगोनभीमोऽअरुक्षसस्तुविष्माच ॥ अस्यश्लोकौद्विवि
 यतेदृथिव्यामत्योनर्थसक्षभृद्विचैताः ॥ मृगणांनहेतयोपतिचेमाबृहस्पतेरहिमात्राऽअभिद्यून् ॥ ये
 त्वदिवोस्त्रिकंमन्यमानाः पापाभद्रमुपजीर्वतिपञ्चाः ॥ नदूढयेइ'अनुददासिवाभं बहस्पतेचयसइत्पि
 यारं ॥ १ ॥ सुप्रैतुःसूयवसोनपथादुर्नियंतुःपरिप्रीतो नमित्रः ॥ अनर्वाणोऽअभियेचक्षतेनोपीहता
 ऽअपोर्णवंतोअस्थुः ॥ संयंस्तुमोवनयोनयंतिसमुद्रंनल्लवलोरोधचक्राः ॥ सविहौउभयंचष्टऽअंतर्बृ
 हस्पतिस्तरुआपश्चुगंधः ॥ एवामहस्तुविजातस्तुविष्मान्बृहस्पतिर्षभोधायिदेवः ॥ सनःस्तुतोवीरव
 द्धातुगोमद्विद्याभंषहजनंजीरदानुं ॥ २ ॥ आदैव्याद्यणीमुहेवांसिबहस्पतिर्नोमहऽआसखायः ॥ यथाभवे
 ममीहृषेऽअनागायो नोदातापरावतः पितेव ॥ सऽआनोयोनिंसदतुप्रहोबृहस्पतिर्विश्ववारोयोऽआस्ति ॥

कामोरायःसुवीर्यस्यतंदात्पर्षोऽअतिसश्वतोऽअरिघान् ॥ तमानोऽअर्कमृतायजुष्टमिमेधासुर
 मृतांसःपुराजाः ॥ शुचिकंदंयजतंप्रस्थानंवृहस्पतिंमनुवाणहुवेम ॥ तंशुमासोऽअरुषासोऽअ
 श्वाबृहस्पतिंसहवाहोवहंति ॥ सहश्रिद्यस्यनीलवत्स्यथंभोनरूपमरुषंवासाः ॥ सहिशुचिः
 ष्टः ॥ देवीदेवस्यरोदसीजनित्रीबृहस्पतिंवाद्यतुर्महित्वा ॥ बृहस्पतिःसर्वावेशऽऋष्वःपुरुसखिभ्यऽआसुतिकरि
 तरासुगाथा ॥ ३ ॥ इमाधिथंससशीर्ष्णीपितानंक्तमंजातांबृहतीर्मन्त्रिदत् ॥ दक्षाद्यायदक्षतासखायःकरद्ब्रह्मणेसु
 द्विश्वजन्योयास्यउक्थामिद्रायशंसन् ॥ कृतंशंसितऽऋजुदीध्यानादिवसुत्रासोऽअसुरस्यज्जनय
 विप्रपदमंगिरसोदधानायज्ञस्यधामप्रथमंमन्त ॥ इंसैरिवसखिभिवविदद्भिरश्मन्मयानिनहनाव्यस्थ
 रन्तस्यसेनौ ॥ बृहस्पतिस्तमसिज्योतिरिच्छभ्रुदुसाऽआकर्विहितिसऽआवः ॥ विमिद्यापुरंशय

थेमपार्चोनिस्त्रीणि साकमुदधेरकंनत् ॥ बृहस्पतिरुपसंस्वर्युगामर्कविवेदस्तनयन्निवद्यौः ॥ इंद्रोवलं
 रक्षितारुंधुधानां करेणैव विचकतां रेण ॥ खेदां जिभिराशिरं मिच्छमानो रोदयत्पणिमागाऽअमुष्णात् ॥
 ॥ ४ ॥ सर्इसत्येभिः स्वखिभिः शुचिद्विगोधायसंविधं नसैरददः ॥ ब्रह्मणस्पतिर्दृषमिर्वराहैर्युर्मत्वेद
 मिर्द्रविणं व्यानद् ॥ ते सत्ये न मनसा गोपतिं गाइयानासं इपणयंतधीमिः ॥ बृहस्पतिर्मिथोऽअवद्यपे
 मिरुद्रुखियाऽअसृजतस्वयुग्मिः ॥ तं वर्धयंतो मतिमिः शिवाभिः सिद्धमि वनानदतंसधस्थे ॥ बृहस्पतिं
 हृषणं पुरंसातौ मरेरेऽअनुमदेमजिष्णुं ॥ यदावाजमसंनद्विश्वरूपमाद्यामरुं क्षुद्रुतराणिसद्वृहस्प
 तिर्दृषणं वर्धयंतो नानासंतो विभ्रंतो ज्योतिरासा ॥ सत्यासाशिपं कणुतायुधैकीरिचिद्भवथस्वेभिरे
 वैः ॥ पश्चाद्युधोऽअपमवंतु विश्वास्तद्रोदसीशृणुतं विश्वमिन्वे ॥ इंद्रोमह्लामह्नो अर्णवस्य विमुर्धा
 नमभिनदर्बुदस्य ॥ अहृन्नहि मरिणात्ससासिंधून् देवार्थावापृथिवीप्रावंतनः ॥ ५ ॥ उदमु
 लो नवयो रक्षंभाणावावदतोऽअश्रियस्येव घोपाः ॥ गिरिभ्रजो नोर्भयो मर्दतो बृहस्पतिं मुभ्यं १३५ अ

नावन् ॥ संगोभिरांगिरसो नक्षमाणो भगवो देवैर्दयमर्णनिनाय ॥ जनैर्मित्रो नदं पत्नी अनक्ति बृहस्पते वा
 जयाशूरैर्वाजौ ॥ साध्वर्याऽअतिथिनीरिषिराः स्पार्हा सुवर्णाऽअनवद्यरूपाः ॥ बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो
 वितूयानिर्गाऊपेयवमिवस्थिविभ्यः ॥ आप्रुपायन्मधुनञ्जतस्य योनिमवक्षिपन्नर्कउल्काभिवद्योः ॥
 बृहस्पतिरुद्धरचर्मनोगामूम्याउद्वेववित्वर्चविभेद ॥ अपृज्योतिषातमोऽअंतरिक्षादुद्गुः शीपालमिव
 वार्तआजत् ॥ बृहस्पतिरनुमृश्यावृत्तस्याभ्रमिववात् ॥ आचक्रआगाः ॥ यदावृत्तस्य पीयथो जसुभेदु
 हस्पतिरथितपोभिरकैः ॥ वृद्धिर्नाजिन्वापरिविष्टमादेवाविर्निर्धिरैरुणोदुस्त्रियाणां ॥ ६ ॥ बृहस्पतिरमेत
 हित्यदासां नामस्वरीणां सदेने गुहायत् ॥ आंडेवमिस्त्राशकुनस्य गर्भमुदुस्त्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत् ॥ अ
 श्रापिनहं मधुपर्यपश्यन्मत्स्यं नदीनउदनिक्षिधत् ॥ निष्ठलं भारचमसं नवृक्षाहृहस्पतिर्विरेवणाविकृत्य ॥
 सोषामर्विदत्सत् १ सोऽअभिसो अर्केण विबवाधेत मांसि ॥ बृहस्पतिर्गोविषुषो वृत्तस्य निर्मज्जानं न प
 र्बणोजमार ॥ हिमेवपृष्णामुषिनावनानि बृहस्पतिना कृपयद्वलोगाः ॥ अननुकृत्यमपुनश्चकारथा

त्पुत्र्याभासाभिथउचरानः ॥ अमिश्र्यावंनकशनेमिश्रश्वनक्षत्रेभिःपितरोद्यामपिशन् ॥ रात्र्यांतमो
 ऽअंदधुर्षोतिरहन्वेहस्पतिभिर्नदिर्विद्वेद्गाः ॥ इदमकर्मनमोअश्रियायुषःपूर्वरन्वानोनीतिवृहस्प
 तिःसहिगोभिःसोअश्वैःसवीरेभिःसन्तुभिर्नोवयोधात् ॥ ७ ॥ अथगोसूक्तं ॥ आगवोअ
 रमभ्रुतमद्रमंकृन्त्सीदंतुगोष्टेरणयंत्वस्मे ॥ प्रजावंतीःपुरुरूपाइहस्पुर्दिद्रायपूर्वीरूपसोदुहानाः ॥
 इंद्रोयज्वनेपृणतेचशिश्रत्युपेदंदातिनस्वमंषायति ॥ मूयोभूयोर्धिमिदस्यवर्धयन्नभिन्नेखिल्येनि
 दंधातिदेव्युं ॥ नतानंशंतिनदंमातितस्करोनासामित्रोव्यथिरादधर्पति ॥ देवैश्चयाभिर्यजतेद
 दातिचज्योगिताभिःसचतेगोपतिःसह ॥ नताअर्वरिणुकंकाटाऽअश्रुतेनसंस्कृतत्रमुपर्धंतिताऽअ
 भि ॥ उरुगायमभयंतस्यताऽअनुगावीर्मतस्यविचरंति यज्वनः ॥ गावोभगोगावुंद्रोमेअच्छान्गा
 वःसोमस्यप्रथमस्यसुक्षः ॥ इमायागावःसर्जनासुइंद्रइच्छामीहूदामनंसाचिदिंद्रं ॥ यूयंगावोभेद
 यथाकृशंचिदश्रीरंचित्कणुथासुप्रतीकं ॥ मद्रंगूहंरुणुथमद्रवाचोबृहहोवयंचपतेसमासु ॥ प्रजा

वतीःसुयवसंरिशतीःशुद्धाऽअपःसुप्रयाणेपिवतीः ॥ भावःस्तेनईशलमाचशसैःपरिवोहेतीरुद्रस्यह
 ज्याः ॥ उपेदमुपपर्चनमासुगोषूपृच्यतां ॥ उपक्कषमस्यरेतस्युपैद्रतववीर्ये ॥ मातारुद्राणां ॥
 क. १ ॥ वृचोविदंवाचमुदीरयतींविश्वाभिधीभिरुपतिष्ठमानां ॥ देवीदेवेभ्यःपर्येयुर्षीगामामाचक्र
 मत्यौदअर्चेताः २ ॥ ॥ इतिगोसूक्तंसमासम् ॥ ॥ अथप्रसवप्रतिबंधनिर्मुक्तिसूक्तं ॥ ॥ वि
 जिहीष्ववनस्पतेयोनिःसुब्धेत्याह्व ॥ श्रुतंमेऽअश्विनाहर्वंससर्वंधिचमुचतं ॥ श्रीतायुनाथमाना
 यऽकषेयससर्वंधये ॥ मायाभिरश्विनायुवंदृक्षंसंचविचांचथः ॥ यथावातःपुष्करिणींससिंघय
 तिसर्वतः॥ एवाल्लेगर्भएजतुनिरैतुदशमास्यः॥यथावातोयथावनंयथामुद्रएजति ॥ एवात्वंदशमास्य
 सहावेहिजरायुणा ॥ दशमासान्छशयानःकुमारोअधिमातरि ॥ निरैतुजीवोऽअक्षतोजीवोजीवं
 त्याअधि ॥ प्रमंदिनेपितुमदर्चतावचोयःकृष्णगर्भानिरहन्नुजिश्वना ॥ अवस्यवोदृषण्वज्रदक्षि
 णंमुरुवंतंसुख्यार्यहवामहे ॥ १ ॥ ॥ अथदुःस्वमनाशनमंत्राः ॥ ॥ अधस्वमस्युनिर्विदेभुजे

तश्चरवतः ॥ उभातावस्त्रिनश्यतः ॥ अद्यानदिवसवितः प्रजावत्सावीः सौमंगं ॥ परादुःष्वभ्यंसुव ॥
 विश्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव ॥ योभिराजन्युज्योवासखावास्वभैभयंभी
 र्वेमह्यमाहं ॥ स्तेनोवायादिप्सन्तिनेहकोवात्वंतरमाह्मरुणपाह्यस्मान् ॥ यच्चगोपुटुःष्वभ्ययच्चास्मे
 दुहितर्दिवः ॥ त्रितायतद्विभावयास्यायुपरावहानेहसोवकुतयःसुकृतयोवकुतयः ॥ निष्कंवावाकृ
 णवतेखजैवाडुहितर्दिवः ॥ त्रितेदुःष्वभ्यंसर्वमास्येपरिदक्षस्येनेहसोव ॥ तदन्नायुतदपसेतंभाग
 मुपसेदुषे ॥ त्रितायचद्वितायचोपौदुःष्वभ्यंवहाने ॥ यथाकृलांयथाशफंयथंक्वणंसंनयामसि ॥
 एवादुःष्वभ्यंसर्वमास्येसंनयामस्यने ॥ अलैष्माद्यांसनामुचाभुमानागसोव्यथं ॥ उपोयस्माहुःष्व
 भ्यावभैष्मापुतदुच्छत्वनेहसोव ॥ २ ॥ ॥ रिपुरोगघ्नसूक्तं ॥ ॥ आदित्यानामवसानूतने
 नसङ्गीमाहिशर्मणाशंतेमेन ॥ अनागास्त्वेऽदितित्वेतुरासङ्मयुद्गंधतुश्रोपमाणाः ॥ आदित्या
 सोऽदितिर्मादयंतांमित्रोअर्यमावरुणोरजिष्ठाः ॥ अस्माकंसंतुभुवनस्यगोपाःपिवंतुसोममवसेना

ऽअथ ॥ आदित्याविश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्वे ऽऋभवश्च विश्वे ॥ इंद्रो ऽअग्निश्चिना तुष्टुवाना य
 धंपा० ॥ १ ॥ आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्ववत्रावसवो मरुतत्रा ॥ सैनम मित्रावरुणासनंतो भ
 वेमद्यावापृथिवी भवतः ॥ मित्रस्तत्रोवरुणो मामहंत शर्मतो कायतनया यगोपाः ॥ मावो भुजे मान्य
 जातु मे नो मातर्कर्मवसवो यच्चर्यध्वे ॥ तुरण्यवो गिरसो नक्षत्रं देवस्य सवितुरियानाः ॥ पिता चत नो
 महान्यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुपंत ॥ २ ॥ अथ शंताती यसूक्तानि ॥ इच्छेद्यावापृथि
 वी पूर्वाचितये श्रिष्टुर्मसुरुचं यामं चिष्टुवै ॥ यामि मरेकारमंशाय जिन्वथ स्तामि ह्रुपु कृतिभिरश्विनार्गतं ॥
 युवोर्दानाय सुमरो ऽअसश्च तोरथ मानस्थुर्वचु संनमंत वै ॥ यामि धियो वथः कर्म चिष्टुयेतामि ह्रु ॥ युवंता
 सां दिव्यस्य प्रशासने विशाक्षयथो अमृतस्य मज्जना ॥ यामि धिनुमस्व १ पिन्वथोनरतामि ह्रु ॥ यामिः प
 रिज्जातनयस्य मज्जना हिमातातुर्बुतरणिभि सुपति ॥ यामि च्छिमंतुरभवद्विचक्षणस्ता ० ॥ यामिः प
 तंसितमभ्यउदंदनुमैरयतं स्वदृशे ॥ यामिः कण्वंप्रसिपासंतु मावंतुतामि ० ॥ १ ॥ यामि रंतं कंजसमानुमारं

णेमुज्युंधाभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः॥याभिःकर्कंधुवध्रचजिन्वथस्ता०॥याभिःशुचंतिधनुसांसुंपंस
 दंतसंधर्ममोभ्यावतमत्रये॥याभिःदृश्रिगुंपुरुकुत्समावतता०॥याभिःशार्धीभिर्दृपणापराहृजंप्रांधंश्रेण
 चक्षसएतवेकृथः॥याभिवर्तिकांयसिताममुंचतता०॥याभिःसिंधुमधुमंतमसश्रुतवसिंधुयाभिरजराव
 जिन्वत॥याभिःकुत्संश्रुतर्धनर्यमावतता०॥याभिर्विशपलांधनुसामथव्यसहस्रमीळ्ऽआजावजिन्वत
 ॥याभिवर्शमश्व्यंप्रेणिमावतताभिरू०॥याभिःसुदानूऔशिजायवणिजेदीर्घश्रवसेमधुकोशोअक्ष
 रत्॥कक्षीवंतस्तोतारंयाभिरावतता०॥याभीरसांसोदसोन्हःपिपिन्वथुरुशंवयासीरथुमावतंजिषे॥या
 भिखिशोकंडसियाउदाजतता०॥याभिःसूर्यपरियाथःपरावतिमंधातारंक्षेत्रपत्येष्वावतं॥याभि
 विभ्रंप्रभरद्वाजुमावतता०॥याभिर्मुहामतिथिवंकशोजुवंदिवोदासंशबरहत्यआवतं॥याभिःपु
 भिद्येन्नसदंस्युमावतता०॥याभिर्वृत्रविपिपानमुपस्तुतंकलियाभिवित्तजनिदुवस्यथः॥याभिः
 वर्धश्वमुतपृथिमावतता०॥३॥याभिनराशयवेयाभिरत्रयेयाभिःपुरामनवेगातुमीपथुः॥याभिः

शारीराजंतं स्युमेशमयेता० ॥ याभिः पठंवा जठरस्य मज्जनाग्निर्दीदेच्छित्तहृद्दो अज्मन्ना ॥ याभिः
 शर्यातमवथो महाधनेता० ॥ याभिः रंगिरो मनसानिरुण्यथो ग्रं गच्छथो विवरे गो अर्णसः ॥ याभिर्मनं
 शूरमिपासमावर्तता० ॥ याभिः शंतातीभवथो ददाशुपे भुज्युयाभिरवथो यामिरक्षितं ॥ याभिः सुदासं ऊहथुः सु
 देव्यं ॥ ४ ॥ याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवेयाभिर्यूनोऽ अर्वातमावतं ॥ मधुप्रियं भरथो यत्स रद्भ्य
 स्ता० ॥ याभिर्निशोषुयुधं नृपाह्ये क्षेत्रस्य सातातनयस्य जिन्वथः ॥ याभिरथोऽ अवथो याभिरवर्तता० ॥
 याभिः कुत्समार्जुनेयं शं तं क्रतुप्रतुर्वीतिं प्रचदमीतिमावतं ॥ याभिर्ध्वंसंति पुरुपंतिमावतंता० ॥ अमस्वती
 मश्विनावाचमस्मेकृतं नोद स्राह्यपणामनीपां ॥ अच्यत्येवसे निब्हयेवांबुधेचनोभवतुवाजसतौ ॥ अमस्वती
 कुभिः परिपातमस्मानरिष्टेभिरश्विनासौमगेभिः ॥ तन्नोमित्रोव० ॥ ५ ॥ ॥ शंता. द्वितीयसूक्तं ॥ ॥ इदं
 तं नूनमेपांसुं स्रामिक्षेतुमर्थः ॥ आदित्यानामपूर्व्यं सर्वा मनि ॥ अनुर्वाणोर्ध्वेपांथां आदित्यानां ॥ अदब्धाः

संतिप्रायवःसुगेहधः॥तत्सुनःसविताभगोवरुणोमित्रोऽअर्धमा॥ शर्मयच्छतुसप्रथोयदीमहे ॥ देवेभि
 र्देव्यदिनेरिष्टमर्मन्नागहि ॥ स्मत्सुरिभिःपुरुप्रियेसुशर्मभिः ॥ तेहिपुत्रासोऽआदितोविदुर्द्वेषांसियोत्वे॥
 अंहोश्विदुरुचकयोनेहसः ॥१॥ अदितिर्नोदिवापशुमर्दिनिर्नक्तमर्हयाः ॥ अदितिःपात्वंहंसःसदाह
 धा ॥ इतस्यानोदिवांमतिरादितिरूत्यागमत् ॥साशंतातिमयस्करदपृस्विधः॥इतत्यदिव्याश्विषजाशंनः
 करतोऽअश्विना ॥ युयुयातामितोरपोऽअपृस्विधः ॥ शमन्निरग्नि० ऋक् ॥ अपामीवामपस्विधमप
 सेधतदुर्मति ॥ आदित्यासोयुयोतनानोऽअंहसः ॥२॥ युयोताशरुमस्मदौआदित्यासउतामर्ति ॥
 ऋधृद्देषःऋणुतविश्वेदसः ॥ तत्सुनःशर्मयच्छतादित्यायन्मुभौचति॥ एनस्वंतंत्विदेनसःसुदानवः ॥
 योनःकश्चिद्विरिक्षितरक्षस्त्वेनुमर्त्यः ॥ स्वैःषण्वैरिरीषीष्टयुर्जनः ॥ समित्तगुधर्मभवदुःशंसमर्त्यैरिपुं॥
 योऽअस्मन्नादुर्हणोवौउपद्रुयुः ॥ प्राक्त्रार्थनेदेवाहृत्सुजानीथमर्त्य ॥ उपद्रुयुचाहृयुचवसवः ॥३॥
 आशर्मपर्वतानामोतापांहणीमहे ॥ द्यावाक्षामरेअस्मद्रपंस्कृतं ॥ तेनोभद्रेणशर्मणायुष्मार्कनावावं



सवः ॥ अतिविश्वानिदुरितार्पितन ॥ तुचेतनायतत्सुनोद्गाधीयआयुर्जीवसे ॥ आदित्यासःसुमह
 सःकृणोतन ॥ यज्ञोहीळोवोअंतरआदित्याऽअस्तिमूळत ॥ युष्मेइहोऽअपिष्मसिसजात्ये ॥ आदित्यासःसुमह
 रूथंमरुतादिवंत्रातारंशिवना ॥ मित्रमीमहेवरुणंस्वस्तये ॥ अनेहोमित्रार्यमन्त्रुवहरुणशंस्यं ॥ बृहह
 रूथंमरुतोयंतनश्छदिः ॥ येचिद्धिमृत्युबंधवऽआदित्यामनवःस्मसि ॥ प्रसूनुऽआयुर्जीवसेतिरेतन ॥ त्रिव
 विमौवातौवातुआसिधोरापरावतः ॥ दक्षतेऽअन्यआवातुपरान्योवातुयद्रपः ॥ आवातवाहिभेषजं
 विवातवाहियद्रपः ॥ त्वंहिविश्वभेषजोदुवानादुतईयसे ॥ आत्वागमंशंतातिभिरथोअरिष्ठतातिभिः ॥
 दक्षतेभद्रमाभर्षिपरायक्षमं सुवामिते ॥ त्रायतामिह०पंसृशामसि ॥ ऋक्॥३॥ इतिशंतातीयसूक्तं ॥
 अथवाऽयश्वसूक्तं ॥ ॥ भद्राअथेर्वधृश्वस्यंसंहशोवामीप्रणीतिःसुरणाऽपेतयः ॥ यदींशुमित्रावि
 शोऽअग्रइथतेधूतेनाहुतोजलेदुविद्युतत् ॥ धूतममेर्वधृश्वस्युवर्धनं धूतमभैधूतम्वंस्यमेदंनं ॥ धूतेगाहु

तउर्वियाविपप्रथेसूर्यइवरोचतेसर्पिरासुतिः ॥ यत्तेमनुर्यदनीकंसुमित्रःसमीधेअश्रेतदिदंनवीयः ॥ सरे
वच्छोचसगिरोजुषस्वसवाजैर्दधिसइहश्रवोथाः ॥ यत्वापूर्वमीळिनोवड्यश्वःसमीधेअश्रेसइदंजुपस्वा ॥
सनःस्तिपाउतभवातनुपादान्रंक्षस्वयद्विदतेअस्मे ॥ भवाद्युग्नीवाध्यश्वोतगोपामात्वातारीदभिमानि
र्जनांनां ॥ शूरुइवधृणुश्चयवनःसुमित्रःप्रनुवौचंवाध्यश्वस्थनामं ॥ समज्ज्यापर्वत्याइवसूनिदासावृत्रा
ण्यार्याजिगेथा ॥ शूरुइवधृणुश्चयवनोजनानांत्वमग्नेपृतनायूरभिष्याः ॥ १ ॥ दीर्घित्तुर्बृहदुक्षायमग्निःसह
स्रस्त्रीःशतनीथृक्भवां ॥ द्युमान्युमत्सुनृभिर्मुज्यमानःसुमित्रेषुदीदयेदेवयत्सु ॥ त्वेधेनुःसुडुवाजा
तवेदोसश्चेवसमनासंबुधुक् ॥ त्वंनृभिर्दक्षिणावद्धिरग्नेसुमित्रेभिरिष्यसेदेवयद्धिः ॥ देवाश्चित्तेअमृता
जातवेदोमहिमानवाध्यश्वप्रवोचन् ॥ यत्संपृच्छंमानुषीर्विशआयन्त्वनृभिरजयस्त्वाद्येभिः ॥ पितृव
पुत्रमबिमरुपस्थेत्वामग्नेवड्यश्वःसंपर्यन् ॥ जुषाणोअस्यसमिधयुविष्टोतपूर्वाऽअवनोर्त्रार्धतश्चित् ॥
शश्वदग्निर्वड्यश्वस्यशत्रून्नुभिर्जिगायसुतसोमवद्धिः ॥ समनंचिददहश्चित्तमानोवृत्रार्धतमभिनहुथ

श्रित्वा॥ अथमग्निर्विद्युस्यश्वस्यवृत्रहार्सनृकात्प्रेक्षोनमसोपवाक्यः॥ सनोअजाभीरुतवाविजाभीनभिति
 ष्शर्धतोवाद्यश्व ॥२॥ ॥ कपोतसूक्तं ॥ देवाःकपोतइपितोयद्विच्छन्दुतोनिर्क्त्याइदमजगाम॥
 शकुनोगृहेषु ॥ अग्निर्हि विभोजुपताहविर्नःपरिहेतिःपृक्षिणीनोअस्वनागादेवाः
 नाङ्ग्यांपुदंकेणुतेअग्निधाने ॥ शंनोगोभ्यश्चपुरुषेभ्यश्चास्तुमानोहिंसीदिहेदेवाःकपोतः॥ हेतिःपृक्षिणीनदंभास्यस्मा
 तिमोघमेतद्यत्कपोतःपुदमग्नौकुणोति॥ यस्यदुतःप्रहितएपएतत्तस्मैयमायनभोअस्तुमुत्यवै॥ यदुलूकोवद
 पोतंनुदतप्रणोदमिपुमदंतःपरिमानंयध्वं॥ संयोपथतोदुरितानिश्वाहित्वानुर्जुप्रपतात्पतिष्ठः॥१॥
 ॥ अथवरुणसूक्तं ॥ ॥ नृहितैक्षत्रंनसहोनमन्युवयंश्चनामीपतयंतआपुः॥ नेमाआपोअनिमिपंचरती
 नयेवालस्यप्रमिनंस्यर्भ्वं ॥ अबुधैराजावरुणोवर्नस्योर्ध्वस्तूपददतेपुतदक्षः ॥ नीचीनाःस्थुरुपरिबुभ
 एषाम्स्मेअंतर्निहिताःक्रेतवःस्युः ॥ उरंहिराजावरुणश्चकारसूर्यायपंथामन्वेतुवाउ ॥ अपदेपादाप्र

तिं धातवे करुतापे वृक्ताहं दयाविधश्चित् ॥ शतं ते राजन्मिपजः सहस्रं मुर्वीगं श्रीरामुं मतिष्ठेऽस्तु ॥
बाधस्वदूरे निरर्कति पराचैः कृतं चिदेनः प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ अमीयऽकक्षा निहितास उच्चा नक्तुं ददं श्रेकुह
चिद्विवैयुः ॥ अदब्धानिवरुणस्य ब्रतानि विचारकं शब्दं द्रमान्तं मेति ॥ १ ॥ तस्वायामि ० ऋक् १ ॥ तद्विन्नक्तं
तद्विवामह्यमाहुस्तदयं केतो हृद आविचरे ॥ शुनः शेषो यमवहं दृभीतः सोऽअरमात्रा जावरुणो मुमो
क्तु ॥ शुनः शेषो ह्यहं दृभीतः सिद्धिं द्रुपदे पुबुद्धः ॥ अवै नृराजावरुणः ससृज्या द्विहोऽअदब्धो
विमुमोक्तुपाशान् ॥ अवते हेळो ० ऋ ० उदुं नमं ० ऋ ० १ ॥ २ ॥ यच्चिद्विते ० वर्गद्वयं ॥ ४ ॥ अतो विश्वा
न्यद्भुताचिक्त्वौऽअभिपश्यति ॥ कृतानि याचकत्वा ॥ सनो विश्वाहा सुक्तुं रादित्यः सुपथां कत् ॥
प्रण आयं पितारिषत् ॥ विश्रद्वापिं छिरण्यं वरुणो वस्तनिर्णिजं ॥ परिस्पशो निपेदिरे ॥ नयं दिप्सं तिदिप्स
वो न द्रुह्वाणो जनानां ॥ न देवममिमतयः ॥ उत योमानुषेष्वायशंश्चक्रे अस्माभ्या ॥ अस्माकं मुदरेष्व ॥ ५ ॥
पराभेयं तिधीत यो गावो न गव्यं तीरनुं ॥ इच्छंतीं रुरुक्षंसं ॥ संनुवो चावै ह्यनुयर्थे ते मिमध्वाभृतं ॥ ह्येतं

वृक्षदंसेप्रियं ॥ दर्शनविश्वदर्शतुंदर्शरथमधिक्षमि ॥ एताजुषतमेगिरः ॥ इमंभवरुणश्रुधीह्वंम
 ध्याचंसृळ्य ॥ त्वामवस्युराचके॥ त्वंविश्वस्यमेधिरद्विवश्रमश्रजसि ॥ सयामंनिप्रतिश्रुधि ॥ उ
 दुत्तमंमुमुग्धिनोविपाशमध्यमंचूत॥ अवाधमानिजीवसे॥ ६ ॥ द्वितीयंवरुणसूक्तं ॥ इदंकवेरोदि
 त्वंव्रतेसुभर्गसःस्यामस्वाध्वोवरुणतुष्टुवांसः ॥ अत्रियोमंद्रोयुजथायदेवःसुक्तीतिभिक्षेवरुणस्यभूरेः ॥
 ॥ तवस्यामपु० ॥ १ ॥ प्रसीमादित्योऽअसृजद्विधर्तृकृतंसिध्वोवरुणस्ययंति ॥ नश्राम्यंतिनविमुचं
 त्येतेवथोनपंसूरघृयापरिजमन् ॥ विमच्छथायरशानामिवागऽक्वृध्यामतेवरुणत्वासृतस्य ॥ मातंतुंशु
 द्विवयतोधिर्धमेमामात्राशार्यपंसःपुरक्नोः ॥ १ ॥ अपोसुम्यक्षवरुणभियसंसमत्सप्राळतावोनुमागृ
 माय ॥ दामेववत्साद्विमुग्धयहेनहित्वदारेनिमिषश्चनेशे ॥ मातोवैध्ववरुणयेतंडृष्टवेनःकृणवंतम
 सुरश्रीणति ॥ माज्योतिपःप्रवसथानिगन्मविपूसूधःशिश्नथोजीवसेनः ॥ नमःपुरातेवरुणोतनुनमु

तापंतुविजातब्रवाम ॥ त्वेहिकंपर्वतेनश्रितान्यप्रच्युतानिदूळमवृत्तानि ॥ परंऋणासात्रीरधुमत्कनानि
 माहंराजचन्यक्तेनमोजं ॥ अव्युटाइन्नुमूर्धसीरुपासऽआनोजीवान्वरुणतासुशाधि ॥ योभैराज०
 ऋक् १ ॥ माहंमघोनोवरुणप्रियस्यमूरिदाम्नऽआविदंशूनमापेः ॥ मारायोरांजन्सुयमादवस्थांबृहद् ॥
 ॥ २ ॥ ॥ तृतीयवरुणसूक्तं ॥ प्रसम्राजैबृहद्दर्चागसीरंब्रह्मप्रियंवरुणायश्रुताग्रं ॥ वियोजयानंश
 मितेवचमोर्पोस्तेरपृथिवीसूर्याय ॥ वनेषुव्यैऽतरिक्षंतानवाज्जमर्वसुपयंतुस्त्रियासु ॥ ह्रसुक्नु
 वरुणोअप्स्वऽभिद्विस्वर्यमदधात्सोममद्रौ ॥ नीचीनवारुवरुणः कबंधप्रससजरोदसीऽअंतरिक्षं ॥ तेन
 विश्वस्यमुवनस्यराजायवृनवृष्टिव्युनत्तिमूमं ॥ उनत्तिमूर्भिंपृथिवीमुतद्यायदादुग्धंवरुणोवष्टया
 दित् ॥ समश्रेणवसतुपर्वतासस्तविपीयंतः श्रथयंतवीराः ॥ इमामुष्वांसुरस्यश्रुतस्यमर्द्दामायांवरु
 णस्यप्रवोचं ॥ मानेनेवतस्थिवौऽअंतरिक्षेवियोममेपृथिवीसूर्येण ॥ १ ॥ इमामुनुकवितंमस्यमायां
 मूर्द्धिवस्यनकिरादधर्षं ॥ एकंयदुद्धानपुण्यतेनीरासिंचंतरिवनयः समुद्रं ॥ अर्यम्भंवरुणमिद्वंवासा

खोयंवासादमिद्भारंवा ॥ वेशंवानित्यंवरुणारंणंवायत्सीमागश्चह्रमाशिप्रथसत् ॥ कित्वासाय
 द्विपुनदीवियद्वाधासत्यमुनयञ्चविद्वा ॥ सर्वाताविष्येशिथिरेवंदेवाधितस्यामवरुणप्रियासः ॥ २ ॥
 ॥ चतुर्थवरुणसूक्तं ॥ ॥ धीरात्वंस्यमहिनाजनुषिवियस्तस्त्रंभरोदंसीचिदुर्वी ॥ प्रनाकमृष्वनुनुदेवृहंतं द्विता
 नक्षत्रंप्रथञ्चभूमं ॥ उतस्वयात्नवाइंसंवदेतत्कदान्वं १ तर्वरुणेभुवानि ॥ किंमेहव्यमह्णानोजुषेतक्
 दामृळीकंसुमनाअभिरव्यं ॥ पूच्छेत्तदेनैवरुणदिदक्षुषोऽमिचिकितुषोविपृच्छं ॥ समानमिन्मेकवयं
 श्वदाहुयंहतुभ्यंवरुणेहृणीते ॥ किमार्गआसवरुणज्येष्ठयस्तोतारंजिघांससिसर्वायं ॥ प्रतन्मेवोचोदु
 क्तमस्वधावोवत्वानेनानमसातुरइयां ॥ अवंदुग्धानिपिड्यासृजानोवयावयंचकृमातनुभिः ॥ अवरान्प
 शूतृपुनतायुसृजावत्संनदाज्ञोवसिष्ठं ॥ नसस्वोदक्षोवरुणधृतिः सासुरामन्युर्विभीदंकोअचित्तिः ॥ अ
 स्तिज्यायांकनीयसउपारेस्वमश्नेदनुतस्यप्रयोता ॥ अरंदासोनमीह्रुषेकारण्यहेदवायमृणयिनांगाः ॥
 अचेतयदचितोदेवोऽअर्थोत्संरायेकवितरोजुनाति ॥ अयंसुतुभ्यंवरुणस्वधावोहृदिस्तोमुष्यश्रित

श्चिद्वस्तु॥ शंनःक्षेमेशमुयोगेनोऽअस्तुयूपं०॥१॥ रदंत्पथोवरुणःसूर्यायप्राणीसिसमुद्रियानदीनां॥ स
 र्गो नसृष्टोऽअर्वतीर्कृतायन्चकारमहीरवनीरहभ्यः ॥ आत्मातेवातो रज्ज् आनवीनोत्पशुर्नभूणिर्यवं
 सेससवान् ॥ अंतमहीबृहतीरोदंसीमेविश्वतेधामवरुणप्रियाणि ॥ परिस्पशोवरुणस्यस्मादिष्टाउ
 मेपशंतिरोदंसीसुमेके ॥ ऋतावानःकवयोयज्ञधीराःप्रचेतसोयइपर्यतमन्म ॥ उवाचमेवरुणोमे
 धिरायत्रिःससनामाह्याविभार्ति ॥ विद्वान्पदस्यगुत्द्यानवोचद्युगायविप्रउपरायशिक्षन् ॥ तिस्रोद्यावो
 निर्हिताऽअंतरस्मिन्तिस्रोभृमीरुपराःषड्विधानाः॥ गृत्सेराजावरुणश्चक्रएतंदिविप्रैस्वांहिरण्ययंशुभेकं॥
 अर्वासंधुंवरुणोद्यौरिवस्थाद्भ्रप्सोनश्वेतोमृगस्तुविष्मान् ॥ गंभीरशंसोरजसोविमानःसुपारक्षत्रःसतो
 अस्वराजा॥ योमृकयातिचक्रुषेचिदागोवयंस्थाग्रवरुणेऽअनागाः॥ अनुव्रतान्यदितेर्कंधतोयूपं०॥२॥
 प्रशुभ्युंवरुणायमेष्टांमतिवसिष्ठमीच्छुषेसरस्व ॥ यईमवीचंकरतेयजंत्रंसहस्रामयुष्टपणवृहत् ॥
 अधान्वस्यसंहशंजगन्वानुधेरनीकंवरुस्थमंसि ॥ स्वर्यदशमन्त्रधिपाउअंधोसिमावपुईशयेनिनी

यात् ॥ आयद्गुहावरुणश्चनावप्रयत्समुद्रमीरयावमर्धं ॥ अधियदपांस्तुभिश्चरावप्रप्रेखईखयाव
 हैशुमेकं ॥ वसिष्ठंहरुणोनाव्याथादृषिचकारस्वपामहोभिः ॥ संतोतारंविप्रःसुदिनत्वेऽअन्हांयान्नु
 द्यावस्ततनन्यादुषासः ॥ क्वंत्यानिनौसख्यावभूवुःसचावहेयदवूकंपुराचिन् ॥ ब्रह्मंमानंवरुणस्र
 धावःससर्धद्वारंजगमागृहंतै ॥ यआपिनित्योवरुणप्रियःसन्त्वामार्गोसिकृणवत्सखाले ॥ मानुएनत्वं
 तोयक्षिन्भुजेमयंधिष्माविप्रःस्तुवतेवस्तुं ॥ भ्रुवास्तुत्वास्तुक्षित्तिषुक्षियंतोव्यंस्मत्पाशंवरुणोमुमो
 चत् ॥ अवोवन्वानाऽअदितेरुपस्थाद्यूपं ॥ ३ ॥ मोषुवरुणमृन्मयंगृहंराजन्नहंगमं ॥ मूळासुंक्षत्रसृ
 क्यं ॥ यदेभिप्रस्फुरन्निवृहतिर्नष्मानोऽअद्रिवः ॥ मूळा ० ॥ कत्वःसमहदीनतांप्रतीपंजगमाशुचे ॥ मृ
 का ० ॥ अपांमर्धेतस्थिवांसंतृष्णाविदज्जारितारं ॥ मूळा ० ॥ यत्किचेदंवरुणदैव्येजनेमिद्रोहंमनुष्याइ
 श्वरामसि ॥ अचितीयत्तवधर्मयुयोपिममानुस्तस्मादेनसेदेवरीरिषः ॥ ४ ॥ सुदेवोऽअसिवरुणयस्यं
 तेसससिंधवः ॥ अनुक्षरंनिकाकुदंसुमर्थंस्तुषिरामिव ॥ ५ ॥ दुःस्वमप्रसूक्तं ॥ ॥ अपेहिमनसस्पृते

पंक्रामपुरश्चर ॥ पुरोनिर्कृत्या आर्चक्ष्वबहुधा जीवतो मनः ॥ मद्रवैर्वरं वृणते मद्रयुजं तिदक्षिणं ॥ म
 द्रवैस्वते चक्षुर्वहुत्रा जीवतो मनः ॥ यदाशसानिःशसासि शसौ पारिमजा प्रतोयस्त्वपंतः ॥ अग्नि
 विश्वान्यपदुष्कृतान्यजुषान्यरे अस्मद्दधातु ॥ यदिद्रब्रह्मणस्पते भिद्रो हं चरामसि ॥ प्रचेतान आंगि
 रसो द्विषतां पात्वं हंसः ॥ अजैष्वाद्यासनामचाभूमानांगसो वयं ॥ जाग्रत्स्वमः संकल्पः प्रापोयं द्विषम
 स्तं संच्छतु यो नो देष्टितमृच्छतु ॥ १ ॥ ॥ भगसूक्तं ॥ ॥ प्रातरग्निं प्रातरिंद्रं देवा महि प्रातमिंत्रावरुणा
 प्रातरश्विना ॥ प्रातमंगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोमं सुतरुद्रं देवम ॥ प्रातर्जितं भगमुग्रं देवम वयं पुत्र
 मदिते यो विधुर्ता ॥ आग्निश्चिद्यं मन्यमानस्तरश्चिद्राजो चिद्यं भगं सुक्षीत्याह ॥ भगप्रणेतुर्भगसत्यराधो
 भगे मां धियमुदवा ददन्नः ॥ भगप्रणोजनयगो भिरश्वैर्भगपनृसिर्नवंतः स्याम ॥ उते दानो भगवंतः स्या
 मोतप्रपित्व उतमध्येऽअह्नां ॥ उतो दितामषवन्सूर्यस्य वयं देवानां सुमत्सौ स्याम ॥ भगणुवभगवो अस्तु दे
 वास्ते न वयं भगवंतः स्याम ॥ तं त्वां भगसर्वइजो हवीति स नो भगपुरतामवेह ॥ ॥ समध्वरायोपसोन

मंतदधिक्रवैवशुचयेपदाय ॥ अर्वाचीनंवसुविदंभग्नोरथसिवाश्वावाजिनऽआवंहंतु ॥ अश्वावंती
 गर्गमतीर्निउषासोवीरवतीःसदमुच्छंतुभद्राः॥ घृतं दुहानाविश्वतःप्रपीनायये ० ॥ १ ॥ ॥ नदीस्तुतिसूक्तं ॥
 आमांमिन्नावरुणेहरंक्षतंकुलाययद्विश्वयन्मानुआगन् ॥ अजक्रावंदृष्टीकंतिरोदधिसामापद्येनरपसा
 विदत्सकं ॥ यद्विजामन्परुषिवदंनंभुवदष्टीवंतौपरिकुल्फौचदेहत् ॥ अशिशृच्छोचन्नपवाधतामितो
 मासांप ० ॥ यच्छल्मलौभवतियन्नदीषुयदोषधीभ्यःपरिजायतेविषं ॥ विश्वेदेवानिरितस्तसुवंतुमा
 तस्यमर्मणेभुवनायदेवाधर्मणेकंस्वधयापप्रथंत ॥ वामदेव्यसूक्तं ॥ १ ॥ ॥ हविष्यांतमजरंस्त्रिविदिदिविस्पृश्याहुतंजुष्टमश्रा ॥
 औ ॥ तस्यदेवाःपृथिवीचौरुतापारेणयन्नोपधीःसुरब्येऽअस्य ॥ देवेभिन्विषितोयद्विथेभिरभिस्रौपा
 ण्यजरंरुहंतं ॥ योभानुनापृथिवीद्यामुतेमामातनानुरोदसीऽअंतरिक्षं ॥ योहोतासीत्प्रथमोदेवजुष्टो
 यंसमांजन्नाज्येनाहृणानाः ॥ सपत्न्यौत्वरंस्थाजगद्यच्छानमृशिरंक्रणोज्जातवेदाः ॥ यज्जातवेदामु

वनस्यमूर्धन्नातिष्ठोऽअग्रेसहरोचनेन ॥ तंत्वद्विममतिभिर्गोभिरुक्त्वैःसयुद्धियोऽअभत्रोरोदसिप्राः
 ॥ १ ॥ मूर्धाभ्रुवोमवतिनकेमश्रस्ततःसूर्योजायतेप्रतरुद्यन् ॥ मायामतुयुद्धियानभ्रेतामपोयन्
 ॥ १ ॥ मूर्धोयोर्महिनासमिद्धेरोचतद्विवियोनिर्विभावा॥तस्मिन्नश्रौसूक्तवाकेनदेवाह
 णिश्वरतिप्रजानन् ॥ इशेन्योयोर्महिनासमिद्धेरोचतद्विविरंजनयंतदेवाः॥सहंपांयुद्धोऽअभवतन्
 विविश्वआजुहवुस्तनपाः॥सक्तुवाकंप्रथममादिद्विश्रिमाद्विरंजनयंतदेवाः॥सहंपांयुद्धोऽअभवतन्
 पास्तंद्योर्वेदतंपृथिवीतमापः॥यदेवासोजनयंतार्ग्यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानिविश्वो॥ सोऽअर्चिपांपृथि
 र्वाद्यामुतेमामृजुयमानोऽअतपन्महिला॥स्तोभेनह्रिद्विविदेवासोऽअग्निमजीजनच्छक्तिमीरोदसिप्रां॥
 तमूअरुणवन्त्रेधाभ्रुवेकंसऽओषधीःपचतिविश्वरूपाः॥२॥ यदेदेनमदंशुर्ध्वद्वियांमोद्विविदेवाःसूयमादि
 तेयं॥ यदाचरिणमिथुनावभूतामादिश्रापंशुभ्रुवनानिविश्वो॥विश्वंस्माऽअग्निंभुवनायदेवावैश्वानरं
 केतुमन्होमरुणवन् ॥ आयस्ततानोपसोविमातीरोऽऊर्णोतितमोऽअर्चिपायन्॥वैश्वानरंकवयोयुद्धि
 यांसोर्गिदेवाऽअजनयन्नजुर्धं॥ नक्षत्रंप्रलसमिनच्चरिण्युक्षस्याह्यंक्षंतविपंबृहत् ॥वैश्वानरंविश्वोह

दीदिवान्संभ्रैरशिक्रिमच्छावदामः ॥ योमहिम्नापरिब्रसूवोर्षीवृतावस्नाद्रुतदेवः परस्तात् ॥ हेब्रुतीऽअ
 शृण्वंपितृणामहृदेवानामुतमर्त्यानां ॥ नाभ्यामिदं विश्वमेजत्समेतियदंतरापितरं मातरं च ॥ ३ ॥ हेसंसीची
 त्रावदेतेऽअवरः परश्रयज्ञान्योः कतरोनौ विवेद ॥ सप्रत्यङ् विश्वाभुवनानितस्थावप्रयुच्छन्तरणिर्भ्रजमानः ॥ य
 कत्यग्रयः कतिसूर्यासः कत्युपासः कत्युस्विदापः ॥ नोपस्विजैवः पितरोवदामिपृच्छामि वः कवयो विद्वने
 कं ॥ यावन्मात्रमुषसोनमतीकंसुपुण्योर्ब्रुवसंते मातरिष्वः ॥ तावद्दधात्युर्षयज्ञमायन्वाह्यणो होतुस्वरोनि
 षीदन् ॥ ४ ॥ ॥ वामदेव्य (बाहस्पत्य) सूक्तं ॥ ॥ यस्तस्त्वं असहस्राविजमो अंतान्बृहस्पतिस्त्रिषधस्योर
 वेण ॥ तं प्रत्नासृक् षयो दीध्यानाः पुरोविप्रादधिरेन्द्रजिन्हं ॥ धुनेतयः सुप्रकेतं मदंतो बृहस्पते अमि
 येनस्तत्से ॥ पृथंतं सुमदं ब्यमूर्ष्वहस्पते रक्षंतादस्य योनिं ॥ बृहस्पतेया परमापरावदत आतं ऽ चतुस्पृ
 शोनिर्धेदुः ॥ तुभ्यं स्वाता अंबता आर्दिदुग्धामब्ध्वः श्रुतं त्यमितो विरप्यं ॥ बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो

महोज्योतिषः परमेव्योमन् ॥ ससास्थस्तु विज्ञानो र्वेण विसतरेशिमरधमत्तमांसि ॥ समुष्टुभासाऽऽकृक्
 तागणेन वलंरुंरोजफलिगंरवेण ॥ बृहस्पतिरुखियाह्वयसूदः कनिक्कदद्वावंशतीरुदांजत् ॥ १ ॥ एवा
 पित्रे विश्वे देवाय वृष्णे यज्ञैर्विधे म न मे साह विभिः ॥ बृहस्पते सुप्रजावीरवंतो वयं स्याम पतं यो रयीणां ॥
 सहद्राजा प्रतिजन्यानि विश्वाशुभेण तस्थावभिवीर्येण ॥ बृहस्पतियः सुमृतं विमतिव लुगयति वंद
 ते पूर्वभार्ज ॥ सहस्रेति सुधित ओकसिस्वेतस्मा इळापिन्तने विश्वदानी ॥ तस्मै विशः स्वय
 मेवानंमतेयस्मिन् ब्रह्माराजनि पूर्वएति ॥ अग्रतीतो ॥ ॥ ॥ अथ ध्रुवस्तु तिसूक्तं ॥ आत्वाद्दार्षमंत
 रे धि ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः ॥ विशस्त्वा सर्वा वां छंतु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत् ॥ इह वै धि मापंच्योष्ठाः पर्वत
 इवा विचाचलिः ॥ इंद्र इव ह ध्रुवस्तिष्ठा हराष्ट्रमुधारय ॥ इममिन्द्रो अदीधरद्भुवं ध्रुवेषु वणह विपां ॥ तस्मै सो
 मो अधि ब्रवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः ॥ ध्रुवाधौर्ध्रुवापृ० ॥ ॥ ३ ॥ १ ॥ अलक्ष्मी ग्नसूक्तं ॥ अरायिका
 णे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे ॥ शिरं विठस्य सत्वं मिस्तोभिष्ठा चायामसि ॥ चत्तो इत ० ॥ ३ ॥ यद्दुप्राची

रजंगतोरैर्भद्रधाणिकीः ॥ हताइंद्रस्यशत्रवःसर्वबुद्धुदयांशवः ॥ परीभेगामनेषत्पर्यत्रिमहृषत ॥
 देवेष्वक्तश्रवःकडमाँआदधर्षति ॥ १ ॥ सपत्नमसूक्तं ॥ ऋषभंमाससासानसपत्नानांविषासहि
 हतारंशत्रूणांरुधिविराजंगोपतिगवां ॥ अहमस्मिसपत्नहेंद्रइवारिष्टोअक्षतः ॥ अधःसपत्नामिपुदो
 रिमेसर्वेअभिष्ठिताः ॥ अत्रैववोपिनह्याम्युभेआर्त्नीइवज्यथां ॥ वाचस्पतेनिषेधेमान्यथामदधरं
 वदार ॥ अभिभूरुहागंमंविश्वकर्मेणधाम्ना ॥ आर्वश्चित्तमावोन्नतमावोहंसमितिदे॥द्योगक्षे
 मंवादायाहिसूयासमुत्तमआवोमूर्धानमकर्मी ॥ अर्धस्यदान्मउहदतमंडूकाइवोदकान्मंडूकाउदका
 दिवा १ ॥बृहस्पतिसू० ॥ बृहस्पतेजुषस्वनोहव्यानिविश्वेदेव्य॥रास्वरत्नानिद्राशुषे॥शुचिमर्कबृह
 स्पतिमध्वरेषुनमस्यत॥अनाम्योजुआर्चका॥वृषभंचर्षणीनांविश्वरूपमदाभ्यं ॥बृहस्पतिवैरण्यं॥ बृ
 हस्पतिनयतुर्गहातिरःपुनर्नेपदशंसायमन्मं ॥ क्षिपदशस्तिमपदुर्मतिहन्त्रथांकरचजमानायशं
 योः॥नराशंसो नोवतुमयाजेशंनोअस्वनुयाजोहवेषु ॥ क्षिपद० ॥ तपुर्मूर्धातपतुरक्षसोथेबह्महि

षःशरवेहन्वाडः।क्षिप० ॥२॥ ॥गोसूक्तं२॥ ॥मयोसूर्वातोअभिवातुस्त्राऊर्जस्वतीरोपधीरारिशंता ॥
 पीवस्वतीर्जीवधन्याःपिवत्ववसायपुहतेरुद्रमृळा ॥ याःसरुपाविरूपपाएकंरुपायासांमयिरिष्टद्यानामानि
 वेद ॥ याअंगिरसस्तपसेहचक्रुस्ताभ्यःपर्जन्यमहिशर्मयच्छा॥यादेवेपुतन्व१मैरथंतयासांसोमोविश्वो
 रूपाणिवेद ॥ ताअस्मभ्यंपयसापिन्वमानाःप्रजावतीरिद्रगोष्ठेरिरीदि ॥ प्रजापतिर्मत्त्वमेतारारा
 णोविश्वैदेवैःपितृभिःसंविदानः॥शिवाःसतीरुपनोगोष्ठमाकृस्तासांवयंप्रजयासंसदेम ॥१॥इतिगोसू०
 ॥अथार्विङ्गसूक्तं॥ ॥ आपोयंवंःप्रथमदेवयंतंइंद्रपानमूर्मिमरुणवनेळः॥तवोवयंशुचिमरिप्रमृद्यतप्र
 थमधुमंतवनेम ॥ तमूर्मिमापोमधुमत्तमंवोपांनपादवत्वाशुहेमां ॥ यस्मिन्निद्रोवसुंसिर्मादयतितम
 श्यामदेवयंतोवोअद्य ॥ शतपवित्राःस्वधयामदतीदिवीदेवानामधिथतिपाथः ॥ ताइंद्रस्यनमिनंतिव्र
 तानिर्सिंधुभ्योह्रव्यंपृतवंज्जुहेत ॥ याःसूर्योरशिमभिराततानयाभ्यइंद्रोअरदद्दतुमर्भि ॥ तेषिंध
 वोवरिवोधातनानोघूर्यपां०॥१॥ ॥अर्थचर्यासूक्तं॥ ॥ वयमुत्वापथस्पतेरथंनवाजसातये॥ धियेपू

छवेदसं ॥ ईशानं राय ईमहे ॥ पूपन्तवत्रतेवथंनरिष्येमकदाचन ॥ स्तोतारं स्त इह स्मसि ॥ परिपुपापरस्ता
 न्दस्त्वं दधातु दाक्षिणं ॥ पुनर्नैन ह्यमार्जतु ॥ २ ॥ पंथासूक्तं ॥ संपूपनध्वेन स्तिरुव्यं होविमुचोनपात् ॥ सध्वां
 देवप्रणं स्पूरः ॥ योनः पूषन्नवो ह्यकौ दुःशेवं आद्विदेशति ॥ अपंस्मत्तं पथोजेहि ॥ अपत्यं परिपंथिनं मुपीवा
 णं हुरश्चित् ॥ दूरमधिस्तुरेज ॥ त्वंतस्य ह्यया विनोषशंसस्य कस्य चित् ॥ पृदाभित्तिष्ठ नपुषि ॥ आतत्ते
 दस्रमंतुमः पूषन्नवो ह्यणीमहे ॥ येन पितृनचौदयः ॥ १ ॥ अथानो विश्वसौमगहिरण्यवाशीमत्तम ॥ ध
 नानिसुषणां कृधि ॥ अतिनः सश्चतोनयसुगानं सुपथां कृणु ॥ पूर्पञ्चिहकनुं विदः ॥ अमिसुयवं संनयुन
 नं वज्जारो अह्वने ॥ पूषं ० ॥ शग्धिपूधिपर्यंसिचशिशीहि प्रास्युदरं ॥ पूषं ० ॥ नपूषणं मेथामसिसूक्तैरभि
 गुणीमसि ॥ वसूनिदस्मभीमहे ॥ २ ॥ मृत्युनाशनसूक्तं ॥ प्रत्वार्यायुः प्रतरं नवीयः स्थातरेव क्रनुम
 त्त्वारथस्य ॥ अधुच्यवानुत्तवीत्यर्थपरत्तरं सुनिर्कतिजिहीतां ॥ साम्भुरायोर्निधिमन्त्रञ्चं करामहे सु
 पुरुधश्चर्वांसि ॥ तानो विश्वां निज रिताममत्तुपरां ॥ अमीष्वर्थः पौंसैर्भवेमद्यौर्नसूभिर्गिरयोनाञ्च

॥ तानोविशानिजराचिकेतपरा० ॥ मोषुणःसोसमृत्यवेपरादाःपश्येमुनुसूर्यमुच्चरंतं ॥ द्युभिर्हिहो
जरिमासूनोअस्तुपरा०॥ असुनीतेमनोअस्मासुंधारयजीवातेवेसुप्रतिरानआयुः॥ रांधिनःसूर्यस्यसं
नर्नःसोमस्तन्वंददातुपुनःपुषापथ्याइयास्वस्तिः॥शरोदसीसुबंधवेयुह्वीकृतस्यमातरा ॥ भरतामपुयद्र
पोद्यौःपृथिविस्समारपोमोपुतेकिंचनाममत् ॥ अवह्रुकेअवत्रिकादिवश्वरंतिभेषजा ॥ क्षमाचरिण्वे
ककंभरता०॥ समिद्रेयुगामनद्वाहंयआवह्रुशीनराण्याअनः॥ भरतामपुयद्रपोद्यौःपृथिविस्समारपो
मो०॥२॥ आशीर्वादमंत्राः ॥ दासपत्नीरहिगोपाऽअतिष्ठन्निरुह्वाऽआपःपुणितैवगावः॥अपांवि
ज्योगाऽअजयःशूरसोमवांस्रजःसर्ववेसससिंधून् ॥ नास्मैविद्युन्नतन्यतुःसिपेधनयांमिहमकिरद्वा
दुनिंच ॥ इद्रंश्रयद्युयुधातेअहिश्चोतापरीभ्योमघवाविजिग्ये ॥ अहैर्यातारंक्रमपश्यइद्रहृदियतेज

मृषोभीरांच्छत् ॥ नवचयन्नवतिचस्रवंतीःश्वेनो नभीतोऽअंतरोरजासि ॥ इंद्रोयातोवसितस्यरा
 जाशर्मस्यचशृगिणोवन्नबाहुः ॥ सेदुराजाक्षयतिचर्पणीनामराचनेभिःपरितावभव ॥ १ ॥ रा
 योबुध्नःसंगमनेवसूनायज्ञस्येकेतुर्मन्मसाधनेवेः ॥ अमृतत्वरक्षमाणसाएन्देवाऽअग्निधारयन्द्रवि
 णोदां ॥ नूचंपुराचसदंरथीणांजातस्यचजार्यमानस्यचक्षां ॥ सतश्चगोपांभवतश्चभूर्देवाः ॥ १ ॥ अमृ
 द्रविणोदाद्रः ॥ ऋक् ॥ एवानोअग्रेसमिधाद्यानोरेवत्पावकश्चवसेविर्माहि ॥ तन्नोभिन्नोवरुं ॥ १ ॥ अमृ
 दुपारमेतवैपंथाःकृतस्यसाधुया ॥ अदंशिविस्तुतिर्दिवः ॥ तत्तद्विदश्विनोरेवोजरिताप्रतिमूपति ॥ मदे
 सोमस्यपिप्रतोः ॥ वावसानाविवस्वतिसोमस्यपीत्यागिरा ॥ मनुष्वच्छमूआगतं ॥ युवोरुपाअनुश्रियं
 परिज्मनोरुपाचरत् ॥ ऋतावनथोअच्छुभिः ॥ उसापिबतमश्विनोमानुःशर्मयच्छतं ॥ अविद्रियार्शिरु
 तिभिः ॥ १ ॥ अनुत्वामह्वीपाजसीअचक्रेद्यावाक्षामामदतामिद्रकर्मन् ॥ त्वंवृत्रमाशयानंसिरासुम
 होवब्ज्रेणसिष्वपोवराहुं ॥ त्वमिन्द्रनर्योयाँअवोनुन्तिष्टावातस्यसुयुजोवहिष्ठान् ॥ यंतैकाव्यउशानां

दिनुंदाहूत्रहणंपार्षिततक्षवञ्च ॥ त्वंसुरोहरितोरामयोचून्मरञ्चकमेतशोनायभिद्र ॥ प्रास्यपारंत्वं
 तिनाव्यानामपिकर्तमवर्तयोयज्युत् ॥ त्वनोअस्याइंद्रदुर्हणायाःपाहिवञ्जिवोदुरितादुभिके ॥ प्रनो
 वाजाञ्चथ्योइअश्वबुध्यानिषेयधिश्रवसेसुचताये ॥ मासातेअस्मत्सुमतिविदंसहाजप्रमहःसमि
 षौवरेत ॥ आनोभजमववृन्गोष्वर्योमहिष्ठास्तेसधमादःस्याम ॥ १ ॥ सहस्रंव्यतीनांपुक्तानाभिद्रमीम
 हे ॥ शतंसोमस्यत्वार्यः ॥ सहस्रतिशताव्यंगवामाच्यावियामसि ॥ अस्मत्राराधंतुते ॥ दशनेकुलशा
 नांहिरंण्यानामधीमहि ॥ भूरिदाअसिहत्रहृत् ॥ भूरिदाभूरिदेहिनीमादुअंस्यभिर् ॥ भूरिधेदिद्र
 दित्ससि ॥ भूरिदात्थामिश्रुतःपुरुत्राशूरहत्रहृत् ॥ आनोभजस्वराधसि ॥ प्रतेवभूविचक्षणशंसामि
 गोपणोनपात् ॥ माभ्यांगाअनुशिअथः ॥ कनीनुकेवविद्रधेनवेद्रुपदेअभिके ॥ बभ्रूयामेषुशोभते
 ॥ अरंमत्सथ्याम्णेरुमनुत्सथाम्णे ॥ बभ्रूयामेष्वस्त्रिधा ॥ १ ॥ सस्वश्चिद्वित्त्वंःशुभंमानाआहंसा
 सोनीलपृष्ठाअपसत् ॥ विश्वशार्धोअमितोमानिपेदनरोनरुण्वाःसर्वनेमदंतः ॥ योनोपरुतोअभिद्रु

हृणायुस्तिरश्वितानिवसवोजिघांसति ॥ इहःपाशान्प्रतिसमुचीष्टतापिष्टेनहन्मनाहंतनातं ॥ सां
 तपनाइदं हविर्मरुतस्तज्जुष्टन ॥ युष्माकोतीरिशादसः ॥ गृहमेधासुआगतमरुतोमापभूतन ॥
 युष्माकोतीसुदानवः ॥ इहेहवःस्वतवसःकवयुःसूर्यत्वचः ॥ युज्ञंमरुतआवृणे ॥ त्र्यंबकंय० ॥ १ ॥ इ
 तपुषारयिर्मगःस्वस्तिसर्वधातमः ॥ उरुध्वोस्वस्तये ॥ अरमतिरनर्वणोविश्वोदेवस्यमनसा ॥ आ
 दित्यानोमनेहइत् ॥ यथानोमित्रोअर्थमावरुणःसंतिगोपाः ॥ सुगाऽऽकृतस्यपंथाः ॥ अग्निवःपुंर्वीरि
 देवमीच्छेवसूनां ॥ सपर्यतःपुरुप्रियंमित्रंनक्षेत्रसाधसां ॥ मक्षूदेववंतोरथःशुरोवापुत्सुकासुचित् ॥ देवानां
 यइन्मनोयजमानइयक्षत्यमीदयज्वनोसुवत् ॥ नयजमानरिष्यसिनसुन्वानुनेदेवयो ॥ देवानां ० ॥ १ ॥ त्व
 किं कर्मणानशन्नप्रयोषन्नयोषति ॥ देवानां ० ॥ असदत्रसुवीर्यमुतत्यदाश्वश्वयै ॥ देवानां ० ॥ १ ॥ त्व
 भग्नेत्रतपाअसिदेवआमत्यैष्वा ॥ त्वयज्ञेष्वीड्यः ॥ त्वमसिप्रशस्योविदथेपुसहत्या ॥ अग्नेरथारिध्वराणां ॥
 सत्वमस्मदपुद्दिषोयुधिजातवेदः ॥ अदेवीरथेअरातीः ॥ अंनिचित्तंतमहयज्ञंमर्तस्यरिपोः ॥ नोपेवे

षिजातवेद ॥ मर्ता अमर्त्यस्य ते मूर्तिनाममनामहे ॥ विप्रसोजातवेदसः ॥ १ ॥ विप्रं विप्रसोवसे देवं मर्ता
 स उतये ॥ अग्निगीर्भिर्हवामहे ॥ आतेवत्सोमनोयमत्परमाच्चित्सधस्थात् ॥ अग्नेत्वां कामयागिरा ॥
 पुरुत्रा हि स दृङ्मि विशो विश्वा अनुप्रभुः ॥ समत्सुत्वाहवामहे ॥ समस्त्वग्निमवसे वाज्यतो हवामहे ॥
 ॥ वाजे बुचित्रां धसं ॥ मृतो हि कभीडयो अर्ध्वरेषु सनाच्च होतानव्यंश्च सत्सि ॥ स्वां चो अत्रे तु न्वं पि प्रय
 स्वास्मभ्यं च सौमगभार्पजस्व ॥ २ ॥ इदं वा मास्ये हविः प्रियमिन्द्राहस्पती ॥ आनं इन्द्राबृहस्पती ॥ उक्थं मदंश्च शस्यते ॥ अ
 यं वां परिषिच्यते सोमं इन्द्राबृहस्पती ॥ चारुर्मदायपीतये ॥ अश्वानं तं सहस्रिणं ॥ इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भि
 सोमं पीतये ॥ अस्मे इन्द्राबृहस्पती रधि धत्तं शतुग्विनं ॥ अश्वानं तं सहस्रिणं ॥ इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भि
 हवामहे ॥ अस्य सोमं स्थपीतये ॥ सोममिन्द्राबृहस्पती पिबंतं द्राशुषो गृहे ॥ मादयेथांतदो कसा ॥ १ ॥ अ
 पंशं त्वामनसा चैकितानुंतं सोजातं तं पसो विभूतं ॥ इह प्रजाभिहरि रधि रणः प्रजायस्व प्रजयां पुत्रका
 म ॥ अपंशं त्वामनसा दीध्यानां स्वार्थानुक्त्वथेना धमानां ॥ उपमामुच्चायुवतिर्बभूयाः प्रजायस्व प्रजयां

पुत्रकामे ॥ अहंगर्भमदधामोपधीष्वहं विश्वेषु सुवनेर्ष्वतः ॥ अहंप्रजाअंजनयंयुथिव्यामहंजनिभ्यो
 अपरीषुपुत्रान् ॥ १ ॥ अमीवृत्तैर्नहविष्यायेनेद्रोअमिवाहते ॥ तेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेभिराह्यार्यवर्तय ॥ अ
 भिसृत्यंसपत्नान्मियानोअरांतयः ॥ अमिपृतन्यंतंतिष्ठाभियोनेद्रस्यति ॥ अमित्वादेवःसवित्ताभिसो
 मोअवीद्यत् ॥ अमित्वाविश्वाभूतान्यमीवतोयथासंसि ॥ येनेद्रोहविषाकृत्यभवद्यून्मुत्तमः ॥ इदंत
 दंक्रिदेवाअसपत्नःकिल्लासुवं ॥ असपत्नःसंपत्नुहामिराष्ट्रोविपासहिः ॥ यथाहमेपांभूतानांविराजान्निज
 नस्यच ॥ १ ॥ विश्वदेवसूक्तं ॥ इंद्रमित्रंवरुणमग्निमृतयेमारुतंशर्धोअदितिहवामहे ॥ रथंनदुर्गाहंसवः
 सुदानवोविश्वस्मान्नोअहंसोनिष्पिपर्तन ॥ तआदित्याआगतासर्वतातयेसूतदेवाद्यत्रतूयेषुशंभुवः ॥ र
 थंन ॥ अर्वतुनःपितरःसुप्रवाचनाउतदेवीदेवपुत्रेकृताद्यथा ॥ रथंन ॥ नराशंसवाजिनंवाजयन्निहस्र
 यदीरंपुषणंसुभ्रैरीमहे ॥ रथंन ॥ बहस्पतेसदमिन्नःसुगंक्षधिशंयोर्थत्तमनुर्हितदीमहे ॥ रथंन ०
 इंद्रंकुत्सोद्यत्रहणंशचीपतिंकाटेनिवाब्धकषिर्बहुतये ॥ रथंन ० ॥ देवनेदिव्यदितिर्निपांतुदेवच्छाता

त्रायतामग्रयुच्छन् ॥ तन्नो मित्रो ० ॥ १ ॥ हि ० सू ० ॥ दृत्तव्रता आदित्या इर्षिरा आरे मर्कतं रहसू रिवागः ॥
 शृण्वतो वोवरुण मित्रदेवा अद्रस्य विद्वाँ अर्वसे हुवेवः ॥ यूयँ देवाः प्रभतियूयमो जो यूयँ हेषाँ सिसनुतयु
 योत ॥ अभिक्षत्तारो अभिचक्षमध्वमद्या च नो मूळयता पुरंच ॥ किमुनुवः कृणवा मापरेण किं सनेनव
 सव आप्येन ॥ यूयँ नो मित्रावरुणादिते च स्वस्ति मिंद्रामरुतो दधात ॥ हये देवा यूयमिदापयः स्थते मृक
 तनार्धमानायमह्यं ॥ मावोरथो मध्यमवाळते मून्मायुष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म ॥ प्रवणको मिमयभूर्या
 गोयन्मापिते वै कितवंशशासा ॥ आरे पाशा आरे अघानि देवामा माधिपुत्रे विमिवग्रमीष्ट ॥ अर्वाचो अद्या
 भवताय जत्रा आवो हार्दिभयमानो व्ययेयं ॥ त्राध्वं नो देवानिजुरोचकस्य त्राध्वंकनो देवपदो यजत्राः ॥
 माहं ० १ ॥ नृ ० सू ० ॥ अबुधमुत्पइंद्रवंतो अग्रयो ज्योतिर्भरंत उषसो वयुष्टिषु ॥ मुहीद्यावापृथिवी चैतना
 मपोद्यादेवानामव आहृणीमहे ॥ दिवस्पृथिव्योरव आहृणीमहे मातृन्सिधून्पर्वतान्छर्यणावतः ॥ अना
 गास्त्वं सूर्यमुपासमीमहे अद्रसोमः सुवानो अद्या कृणोतुनः ॥ द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मुहीत्राथेतां

सुविनायमातरा ॥ उषाउच्छत्यपबाधतामघंस्वस्त्य १ धिसंमिधानमीमहे ॥ इयंनंतुखाप्रथमासुदेव्यरे
 वरसनिभ्योरेवतीव्युच्छतु ॥ आरेमन्युंदुर्विदत्रस्यधीमहिस्व ० ॥ प्रयाःसिखितेसूर्यस्यरश्मिभिर्ज्योतिर्म
 रंतीरुषसोव्युच्छिषु ॥ मद्रानोअद्यश्रवसेव्युच्छतस्व ० ॥ १ ॥ अनमीवाउषसआचरंतुनउदग्रयोजिहतां
 ज्योतिषाबृहत् ॥ आयुसातामश्विनातूतुंजिरथंस्व ० ॥ श्रेष्ठनोअद्यसवितर्वरेण्यंसागमासेवसहिरंतधा
 असि ॥ रायोजानेत्रीधिषणामुपब्रुवेस्व ० ॥ पिपंतुमातदृतस्यप्रवाचनंदेवानांयन्मनूष्याइअमन्महि ॥ वि
 श्वाइदुखाःस्पलुदेतिसूर्यःस्व ० ॥ अद्देषोअद्यबर्हिषःस्तरीमणिग्राव्णांयोगेमन्मनःसार्धइमहे ॥ आदि
 त्यानांशमीणिस्थामुरण्यसिस्व ० ॥ आनोबर्हिःसधमादेबृहद्विदेवैईळेसादयाससहेतुन् ॥ इंद्रमित्रं
 वरुणंसातयेभर्गस्व ० ॥ २ ॥ तआदित्याआगतासर्वतातयेवृधेनोयज्ञमंवतासजोषसः ॥ बृहस्पतिंपुष
 णमश्विनाभर्गस्व ० ॥ तत्रोदेवायच्छतसुप्रवाचनंछदिरादित्याःसुभरंष्टुपाथ्यं ॥ पश्वेतोकायुतनयाय
 जीवसेस्व ० ॥ विश्वेअद्यमरुतोविश्वउतीविश्वेभवंत्वग्रयःसर्भिद्धाः ॥ विश्वेनोदेवाअवसागंमंतुविश्वं

मस्तुद्रविणवाजोअस्मे ॥ यदेवासोवथवाजसतीयंत्रायध्वेयपिपृथात्यंहः ॥ योवोगोपीथेनमयस्य
वेदतेस्यामदेववीतयेतुरासः ॥३॥ च०सू० ॥ उषासानकावृहतीसुपेशसाद्यावाक्षामावरुणोमित्रोअ
र्यमा ॥ इंद्रहुवेमरुतःपर्वतोअपआदित्यान्यावापृथिवीअपःस्वः ॥ द्यौश्चनःपृथिवीचप्रचेतसक्तता
वरीरक्षतामंहसोरिषः ॥ मादुर्विदत्रानिर्ऋतिर्नईशततहेवानामवोअद्यावृणीमहे ॥ विश्वस्मात्रोअ
दितिःप्रात्वंहसोमातामित्रस्यवरुणस्यरेवतः ॥ स्वर्वज्ज्योतिरष्टकंनशीमहित० ॥ आवावदन्नपरक्षां
सिसेधतुदुःष्वप्यनिर्ऋतिविश्वमत्रिणं ॥ आदित्यशर्ममरुतामशीमहित० ॥ इंद्रोवृहिःसीदतुपिन्वतामि
च्छावृहस्पतिःसामभिर्ऋक्वोअर्चतु ॥ सुप्रकृतंजीवसेमन्मधीमहित० ॥ १ ॥ दिविस्पृशैयज्ञमस्माकंमश्वि
नाज्जीराव्वंरुणुतंसुम्नमिदृथै ॥ प्राचीनरश्मिमाहुतंघृतेनत ॥ उपह्वयेसुहृवंमारुतंगुणंपाविकमुष्वं
सत्थार्यशंभुवं ॥ रायस्पोपसौश्रवसायधीमहित० ॥ अपांपेरेजीवर्धन्यंभरामहेदेवाव्यंसुहृवंम
ध्वरश्रियं ॥ सुरश्मिसोमंभिद्रियंयमीमहित० ॥ सनेमतत्सुंसनितांसनित्वभिर्बयंजीवाजीवपुत्रा

अनांगसः ॥ ब्रह्मद्विपोविष्वगेनोभिररत० ॥ येस्थामनोर्यज्ञियास्तेशृणोतनयद्वेदिवाईमहेतद्दा
 तन ॥ जैत्रंक्रतुरयिमद्वीरवद्यशस्त० ॥ २ ॥ महदद्यमहतामार्हणीमहेवोदेवानां बृहतामंनर्वणां ॥ य
 थावसुवीरजांतनशामहेत० ॥ महोअग्नेःसमिधानस्युशर्मण्यनागामित्रेवरुणेस्वस्तये ॥ श्रेष्ठस्या
 मसवितुःसर्वोमनित० ॥ येसवितुःसत्यसंवस्युविश्वेभिन्नस्यत्रतेवरुणस्यदेवाः ॥ नेसोमंगवीरवृद्धो
 मदसोदधातनद्रविणं चित्रमस्मे ॥ सविताप० ॥ ३ ॥ पं० सू० ॥ अग्नेअच्छावदेहनःप्रत्यङ्मनःसुमनामव
 प्रनोयच्छविशस्पतेधनुदाअसिनस्त्वं ॥ प्रनोयच्छत्वर्थमाप्रमगुःप्रबृहस्पतिः ॥ प्रदेवाःप्रोतसुनृतारायो
 देवीददातुनः ॥ सोमराजानुमवसेयिगीर्भिर्हवामहे ॥ आदित्यान्विष्णुंसूर्यब्रह्माणं बृहस्पतिं ॥ इंद्र
 वायुबृहस्पतिंसुहवेहवामहे ॥ यथानःसर्वइज्जनःसंगत्यांसुमनाअसत् ॥ अर्यमणंबृहस्पतिमिंद्रा
 नायचोदय ॥ वानंविष्णुंसरस्वतींसवितारंचवाजिनं ॥ त्वनोअग्नेअग्निभिर्ब्रह्मयज्ञंचवर्धय ॥ त्वनोदेव
 तांतयेरायोदानांयचोदय ॥ १ ॥ द्रविणोदसूक्तं ॥ सप्रत्नथासहंमाजायमानःसुधःकाव्यानिव

लब्धत्तुविश्वा ॥ आर्पथ्यमिन्द्रधिषणाचसाधन्देवाअधिधारंयन्द्रविणोदां ॥ सपूर्वयानिविदाकव्यतायो
 रिमाःप्रजाअजनयन्मनुनां ॥ विवस्वताचक्षसाद्यामपश्चदे ० ॥ तमीळतप्रथमंयज्ञसाधंविशाआरीराहु
 तमंजसानं ॥ ऊर्जःपुत्रंमरुतंसूप्रदानुदे ० ॥ समातृश्वापुरुवारंपुष्टिर्विदहृतुंतनयायस्त्रवित् ॥ वि
 शांगोपाजनितारोदस्योर्दे ० ॥ नक्तोषासावर्णमामेमग्रानेध्रापयेतेशिशुमेकंसमीची ॥ द्यावाक्षामारुक्मो
 अंतर्विमातिदे ० ॥ १ ॥ आरायोबुध्नःक. ४।२ ॥ इंद्रावरुणसूक्तं ॥ इमानिवांभागधेयानिसिस्रतइंद्रावरु
 णामहेसुतेर्षुवां ॥ यज्ञेयज्ञेहसर्वनाभुरण्यथोयत्सुन्वतेयजमानायुशिक्षथः ॥ निःषिद्धरीरोषधीराप
 आस्तामिंद्रावरुणामहिमानमाशत ॥ यासिस्रतूरजसःपुरेअध्वनोययोःशत्रुर्नकिरादेवओहते ॥ स
 त्यंर्तविंद्रावरुणाकृशस्यवांमध्वंऊर्मिंदुहेतेसुसवाणीः ॥ ताभिर्दृश्वांसंमवतंशुभस्पतीयोवामदंब्योअ
 सिपानिचित्तिभिः ॥ घृतघुषःसौम्यांजीरदानवःससस्वसारःसर्दनकृतस्य ॥ याहंवाभिंद्रावरुणाघृत
 श्रुतस्ताभिर्धत्तंयजमानायशिक्षतं ॥ १ ॥ अर्षोचाममहनेसौमंगायसत्यत्वेषाम्भ्यामहिमानमिन्द्रियं ॥

अस्मान्स्विद्रावरुणावृतश्रुतखिमिःसासेमिखतंशुभस्मती ॥ इंद्रावरुणावदृपिभ्योमनीपांवाचो
 मतिश्रुतमंदत्तमग्रे ॥ यानिस्थानान्यखजंतुधीरायुज्ञंतन्वानास्तपसाभ्यपश्यं ॥ इंद्रावरुणासौ
 म० ॥ २ ॥ वायुसूक्तं ॥ विद्विद्वेत्त्राअवीताविपोनरायोअर्थः ॥ वायुवाचंद्रेणरथेनयाहिमृतस्य
 पीतये ॥ निर्युवाणोअशस्तीनियुत्वौइंद्रसारथिः॥वायुवा० ॥ अनुकृष्णवसुधितियेमातेविश्वपेशसा
 वायु० ॥ वहंतुत्वामनोयुजोयुक्तासोनवतिर्नवा॥वायु० ॥ वायोशतंह० ॥ १ ॥ क्षेत्रपालसू० ॥ क्षेत्रस्युप० ॥
 ऋ. १ ॥ क्षेत्रस्यपतेमधुमंतमूर्धिनुरिवपयोअस्मासुधुक्ष्व ॥ मधुश्रुतंघृतमिवसुपूतमृतस्यनःपतयो
 मृळयंतु ॥ मधुमतीरोपधीर्घात्रापोमधुमत्रोमवत्तंतरिक्षं ॥ क्षेत्रस्यपतिर्मधुमान्नोअस्त्वरिष्यंतोअन्वे
 नंचरेम ॥ शुनंवाहाःशुनंनरःशुनंरुत्राद्यध्यंतंशुनमद्रामुदिंगय ॥ शुनासीराविमां
 वाचंजुषेथांयद्विविचक्रथुःपयः ॥ तेनेमामुपसिंचतं ॥ अर्वाचीसु० ऋ. १ ॥ इंद्रःसीतांनिगृह्णातुतांप
 षानुयच्छतु ॥ सानःपयंस्वतीदुहामुतरामुतरांसमां ॥ शुनंतुःफालाविक्रंयंतुमूर्धिशुनंकीनाराअसि

रंतुवाहैः॥ शुनंपूर्जन्योमधुनापयोभिःशुनासीराशुनमस्मामुधत्तं ॥ १ ॥ इंद्रसूक्तं ॥ विश्वजितेधन
 जितेस्वजितेसत्राजितेनृजितउर्वराजिते ॥ अश्वजितेगोजितेअब्जितेभरेद्रायसोमंयजतायहृतं ॥
 अग्निभुवैभिभंगायवन्वतेषाब्धायसहमानायवेधसे ॥ तुविप्रयेवह्वयेदुष्टरतिवेसत्रासाहेनमइद्रा
 यवोचत ॥ सत्रासाहोजनमक्षोजनंसहृश्यवनोयुध्मोअनुजोर्षमुक्षितः ॥ वृतंचयःसहुरिर्विक्ष्वारितइ
 द्रस्यवोचंमकृतानिवीर्या ॥ अनानुदोष्टेषभोदोधतोवधोर्गभीरक्वष्वोअसमष्टकाव्यः ॥ रघुचोदःश्रथ
 नोवीळितस्पृथुरिद्रैःसुयज्ञउषसःस्वर्जनत्॥यज्ञेनगानुमसुरोविविद्विरेधियोहिन्वानाउशिजोमनीषिणः॥
 अग्निस्वराणिषदागाअवस्यवइद्रेहिन्वानाद्रविणान्यान्याशत॥ इंद्रश्रेष्ठानिद्र० क. १ ॥ १ ॥ द्यावापृथिवी
 सू० ॥ कतरापूर्वाकतरापरयोःकथाजातेकवयःकोविवेद ॥ विश्वंत्मनाविभृतोयद्भूनामविवर्ततेअहनी
 चक्रियेव॥भूरिद्वेअचरंतीचरंतंपृहंतंगर्भमपदीदधाते॥नित्यंनसुनुंपित्रोरुपस्थेद्यावारक्षंतंपृथिवीनोअ
 भ्वात् ॥ अनेहोदात्रमदितेरनुर्वहुवेस्ववद्वंधनमस्वत्॥तद्रोदसीजनयंतंजत्रिद्या० ॥ अतंप्यमाने

अवसावती अनुष्यामरोदसीदिवपुत्रे ॥ उभेदेवानामुभयेभिरन्हांद्या ॥ संगच्छमानेयुवतीसभंतेस्वसा
 राजामीपित्रोरूपस्थे ॥ अभिजिघ्रतीभुवनस्यनामिद्या ० ॥ १ ॥ उर्वीसद्वनीवृहतीऋतेनहुवदेवानामव
 साजनित्री ॥ दधातेयेअमृतंसुप्रतीक्या ० ॥ उर्वीपृथ्वीबहुलेदुर्भतेउपभ्रुवेनमसायज्ञेअस्मिन् ॥ दधा
 तेयेसुभगेसुप्रतीक्या ० ॥ देवान्वायच्छ्रमाकच्छिदागःसखायंवासदमिज्जास्पतिवा ॥ इयंधीर्भूयाअव
 यानमेषांद्या ० ॥ उसांसा ० ऋ ॥ १ ॥ ऋतदिवेतदवोचंपृथिव्याअमिश्रावायप्रथमंसुमेधाः ॥ पाता
 मवद्यादुरितादुभीकैपितामाताचरक्षतामवोमिः ॥ इदंद्यावापृथिवीसत्यमस्तुपितमातर्यद्विहोपभ्रुवेवां ॥
 भुतंदेवानामवमेअवोमिर्विद्यामेपंवृजनंजीरदानुं ॥ २ ॥ ॥ अग्रादिसू ० ॥ इमंस्तोममहतेजातवैदसेर
 थमिवसंमहेमामनीषया ॥ मद्राहिनःप्रमतिरस्यसंसद्यमैसुख्येमारिषामावयंतव ॥ यस्मैत्वमायजसेस
 साधत्यनुवीक्षितिदधतेसुवीर्या ॥ सतूतावनैनमश्रोत्यंहतिरमै ० ॥ शुक्रमंत्वासमिधंसाधयाधियस्त्वेदेवाहवि
 रंतूत्याहुतं ॥ त्वमादित्या आवहृतान्त्सु १ श्मस्यमै ० ॥ मरमिधमंकृणवांमाहवीपितेचितयंतःपर्वणापर्वणाव

यो॥ जीवात्वेप्रतंसाधयाधियोभे० ॥ विशांगोपाअस्थचरतिजंतवोद्विपच्चयद्रुतचतुष्पदकुम्भिः॥ चित्रः प्र
 केतैउषसांमहौअस्यभे० ॥ १ ॥ त्वमध्वर्युरुतहोतासिपूर्व्यः प्रशास्तापोताजनुपापुरोहितः॥ विश्वाविद्वौआ
 त्विज्याधीरपुष्यस्यभेसख्ये० ॥ योविश्वतःसुप्रतीकःसदृडुःसिद्धरेचित्सन्तळिदिवानिरोचसे॥ रात्र्याश्रिदं
 धोअतिदेवपश्यस्यभे० ॥ पूर्वादेवासवतुसुन्वनोरथोस्माकंशंसौअभ्यस्तुदृढ्यः॥ तदाजानीतोतपुष्यता
 वचोभेसख्येमा० ॥ वैदुःशंसौअपदूढयोजहिदूरेवायेअतिवाकेचिदत्रिणः ॥ अथायज्ञायगणतेसुगंकु
 ह्यभेसख्ये० ॥ यदयुक्ताअरुषारोहितारथेवातजूताष्टपस्येवतेरवः॥ आदिन्वसिषनिनोधूमकेतुनाभे० ॥
 ॥ २ ॥ अथस्वनादुतविभ्युःपत्त्रिणोद्रप्सायसैयवसाढोव्यस्थिरत्न॥ सुगतसैतावकेभ्योरथेभ्योभे० ॥
 अयमित्रस्यवरुणस्यथायसेवयातांमरुताहिळोअद्भुतः॥ मुळासुनोभूत्वेषामनःपुनरभेस० देवोदेवानाम
 सिमित्रोअद्भुतोवसुर्वसूनामसिचारुध्वरे॥ शर्मन्स्यामतवसप्रथस्तमेभे० ॥ तत्तेभद्रंयत्सभिद्वःस्वेदमेसो
 माद्भुतोजरसेमृळ्यत्तमः॥ दधासिर्लंद्रविणं चदाशुयेभे० ॥ यस्मैत्वंसुद्रविणोददाशोनागास्त्वमदितेसर्व

ताता ॥ यं स द्रेण शर्वरा चोदया सि प्रजावतारा धसते स्याम ॥ सत्वमश्रसौ सगत्वस्ये विद्वानस्माकमायुः प्र
 तिरेह देवा तन्नो मि ० ॥ ३ ॥ ॥ सोमारुद्रा धार्येथामसु र्थ १ प्रवा मिष्टयो रमश्रुवंतु ॥ इमे द
 मे स सरत्ना दधानां शनौ भूतं द्विपदेशं चतुष्पदे ॥ सोमारुद्रा विवृहंतं विपूची ममीवायानो गयमा विवेश ॥ आरे
 बधियां निर्कतिं पराचैरस्मे भद्रासौ श्रवसा नि संतु ॥ सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनु पूभे पजा नि धत्तं ॥ अ
 वस्यतं मुंचतं यन्नो अस्ति तनु पूबुद्धं कृतमेनो अस्मत् ॥ तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्रा विहसु मृळ
 तनः ॥ प्रनो मुंचतं वरुणस्य पाशाद्गो प्रायतनः सुमनुस्यमाना ॥ १ ॥ ॥ संग्रामसु ० ॥ ॥ जीमूतस्येव भवति प्र
 तीकं यद्दृमीयाति सुमदा मुपस्थे ॥ अना विद्धया तु न्वा जयत्वं सत्वावर्मणो महिमा पि पनु ॥ धन्वना गा धन्वना
 जिजये मधन्वना तीवाः सुमदौ जये म ॥ धनुः शत्रोरपका मंक्कणो ति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जये म ॥ वृक्षयती वे
 दा गनी गंति कर्णी प्रियं सखायं परिष्वजाना ॥ योषे वशं शे क्ते क्वितता धि धन्व न्यया ह्यं समने पारयंती ॥ ते आ
 चरंती समने वयोषां माते वपुत्रं विभृता मुपस्थे ॥ अपशत्रून् विधयतां संविदाने आनीं इमे विष्णु रंती अमित्रा

न॥ब॒ह्वीनां॑पि० ॥१॥ रथेतिष्ठन्नयतिवाजिनःपुरोयत्रयत्रक्कामयतेसुषारथिः ॥ अग्नीशूनांमहिमानं
 पनायतमनःपश्चादनुयच्छंतिरश्मयः ॥ तीव्रान्धोषान्कृण्वतेदृषंपाणयोश्वारथेभिःसहवाजयंतः ॥
 अवक्त्रामंतःप्रपदैरुमित्रान्क्षिणंतिशत्रूरनपव्ययंतः ॥ रथवाहंनंहविरस्यनामयत्रायुर्धुनिहितमस्यव
 र्म ॥ तत्रारथमुपशगमंसदेमविश्वाहावयंसुमनस्यमानाः ॥ स्वादुर्षंस० ऋ. २ ॥ २ ॥ सुपर्णवस्तेमृगो
 अस्यादंतोगोभिःसंनद्धापततिप्रसूता ॥ यत्रानरुःसंचविचद्रवतितत्रास्मभ्यमिषवःशर्मयंसन् ॥ ऋ
 जतिपरिष्टंग्धनोश्माभवतुनस्तनूः ॥ सोमोअधिब्रवीतुनोदितिःशर्मयच्छतु ॥ आजघंतिसान्वेषां
 जघनौउपजिघ्रते ॥ अश्वाजनिप्रचेतुसोश्वान्समत्सुचोदय ॥ अहिरिवभोगैःपर्येतिबाहुंज्यायाह
 तिंपरिबार्धमानः॥हस्तघ्नोविश्वावयुनानिविद्वान्पुमान्पुमांसंपरिपातुविश्वतः॥ आलांक्रायारुरुशीर्ष्य
 थोयस्याअयोमुखं ॥ इदंपूर्जन्यरेतसइष्वैदेव्यैबृहन्ममः ॥ २ ॥ अवसृष्टापरांपतशरव्येब्रह्मसंशि
 ते ॥ गच्छामित्रान्प्रपद्यस्वमामीपांकंचनोच्छिपः ॥ यत्रंबाणाःसंपतंतिकुमारारविशिखाइव ॥

तत्रानोब्रह्मणस्पतिरादितिःशर्मयच्छतुविश्वाहाशर्मयच्छतु ॥ मर्माणितेवर्मणाछादयामिसोमस्त्वा
 राजामृतेनानुवंस्तां ॥ उरोर्वरीथोवरुणस्लेकणोतुजथंतत्वानुदेवामंदंतु ॥ योनःस्वोअ० ऋ० ॥ ३ ॥
 ॥ मित्रावरुणसूक्तं ॥ ॥ सुषुमायातमद्रिभिर्गोश्रीतामत्सराइमेसोमासोमत्सराइमे ॥ आरा
 जानादिविस्पृशास्मत्रागतमुपनः ॥ इमेवांमित्रावरुणागवाशिरःसोमाःशुक्रागवाशिरः ॥ इमआ
 यातमिदवःसोमासोदध्याशिरःसुतासोदध्याशिरः ॥ उत्तवामुषसोबुधिसाकंसूर्यस्यरश्मिभिः ॥
 सुनोमित्रायवरुणायपीतयेचारुर्क्षतायपीतये ॥ तावांधेनुनवासरीमंशुदुहंत्यद्रिभिःसोमंदुहंत्याद्रि
 सिः ॥ अस्मत्रागतमुपनोवीचासोमपीतये ॥ अयंवांमित्रावरुणाचृमिःसुतःसोमआपीतयेसुतः॥ १ ॥
 ॥ पूषसूक्तं ॥ ॥ यएनमादिदेशतिकरुमादितिपुपर्णं॥नेनेदेवआदिशे॥उतषासरथीतमःसख्यासत्यनि
 र्युजा॥इंद्रोवृत्राणिजिघ्रते ॥ उनादःपरुषेगविसूरंश्चक्रंहिरुण्ययं॥ न्यैस्यद्रथीतमः॥ यदद्यत्वापुरुष्टुत्र
 वामदक्षमंतुमः॥तत्सुनोमन्मसाधय॥ इमंचनोगेवेषणंसातयेसीषधोगणं॥आरात्पूषन्नसिश्रुतः॥आते

स्वस्तिमीमह आरे अंघामुपावसुं ॥ अद्याच सर्वतालये श्वश्र्वसर्वनातये ॥ १ ॥ मरुत्सूक्तं ॥ तमुन्नंतविषी
 भंतमेषांस्तुषेगणं सारुंतं नव्यसीनां ॥ य आश्वश्वा अमवद्वहंत उते शिरे अमृतं स्य स्वराजः ॥ त्वेषं गणं तवस
 खादिह स्तं धुनिं त्रतं मायि नं दानिवारं ॥ मयो मुवोये अभिताम हित्वा वंदं स्वविप्रतु विराथ सो नू ॥ आ
 वीयंतू दवाहासो अद्य दृष्टि ये विश्वे मरुतो जु नंति ॥ अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध ए नं जुषध्वं कवयो युवानः ॥
 यूयं राजान मिर्यजनाय विभ्वत छंज नयथा यजत्राः ॥ यूष्मदै लिमुष्टिहा बाहुजंतो युष्मत्सदं श्वो मरुतः
 सुवीरः ॥ आराइवेद चरमा अहेव प्रजायंते अकवामहोमिः ॥ पृश्रैः पुत्रा उं पमासोरभिं ह्याः स्वयां मत्या
 मरुतः संमिमिक्षुः ॥ यत्प्रायासिष्ट पृषती मिरश्वैर्वी लुप विभिर्मरुतोरथेभिः ॥ सोदंत आपौरिणतेव
 नान्यवो सियो दृषमः कंदतुचौः ॥ प्रथिष्टयामं न्यथि वी चिदेषां भर्तवर्गं स्वमिच्छवो धुः ॥ वातान्द्यश्वा
 न्यय्यु युञ्जे वर्षं स्वेदं च किरोरुद्रियासः ॥ ह्ये नरो मरुतो मृकतान् स्तुवीमघासो अमृता क्तज्ञाः ॥ सत्य
 श्रुतः कवयो युवां नो बहद्दिह यो बृहदुक्षमाणाः ॥ १ ॥ ग्रहणजप्यसूक्तं ॥ पुरोजितीवो अंधसः सुता

यमादयित्त्वे ॥ अपश्वानं श्रथिष्ठनसखायोदीर्घजिह्वयं ॥ योधारथापावकथापरिप्रस्थं दत्ते मृतः ॥ इंदुर
 श्वोनकृत्यः ॥ तंदुरोषं ममीनरः सोमं विश्वाच्याधिघा ॥ यद्वाहिं न्वत्याद्रिभिः ॥ सुतासो मधुं मत्तमाः सोमा इं
 द्रायमं दिनः ॥ पवित्रं वतो अक्षरन्देवान्गच्छंतु वो मदाः ॥ इंदुरिंद्राय पवतु इति दिवा सो अब्रुवन् ॥ वाचस्प
 तिर्भखस्य ते विश्वस्येशान् ओजसा ॥ १ ॥ सहस्रथारः पवते समुद्रो वाचमीख्यः ॥ सोमः पतीरयीणां सखेद्रं
 स्य दिवे दिवे ॥ अयं पूषारधिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ॥ पतिर्विश्वस्य मूर्मनो व्यरव्यद्रो दसी उभे ॥ समु
 प्रिया अं नूषत गावो मदायुष्वं यः ॥ सोमासः कृण्वते पुथः पवंमाना स इंदवः ॥ यओ जिष्ठस्तमा भंरुपवंमा
 नश्रवायं ॥ यः पंच चर्षणी र्मिरधि ये न वना महे ॥ सोमाः पवंत इंदवो स्मभ्यं गातु वित्तमाः ॥ मित्राः सुवाना
 अरेपसं स्वाह्यः स्वविदः ॥ २ ॥ सुष्वाणा सोव्यद्रि मिश्विताना गोरधित्वचि ॥ इपं मुस्मभ्यं ममितः समं स्वर
 न्वसुविदः ॥ एते पूता विपुश्वितः सोमा सोदध्याशिरः ॥ सूर्यासिन दर्शता सो जिगत्तवो ब्रुवाधृते ॥ प्रसुन्वा
 नस्यां धसो मतीं न छंत तद्वचः ॥ अपश्वानं मराथसंहता मखं न मृगवः ॥ आजामि रत्के अव्यत भुजेन पुत्र

ओण्योः ॥ सरञ्जारो नयोषणां वरो नयोनिमासदं ॥ सवीरोदसुसाधनो वियस्तस्तं सरोदसी ॥ हरिः प्र
 वित्रैः अव्यतवेधानयोनिमासदं ॥ अव्योवरेभिः पवते सोमोगव्ये अधित्वचि ॥ कनिक्कदद्वृषाहरिरिद्रस्या
 भ्येति निष्कृतं ॥ ३ ॥ ॥ ओषधिसूक्तं ॥ ॥ या ओषधीः पू० ऋ१ ॥ शतं वा अंबुधामानिसहस्रे सुत
 वोरुहः ॥ अधाशतक्रत्वोयुयसि ममे अगदं क्ल ॥ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ॥ अश्वोइ
 वसजित्वरीर्षी रुधः पारयिष्णवः ॥ ओषधीरिति मातरस्ते द्वादवीरुपं ब्रुवे ॥ सनेयमश्वंगं वासं आत्मानं
 तवंपुरुष ॥ अश्वत्थेवो० ऋ० ॥ १ ॥ यत्रौषधीः समगमंतराजानः समिताविव ॥ विप्रः स उच्यते सि
 षयक्षोहामीव चार्तनः ॥ अश्वत्थीसोमावती मूर्जयती मुदौजसं ॥ आवित्सिसर्वा ओषधीरस्माऽ अ
 रिष्ठतांतये ॥ उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठा दिवस्ते ॥ धनं सनिष्पन्थीनामात्मानं तवंपुरुष ॥ इष्कं
 त्रिर्नाभोमातार्योयुयं स्थनिष्कन्तीः ॥ सीराः पतत्रिणीः स्थनयद्रामयति निष्कथ ॥ अतिविश्वोः परि
 ष्ठाः स्तेनइव ब्रजमं क्रमुः ॥ ओषधीः प्राचुच्यवुर्थं किंच तन्वो इरुपः ॥ २ ॥ यद्विमावाजयन् नृमोषधीर्ह

स्तं आदधे ॥ आत्मायक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृहो यथा ॥ यस्थौ पथीः प्रसर्पंथांगमं परुषरुः ॥ ततो य
 क्ष्मं विवाधन्न उग्रो मध्यमशीरिव ॥ साकं वातस्य धाज्यासाकं नश्य
 निहाकं य ॥ अन्यावौ अन्यामवत्तन्या न्यस्य उपावता ॥ ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः ॥ याः फलिनी
 ऋ ॥ १ ॥ ३ ॥ मुंचंतु माशपथ्या इदं थो वरुणया दुता ॥ अथो यमस्य पर्दुं शात्सर्धस्मादेव किलिपात् ॥ अव
 पतंती रवदन्दि आवेपंथयस्परि ॥ यं जीवमश्रवांमहैनसरिं ग्याति पूरुपः या ओपथीः सोमराज्ञीर्बन्दीः शतवि
 चक्षणाः ॥ तासां त्वमस्युत्तमारुं कामां यशं हृदे ॥ या ओपथीः सोमराज्ञी विधिनाः पृथिवीमनु ॥ बृहस्पतिप्रसू
 ता अस्यै संदं च वीथी ॥ मावोरिष ० ऋ ० १ ॥ याश्चेदमुपशुणवंति याश्च दूरं परांगताः ॥ सर्वाः संगत्य वीरुधां स्वैसं ०
 ॥ ओषध ० ऋ ० १ ॥ त्वमुत्तमास्योपधेत वं वृक्षा उपस्तयः ॥ उपस्तिरस्तु मोर्ध्स्मां क्रयो अस्मौ अभिदासंति ४
 इ ० ओ ० ॥ श्राद्धविघ्नहरसूक्तं ॥ इन्द्राय सामं गायति प्रायं बृहते बृहता ॥ धर्मकृते विपुश्चिते पनस्य वै ॥ त्वमि
 द्रा मिभूरसित्वं सूर्यमरोचयः ॥ विश्वकर्मा विश्वदेवो महां अंसि ॥ विश्राजन्ज्योतिपास्व १ गच्छोरोचनं

दिवः ॥ देवास्तं इंद्रसख्याय येमिरे ॥ इंद्रनोगधिप्रियः सत्राजिदगोत्थः ॥ गिरिनिविश्वतस्पृथुः पतिर्वि
 वः ॥ असिहितस्यसोमपाउमेबभूथरोदसी ॥ इंद्रासिसुन्वतो वृधः पतिर्विवः ॥ त्वंहिशश्वतीनामिन्द्रद
 तापुरामसि ॥ इंतादस्योर्मनो वृधः प० ॥ १ ॥ अधाहींद्रगिर्वणउपत्वाकामान्महः संसृजमहे ॥ उदे
 वयंतउदभिः ॥ वाणत्वायव्याभिर्वधीतिशूरब्रह्माणि ॥ वावृध्वांसंचिदद्विवोदिवेदिवे ॥ युजंतिहरी
 इषिस्यगाथयोरीरथउरुयुगे ॥ इंद्रवाहावचोयुजा ॥ त्वंनहंद्रामं रौओजो नृग्णशतकतोविचर्षणे ॥
 आवीरंपृतनाषहं ॥ त्वंहिनः पितावसो त्वंमाताशतकतोबभूविथ ॥ अधतिसुभ्रमीमहे ॥ त्वांशुष्मि
 न्पुरुहूतवाजयंतमुपभ्रुवेशतकतो ॥ सनौराखसुवीर्य ॥ २ ॥ यम (मनआवर्तन) सूक्तं ॥ यत्तैय
 मं वैवस्वतं मनोजगामदूरकं ॥ तत्तआवर्तयामसीहक्षयायजीवसे ॥ यत्तेदिवंयत्पृथिवीमनो ॥
 तत्त० ॥ यत्तेभूमिचतुर्भृष्टिमनो ॥ तत्त० ॥ यत्तेचतस्रः प्रदिशोमनो ॥ तत्त० ॥ यत्तैसमुद्रमर्णवंम
 नो ॥ तत्त० ॥ यत्तेमरीचीः प्रवतोमनो ॥ तत्त० ॥ १ ॥ यत्तैअपोयदोषधीर्मनो ॥ तत्त० ॥

॥१॥ त्रक्षुषः पितामनसा हि धीरो वृत्तमेने अजनन्नभ्रमाने। यदेदं ता अददहंत पूर्वं आदिद्यावापृथिवी अप्रथे
तां ॥ विश्वकर्मा विमना आदिहाया धाता विधाता परमो तसं दृक्तेषां मिष्टानि सप्तमिषामंदतियत्रासप्तकृषी
न्यएकमाहुः ॥ योनः पितार्जनिता यो विधाता धामानि वेदभुवनानि विश्वा ॥ यो देवानां नाम धाएकलवतंसं
प्रभं भुवनार्यं यन्या ॥ तआर्यं जंतद्रविणं समस्माच्छर्षयः पूर्वैर्जरितारो नभुना ॥ असूर्तेसूर्ते रजसिनि
षत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥ पुरो द्विवा परएना पृथिव्या परो देवो भिरसुरैर्यदस्ति ॥ कंस्विद्गर्भी प्रथ
मंदं भ्रआपो यत्र देवाः समर्षयंत विश्वे ॥ तमिद्गर्भी प्रथमंदं भ्रआपो यत्र देवाः समगच्छंत विश्वे ॥ अज
स्यनाभावध्वेकमपितं यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः ॥ नतं विदाथयइमाजजानान्यद्युष्माकमंतरं
बभूव ॥ नीहोरेण प्राहंत जल्य्या चासुतुपं उक्थशासंश्चरंति ॥ २ ॥ उषा (प्रातःस्मरण) सूक्तं ॥
धु१षा आं वो दिवि जाकृतेना विष्कण्वानाम हिमानुमागत् ॥ अपद्रुहस्तम आवर्जुष्टुमंगिरस्तमापृथ्या
अजीगः ॥ महेनो अद्य सुविताय बोध्युषो महेसौ भंगाय प्रथं धि ॥ चित्रं ररियशसं धेद्युस्मभे देवि मतेषु

मानुषिश्रवस्युं ॥ एतेत्येभानवोदर्शतायाश्चित्राउपसोअमृतांसआगुः ॥ जनयन्तोदिव्यानिब्रूतान्या
 पृणतोअंतरिक्षाव्यस्युः ॥ एपास्यायुजानापरकात्पंचक्षितीःपरिसद्योजिगति ॥ अक्षिपश्यंतीव
 युनाजनानादिवोदुह्वितामुवनस्युपस्नी ॥ वाजिनीवतीसूर्यस्ययोपाचित्रामंधारायईशेवसूनां ॥
 ऋषिष्टुताजरथतीमधोन्युषाडच्छतिवह्निमिर्णाना ॥ प्रतियुतानामरुपासोअश्वाश्चित्राअदृश्रन्नु
 षसंवहंतः ॥ यातिशुआविश्वपिशारथेनदधातिरत्नंविधतेजनाय ॥ सत्यासत्येभिर्महतीमृहद्भिर्देवी
 देवेभिर्यजतायजत्रैः ॥ रुजदृब्धानिदददुक्षियाणांप्रतिगावउपसंवावशंत ॥ नूनोगोमद्वीरवद्वेहिरत्न
 मुषोअश्वांपत्पुरुभोजोअस्मे ॥ मानोर्ब्रह्मिःपुरुषतानिदेकर्युंयपां ॥ १ ॥ ॥ संज्ञानसूक्तं ॥
 संमिद्युंवेसेष्टषभ्रेविश्वान्युर्यआ ॥ इळस्पदेसमिध्यसेसुनोवसून्याभर ॥ संगच्छद्वंसंवदध्वंसवो
 मनसिजानतां ॥ देवाभ्रांगंयथापूर्वसंजानानाउपासते ॥ समानोमंत्रःसमितिःसमानीसमानमनःसह
 चित्तमैषां ॥ समानमंत्रमिमंत्रयेवःसमानेनवोहविषांजुहोमि ॥ समानीवआ० ऋक् ॥ परिशिष्टं ॥ सं

ज्ञानमुशानावदत्संज्ञानंवरुणोवदत् ॥ संज्ञानमिन्द्रश्चाग्निश्चसंज्ञानंसवितावदत् ॥ संज्ञानंनःस्वेभ्यः
संज्ञानमरणेभ्यः ॥ संज्ञानमश्विनायुवमिहास्मासुनियच्छतं ॥ यत्कक्षीवीसंवननंपुत्रोअंगिरस्सामवे
त् ॥ तेननोद्यविश्वेदेवाःसंप्रियांसमंचीचरत् ॥ संवोमनांसिजानतांसमाकृतिर्भनामसि ॥ असौयो
विमनादनस्त्वंसमावर्तयामसि ॥ २ ॥ नैर्हस्वयंसेनादरंणंपरिवर्त्मेवयच्छ्रविः ॥ तेनामित्राणांबाहून्ह
विषाशोषयामसि ॥ परिवर्त्मान्येषामिन्द्रःपूषानुयच्छतु ॥ तेषांनोअग्निदग्धानामग्निमूहानामिन्द्रोहंतु
ववंनं ॥ ऐषुनत्थद्यप्राजिनंहरिणस्यप्रियंयथा ॥ पराङ्मित्राँऽपत्त्वर्वाचीगौरुपैजतु ॥ ३ ॥ प्राध्वं
राणांपतेवसोहोतुर्वरेण्यक्रतो ॥ तुभ्यंगायुत्रमृच्यते ॥ गोकामोअर्चकामःप्रजाकामउतकश्यपः ॥
भ्रूंतमविष्यत्प्रस्तौतिमूहब्रह्मैकमक्षरं ॥ यदक्षरंभूतकृतोविश्वेदेवाउपांसते ॥ महर्षिमस्यगोसारंज
मदग्निमकुर्वत ॥ जमदग्निराप्यायनेछंदोसिश्चतुरक्षरः ॥ राज्ञःसोमस्यदक्षेणब्रह्मणावीर्यावना ॥
शिवानःप्रदिशोदिशःसत्यानःप्रदिशोदिशः ॥ ४ ॥ अजोयत्तेजोददृशेशुकंजयोतिःपुरेगुहा ॥ तद

षिःकश्यपःस्तौतिसत्यं ब्रह्मचरारंघ्रुवं ब्रह्मचराचरं ॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं ॥ अग
 स्यस्य त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं ॥ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं शतायुषं बलायुषं ॥ ओं च मे स्वरं श्वमे यज्ञोपच
 तेन मथ ॥ यत्ते न्यूनं तस्मै त उपयत्ते निर्ऋतस्मै तेन मः ॥ तच्छं यो राहणी महे गान्तुं यज्ञाय गान्तुं यज्ञपत
 ये देवी स्वस्ति रस्तु नः स्वस्ति मीनुषेभ्यः ॥ ऊर्ध्वजिगतु भेषजं शनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ न
 मो ब्रह्मणे न मो अस्त्वग्रथे न मः पृथिव्ये न मः ओषधीभ्यः ॥ न मो वाचे न मो वाचस्पतये न मो विष्णवे महते
 करोमि ॥ ५ ॥ ॥ इति ऋग्वेद मंत्रसंहितायां सूक्तप्रकरणं समाप्तं ॥ ॥ अथ स्फुटमंत्रप्रकरणं ॥
 ॥ ॐ ब्रालं ब्रातंगुणं गुणं सुशस्तिभिरेभेर्मां मरुता मोर्जईमहे ॥ पृषदश्वासो अनवभ्रं राधसो गंतारो
 युज्ञं विदथेषु धीराः ॥ १ ॥ तं वः शर्धरथानां त्वेषं गुणं मारुतं नव्यसीनां ॥ अनुप्रथं तिदृष्टयः ॥
 शर्धशर्धव एषां ब्रालं ब्रातंगुणं गुणं सुशस्तिभिः ॥ अनुक्ता मे मधीतिभिः ॥ अग्ने शर्धतं मागुणं पिच्छं
 कृक्मे भिरं जिभिः ॥ विशो अद्य मरुता मवह्वये दिवश्चिद्रोच नादधि ॥ १ ॥ अयं मातायं पिता

यंजीवातुरागमत् ॥ इदंतवप्रसर्पणंसुबधवेहिनिरिहि ॥ अयमेहस्तोमगवानयमेमगवत्तरः ॥ अ
 यमेविश्वमेषजोयंशिवाभिमर्शनः ॥२॥ वयःसुपर्णाउपसेदुरिंद्रप्रियमैधाक्कषयोनाधमानाः ॥ अपह्वां
 तमूर्णुहिपुर्धिसुमुग्ध्यस्मान्निधयेवबुद्धान् ॥ सरस्वतित्वमुस्माँअविद्विमुरुत्वतीष्टृतीजेषिश
 त्रून् ॥ त्यंचिच्छर्धतंतविषीयमाणमिद्रोहंतिष्टृषंसंशंडिकानां ॥ प्रातयवांणारुथ्येववीराजेवयमावरुमास
 चेते ॥ मेनेइवतुन्वाइशुंसमनिदंपतीवक्तुविदाजनेषु ॥ ओष्ठाविवृमह्वास्त्रेवदंतास्त्रनाविवपिप्य
 तंजीवसेनः ॥ नासेवनस्तुन्वोरक्षिताराकर्णाविवसुश्रुतांभूतमुस्मे ॥ दुर्गेचिन्नःसुगंक्षधिगृणानईद्रुगि
 वणः ॥ त्वंचमयवन्वशः ॥ ३॥ मेतेवदंतुप्रवयंवदामग्राम्योवाचैवदतावदद्भ्यः ॥ यदंदयःपर्वताः
 साकमाशवःश्लोकंघोषंभरथेद्रायसोमिनः ॥ बोधमिअस्यवचसोयविष्टमंहिष्टसुप्रभंतस्यस्वधावः ॥ पी
 यतित्वोअनुत्वोगुणातिवंदारुस्तेतुन्वदेअमे ॥ वास्तोष्पतेध्रुवास्थूणांसंत्रसोम्यानां ॥ इप्सोभित्ता
 पुरांशश्वतीनामिद्रोमुनीनांसखा ॥ अस्माकमुत्तमंक्षधिश्रवोदेवेषुसूर्य ॥ वर्षिष्ठुद्यामिवोपरि ॥ य

त्रैलोक्येनस्पतेदेवानांगुह्यानामिति ॥ तत्रहव्यानिगामय ॥ ९ ॥ चंद्रमाअप्सवैतरासुपर्णोधांव
 तेदिवि ॥ नवोदिरण्यनेमयःपुदविंदितिविद्युतोवित्तमैअस्यरोदसी ॥ अग्नेयाहिदुत्यग्मारिपणयो
 देवाँअच्छाब्रह्मरुवागणेन ॥ सरस्वतीमुरुतोअश्विनापोयक्षिदेवानरत्नधेयायविश्वान् ॥ यस्त्वग्म
 शंगोद्यप्रभोनग्नीमएकःकृष्टीश्रथावयत्तिप्रविश्वाः ॥ यःशश्वतोअदाशुपोगयस्यप्रयंतासिसुष्वित
 रायवेदः ॥ आनोनिपुङ्गःशुतिनीमिरस्वरसहस्रिणीमिरुपयाहियुज्ञ ॥ वायोअस्मिस्तवनेमादय
 स्वयू ॥ आतेसिंचामिकृक्ष्योरनुगात्राविधावतु ॥ गुभायजिन्ह्यामधु ॥ अस्यप्रजावतीगृहेस
 श्रंतीद्विवेदिवे ॥ इळाधेनुमतीदुहे ॥ यादंपतीसमनसासुनुतआचधावतः ॥ देवांसो नित्ययाशिरा
 ॥ ५ ॥ तुभ्यंताअगिरस्तमविश्वाःसुक्षितयःपृथक् ॥ अग्नेकामाययेमिरे ॥ तंपवित्त्रेजसोविर्ध
 र्मिणिवेभ्यःसोमपवमानपूयसे ॥ त्वामुशिजःप्रथमाअगृष्णततुभ्येमाविश्वाभुवनानियेमिरे ॥ ६ ॥
 आतेअग्रचक्राहविर्द्धदातृष्टंभरामसि ॥ तेतेमवंतूक्षणकृष्मासोवशाजुत ॥ स्तविष्यामित्त्वाम्

हंविश्वस्यामृतमोजन ॥ अग्नेत्रातारममृतमिषेव्ययजिष्ठं ह्यव्यवाहन ॥ अरित्रं वादिवस्पृथुतीर्थेसिषू
 नारथः ॥ धियायुयुञ्ज ईदवः ॥ हिमेनाग्निं संमवारयेथापितुमतीमूर्जमस्माअथत्तं ॥ ऋबीसेअत्रि
 मश्विनावनीतमुच्चिन्मथुःसर्वगणस्वस्ति ॥ ततमेअपस्तदुनायतेपुनःस्वादिष्टाधीतिरुचथायशस्यते ॥
 अयंसंमूद्रइहविश्वेदव्युःस्वाहाकृतस्यसमुतृप्णुतकभवः ॥ अजोहवीदश्विनतौद्योवांप्रोळ्हःसमु
 द्रमव्यथिर्जगन्वान् ॥ निष्टमूहथुःसुयुजारथेनमनोजवसावृषणास्वस्ति ॥ पृष्टोदिविपृष्टोअग्निः
 पृथिव्यांपृष्टोविश्वाओपधीराविवेश ॥ वैश्वानुरःसहसापृष्टोअग्निःसनोदिवासरिषःपातुनक्तं ॥ य
 सेगात्रादग्निनापच्यमानादग्निशूलंनिहतस्यावुधावति ॥ मातङ्म्यामाश्रिषन्मातृणेषुदेवेभ्यस्तदु
 शम्भोरुतमस्तु ॥ वयमर्चेद्रस्येप्रष्टावंध्वोवैचेमहि समर्थे ॥ वयंपुरामहिचनोअनुद्यूनत्तञ्चकमुक्षा
 नरामनुष्यात् ॥ ८ ॥ युज्ञार्थज्ञावोअग्रथेगिरागिराचुदक्षसे ॥ प्रप्रवयममृतंजातवदसंभियंमित्रंन
 शंसिषं ॥ तवभिहोत्रंतवंपोत्रमृत्वियंतवनेदृत्वमग्निदृतायतः ॥ तवंप्रशास्वत्तमध्वरीयसिब्रह्माचा

सिंग्रहपतिश्चनोदमे ॥ सरस्वतीसाधयतीधिथनइळादेवीभारतीविश्वतूतिः ॥ तिलोदेवीःस्वयथा
 बहिरदमच्छिद्रंपांतुशरणनिषद्य ॥ पिशंगरूपःसुसरोवयोधाःश्रुष्टीवीरोजायतेदेवकामः ॥ प्र
 जात्वष्टाविष्यंतुनामिमस्मेअथादेवानामप्येतुपाथः ॥ ९ ॥ घृतंमिमिक्षेघृतमस्ययोनियुतेश्रितो
 घृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमावहमादयस्वस्वाहाकृतंष्टषमवसिहृव्यं ॥ योनःसनुत्युतवाजियलु
 रभिरथायतंतित्तिगितेनविध्य ॥ बृहस्पतआयुधैर्जपिशत्रून्द्दुहेरीषंतंपरिधिराजन् ॥ आभारती
 भारतीमिःसजोषाइळादेवैर्मनुष्येभिरग्निः ॥ सरस्वतीसारस्वतेभिरवाक्त्तिलोदेवीर्बहिरदंसंदनु ॥
 तन्नस्तुरीपमधपोषयितुदेवत्वष्ट्रविरराणःस्यस्व ॥ यतोवीरःकर्मण्यःसुदक्षोयुक्तग्रावाजातियथादेवानां
 मः ॥ वनस्पतेवष्टुजोपेद्वानग्रिहृविःशमितासूदयाति ॥ सेदुहोतासत्यतरोयजातियथादेवतिःसु
 जनिमानिवेदं ॥ आयाह्यग्रेसमिधानोअर्वाङ्घ्रिणदैवैःसरथंतुरेभिः ॥ बर्हिर्नआस्तामर्दितिःसु
 पुत्रास्वाहदिवाअमृतामादयतां ॥ १० ॥ सोमांपूषणजननारयीणांजननादिवोजननापृथिव्याः॥

जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अरुणवभ्रमृतस्य नाभिं ॥ अंजंति त्वामं ध्वरे देवयंतो वनस्पले मधु
 नदिव्येन ॥ यदूर्ध्वं स्तिष्ठान्नाद्रविणे हर्षताद्यद्वाक्षयो मातुरस्या उपस्थे ॥ इंद्राग्नीरोचनाद्विवः परिवा
 जेषु मूषथः ॥ तद्दौचेति प्रवीर्यं ॥ नामानितेशतक्रवो विश्वाभिर्गीभिरीमहे ॥ इंद्राग्निमातिषां
 ह्ये ॥ १ ॥ ब्रह्मणते ब्रह्मयुजायुनज्मिहरीसखायासधमादं आशू ॥ स्थिरं रथं सुखमिंद्राधिनिष्ठं प्रजान
 न्निवृहौ उपयाहिसोभं ॥ ससर्परीरमतिबाधमाना बृहन्मिमायजमदं गिदत्ता ॥ आसूर्यस्य दुहितततानुश्रवो
 देवेष्वमृतमजुर्यं ॥ ससर्परीरं सरत्तूर्यमेभ्यो धिश्रवः पांचजन्या सुकृच्छिपु ॥ सापक्ष्याई नव्यमायुर्दधा
 नायामैपलस्तिजमदमयौददुः ॥ १२ बलं धेहितुनूपुनो बलमिंद्रानुच्छुनः ॥ बलतो कायतनयाय
 जीवसे त्वं हि बलदा असि ॥ त्वं नो अश्रेवरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळो वयासिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठो वहितमः
 शोशुचानो विश्वाद्देषांसि प्रमुग्ध्यस्मत ॥ सत्वं नो अभेवमो भवोतीने दिष्टो अस्या उपसो व्युंष्टौ ॥ अ
 र्धयक्ष्वनोवरुणं राणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि ॥ अश्रेतमद्याश्वं नस्तोमैः कनुं नमद्रं हृदि स्पृशं ॥ कृं

ध्यामानुओहैः ॥ १३ ॥ श्रावयेदस्यकणवाजयध्वैजुष्टामनुप्रविशंमंद्यह्वै ॥ उद्वावृषाणोराधसे
 तुर्विष्मन्करंन्द्रैःसुतीर्थीसंयंच ॥ अच्छायोगंतानाधमानमूतीड्रत्थाविप्रंहवमानंगुणंतं ॥ उपुत्स
 निदधानोधुर्यांशूत्सहसाणिशतानिवञ्जबाहुः ॥ १४ ॥ योजागारतमृचःकामयंतयोजागारतमु
 सामानियंति ॥ योजागारतमयंसोमंआहृतवाहमस्मिस्रव्येन्योकाः॥अग्निर्जागारतमृचःकामयंतेभि
 र्जागारतमुसामानियंति ॥ अग्निर्जागारतमयंसोमंआहृतवाहमस्मिस्रव्येन्योकाः ॥ जागर्षित्वंमुव
 नेजातवेदोजागर्षियत्रयजतेहविष्मान् ॥ इदंहविःश्रद्धानोजुहोमितेनपासिगुत्स्यंनामगोनां ॥ १५ ॥
 अर्चितस्त्वाहवामहेर्चितःसमिधीमहि ॥ अग्नेअर्चितकृतये ॥ अजातशत्रुमजरत्सर्वत्यनुस्वधाभिताद्
 स्ममीयते॥सुनोतंनपचतब्रह्मवाहसेपुरुष्टुतार्यप्रतरंदधातन ॥ समिधाजातवेदसेदेवायदेवहूतिभिः ॥
 हविभिःशुक्रशोचिषेनमस्विनोवयंदशेशेमाग्रये ॥ देवोवोद्रविणोदाःपूर्णाविवह्यासिचं ॥ उद्वासिच
 ध्वमुपवापृणध्वमादिहोदेवओहते ॥ सदातातइंद्रभोजनानिरातहव्यायदाशुषेसुदासे ॥ वृष्णेतैह

रीचर्षणायुनजिमव्यंतुब्रह्माणिपुरुशाकवाजं ॥ अग्रआयाहिवीतयेगुणानोहव्यदातये ॥ निहोतांस
 त्सिबर्हिषि ॥ १६ ॥ वरुणः प्राविताशुवन्मित्रो विश्वाभिरुतिभिः ॥ करतांनः सुरार्धसः ॥ निहोता
 होतृषदनेविदानस्त्वेषोदीदिवौ असदत्सुदक्षः ॥ अर्द्धधमत्प्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रं सरः शुचिजिह्वो अग्निः ॥
 त्वंदूनस्त्वमुनः परस्यास्त्वं वस्य आहृषमप्रणेता ॥ अथेतोकस्य नस्तेन नूनामप्रयुच्छन्दीद्यद्वोधिगो
 पाः ॥ १७ ॥ भोजंत्वामिन्द्रवयंदुवेमदद्विष्टुमिन्द्रापांसिवाजां ॥ अविष्टुद्रिचित्रयानकृती
 कृधिहृषन्निद्रवस्यसोनः ॥ येनलोकायतनयायधान्यं बीजं वहध्वे अक्षितं ॥ अस्मभ्यतद्धत्तन
 यद्वईमहराधो विश्वायुसौमगं ॥ अश्विनवेहगच्छतं नासंत्यामाविवेनतं ॥ हंसाविवपततमांसुतौड
 पं ॥ सचित्रचित्रचित्रतयतमस्मेचित्रक्षत्रचित्रतं वयोधां ॥ चंद्ररथिंपुरुवीरंबृहंतं चंद्रचंद्राभिर्गुण
 तेयुवस्व ॥ १८ ॥ स्वादुःपवस्वदिव्यायजन्मनेस्वाहुरिंद्रायसुहवतुनाम्ने ॥ स्वादुर्मित्रायवरुणा
 यवायेवहृस्पतयेमधुमां अदाभ्यः ॥ अद्धीद्विद्रप्रस्थितेमाहृर्विचिनोदधिष्वपचतोतसोमं ॥ प्रयं

स्वतःप्रतिहर्यामसित्वासृत्याःसंतुयजमानस्युकामाः ॥ नाकेसुपूर्णमुपयत्पतंतं हृदावेनतो अभ्यंचक्ष
 तत्वा ॥ हिरण्यपक्षंवरुणस्थदूतयमस्ययोनौशकुनंमुरण्युं ॥ सीरायुंजतिकवयौयुंगावितन्वतेपृथ
 क् ॥ धीरदिवेषुसुम्रया ॥ १९ ॥ सस्तुमातासस्तुपितासस्तुश्वासस्तुविशपतिः ॥ ससंतुसर्वज्ञा
 तयःसस्त्वयमभितोजनः ॥ शुक्तेअन्यद्यजतंतेअन्यद्विपुरुषेअहनीद्यौरिवासि ॥ विश्वाहिमा
 याअवसिस्वधावोसद्रातेषुषञ्जिहरानिरस्तु ॥ विज्योतिषाबृहतामात्यशिराविर्विश्वानिकणुतेमहि
 त्वा ॥ प्रादेवीर्मायाःसहतेदुरेवाःशिशितेश्रृंगरक्षसेविनिक्षे ॥ विहिंसोतोरसृक्षतनेद्रदेवमंसन ॥ यत्रा
 मंदहूषाकंपिर्यःपुच्छेषुमत्संत्वाविश्वस्मादिद्रुत्तरः ॥ यदातेमारुन्तीविशस्तुभ्यभिद्रनियेमिरे ॥ आ
 दित्तेविश्वामुर्वजानियेमिरे ॥ २० ॥ रुवतिमीमोक्षेषुभस्नविष्ययाश्रृंगेशिशानोहरिणीविचक्षणः ॥
 आयोर्निंसोमसुकंतंनिषीदतिगन्वयीत्वग्भवतिनिर्णिगन्वयी ॥ त्वनःसोमविश्वतोणोपाअदाभ्यो
 भव ॥ सेधराजन्प्रसिधोविबोमदेमानेदुःशंसईशताविवक्षसे ॥ सद्रोसद्रयासचमानुआगात्स्वसा

रंजरोअभ्येतिपश्चात् ॥ सुप्रकृतैद्युभिरभिवितिष्टन्नृशद्विवर्णैरभिराममस्थात् ॥ सरस्वतीसरयुः
 सिंधुसुर्भिर्महोमहीरवसार्यंतुवक्षणीः ॥ देवीरापोमातरःसुदयित्ववोधृतवत्पयोमधुमन्नोअर्चत ॥
 अग्निरंद्रोवरुणोमित्रोअर्थमावायुःपुषासरस्वतीसजोषसः ॥ आदित्याविष्णुर्मरुतःस्वर्बृहत्सोमोरु
 द्रोअदितिब्रह्मणस्पतिः ॥ २१ ॥ पावीरवीतन्यतुरेकपादजोदिवोधृत्तार्त्सिंधुरापःसमुद्रि
 यः ॥ विश्वेदेवासःशृणवद्वचांसिमेसरस्वतीसहधीभिःपुरंध्या ॥ प्रशार्थायमारुतायस्वसानवहमां
 वार्चमनजापर्वतच्युते ॥ घमस्तुमैदिवापृष्ठयज्वनेद्युमन्नश्रवसेमहिनुग्णमर्चत ॥ त्वमग्नेगृहपति
 स्त्वंहोतानोअध्वरे ॥ त्वंपोताविश्ववारप्रचेतायक्षिवेपिचुवार्य ॥ कृधिरान्तंयजमानायसुक्नोत्वंहिर
 त्त्वाअसि ॥ आनक्तेशिशीह्विश्वमृत्विजंसुशंसोयश्चदक्षते ॥ २२ ॥ आवर्दिद्र्यमुनातृत्सवश्च
 प्रात्रंभेदंसर्वतातामुषायत् ॥ अजासंश्चशिग्रवोयक्षवश्चबल्लिंशीर्षाणिजभ्रुरश्व्यानि ॥ प्रवोय
 ज्ञेषुदेवयंतोअर्चन्द्यावानमोभिःपृथिवीद्वपथ्यै ॥ येषांब्रह्माण्यसमानिविप्रविष्वन्वियंतवनिनोनशा

स्वाः ॥ अपाः सोमस्तमिद्रप्रथाहिकल्याणीर्जायासुरंगहेते ॥ यत्रार्थस्यबृहतोनिधानंविमोचनं
 वाजिनोदक्षिणावत् ॥ हव्यवाळभिरजरःपितानोविमुर्विमावांसुदृशीकोअस्मे ॥ सुगार्हपत्याःसमि
 षोदिदीत्यस्मद्भयं१क्संमिमीहिश्रवांसि ॥ २३ ॥ इंद्रमिहेवतांतयुइंद्रप्रयत्यध्वरे ॥ इंद्रंसमीकेवनि
 नोहवामहइंद्रं१धनस्यसातये ॥ जुषस्वाग्रइळयासजोषायतमानोरशिमसिःसूर्यस्य ॥ जुषस्वनःसमि
 धंजातवेदआचदेवान्हेविरद्याथवक्षि ॥ देवीद्वारोविश्रयध्वंसुप्रायणानकुतये ॥ प्रमयज्ञंपृणीतन ॥
 दुहंसिसैकामुपुद्गापंचरुजतः ॥ तीर्थैसंधोरधिस्वरे ॥ काणाशिशुर्महीनांहिन्वञ्चुतस्यदीधिति ॥
 विश्वापरिप्रियासुवुदधद्विता ॥ एतेशमीभिःसुशामीअभूवन्येहिन्विरेतन्वः१सोमउक्थैः ॥ नृवद्दन्तु
 पंनोमाहिवाजान्दिविश्रवोदधिषेनामवीरः ॥ २४ ॥ स्वाहाग्रयेवरुणायस्वाहेद्रायमरुभ्यः ॥ स्वाहा
 देवेभ्योह्विः ॥ बृहस्पतिर्नःपरिपालुपुश्वादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ॥ इंद्रःपुरस्तादुतमध्यनोःस
 खासस्विभ्योवरिवःरुणोतु ॥ शंनोमित्रःशंवरुणःशंनोभवत्वर्थमा ॥ शंनइंद्रोबृहस्पतिःशंनोविष्णु

रुक्मः ॥ शनौ भवंतु वाजिनो हवेषु देवतातामितद्रवः स्वर्काः ॥ जंमयंतो हि हंकरसांसिसेनेम्य
 स्मद्युपवचर्मावाः ॥ २५ ॥ सहस्रशंगोद्युषमोयः समुद्राद्बुदाचरत् ॥ तेनासहस्येनावयं निज
 नांस्त्वापयामसि ॥ श्लोषशयावत्पेशयानारीर्यास्तल्पशीवरीः ॥ स्त्रियोयाः पुण्यगंधास्ताः
 सर्वाः स्वापयामसि ॥ इळायास्त्वापदेवयनाभापृथिव्या अधि ॥ जातवेदो निधीमत्तद्यग्नेह्वया
 यवोब्धवे ॥ अपिपंथामगन्महिस्वस्तिगामनेहसं ॥ येन विश्वाः परिद्विषो वृणाक्तिर्विदतेवसु ॥
 ॥ २६ ॥ अगोरुथायगविषेद्युक्षायदस्म्यं वचः ॥ घृतास्त्वादीयो मधुनश्चवोचत ॥ असंख्यस
 चंपरभव्यो मन्दक्षस्यजन्मन्नदितेरुपस्थे ॥ अग्निर्हनः प्रथमजाकृतस्य पूर्व आयुनिद्युषमश्चधेनुः ॥
 जीविरुंदति विमयं ते अश्वरेदीर्घामनुप्रसिति दीधियुनरः ॥ वामं पितृभ्यो यद्दंडं मेरिरेमयुः पतिभ्योजनं
 यः परिष्वजे ॥ त्वं श्रे अग्निना विप्रो विभ्रैण सन्सता ॥ सखासख्यांसमिच्यसे ॥ अत्राह गोरमन्वतना
 मत्सष्टुरपीच्ये ॥ इत्थाचंद्रमंसो गृहे ॥ २७ ॥ राजाराष्ट्रानां पेशो नदीनामनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ॥

अविद्यो अस्मान्निश्वा सुविश्वद्युं कणोतशंसं निनिस्सोः ॥ यदश्वस्य ऋविषो मक्षिकाशयद्वा स्वरोस्वधि
 तौरिसमस्ति ॥ यद्धस्तयोः शमितुर्थं चलेषु सर्वा नाते अपि देवेषु ॥ यद्वा जिनो दामं संदानमर्षतो
 याशीर्षण्यारशानरञ्जुरस्य ॥ यद्वा दद्यास्य प्रमृतमास्ये ईतृणं सर्षी ० ॥ निऋमणं निषदेनं विवर्तनं यच्चपे
 द्वीशमर्षतः ॥ यच्चंपौयच्चचारसिंजघासर्ष ० ॥ २८ ॥ उशिकपावको अरतिः सुमेधामर्षेषु अिरमृतो नि
 धायि ॥ इयति धूममर्षं सरि अदुच्छुकेण शोचिषा ध्यामि नक्षन् ॥ दृशानोरुक्मउर्वियान्ये द्यौ ह्युर्भर्षमा
 युः श्रिये रूचानः ॥ अग्निरमृतो अभवद्दयो अिये देनं द्यौर्जनयत्सुरताः ॥ यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेपुप
 देवघृतवतमगे ॥ प्रतनय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्रं देवमर्कं यविष्ट ॥ आतं मजसौ श्रवसेष्वय उक्थते
 कथ आर्षजशस्यमाने ॥ प्रियः सूर्ये प्रियो अग्राभवात्पुज्जालेन भिनदुज्जानित्वैः ॥ त्वामने यजमाना
 अनुबुन विश्वावसुदधिरेवार्याणि ॥ त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजंगो मंतमृशिजो विवदुः ॥ अस्ता
 न्यग्निर्नरां सुशेवै विश्वानरऋषिभिः सोमगोपाः ॥ अद्भेद्यावापृथिवी हुवे मदेवापृथरयिमस्मे सुवीर ॥ १ ॥

पवित्रं० १॥ तपोष्यवित्रं० १॥ अरुरुचदुषसः पृश्निरग्रियउक्षाबिमर्तिभुवनानिवाज्युः ॥
 मायाविनोमिरेअस्यमाययानुचक्षसः पितरोगर्भमादधुः ॥ गंधर्वइत्थापदमंस्यरक्षतिपातिदेवानां ज
 निमान्यद्भुतः ॥ गृभ्णातिरिपुंनिघयानिघापतिः सुकृत्तमामधुनोभक्षमांशत ॥ हविर्हविष्मोमहिसद्म
 देव्यंनभोवसानः परिंयास्यध्वरं ॥ राजांपवित्ररथोवाजमारुहः सहस्रंभृष्टिर्जयसि श्रवोबृहत् ॥ २ ॥
 मातेगोदत्रनिरामराधंसइद्रमातेगृहामहि ॥ इच्छाचिद्वर्यः प्रमंशाभ्यामंरुनेदामानंआदभे ॥ इन्द्रो
 वाषेदियंमधंसरंस्वतीवासुमगाददिवंसुं ॥ त्वंवाचित्रदाशुषे ॥ चित्रइद्राजाराजकाइदन्यकेयुकेसरस्व
 तीमनु ॥ पर्जन्यइवततनद्विबृष्ट्यासहस्रंमयुताददत् ॥ ३ ॥ वातआवातुभेषजंशंमुमंयोभुनोह
 दे ॥ प्रणआर्थषितारिषत् ॥ उतवातपित्तासिनउत आतोतनुःसखां ॥ सनोजीवातवेकधि ॥ यददो
 वाततेगृहेऽमृतस्यनिधिर्हितः ॥ ततो नोदेहिजीवसे ॥ ४ ॥ प्रनुंजातवेदसमश्वं हि नोतवाजिनं ॥
 इदंनोबर्हिरासदे ॥ अस्यप्रजातवेदसोविप्रवीरस्यमीळुषः ॥ महीमियमिसुष्टुतिं ॥ यारुचोजात

वेदसोदेवत्राहव्यवाहनीः ॥ तासिनीयज्ञमिन्वतु ॥ ५ ॥ अग्नीषोमाहविषःप्रस्थितस्यवीतंहृतं
 वणाजुषेथां ॥ सुशर्माणास्ववसाहिमतमथाधत्तंयजमानायशयोः ॥ योअग्नीषोमाहविषासपुर्या
 देवद्रीचामनेसायोधृतेन ॥ तस्यव्रतरक्षतंपातमंहसोविशेजनायमहिशर्मयच्छतं ॥ अग्नीषोमासवेद
 सासहृतीवनतंगिरः ॥ संदेवत्राबभूवथुः ॥ अग्नीषोमावनेनवांयोवीधृतेनदाशति ॥ तस्मैदीदयतंब्र
 हत् ॥ अग्नीषोमाविमानिनोयुवंहव्याजुजोषतं ॥ आयातमुपनःसचा ॥ अग्नीषोमापिपृतमवतीन
 आप्यायंतामुखियाहव्यसूदः ॥ अस्मेबलानिमघवस्तुघतंक्लणतनोअध्वरंश्रुष्टिमंतं ॥ ६ ॥ येत्रिश
 तित्रयंपुरोदेवासोबहिरासदन् ॥ विदन्नहंद्द्वितासंनन् ॥ वरुणोमित्रोअर्थमास्मद्रोतिषाचोअमयः ॥
 पत्नीवंतोवषट्कृताः ॥ तेनोगोपाअपुच्यास्तउत्कडत्थान्यक् ॥ पुरस्तात्सर्वयाविशा ॥ यथावशंतिदे
 वास्तथेदसत्तदेषानकिरामिनत् ॥ अरावाचुनमर्त्यः ॥ सप्तानांससक्तृष्टयमसद्युमन्धान्येषां ॥ सप्तोअधिश्चि
 योधिरे ॥ ७ ॥ इमंनोअग्रउपयज्ञमेहिंपंचयामंत्रिच्छतंससतंतुं ॥ असोहव्यवाकुतनःपुरोगाज्ययोगेवदीर्घतम

आशयिष्ठाः ॥ अदेवाद्देवः प्रचतागुहायप्रपश्यमानो अमृतत्वमेमि ॥ शिवं यत्संतमर्शिवोजहामिस्वा
 त्स्रव्यादर्णानाभिमिमि ॥ पश्यन्नन्यस्या अतिथिवयायां ऋतस्य धाम विमिमे पुरूणि ॥ शंसा मिपित्रे असु
 रायशेवं मयद्भियाद्यज्ञिथैसागमेमि ॥ ब्रह्मीः समा अकरमंतरं स्मिन्निद्रं वृणानः पितरं जहामि ॥ अ
 मिः सोमो वरुणस्ते च्यवंते पर्यावं द्रोघृतं दं वाम्यायन् ॥ निर्माया उत्त्ये अमुं रा अभूवन्त्वं चं मा वरुणका
 मयासे ॥ ऋते न राज्ञन्नृतं विविचन्मम राष्ट्रस्यार्थित्यमेहि ॥ ८ ॥ प्रानारत्नं प्रात्तरित्वाद्
 धातिनां चिकित्वान्प्रतिगृह्यानिधत्ते ॥ तेन प्रजावर्धयमान आरूरायस्योषेण स च ते सुवीरः ॥
 सुगुरं सत्सु हिरण्यः स्वर्श्वो बृहदस्मै वयं इंद्रो दधाति ॥ यस्त्वायं तं वसुना प्रातरित्वो मुक्षीजये वपदिमु
 त्सिनानि ॥ आर्यमुद्यसु कृतं प्रातरिच्छन्निष्ठेः पुत्रं वसुमतारथेन ॥ अंशोः सुतं पायय मत्सरस्य क्षयदी
 र्वर्धयसु नृतामिः ॥ उपक्षरं तिसिंधवो मयो सुर्वे ज्ञानं च यक्ष्यमाणं च घेनवः ॥ पुणं तं च पपुरिचश्रव
 स्ववो धृतस्य धारा उपयंति विश्वतः ॥ नाकस्य पुष्टे अधितिष्ठति श्रितो यः पुणानि सह देवेषु गच्छति ॥ त

स्माओपौवृतमर्षतिर्षिवस्वस्माद्द्वयदक्षिणापिन्वतेसदा ॥ दक्षिणावेत्ता ० ॥ मापृणंतोदुरितमेनुआर
 न्माजारिषुःसर्यःसुव्रतासः ॥ अन्यस्तेषांपरिधिरस्तुकश्चिदपृणंतमभिसंयंतुशोकाः ॥ ९ ॥ अच्छा
 वोअग्निमयसेदेवंगासिसनोवसुः ॥ रासत्पुत्रचंपूणामृतावापर्पतिद्विषः ॥ सहिसत्योयंपूर्वचिद्वेवासंश्चि
 द्यमीधिरे ॥ होतारंसंद्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावेसुं ॥ सनोधीतीवरिष्ठयाश्रेष्ठयाचसुमत्या ॥ अग्ने
 राधोर्दिदीहिनःसुष्टुक्तिभिर्वरेण्य ॥ अग्निर्देवेषुराजत्यग्निर्मतेष्वाविशन् ॥ अग्निर्नोहव्यवाह्नोर्भिधी
 मिःसंपर्यत ॥ अग्निस्तु ० क ० २ ॥ यद्वाहिंष्टतदग्रयेबृहदर्चविमावसो ॥ महिषीवत्वद्दधिस्वहाजा
 उदीरते ॥ तवद्युमंतोअर्चयोग्रावेवोच्यतेबृहत् ॥ उतोतेतन्यतुर्यथास्वानोअर्तत्मनादिवः ॥ एवाँअ
 भिवंसूयवःसहसानंवंदिम ॥ सनोविश्व्वाअतिद्विषुःपर्षन्नावेवसुकतुः ॥ १० ॥ इविणोदाद्रविणसो
 ग्रावहस्तासोअध्वरे ॥ युज्ञेषुद्ववमीळ्ने ॥ इविणोदाददानुनोवसूनिथानिशृण्वरे ॥ देवेषुतावनाम
 हे ॥ इविणोदाःपिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्ट्राद्रुतिमिरिष्यत ॥ यस्वांतुरीयमृतुभिर्द्रविणोदोयजा

महे ॥ अधस्मानोऽद्विर्भवा ॥ अश्विनापिर्बतंमधुदीर्घश्रीशुचित्रता ॥ ऋतुनायज्ञवाहसा ॥ गार्हपत्येनसं
त्यऋतुनायज्ञनीरसि ॥ दिवान्देवयुतेयज ॥ १ ॥ तेनोरायो ० ऋ ० १ ॥ तेनोरुद्रः सरस्वतीसजोषामीच्छुम्भं
तोविष्णुर्मळंतुवायुः ॥ ऋभुक्षावाजोदित्योविधातापर्जन्यावातापिष्यतामिषंनः ॥ उतस्यदेवः संवितासर्गो
नोपांनपादवतुदानुपभिः ॥ त्वष्टादेवेभिर्जनिभिः सजोषाद्यौर्देवेभिः पृथिवीसमुद्रैः ॥ उतनोहिबुद्ध्यः श्रु
णोत्वजएकंपात्यृथिवीसमुद्रः ॥ विश्वेदेवाऋताद्यौहुवानाः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवंतु ॥ एवानपानो
ममतस्यधीभिर्भरद्वाजाअभ्यर्चत्यर्कैः ॥ आहुतासोवसवोधृष्टाविश्वेस्तुतासोभूतायजत्राः ॥ १ २ ॥ द्यौइ
ष्पितः पृथिविमातरश्चुग्रेभ्रातवसवोमृळतानः ॥ विश्वंआदित्याअदितेसजोषाअस्मभ्यंशर्मबहुलंवि
यंत ॥ जराबोधतद्विद्विद्विशिशेष्यज्ञियाय ॥ स्तोमंरुद्रायदृशीकं ॥ योनोऽदातासनः पितामहाऽग्रई
शानरुद्र ॥ अयामञ्जुगोमथवापुरुवसुगौरश्वंस्यग्रदातुनः ॥ रुद्राणामितिप्रदिशाविचक्षणोरुद्रेभिर्योषात
नुतेपुथुञ्जयः ॥ इंद्रमनीषाअभ्यर्चतिश्रुतंमरुतवंतंसख्यार्यहवामहे ॥ पावीरवीकन्याचित्रायुःसरं

स्वतीवीरपत्नीधियंघात् ॥ आशिरच्छिद्रंशरणंसजोषादुराधर्षगृणतेशर्मयंसत् ॥ कद्विष्यासुहृधसा
 नोअभ्रकदातायुप्रतंवसेशुभंये ॥ परिज्मनेनासेत्यायक्षेबवःकदयेरुद्रायनुद्रे ॥ कथामहेरुद्रियायब्र
 वामकद्रायेधिकितुषेसर्गाय ॥ आपओषधीरुतनोवतुद्यौर्वनागिरयोवृक्षकेशाः ॥ ससमेससशाकि
 नरकमेकाशताददुः ॥ यमुनायामधिश्रुतमुद्रायोगव्यंसृजेनिराद्योमृजे ॥ रथीतमंकपार्दिन
 मीशानंराधसोमहः ॥ रायःसखायमीमहे ॥ रुद्रस्ययेमीद्विषःसतिपुत्रायांश्चोनुदाद्यंविर्मरुधै ॥ वि
 देहिमातामहोमहीषासेत्यश्रिःसुभ्वेअसंमाधात् ॥ अगस्त्यःखनमानःखनित्रैःप्रजामपत्यंबलमिच्छ
 मोनः ॥ उभौवर्णाद्यषिरुग्रःपुषोषसत्यादेवेष्वाशिषोजगाम ॥ यदुद्यकच्चत्रहृदगांअभिसूर्य ॥ यर्मश्विनासुह
 सर्वतदिद्रतेवशे ॥ १ ॥ नंतरोजानावदितेकुतश्चननाहोअश्रोतिदुरितनकिर्मयं ॥ यर्मश्विनासुह
 वारुद्रवर्तनीपुरोरथंरुणुथःपत्न्यांसह ॥ रोहिच्छयावासुमदैशुल्लामीद्युक्षारायञ्ज्जाश्वस्य ॥ हृष
 ण्वंतंबिअंतीधुषुरथंमद्राचिकेतनाहुषुविशु ॥ यूपन्नस्काउतयेगुपवाहाश्रुषालंयेअश्वयुपायतक्ष

ति ॥ ये चार्चते पचनं संसृत्युतोतेषामसिर्गतिर्न इन्वतु ॥ सदापृणो यजुनो विद्विषो वधीद्धाहुवृक्तः श्रुत
 वित्तर्थावः सार्चा ॥ उमासवराप्रत्येतिभातिचयदीर्गणं मजनेसुप्रयार्चमिः ॥ एभिर्द्युमिः सुमना एभिरि
 दुमिर्निरुधानो अमंतिगोभिरश्विनां ॥ इंद्रेण दस्युदस्यैतु इंदुमिर्युनहैषसः समिषारभेमहि ॥ स्वर्मानो
 रथयदिंद्रमाया अवोदिवो वर्तमाना अवाहृच ॥ गुळहंसूर्युतमसापत्रतेनतुरीयेण ब्रह्मणा विद्वजिः ॥२॥
 दुराच्छिदावसतो अस्य कर्णावोषादिंद्रस्य तन्यति ब्रुवाणः ॥ एयमेतदेव हूतिर्वद्यतान्मद्रथं गिद्रमिय
 मृच्यमाना ॥ तं वो धिया परमया पुराजामजरुमिद्रमभ्यनूष्यकैः ॥ ब्रह्माचिगिरोदधिरसमस्मिन्मुहो
 श्वस्तोमो अधिवर्धदिदे ॥ इंद्रमृळमत्स्यं जीवातुमिच्छवोदयुधियमयसो नधारां ॥ यत्किंचाहं त्वायु
 रिदं वदामि तज्जुषस्व कृधिमदिवर्तं ॥ एवाजज्ञानं सहसे असांमिवावृथानं राधसचश्रुतायं ॥ महामु
 यमवसे विप्रनूनमा विवासेमवृत्रतूर्येषु ॥ समिद्धमसिं सभिर्थागिरागुणे शुचिं पावकपुरो अश्वरेषु वं ॥ वि
 प्रं होतारं पुरुवारं मद्रुहं कर्विसुसैरीमहे जातवैदसं ॥ यस्मिन्वयं दधिमाशंसमिंद्रेयः शिश्रायस्य वत्राकारम

स्मे ॥ आराद्धित्सन्मयतामस्यशत्रुर्थस्मैद्युम्नाजन्यानमतां ॥ तेअज्येष्टाअकनिष्ठासउद्भिदोम
 ह्यमासोमहंसाविवाद्युः ॥ सजातासोजनुषाद्यश्रिमालरोदिवोमयीभानोअच्छाजिगतन ॥ ३ ॥
 यदुत्तमेमंरुतोमध्यमेवायद्द्विमेसुमगासोद्विषष्ट ॥ अतोनोरुद्राउतवान् १ स्याभ्रैवित्ताद्धविषोयद्य
 जाम ॥ यद्विन्विद्रपृथिवीदशमुजिरहानिश्वाततनैलकृष्टयः ॥ अत्राहतेमधवन्विश्रुतंसहोद्याम
 नुशर्वसाबर्हणासुवत् ॥ त्वमस्यपारेरजसोव्योमनःस्वभूत्योजाअवसेधृषन्ननः ॥ चैकृषेभूमिंप्र
 तिमानुमोजसोपःस्वःपरिमूर्ष्यादिवं ॥ सहिद्वरोद्वरिषुवृत्रऊथनिचंद्रबुधोमदंवृद्धोमनीषिभिः ॥
 इंद्रंतभेहेस्वपस्ययाध्रियाभंहिष्ठरानिसहिपभ्रिरंधसः ॥ एवानःसोमपरिषिच्यमानोवयोदधंच्चित्रत
 मंपवस्व ॥ अद्वेषेद्यावापृथिवीद्वेमेदेवाधतरयिमस्मेसुवीरं ॥ ४ ॥ इंद्रापर्वताबृंहतारथेनवामी
 रिषंआवहंतंसुवीराः ॥ वीतंहवन्यान्यध्वेषुदेवावधंथांगीभिरिळ्यामदंता ॥ स्थिरौगावौमवृतांवी
 कुरसोमेषाविवर्हिमायुगंविशारि ॥ इंद्रःपातल्येदंद्रतांशरीतोररिष्ठनेमेअभिननःसचस्व ॥ वनस्पतेवी

द्वैगोहिभूयाअस्मत्संखाप्रतरणःसुवीरः ॥ गोभिःसंनद्धोअसिवीक्यंस्वास्थातातेजयतुजेत्वानि॥५॥
 अयमस्मान्वनस्पतिर्भाचहामाचरीरिषत् ॥ स्वस्त्यागृहेभ्यआवसाआविमोचनात् ॥ इन्द्रोति
 सिर्बहुलाभिर्नोअधयाच्छेष्टामिर्भवच्छूरजिन्व ॥ योनोद्वेष्टधरःसस्पदीष्टयमुद्दिष्मस्तमुप्राणो
 जहातु ॥ प्रवोयव्दंपुरुणांविशादिवयतीनां ॥ अग्निमुक्तेभिर्वचोभिरीमहेयंसीमिद्वन्यईळते ॥
 न्युष्पुवाचंप्रमहेमरामहेगिरइंद्रायसदनेविवस्वतः ॥ नूचिद्धिरलंससतासिवाविद्वचदुष्टुतिद्रविणोदे
 षुशस्यते ॥ दुरोअश्वस्यदुरइंद्रगोरसिदुरोयवस्यवसुनइनस्पतिः ॥ शिक्षानुरःप्रदिवोअकांसकर्शनः
 सखासखिभ्यस्तमिदंगुणीमसि ॥ ६ ॥ आर्याहिशश्वंदुशतायग्रार्थेद्रमहामनसासोमपेयं ॥ उपुत्र
 ह्याणिशृणवइमानोथातियज्ञस्तन्वेअवयोधात् ॥ यद्विद्रदिविपार्थयदृधयद्वास्वेसदनेयत्रवासिअतो
 नोयज्ञमवसेनियुत्वान्सजोषाःपाह्निगिर्वणोमरुद्धिः ॥ यदीसुतेभिरिदुमिःसोभेभिःप्रतिमूषथ ॥ वे
 दाविश्वस्यमेधिशोषुषत्तमिदेषते॥द्यावोनस्त्वमिश्चितयंतखादिनोव्यत्रत्रियानद्युतयंतदृष्टयः॥ रुद्रो

यद्दोमरुतोरुक्मवक्षसोद्यषाजनिपृश्याःशुक्रऊर्धनि ॥ चित्रंतद्वोमरुतोयाभचेकितेपृश्यायदूधरप्याप
 योदुहुः ॥ यद्दानिदेनर्वमानस्यरुद्रियास्त्रितंजरायजुरतामंदाभ्याः ॥ ७ ॥ अशिरस्मिजन्मनाजा
 तवेदायुतंमेचक्षुरंमृतंमआसन् ॥ अर्कस्त्रिधानुरजसोविमानोजस्रोद्युर्मोहविरस्मिनाम ॥ सुगोहि
 वोअर्यमन्मित्रपर्यथाअनृक्षरोवरुणसाधुरस्ति ॥ तेनादित्याअधिवोचतानोयच्छतानोदुष्परिहंतुश
 र्म ॥ पियर्तुनोअदितीराजंपुत्रातिद्वेषांस्यर्यमासुगोभिः॥बृहन्मित्रस्यवरुणस्यशर्मोपस्यामपुरुवीराअ
 रिष्टाः॥तिसोमूर्मीधारयन्त्रीरुतद्युन्त्रीणिब्रताविदथेअंतरेषां ॥ ऋतेनादित्यामहिंवोमहित्वंतदर्थमन्व
 रुणमित्रचारु ॥ त्रीरोचुनादिव्याधारयंतहिरण्ययाःशुच्योधारपूताः ॥ अस्वमजोअनिमिषा
 अदंब्धाउरुशंसांऋजवेमर्त्याय ॥ त्वंविश्वेषांवरुणासिराजायेचदेवाअसुरयेचमर्ताः ॥ शतंनो
 रास्वशरदोविचक्षेश्यामाधूषिसुधितानिपूर्वा ॥ ८ ॥ प्रातर्युजाविबोधयाश्वनावेहगच्छतां ॥
 अस्यसोमस्यपीतथे ॥ आराच्छत्रुमपंबाधस्वदूरमुग्रोयःशंबःपुरुहूतनेन ॥ अस्मेधेहियवंमद्गोम

दिन्द्रकृथीधियंजरित्रेवाजर्त्लां॥विश्वेदेवाःशास्तनमायथेहहोतावृतोमनैवयन्निषद्यं॥ प्रमेब्रूतमागधे
 यंयथावोयेनपथाहव्यमावोवहानि॥ पंचजनाममहोत्रंजुषंतांगोजाताउनयेयुद्धियांसः॥ पृथिवीनःपा
 थिवात्पात्वंहंसोतरिक्षंदिव्यात्पात्वस्मान्॥ प्रीणीताश्वान्हितंजयाथस्वस्तिवाहंथमित्कणुह्वं॥द्रोणां
 हावमवतमश्मंचक्रमंसत्रकोशंसंचतानृपाणौ॥आवोधिथयुद्धिधावतंऊतयेदेवादिवीथंजतांयुद्धियामि
 ह॥सानोदुहीयद्यसेवगत्वीसहस्रंधारापयसामहीगौः॥९॥ मुनयोवातरशनाःपिशंगावसनेमलां॥
 वात्स्यानुध्रांजियंतियद्देवासोअविक्षत॥ सवितायत्रैःपृथिवींमरण्यादस्कंसनेसंवित्वाद्यामदंहृत्॥
 अश्वमिवायुक्षुनिमंतरिक्षमूतूर्बद्धंसंवित्तासमुद्रं॥ आत्मादेवानांभुवनस्युगर्भोयथावशंचरतिदे
 वरुषः॥ घोपाइदंस्यशृण्विरेनरूपंतस्मैवातायहविषाविधेम॥ चतुर्दशान्येमहिमानोअस्यतंधीरावा
 चाप्रणयंतिसस॥ आमार्तन्तीर्थकइहप्रवोचद्येनंपथाप्रपिबंतिसुतस्य॥ तामदसानामनुपोदुरोणआ
 धृत्तंरथिसहवीरवचस्ये॥ कृतंतीर्थसुप्रपाणंशुमस्पतीस्थाणुंपथेष्टामपदुर्भतिहंतं॥ अर्धाधिधीति

रसस्रग्रमंशास्तीर्थेनदस्ममुपयंत्युमाः ॥ अभ्यानश्मसुवितस्यशङ्खनवेदसोअमृतांनामभूम ॥ १० ॥
 उतनरुनापवयापवस्वाधिश्रुतेश्रवाध्यस्यतीर्थे ॥ षड्विंशह्रानैगुतोवसूनिवृक्षंनपक्कंधूनवद्रणाय ॥
 आदित्याअवहिल्यताधिकूलादिवस्पर्शः ॥ सुतीर्थमर्वतोयथानुनेनेषथासुगमनेहेसौवळतयःसुकृत
 योवळतयः ॥ यज्ञोद्दिर्भेद्रंक्राश्रद्धंधजुद्धुराणश्चिन्मनंसापरियन् ॥ तीर्थेनाच्छातातृषाणभोकोदीर्घो
 नसिद्धमाहणोत्यध्वा ॥ प्रतिप्रयाह्रिद्रमीळ्ढुपोनुन्महःपार्थिवेसदेनेयतस्व ॥ अग्रयेदेषापृथुवृक्षासुर
 तास्तीर्थेनार्यःपौस्थानितस्थुः ॥ ११ ॥ योनोअग्नेअररिवाँअघ्रायुररातीवागुचर्यतिह्वयेन ॥ मंत्रो
 गुरुःपुनरस्तुसोअस्माअनुमृक्षीष्टतन्वदुरुक्तैः ॥ वयमुत्वागृहपतेजनानामग्नेअकर्मसमिधांबुद्धंते ॥ अ
 स्थरिणोगार्हपत्यानिस्तुतिग्मेननस्तेजसांसंशिशायि ॥ अग्नेमूळमहौअसियईमादेवयुजनै ॥ इयेथ
 बार्हिरासदं ॥ युवंहगर्भजगतीषुधतयोयुवंविशेषुभवनेष्वंतः ॥ युवमग्निचक्षुषणावपश्रुवनस्पतरिंशिव
 न्नावरयेथां ॥ युवंहस्थोभिषजाभिषजेभिरथोहस्थोरथ्याश्श्रथ्यैभिः ॥ अथोहस्रत्रमधितथउग्रायो

धित्तिचिनवद्विद्वान्पुष्टेर्ववीताहृजिनाचमर्तान् ॥ रायेचनःस्वपत्यायदेवदित्तिचरास्वादितिमु
 ष्यं ॥ नमइदुग्रंनमआर्विवासेनमौदाथारपृथिवीमुतद्यां ॥ नमोदेवेभ्योनर्मईशरुषांकृतंचिदेनोनमसा
 र्तिवासे ॥ १४ ॥ इपुदादिवेन्मुमुक्षानः॥स्विन्नःस्नात्वीमलादिव ॥ पूतंपुवित्रेणेवाज्यमापःशुंधंतुमै
 सः ॥ ममनामप्रथमंजातवेदःपितामाताचदधतुर्यदग्रे ॥ तत्त्वंभिभृहिपुनराममैतोस्त्ववाहंनामबिभ
 राण्यग्रे ॥ यवेसूर्यस्वर्मानुस्तमसाविध्यदासुरः ॥ अत्रयस्तमन्वर्विदन्नृत्य१न्येअशान्कुवन् ॥ १५ ॥
 ॥ अथ श्रीसूक्तशेषः ॥ ॥ पद्माननेपद्मिनिपद्मपत्रेपद्मप्रियेपद्मदलायतासि ॥ विश्वप्रियेविश्वमनो
 नुकूलेत्वत्पादपद्मंत्सृदिसंनिधत्स्व ॥ पद्माननेपद्मकुरुपद्माक्षीपद्मसंभवे ॥ तन्मेभ्रजसिपद्माक्षियेन
 सौख्यंलभाम्यहं ॥ अश्वदायैगोदायैधनदायैमहाधने ॥ धनंभ्रजुषतादेवीसर्वकांमांश्चदेहिमे ॥ पुत्र
 पौत्रधनंधान्यंहस्त्यश्वादिगुरेयं ॥ भ्रजानांभर्वसिमाताआयुष्मंतंकरोतुमे ॥ धनमभ्रिर्धनंवायुर्धनंसू
 र्यधनंवसुः ॥ धनंभिद्रोबृहस्पतिर्वरुणंधनमश्रुते ॥ वैनतेयसोमंपिबसोमंपिबलुचत्रहा ॥ सोमंधन

स्यसोमिनोमद्यंदंदांतुसोमिनः ॥ नक्रोधोनचमात्सर्यनलोसोनशुभामतिः ॥ भवतिकृतपुण्यानां
 मक्तानांश्रीसूक्तजपकारिणां॥सरसिजेनिलयेसरोजहस्तेधवलतरंशुकगंधमाल्यशोभे॥भगवतिहरिव
 ह्ममेमनोज्ञेत्रिभुवनभूतिकरिप्रसीदमर्त्यं ॥ विष्णुपत्नीक्षमादेवीमाधवीमाधवप्रियां ॥ विष्णोःप्रि
 यसखीदेवीनमाम्यच्युतवह्मभां ॥ श्रीवर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधास्पवमानंमहीयते ॥ धा
 न्यंघनंपशुंबहुपुत्रलाभंशतसंवत्सरंदीर्घमायुः ॥ १६ ॥ मनोजवाअर्यमानआयसीभंतरत्पुरं ॥
 दिवंसुपूर्णौगत्वायुसोमंवञ्जिणआमंरत् ॥ अधिद्वयोरदधाउक्थ्यं१वचोयतस्रुचामिथुनायासंपयतः ॥
 असंयत्तोन्नतेतेक्षेतिपुष्यंतिमद्राशक्तिर्यजमानायसुन्वते॥तासुजिह्वाउपह्वयेहोतारदिव्याकवी ॥ यज्ञं
 नोयक्षतागिमं॥इळासरंस्वतीमूहीनिसोदेवीर्मयोभुवः॥बृहिःसीदंत्वस्त्रिधः॥१७॥ (प०-त्रिःसप्तसखा
 नद्यौमहोरपोवनस्पतीन्पर्वतांअग्निमृतयो॥कुशानुमस्तृन्तिष्यंसंधस्थआरुद्रंरुद्रेषुलुद्रिथंहवामहे॥१॥)
 ॥ अथ श्राद्धमंत्राः ॥ पृथिवींतेवितंतंब्रह्मणस्पतेप्रभुगर्गाणिपर्येतिविश्वतः ॥ अतंसतनूर्नतद्दामो

अंश्रुतेशुतासइहहैतुस्तत्समाशत ॥ तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेशोर्चतो अस्यतंतवोर्व्यस्थित् ॥
 अर्वत्यस्यपवीतारंमाशबोदिवस्पृष्टमधितिष्ठतिचेतसा ॥ पवित्रवंतःपरिवाचमासतेपितैपांप्रतोअ
 म्निरेक्षतिव्रतं ॥ महःसंमुद्रंवरुणस्तिरोधेधीराइच्छेकुरुर्ध्वारमं ॥ शरासःकुशरासोदमसःसैर्या
 उत ॥ मौजाअट्टघावैरिणाःसर्वसाकंच्यलिप्तत ॥ माकाकंबीरमुद्दुहोवनस्पतिमशस्तीर्विहिनी
 नशः ॥ मोतसूरोअहृण्वाचनय्रीवाआदधतेवेः ॥ यवोसिधान्यराजस्वंवारुणोमधुसंयुतः ॥ निर्णोदः
 सर्वपापानांपवित्रमृषिसिःस्मृतं ॥ तिलोसिसोमदेवत्योगोसवेदेवनिर्मितः ॥ प्रत्नवद्भिःप्रत्तःस्वधया
 पितृनिर्गोहोकात्रीणयाहिनःस्वथानमः ॥ आर्यंतुनःपितरःसोम्यासोर्गिष्वात्ताःपृथिभिर्देवयानैः ॥
 अस्मिन्यज्ञेस्वथयामदंत्वधिभ्रुवंतुनैवंत्वस्मान् ॥ धूरसिधूर्वधूर्वतं धूर्वतं योस्मान्धूर्वतितंधूर्वयंबयंधूर्वा
 मः ॥ उर्दीप्य० ॥ प्रत्यग्नेहरंसाहरःश्रृणीहि विश्वतःप्रति ॥ यानुधानं स्यरक्षसोबलं विरुजवीर्यं ॥ अ
 पहताअसुरारक्षांसिपिशाचा ॥ येक्षयंतिपृथिवीमनु ॥ अन्यत्रेतोगच्छंतुयत्रैतेषांगतंमनः ॥ विश्वे

देवासआगतशृणुतामंइमंहवं ॥ एदंबहिर्निषदिता। विश्वेदेवाः शृणुतेमंहवंमेयेअंतरिक्षेयउपद्यविष्ट ॥
येअग्निजिह्वाउतवायजत्राआसद्यास्मिन्बहिर्षिमादयध्वं ॥ यादिव्याआपुःशुर्थेविसंबसूवुर्याअंतरि
क्ष्याउतपार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णायज्ञियास्तान्आपुःशंस्योनामंवंतु ॥ २ ॥ उशंतंस्त्वानिधीमद्युशंतःस
मिधीमहि। उशन्नुशतआवहपितृन्हृषिषेअत्वे। आमासुपक्कमैरंयआसूरीरोहयोदिवि ॥ घर्मनसामन्त
पनासुवृत्किमिर्जुष्टुं गिर्वणसेवृहत् ॥ सोमोधेनुंसोमोअर्वितमाशुसोमोवीरंकर्मण्यददाति ॥ सादन्थंविद
थ्यंसमेधंपितृश्रवणंयोददांशदस्मै ॥ ३ ॥ ॥ अन्नस्तुतिसूक्तं ॥ उपह्वयेसु० क० ॥ २ ॥ इंद्रदृत्थया
मकोशाअमूवन्यज्ञायशिक्षणलेसखिभ्यः ॥ दुर्मायवोदुरेवामत्यसोनिषंगिणोरिपवोहृत्वासः ॥
वाशीमंतकृष्टिमंलोमनीषिणःसुधन्वान्इषुमंतोनिषंगिणः ॥ स्वश्वाःस्थसुरथाःशुश्रमातरःस्वायुधाम
रुतोयाथनाशुमं ॥ १ ॥ सइषु० ॥ चतुष्कपर्दायुवतिःसुपेशाधृतर्मतीकावयुनानिवस्ते ॥ न
स्यांसुपर्णाह्रवणानिषेदतुर्यत्रदेवादधिरेभांगधेयं ॥ एकःसुपर्णःससंसुद्रमाधिवेशमइदंविश्वंमुवन्वि

चंष्टे ॥ तंपाकेनमनसापश्यमंतितस्तंमातारेऽबिहसउरेऽबिहमातरं ॥ सुपूर्णविप्राःकवयोवचोभिरेकंसं
 तंबहुधाकल्पयन्ति ॥ छंदोसिचदधतोअध्वरेषुग्रहान्तसोमस्यमिमतेद्वादश ॥ २ ॥ पितुनुस्तोषंमहो
 धर्माणंतविषी ॥ यस्थत्रितोव्योजसावृत्रंविपर्वमर्दयत् ॥ स्वादोपितोमधोपितोवयंत्वावष्टणमहे ॥ अ
 स्माकंभवितामंभ ॥ उपनःपितवाचरःशिवःशिवाभिरूतिभिः ॥ मयोमुरद्विषेण्यःसखासुशेवोअहं
 नेपितो ॥ प्रस्त्राद्धानोरसानालुचिग्रीवाइवरेते ॥ ३ ॥ त्वेपितोमहानदिवानामनोहितं ॥ अकारि
 चारुकेतुनालवाह्मिवंसावधीत् ॥ यद्ददोपितोअजगन्विवस्वपर्वतानां॥अत्राचिभोमधोपितोरंमक्षाय
 गम्याः ॥ यद्रूपामोषधीनांपरिशमारिशामहे ॥ बालापिपीवइद्धं ॥ यत्तैसोमगवाशिरोयवाशिरोम
 जामहे ॥ वाता० ॥ कूरंभओषधेमवपीवैवुकुडदारथिः ॥ वाता० ॥ तंत्वावयंपितोवचोभिर्गो
 नहव्यासुषूदिम ॥ देवेभ्यस्त्वासधुमादंमुस्मभ्यंत्वासधुमादं ॥ कथान०कृ० ॥ १ ॥ कस्त्वांस

त्योमदानांमंदिष्टोमत्सदंधसः ॥ दृढ्वाचिवाहरुजेवसु ॥ अमीषुणःसर्वोनामविताजरितुणां ॥
 शतंमवास्युतिभिः ॥ ४ ॥ नवाउदेवाःशुभ्रमिद्वधंदुरुताशितमुर्पगच्छंतिमृत्यवः ॥ उतोरुधिःपृ
 णनोनोपदस्यत्युतार्पणन्मर्दितारुनविंदते ॥ यआध्रायंचकमानायपित्वोन्नवान्सत्रेफ्रितायोपज
 र्गमुषे ॥ स्थिरंमनःकणुतेसेवतेपुरोतोचित्समर्दितारुनविंदते ॥ सइच्छेजोयोणुहवेददात्यन्नकामायच
 रतेकूशाय ॥ अरंमसैभवतियामहूताउनापूरीषुकणुतेसर्वाय ॥ नससखायोनददातिसरव्येसचा
 भुवेसचमानायपित्वः ॥ अपास्मात्प्रेयान्नतदोकोअस्तिपृणंतंमन्यमरणंचिदिच्छेत् ॥ पूणीयादि
 न्नायमानायतव्यान्द्रार्थीयांसमनुपश्येतर्था ॥ ओहिवंतैरथप्रेवचक्रान्मन्यमुर्पतिष्ठतरायः ॥ १ ॥
 मोघमन्नंविंदतेअप्रचेताःसत्यंब्रवीमिवधइत्सतस्य ॥ नार्यमणंपुष्यतिनोसर्वायंकेवलवोभवति
 केवलादी ॥ कृषन्निःफालुआशितंरुणोति्यन्नध्वानमर्पष्टक्केचरिन्नैः ॥ वदन्ब्रह्मावदतोवर्नाया
 न्पृणन्नापिरपृणंतममिष्यात् ॥ एकंपाद्भयोद्विपदोविचंक्रमेद्विपात्रिपादंमभ्येतिपृश्वात् ॥ चतु

ष्पादेति द्विपदामभिस्वरेसंपश्यन्पुङ्कीरूपतिष्ठमानः ॥ समौचिद्धस्तौनसमंविष्टःसमातराचिन्नसमं
 दुहते ॥ यमयोश्चिन्नसमावीर्याणिज्ञातीचित्संतौनसमंपृणीतः ॥ २ ॥ जगुग्भामतेदक्षिणभिद्रहस्तं
 वसूयवोवसुपतेवसूनां ॥ विद्महिवागोपतिशूरगोनामस्मभ्यंचित्रंहवर्षंरुधिदाः ॥ असन्नभीमदंत
 त्ववप्रियाअधूषत ॥ अस्तौषतस्वभानवोविभ्रानविष्टयामतीयोजाव्धिद्रतेहरी ॥ नमोवःपितरहृषेन
 मोवःपितरकुर्जनमोवःपितरःशुष्मायनमोवःपितरोघोरायनमोवःपितरोजीवायनमोवःपितरोरसाय ॥
 स्वधावःपितरोनमोवःपितरोनमएतायुष्माकंपितरंहमाअस्माकंजीवावोजीवंतहृसंतःस्थाम ॥ म
 नोन्वाहुवामहेनाराशेनसोभेन ॥ पितृणांचमन्मजिः ॥ आतएतुमनःपुनःकत्वेदक्षायजीवसे॥ज्यो
 कचसूर्यदृशे ॥ पुनर्नःपितरोभनोददातुदेव्याजनः ॥ जीवंत्रातंसचेमहि ॥ परेतनपितरःसोम्यासौंग
 मीरेभिःपृथिभिःपूर्विणेभिः ॥ दत्वायास्मभ्यंद्रविणेहसंद्रर्यिचनःसर्ववीरंनिर्यच्छत ॥ यत्रतत्परमं
 पदंविष्णोर्लोकिकमहीयते॥द्वैवैःसुकृतकर्मभिस्तत्रमामुमृतंकूर्धाद्रियेदोपरिखव॥यत्रतत्परमार्थमुताना

मधिपतिः ॥ भावभावित्रयोर्गीश्वतत्रमाममृतंकूर्धीद्रायै ॥ यत्रगंगाचयमुनाचयत्रप्रचीसरस्वती ॥
यत्रसोमेश्वरोद्देवस्तत्रमाममृतं ॥ १ ॥ वाजेवाजेवतवाजिनोनोधनेषुविप्राअमृताकतज्ञाः ॥ अस्य
मध्वःपिबतमादयध्वंतुसायातपृथिभिर्देव्यनैः ॥ आमावाजस्यप्रसवोजगम्यादाद्यावापृथिवीविश्व
शंसू ॥ आमागंतांपितरामातराचामासोमोअमृतत्वार्यगम्यात् ॥ दातारोनोमिषवर्धतावेदाःसंततिरेव
नः ॥ श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्तु ॥ अन्नंचनोबहुमवेदतिथीश्वलभेमहि ॥ याचि
तारश्वनःसंतुमाचयाचिष्मकंचन ॥ १ ॥ दातारोवोमिषवर्धतावेदाःसंततिरेववः ॥ श्रद्धाचवोमा
व्यगमद्बहुदेयंचवोस्तु ॥ अन्नंचवोबहुमवेदतिथीश्वलमध्वं ॥ याचितारश्ववःसंतुमाचयाचिष्मकंचन ॥
स्वादुषंसदःपितरोवयोधाःकृच्छ्रेश्रितःशक्तीवंतोगभीराः ॥ चित्रसेनाइषुंबलाअमृधाःसतोवीरा
उरवोऽनातसाहाः ॥ ब्राह्मणासःपितरःसोम्यासःशिवेनोद्यावापृथिवीअनुहसा ॥ पूषानःपानुदुरिता
दंतावृधोरक्षामार्किर्नोअघशंसईशत ॥ इहैवस्तंमावियौष्टंविश्वमायुर्व्यश्रुतं ॥ कीळ्णोपुत्रेनसृष्टिर्भो

१५
 १
 देमानौस्वेगृहे ॥ वसिष्ठः पितृवद्वाचमकतदैवाईळानाकपिवस्वस्तये ॥ प्रीताह्वज्ञानयः काममे
 त्यास्मेदेवासोवधुनावसु ॥ देवान्वसिष्ठोऽमृतान्वदेयविश्वामुर्वनाभिप्रतस्थुः ॥ तेनोरासंतामुरुगाय
 मध्ययंपातस्व ॥ ३ ॥ अथ पिंडपितृयज्ञादिभंत्राः ॥ धेरूपानिप्रतिमुंचमाना असुराः संतः
 स्वधयाचरंति ॥ परापुरोनिपुरोयेभंरत्यग्निष्टौल्लोकाल्प्रणुदात्वस्मात् ॥ अपहृता असुरारक्षांसि वेदिष
 दः ॥ वीरंमेदत्तपितरः ॥ ३ ॥ यदंतरिक्षं पृथिवीमुतद्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिंसिम ॥ अग्निर्मात
 स्मादेनसो गार्हपत्यः प्रमुंचतुक्करोतु मामेनेनसं ॥ आधत्तपितरोगर्भकुमारं पुंष्करस्त्रेजं ॥ यथायमं रूपा
 असत् ॥ ग्रीष्मोहं मुंतक्त्तवः शिवानो वर्षाः शिवा अंमयाः शरन्नः ॥ संवत्सरोधिपतिः प्राणदोनो होरा
 त्रेकणुतां दीर्घमायुः ॥ आपो मरीचीः प्रवहंतु नो धियो धातां समुद्रो वहेतु पापं ॥ भूतं संविष्य दमं धं विश्व
 मस्तु मे ब्रह्माधिगुप्तः स्वाराक्षराणि ॥ विश्वं आदित्यावसं वश्वे देवा रुद्रा गोसरो मरुतः सदंतु ॥ ऊर्जप्र
 जाममृतं पिन्वमानः प्रजापतिर्भयपरमेष्ठी देधानु ॥ १ ॥ इति पिंडपि ० ॥ (अत्र पितरो मादयध्वं यथा माग
 माहृषायध्वं अमीमदंतपितरो यथा मागमावृषायीषत । एतद्दः पितरो वा सोमानो न्यत्पितरो युं गध्वम् ॥)

॥ अथाभिश्रवणसूक्तानि ॥
 तत्रादौ देवसूक्तानि ॥ ॥ सहस्रं शीर्षां ० वर्गाः ३ ॥ अग्निमीळे ० व० ३ ॥ ममाग्नेवर्चो वि
 बहवेष्वं ० व० २ ॥ ॥ नासदासीन्नोसदासीत्तदानीनासीद्रजो नोव्योमापुरोयत् ॥ किमावरीवः
 कुहकस्य शर्मभंमः किमासीद्ब्रह्महं गभीरं ॥ नमृत्युरासीद्भृत्तं नर्हि नरात्र्या अहं आसीत्यकेतः ॥ आनी
 दवान्स्वधया तदेकं तस्माद्द्वान्यं न परः किंच न आस ॥ तमं आसीत्तमं सागुळ्ममग्रे प्रक्रेतं संल्लिप्तं सर्वमाहुदं ॥ तु
 च्छयेनाभ्वर्षिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकैकामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासी
 त् ॥ सतो बंधुमसंति निरंविदन्द्दुदिप्रतीष्याकवयो मनीषातिरश्चीनो वितंतोरश्मिरेषामुधः स्विदासी ३
 दुपरिस्विदासी ३त् ॥ स्तोधा आसन्महिमानं आसन्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ को अ
 धो वैदुक् इह प्रवोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः ॥ अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथाको वैदयत
 आब्रुमू ॥ इयं विसृष्टिर्यत आब्रुमू यद्विवादे यद्विवा ॥ यो अस्य आध्यक्षः परमेव्यो मन्तसो

अंगवेद्यदिवानवेद ॥ १ ॥ योयज्ञो विश्वतस्तंतुमिस्ततएकशतदेवकुर्मभिरार्थतः ॥ इमेवयंतिपि
 तरोयआथयुःप्रव्यापव्येत्यासतेतते ॥ पुमौएनंतैनुत्तरकृणुत्तिपुमान्वितन्त्रेअधिनकेअस्मिन् ॥
 इमेमयूखाउपसेदुखसदःसामानिचक्रुस्तसराणयोतवे ॥ कासीत्प्रमामप्रतिमाकिंनिदानमाज्यंकिमासी
 तपरिधिःकआसीत् ॥ छंदःकिमासीत्प्रउंगंकिमुक्थयद्देवादेवमयंजंतविश्वे ॥ अग्नेर्गायत्र्यभवत्सयु
 ग्वोष्णिहयासचित्तासंबसूव ॥ अनुष्टुप्सोमउक्थैर्महंस्वान्बृहस्पतैर्बृहतीवाचंभावत् ॥ विराणिमत्राव
 रुणयोरसि श्रीरिंद्रस्यत्रिष्टुबिहसागोअह्नः ॥ विश्वान्देवान्जंगत्यांविवेशतेनचाकल्यप्रकृषयोमनुष्याः ॥
 चाकल्यप्रेतेनकृषयोमनुष्यायज्ञेजातेपितरौनःपुराणे ॥ पश्यन्मन्येमनसाचक्षसातान्यइमंयुज्ञमयंजंत
 पूर्वं ॥ सहस्त्रोमाः० ऋक् १ ॥ सूक्तं ॥ २ ॥ नतद्विवानपृथिव्यानुमन्येनयज्ञेननोतशमीभिरासिः ॥
 उबजंतुंतसुभ्वः१ःपर्वतासोनिहीयतामलियाजस्ययुष्ठा ॥ अतिवायोमस्तोमन्यतेनोब्रह्मवायःक्रियमा
 णंनिनिस्तात् ॥ तपूषितस्मैष्टजिनानिसंतुब्रह्मद्विषमभितंशौचतुद्यौः ॥ किमंगत्वाब्रह्मणःसोमगोपां

किमंगत्वाद्दुरमिशस्तिपानं ॥ किमंगनःपश्यसिनिन्द्यमानान्ब्रह्मद्विषेतपुषिहेतिमस्य ॥ अवंतुमामु
 षसेजायमानाअवंतुमासिधवःपिन्वमानाः ॥ अवंतुमापर्वतासोद्भुवासोवंतुमापितरोदेवहूतौ ॥ वि
 श्वदानीसुमनसःस्यामपश्येमुनुसूर्यमुच्चरंत ॥ तथाकरद्वसुपतिर्वसूनादेवाँओहानोवसागमिष्टः ॥ १ ॥
 इंद्रोनेदिष्टमवसागमिष्टःसरस्वतीसिंधुभिःपिन्वमाना ॥ पर्जन्योनओषधीभिर्मयोशुरभिःसुशंसःसुहवः
 पितेवाँविश्वेदेवासआ०क. १॥ योवोदेवाद्युतस्तुनाहव्येनप्रतिभूषति॥तंविश्वउपगच्छथा॥ उपनःसुन
 वोगिरःशृण्वंत्वमृतस्यये ॥ सुमळीकांभवंतुनः ॥ विश्वेदेवाँऋतावृधंऋतुभिर्हवनश्रुतः ॥ जुषंतायुज्यं
 पर्यः ॥ २ ॥ स्तोत्रमिन्द्रोमरुद्गणस्त्वहंमान्मित्रोअर्यमा ॥ इमाहव्याजुषंतनः ॥ इमंनोअग्नेअध्व
 रंहोतर्वयुनशोर्यज ॥ चिकित्वान्दैव्यंजनं ॥ विश्वेदेवाःशृ०क० १ ॥ विश्वेदेवामंशृण्वंतुयज्ञियो
 उमरोदसीअपानपाञ्चमन्म ॥ मावोवचाँसिपरिचक्ष्याणिवोचंसुम्रेष्विद्वोअंतंमामदेम॥ येकेचज्जमा०
 क. १ ॥ अशीपर्जन्यावतंतधिर्यमेस्मिन्हवैसुहवासुष्टुतिनः ॥ इळांमन्योजूनयद्गर्भमन्यःप्रजावती

रिषार्थत्तमस्मे ॥ स्त्रीर्णबर्हिषिसमिधानेअग्नौसूक्तेनमहानमसाविवासे ॥ अस्मिन्नौअद्यविदथे
 यजत्राविश्वेदेवाहृविषिमादयध्वं ॥ २ ॥ सू० ३ ॥ अस्तुश्रौषट्पुरोअग्निधियादंघआनुतच्छर्धादि
 व्यंष्टणीमहइंद्रवायूष्टणीमहे ॥ यद्धक्राणाविवस्वत्तिनामासंदायिनव्यंसी ॥ अधप्रसूनउपयंतुधीत
 योदेवाँऽअच्छानधीतयः ॥ यद्धत्यन्मित्रारुणावृतादध्याददाथेअचृतंत्वेनमन्युनादक्षस्यस्वेनमन्यु
 नां ॥ युवोरित्थाधिसद्भस्वपश्यामहिरण्ययं ॥ धीमिश्चनमनसास्वेभिरक्षमिःसोमस्यस्वेभिरक्षमिः ॥
 युवांस्तोभेमिर्देव्यंतौअश्विनाश्रावयंतइवश्लोकंमायवोपुवांहव्याभ्याइयवः ॥ युवोर्विश्वाअधिश्चि
 यःपृक्षश्चविश्वेदसा ॥ मुषायंतैवांपवयोहिरण्ययेरथेदत्ताहिरण्यये ॥ अचेतिदत्ताव्युनाकंसृणव
 थोयुंजतैवारथयुजोदिविष्टिष्वध्वस्मानोदिविष्टिषु ॥ अधिवांस्थामबंधुरेथेदत्ताहिरण्यये ॥ पृथेवयं
 तावनुशासंतारजोँजसाशासंतारजः ॥ शचीभिर्नःशचीवसुदिवानक्तंदशस्यतं ॥ मावांरातिरुपंदस
 त्कदाचनास्मद्गालिःकवाचन ॥ १ ॥ वर्षन्निद्रवृषपाणासइंदवइभेसुताअद्रिषुतासउद्भिदस्तुभ्यंसु

तासं उच्छिदः । ते त्वा मंदंतु दावने मे हे चित्राय राधसे । गीर्भिर्गिर्वाहः स्तवमान आगं हे सुमृळीकोत्त आगं हि ।
 ओषूणो अग्नेशृणु हित्वमीच्छितो देवेभ्यो ब्रवसिय द्वियेभ्यो राजभ्यो यद्वियेभ्यः ॥ यद्द्वित्याभंगिरोभ्यो
 धेनुं देवा अदंतन ॥ वितां दुहे अर्यमाकर्तरी स चोऽलुपतां वेदमे स चां ॥ मोषुर्वो अस्मदभितामिनि
 पौस्यासनां भूवन्द्युम्ना निमोत जा रिषु रस्मत्पूरोत जा रिषुः ॥ यद्द्विश्रित्रयुगे युगे नव्यं घोषादमर्थं ॥
 अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टं दिधृतो यच्च दुष्टं ॥ दध्यद्द्वै मे जनुषं पूर्वोऽंगिराः प्रियमैधः कणवो अत्रि
 मनुर्विदुस्ते मे पूर्वमनुर्विदुः ॥ तेषां देवेष्वायति रस्माकं तेषु नामयः ॥ तेषां पदेन मत्थानं मे गिरिद्राक्षी आ
 नमे गिरा ॥ होतो यक्षद्वनि नो वंत वार्यं बृहस्पतिर्यजति वेन उक्षभिः पूरुवोरै मिरुक्षभिः ॥ जगुभ्मादूर आदिशं
 श्लोकं मद्देरधत्सना ॥ अधोरयदुरिदां नि सु क्रतुः पूरुसद्भ्यां नि सु क्रतुः ॥ ये देवा सो दिव्ये कां दश स्थपृथिव्या
 मध्ये कां दश स्थ ॥ अप्सु क्षिनो म हिनै कां दश स्थ ते देवा सो यज्ञ मि मं जुषध्वं ॥ २ ॥ सू० ४ ॥ यज्ञो देवानां
 प्रत्येति सुश्रमादि त्यासो भवता मृळ्यंतः ॥ आवोर्वाची सुमतिर्ववृत्या दं हो श्रिद्यार्वा विवित्तरा संत ॥ उप

नोदेवाअवसागंभृत्वंगिरसांसामभिःस्तूयमानाः॥ इन्द्रं द्विधैर्मरुतो मरुद्गिरादित्यैर्नो अदितिः शर्मयंसत् ॥
 तन्न इन्द्रस्तद्धरुणस्तदग्निस्तदर्यमातस्तं विताचनोधात् ॥ तन्नो मित्रो ० ॥ १ ॥ ॥ अथ राक्षोघ्नसू ० ॥ कृणु
 स्वपाजः प्रसिर्तिनपृथ्वीया हिराज्जेवामवै इमेनातुष्वीमनुप्रसिर्तिद्रूणानोस्वासि विध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ॥
 तव भ्रमासं आशुयापंतं त्यनुस्पृश वृषुताशोशुचातः ॥ तपूष्यमेजुह्वापतंगानसंदिनो विसृज विष्वगुल्काः
 ॥ प्रतिस्पशो विसृजतूणितमो भवापायुर्विशो अस्या अदंबधः ॥ योनोदूरे अचशंसो यो अंत्यग्नेमाकिं
 छेव्यथिरादंथपीत् ॥ उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यं मित्राँऽओषतात्तिग्महेते ॥ योनो अरांतिसमिधा
 नचक्रेनी चान्धक्ष्यत संनशुष्कं ॥ ऊर्ध्वीमं वप्रति विध्यध्वस्मद्रा विष्कणुष्वद्व्यान्यमे ॥ अवस्थिरांतनु
 हियातुजूनोजामिजार्मिप्रमृणी हिरात्रून् ॥ १ ॥ सतेजानाति सुमति य विष्टय इव ते ब्रह्मणे गतु मे
 रत् ॥ विश्वान्यस्मै सुदिना निरायोद्युन्नान्यर्यो विदुरो अमिद्यौत् ॥ सेंदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुयस्वा
 नित्येन हविषाय उक्थैः ॥ पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदं स्मै सुदिना सासं दिष्टिः ॥ अर्चामिते सु

मतिषोऽर्ष्वर्वाक्सतेवावाताजलाभिर्यगीः ॥ स्वर्षास्वासुरथांमर्जयेमास्मेक्षत्राणिधारयेरनुच्युत् ॥
 इहत्वाभूर्याचैरदुपत्मन्दोषावस्तदीदिवान्समनुच्युत् ॥ क्रीळितस्वासुमनसःसपेमाभिद्युम्नातस्थिवां
 सोजनानां ॥ यस्त्वास्वर्षःसुहिरण्योअग्रउपयानिवसुमत्तारथेन ॥ तस्यत्राताभवसितस्यसरवा
 यस्तआतिथ्यमानुषगुजुजोषत् ॥ २ ॥ महोरुजाभिवंधुतावचोभिस्तन्मापितुर्गोतमादन्विषयाय ॥
 त्वनोअस्यवचसश्चिक्खिहोतर्यविष्ठसुक्रतोदमूनाः ॥ अस्वमजस्तरणयःसुशेवाअतंद्रासोवृकाअ
 श्रमिष्ठाः ॥ तेपायवःसऽर्थचोनिषद्याभेतवनःपांत्वमूर ॥ येपायवोभामतेयतेअश्रपश्र्यतेअंधुं
 रितादरक्षन् ॥ रक्षतान्सुकृतोविश्वेवैदादिप्संतइद्विपवोनाहदेमुः ॥ त्वयावयंसंधन्यं१स्त्वोत्ता
 स्तवप्रणीत्यश्यामवार्जान् ॥ उमाशंसोसूदयसत्यतानेनुषुयाकणुखन्हयाण ॥ अयातेअश्रेसमिधा
 विधेमप्रतिस्तोमंशस्यमानंगृभाय ॥ दहाशसोरक्षसःपाखं१स्मान्द्रुहोनिहोभिन्नमहोअवृथात् ॥ ३ ॥
 सु०२ ॥ अग्नेहंसिन्यं१त्रिणंदीद्यन्मर्त्येष्व ॥ स्वैक्षयेशुचित्रत ॥ उत्तिष्ठमिस्वाहुताधेतानिप्र

निमोदसे॥यत्वास्तुचःसमस्थिरच॥सआहुतोविरोचतेगिरोक्तेन्योगिरा ॥ सुचाप्रतीकमज्यते॥घृतेना
 शिःसमज्यतेमधुप्रतीकआहुतः॥ रोचमानोविमावसुः॥जरमाणःसमिधसदेवभ्योहव्यवाहन॥घृतेना
 हवतुमर्त्याः॥१॥तंमर्ताअमर्त्यघृतेनार्थिसपर्यता॥अदाभ्यंगुहर्पति॥अदाभ्येनशोचिषाश्रेहास्त्वदह ॥
 गोपाश्रुतस्थदीदिहि ॥ सत्वमश्रेप्रतीकेनमर्त्योषयातुधान्यः ॥ यजिह्वमानुषेजने ॥ २ ॥ सूक्तं ३ ॥ उरुक्षथेषुदीचत् ॥ तंवांगीभिरेरु
 क्षयाहव्यवाहंसमीधिरे ॥ शिशानोअग्निःकनुभिःसमिद्धःसनोदिवासरिषःपातुनक्तं ॥ अयोदंदोअग्नि
 थिष्टमुपर्यामिशर्म ॥ आजिह्वयामूरदेवात्रमत्वकृव्यादोवृषत्वथपिथस्वासत् ॥
 पायातुधानानुपस्पशजातवेदःसमिद्धः ॥ आजिह्वयामूरदेवात्रमत्वकृव्यादोवृषत्वथपिथस्वासत् ॥
 उभोभयाविन्नुपधेहिदंद्वाहिस्रःशिशानोवरंपरंच ॥ उतातरिक्षेपरियाहिराजन्जमैःसधेद्यभियातुया
 नान् ॥ यज्ञैरिषुःसुनममानोअशेवाचाशुल्यौअशनिमिदिहानः ॥ तामिबिध्युहृदयेयातुधानान्पत्नी
 चोब्राह्मन्प्रतिमंग्वेषाम् ॥ अश्रेत्वचंयातुधानस्यमिधिह्रसाशनिर्हरसाहृत्वेनं ॥ प्रपर्वाणिजातवेदः

शृणीहिक्वयाक्त्रविष्णुर्विचिनोतुष्टुक्वणं ॥ १ ॥ यत्रेदानींपश्यसिजानवेदस्तिष्ठंतमग्रतवाचरंतं ॥
यद्वांतरिक्षेपृथिभिःपतंतंतमस्ताविष्यशर्वाशिशानः ॥ उतालंभंस्पृणुहिजातवेदआलेमानादृष्टिभि
यांतुधानात् ॥ अग्नेपूर्वांनिजहिशोशुंचानआमादःक्षिक्वास्तमदंत्वेनीः ॥ इहप्रभूहियतमःसोअग्ने
योयांतुधानोयइदंकृणोति ॥ तमारमस्वसमिधायविष्टनूचक्षसश्चक्षुषेर्धयेन ॥ तीक्ष्णेनाग्निचक्षुषार
क्षयज्ञं प्रांचं वसुभ्यः प्रणय प्रचेतः ॥ हिंखरक्षांस्यतिशोशुंचानंमात्वादमन्यातुधानानुचक्षः ॥ नच
क्षारक्षुःपरिपश्यविक्षुतस्यत्रीणिप्रतिशृणीत्यग्रां ॥ तस्याग्नेपृष्टीर्हरसाशृणीहित्रेथामूलंयातुधानस्य
दृश्च ॥ २ ॥ त्रियंतुधानःप्रसितितएत्तंतयोअग्नेअनृनेनृहति ॥ तमर्चिषास्फूर्जयन्जातवेदःसम
क्षमेनंगृणतेनिष्टंग्धि ॥ तदग्नेचक्षुःप्रतिधेहिरेमेशफारुज्येनपश्यसियातुधानं ॥ अथर्ववज्ज्योतिषा
द्वेव्येनसत्यंधूर्वीतमचितुंन्धोप ॥ यदग्नेअद्यमिथुनाशपातोयद्वाचस्तृष्टंजनयंतरेमाः ॥ मन्योर्मनसः
शरव्याइजायतेयातयाविध्यत्ददयेयातुधानान् ॥ पराशृणीहितयसायातुधानान्पराग्नेरक्षोहरसाशृणी

हि ॥ पराचिषामूर्देवान्छृणीहि परासुतुषोअग्निशोशुचानः ॥ पराद्यदेवाहंजिनंशृणुतुप्रत्यगेनंशुपथा
 यंतुतुष्टाः ॥ वाचास्तेनंशरवक्चच्छंतुमर्म्मन्विश्वस्यैतुप्रसितियातुधानः ॥ ३ ॥ यः पौरुषेयेणक्कवित्रासमङ्के
 योअश्वेनपशुनायातुधानः ॥ योअद्भयायामरंतिक्षीरमग्नेतेषांशीर्षाणिहरसापिहृश्च ॥ संवत्सरीणंपय
 उखियायास्तस्युमाशीद्यातुधानोनृचक्षः ॥ पीयूषमग्नेयतमस्तिवृप्सातंप्रत्यंचमर्चिषाविष्यमर्मन् ॥ वि
 षंगवांयातुधानाः पिबंत्वाहंश्रयंतामदितयेदुरेवाः ॥ परैरान्देवःसंवितादंदातुपरांभागमोषधीनांजयंतां ॥
 सनादग्नेमृणसियातुधानाचत्वारक्षींसिपृतंनानुजिग्युः ॥ अनुदहसहमूरान्कव्यादोमातेहेत्यामुक्ष
 तदिव्यायाः ॥ त्वनोअग्नेअधुरादुदंक्तात्त्वंपृश्चादुतरंक्षापुरस्तात् ॥ प्रतितेतेअजरांसस्तपिद्याअघशंसं
 शोशुचतोदहंतु ॥ ४ ॥ पृश्चात्पुरस्तादधुरादुदंक्तात्कविःकाव्येनपरिपाहिराजन् ॥ सत्वेसखाद्यमज
 रोजरिग्न्येग्नेमर्त्ताअमर्त्यस्त्वनः ॥ परिताग्नेपुरंव्यविभंसहस्यशीमहि ॥ ध्रुषदंर्णद्विवेद्वेदंत्वारंभंगुरावतां ॥
 विषेणमंगुरावतःप्रतिष्मरक्षसोदह ॥ अग्नेतिग्मेनशोचिषानपुरागामिर्द्धिभिः ॥ प्रत्यग्नेमिथुनादह

यातुधानाकिमीदिना ॥ संत्वाशिशासिजागुत्थदब्धविप्रमन्मसिः ॥ प्रत्यग्रे० ऋ० १॥५॥सू० ४॥ ब्रह्म
 णाग्निःसंविदानोरक्षोहाबाधतामितः ॥ अमीवायस्तेगर्भदुर्णामायोनिमाशये ॥ यस्तेगर्भममीवादुर्णा
 मायोनिमाशये ॥ अग्निद्वं ब्रह्मणासहनिष्कव्यादमनीनशत् ॥ यस्तेहृतिपुत्रयंतनिषत्खुंयःसरीसृपं ॥
 ज्ञातंयस्तेजिघांसतितमितोनाशायामसि ॥ यस्तं ऊरुविहरंत्यतरादंपतीशये ॥ योनियोअंतरारेच्छितमि
 तो० ॥ यस्त्वाभ्रात्रापतिर्भूत्वाजरोभूत्वा निपद्यते ॥ प्रजांयस्तेजिघांसतित० ॥ यस्त्वास्वमेनतमसामोह
 यित्वानिप० ॥ प्रजांयस्तेजिघांसतितमितो० ॥ १ ॥ अथसोमसूक्तानि ॥ ॥ त्वंसोमप्रचिकितोमनीषात्वं
 रजिष्ठमनुनेषिपंथां ॥ तवप्रणीतीपितरोनइदोदेवेषुर्त्नमभजंतधीराः ॥ त्वंसोमकृतुभिःसुकृतुर्मुस्त्वंद
 क्षैःसुदक्षोविश्ववेदाः ॥ त्वंष्टषावृषत्वेभिर्महित्वाद्युग्नेभिर्द्युभ्यमवोनृचक्षाः ॥ राज्ञानुतेवरुणस्यज्जना
 निबृहद्भीरंतवसोमधामं ॥ शुचिष्टमसिप्रियोनिमित्रोदक्षार्थ्योअर्धमेवासिसोम ॥ यातेधामानिदिवि
 याद्यथिव्यांयापर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ॥ तेभिर्नीविश्वैःसुमनाअहेळ्वजन्त्सोमप्रतिहव्यागुंभाय ॥ त्वं

सोमसि सत्यतिस्त्वं राजो तद्वन्नहा ॥ त्वं भद्रो असि क्रतुः ॥ १ ॥ त्वंच सोमनो शौजीवानु नमरा महे ॥
प्रियस्तोत्रो वनुस्पतिः ॥ त्वंसोममहे भगं त्वयूनं कृतायते ॥ दक्षं दधासि जीवसे ॥ त्वनः सोम विश्वनेर
क्षाराज अघायतः ॥ नरिष्ये त्वावतः सर्वा ॥ सोमयास्ते मयो भुव ऊतयुः संति द्वाशुषे ॥ तामिनो विता भव ॥ इ
मं युज्ञामिदं वचो जुषाण उपगहि ॥ सोम त्वनो वृधे भव ॥ २ ॥ सोमं गीमि ह्वाव्यं वर्धयामो विचो विदः ॥ सुमृ
ळीको न आविश ॥ गयस्फानो अमी वृहाव सुवितुं ह्वि वर्धनः ॥ सुमित्रः सोमनो भव ॥ सोमं रंधिनो हृदि
गावो नयवसेष्वा ॥ मर्ध इव स्वओक्थे ॥ यः सोमसुख्ये तव रारण देवमर्त्यः ॥ तं दक्षं सचते कृविः ॥ उरु
ष्याणो अभिशस्तेः सोमनि पाहं सः ॥ सखां मुशे वं रधिनः ॥ ३ ॥ आप्याय ० क्र ० १ ॥ आप्याय
स्वमदिन्तमसोम विश्वेभिर्शुभिः ॥ भवानः सुश्रवस्तमः सखा वृधे ॥ संते पर्यासिसमुं यतुवाजाः संह
ष्यान्यभिमालिषाहः ॥ आप्यार्थमानो अमृताय सोमद्वि श्रवांस्तुतमानिधिष्व ॥ याते धामानिह
विषायर्जं निताते विश्वा परिभूरस्तुयज्ञं ॥ गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो वीरहापचरा सोमदुर्याच ॥ सोमो

धे० ऋक् १ ॥ ४ ॥ अषांळ्वंयुत्सुपृत्तनासुपपिस्वर्षाम्प्रांष्ट्रजनस्यगोपां ॥ भरेषुजांष्ट्रिदितिषुश्र
 वंसंजयंतत्वामनुमदेमसोम ॥ त्वमिमाओषधीःसोमविश्वास्त्वमपोअजनयस्त्वंगाः ॥ त्वमातंतथोर्वि
 तरिक्ष्वंज्योतिषावितमोववर्थ ॥ देवेननोमनसादेवसोमरायोभागसंहसावन्नभियुंध्य ॥ मात्वातन
 दीशिषिवीर्यस्योमयेभ्यःप्रचिक्षिप्सागर्विहो ॥ ५ ॥ सूक्तं २ ॥ स्वादिष्ट्या० वर्ग २ ॥ सू० ३ ॥
 स्वावोरंसक्षिवयंसःसुमेधाःस्वाह्योवरिवोवितरस्य ॥ विश्वेयंदेवाउतमत्यासोमधुब्रुवतोअभिसंचरति ॥
 अंतश्चप्रागाअर्दितिर्भवास्थवयालाहुरसोदैव्यस्य ॥ इद्विंद्रस्यसरुयंजुषाणःश्रीष्टीविधुरमनुरायक
 ह्याः ॥ अपामसोमममृताअभुमार्गन्मज्योतिरविदामदेवान् ॥ किन्नूमस्मान्कणवदरालिःकिमुधु
 तिरमृतमर्त्यस्य ॥ शनोभवहृदथापीतइदोपितेवसोमसूनवैसुशेवः ॥ सर्वेवसरुयउरुशंसधीरःप्रण
 आयुर्जीवसेसोमतारीः ॥ इमेमापीतायशसंतरुष्यवोरथंनगावःसमनाहृष्वसु ॥ तेमारक्षंतुविससंश्चरि
 त्रादुतमात्रामाद्यवयंविदवः ॥ १ ॥ अग्निनामथितंसंदिदीपःप्रचक्षयकृणुहिवस्यसोनः ॥ अथाहि

तेमदुआसोमन्थरेवाँइवप्रचरापुष्टिमच्छ ॥ इषिरेणितेनसासुतस्यमक्षीमैहिपिच्यस्ववरायः ॥ स
 मराजन्प्रणआयूषितारीरहानीवसूर्योवासराणि ॥ सोमराजन्मूळयानःस्वस्तितवस्मसिन्नत्रांस्तस्य
 विद्धि ॥ अलंतिदक्षतमन्युरिदोमानोअर्योअनुकामंपरादाः ॥ त्वंहिनस्तन्वःसोमगोपागात्रेगात्रे
 निषसथानुचक्षाः ॥ यत्तेवयंप्रमिनामंत्रतानिसनोमूळसुपुखादेववस्यः ॥ ऋदुदरेण० ऋ १ ॥ २ ॥
 अपत्याअंस्यु० ऋ० १ ॥ योनइंदुःपितरोत्तसुपीतोमर्त्योमर्त्याआविवेशं॥ तस्मैसोमांयहविषाविधेममृ
 ल्ळीकेअस्यसुमतीस्थाम ॥ त्वंसोमपितृभिःसंविदानोनुद्यावापृथिवीआतंतथा॥ तस्मैतइंदोहृविपांविधे
 मवयंस्यामपतंयोरथीणां ॥ नातरिदेवाअधिवोचतानोमानोनिद्राईशलमोतजल्पः ॥ वयंसोमस्य
 विश्वहंप्रियासःसुवीरांसोविदथमावदेम ॥ त्वनःसोमविश्वतोवयोधास्वस्वविदाविशानुचक्षाः ॥
 त्वनइंदुक्रुतिभिःसजोषाःपाहिपश्वातांदुतवांपुरस्तात् ॥ ३ ॥ सू० ४ ॥ इंद्रासोमातपंतंरक्षंउज
 तंन्यर्पयंतवृषणातमोदधः ॥ परांश्रुणीतमचिनोन्योषतंहंतनुदेथांनिशिशीतमत्रिणः ॥ इंद्रासोमास

मघशंसमभ्य१धंतपुर्थयस्तुचरुरश्रिवाँइव ॥ ब्रह्मद्विषेऋव्यादेवोरचक्षसेद्वेषोधत्तमनवाथंकिंभीदिने ॥
 इंद्रासोमादुष्करोवेत्रेअंतरनारंअणेतमसिप्रविध्यतं ॥ यथानातःपुनरेकश्चनोदयत्तद्दामंस्तुसहंसे
 मन्युमच्छवं ॥ इंद्रासोमावर्नयंतंदिवोवृधंसंधृथिव्याअवशसायतर्हणं ॥ उत्तक्षंतस्वधि१पर्वतेभ्योयेन
 रक्षोवावृधानंनिजूर्वथः ॥ इंद्रासोमावर्तयंतंदिवस्पर्यश्रितसेभिर्ध्रुवमशमहन्मभिः ॥ तपुर्वधमिरजरे
 भिरत्रिणोनिपर्शानेविध्यतंयंतुनिस्वरं ॥ १ ॥ इंद्रासोमापरिवांभूतुविश्वतइयंमतिःकक्ष्याश्वेववा
 जिनां ॥ यावांहोत्रोपरिहिनोभिमेधयेमाब्रह्माणिनूपतीवजिन्वतं ॥ प्रतिस्मरेथांतुजयंद्भिरेवैर्हंतंद्रु
 होरक्षसोसंगुरावतः ॥ इंद्रासोमादुष्कतेमासुगंसुद्योनःकदाचिदभिदासतिद्रुहा ॥ योमापाकेनमन
 साचरंतमश्रिचष्टेअनृतेभिवचोभिः ॥ आपइवकाशिनसंगृभीताअसन्नस्त्वासंतइन्द्रवृक्ता ॥ येषांक
 शंसविहंतएवैर्षेवाभद्रंषयंतिस्वथाभिः ॥ अहयेवातान्प्रददानुसोमआवांदधानुनिर्कनैरुपस्थे ॥
 योनोरसंदिप्सतिपित्वोअश्रेयोअश्वानांयोगवांयस्तनूनां ॥ रिपुःस्तेनःस्तेयृकृद्भ्रभैनुनिषहीयतांत

न्वाइतनाच ॥ २ ॥ पुरःसोअस्तुन्वाइतनाचतिसःधृथिवीरथोअस्तुविशाः ॥ प्रतिशुष्यतु
 यशोअस्यदेवाथोनोदिवादिप्सतियश्चनक्तं।सुविज्ञानंचिकित्तुपेजनायुसच्चाराञ्चवचसीपस्पृधाते ॥ त
 योर्पत्सत्यंथनरदृजीथस्तदित्तोमोवतिहंत्यासत्।नवाउसोमोदृजिनंहिनोतिनक्षत्रियंमिथुयाधार्यंतं॥
 हंतिरुहोहंत्यासद्दंतमुभाविद्रंस्यप्रसितौशयाते॥यदिव्राह्मनृतदेवआसमोषंवादेवाअप्युहेअग्ने॥कि
 मस्मभ्यंजातवेदोहणीपेद्रोघवाचंस्तेनिर्ऋथंसंचनां ॥ अद्यामुरीययदियातुधानोअस्मियद्विवायुस्तत
 पपूरुषस्य॥अथासवीरिदंशमिर्विद्युयायोमामोषंयतुधानेत्याहं।३।योमार्थानुयतुधानेत्याहयोवांरक्षाः
 शुचिरस्मीत्याहं॥इंद्रतंहंतुमहतावधेनविश्वस्यजंतोरेधमस्पदीष्ट॥ प्रयाजिगातिखर्गलेवुनक्तमपंद्रुहा
 तन्व१गूहमाना ॥ वत्रौअनंतौअवसापदीष्टयावाणोघ्नंतुरक्षसउपब्दैः ॥ वितिष्ठध्वंमरुनोविद्वि१च्छ
 तंगृमायनरक्षसःसंपिनघ्न ॥ वयोयेमूत्वीपतयंतिनक्तमिर्वेवारिपोदधिरेदेवेअंघ्वरे ॥ प्रवर्तयद्वि
 वोअश्मानमिद्रुसोमंशितंमघवन्त्संशिशाधि ॥ प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तादमिजंहिरक्षसःपर्वतेन ॥

एतत्त्रयेपत्यंतिश्वयातवइंद्रंदिप्संतिदिप्सवोदाभ्यं ॥ शिशितेशक्रःपिशुनेभ्योवधनुंखड्गदशानिया
 तुमद्भ्यः ॥ ४ ॥ इंद्रोपातुनामभवत्पराशरोहृविर्मथीनामभ्याइविवास्तां ॥ अभीदुंशक्रःपरशुर्यथाव
 नंपात्रैवभिंदन्सतर्निरक्षसः ॥ उलूकयातुं० ऋ० १ ॥ मानोरक्षोअग्निंढयातुमावंतामपोच्छ
 तुमिथुनायाकिमीदिना ॥ पृथिवीनःपार्थिवात्पात्वंहंसोतरिक्षंदिव्यात्पात्वस्मान् ॥ इंद्रंजहिपुमां
 संयातुधानंमुतस्त्रियंमाययाशाशदानां ॥ विग्रीवासोमूर्देवाऋदंतुमातेदृशन्सूर्यमुच्चरंतं ॥ प्रतिच
 क्ष्व० ऋ० १ ॥ ५ ॥ सू० ५ ॥ सोमएकेभ्यःपवतेवृतमेकउपासते ॥ येभ्योमधुंप्रधावतित्तां
 श्चिदेवापिगच्छतात् ॥ तर्पसायेअनाधुष्यास्तर्पसाथेस्वर्ययुः ॥ तपोयेचक्रिरेमहस्तांश्चि० ॥ येयु
 द्धंतेप्रधनेषुशूरांसोयेतंतुत्यजः ॥ येवासुहृस्रंदक्षिणास्तांश्चि० ॥ येचित्पूर्वकृतसापंक्ततावानक
 तादर्थः ॥ पितृन्तर्पस्वतोयमुतांश्चि० ॥ सुहृस्रंणीथाःकवयोयोगोपायंतिसूर्य ॥ कषीन्तर्पस्वतोयम
 तपोजाँअपिगच्छतात् ॥ १ ॥ अद्भ्याग्निःसामिध्यतेश्रद्धयाहूयतेहृविः ॥ श्रद्धांसिगंस्थमु

धनिवचसावैदयामसि॥प्रियंश्रद्धेददतःप्रियंश्रद्धेदिदासतः॥प्रियंभोजेपुयजत्रस्विदंमउदितंकथि॥य
 थादिवाअसुरेषुश्रद्धामुप्रेषुचक्रिरे॥एवंभोजेपुयजत्रस्वस्माकमुदितंकथि॥श्रद्धादेवायजमानावायुगो
 पाउपासते॥श्रद्धांस्तदर्थं१याकृत्याश्रद्धयाविदतेवसु॥श्रद्धां प्रातर्हवामहेश्रद्धांमध्यंदिनपरि॥श्रद्धां
 सूर्यस्यनिशुचिश्रद्धेश्रद्धापयेहनः॥१॥हविर्धानसूक्तं॥युजेवांब्रह्मपठ्यनमोभिर्विश्लोकंएतुपुथ्येश
 रेः॥शृण्वंतुविश्वेअमृतस्यपुत्राआयेधामानिदिव्यानितस्युः॥यमेइवयतमानेयदैतंप्रवाभरन्मानुपादे
 वयंतः॥आसीदतंत्वमुलोकंविदनेस्वासस्थेसंवतर्षिदवेनः॥पंचपदानिरूपोअन्वरोहंचतुष्पदीमन्वेमि
 ब्रूतेन॥अक्षरेणप्रतिमिमएतामृतस्यनाभावधिसंपुनामि॥देवेभ्यःकमहणीतमृत्युप्रजायैकममृतंनावृ
 णीत॥बृहस्पतियज्ञमरुणवतुक्षिंप्रियायमस्तन्वं१प्रारिरेचीत्॥सप्तक्षरंतिशिशिवेमरुत्वतेपित्रेपुत्रासो
 अप्यवीवतभूतं॥उमेइदस्योमर्थस्यराजतउमेयतेतेउमर्थस्यपुष्यतः॥१॥पितृसूक्तं॥उदीरतामव
 रउत्परोसउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः॥असुंयईयुरंबूकाऽकृतज्ञास्तेनोवंतुपितरोहवेषु॥इदंपि

तृभ्योनमो अस्वद्यये पूर्वासो य उपरास ईयुः ॥ येषां धिरे जस्या निषत्ता येवानु न सुवृजना सुविशु आहं
 पितन्सु विदत्राऽ अविस्मि न पातं च विक्रमणं च विष्णोः ॥ बृहस्पदो ये स्वधया सुतस्य मजं तपित्व स्त इहा
 गमिष्ठाः ॥ बृहस्पदः पितरुत्त्यं १ वागिमावो हव्या च कृमाजुषध्वं ॥ त आगता वंसा शंते मेनाथानः शंयो
 ररपो दधात ॥ उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ॥ त आगं मंतु त इह श्रुवं त्वधिब्रुवं तु ते वं त्व
 स्मान् ॥ १ ॥ आच्या जानुदक्षिणतो निषद्ये मं यज्ञमभिगुणीत विश्वे ॥ माहिं सिष्टपितरः केन चिन्नो
 यद्वागः पुरुषता कराम ॥ आसीनासो अरुणीनामुपस्थे र्यथं तदाशुभे मर्त्याय ॥ पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य
 वस्वः प्रयच्छत इहो जीदधात ॥ येनः पूर्वे पितरः सोम्यासो नूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ॥ तेभिर्यमः संर
 राणो हवीष्यु शन्नुशान्तिः प्रतिक्रामन्तु ॥ येतान्पुर्ववृत्राजे हमाना होत्रा विदः स्तोमं तघासो अर्केः ॥
 आग्नेया हि सुविदत्रे मिरवा इ सत्यैः कव्यैः पितृभिर्धर्मसद्भिः ॥ ये सत्यासो हविरदेह विष्या इ देण देवैः सुर
 थुं दधानाः ॥ आग्नेया हि स हसै देव वंदैः परैः पूवैः पितृभिर्धर्मसद्भिः ॥ २ ॥ अधिष्वात्ताः पितर एह गच्छ

तसदःसदःसदतसुप्रणीतयः ॥ अत्ताहर्वीपिययनानिवाह्विष्यथार्येसववीरंदधातन ॥ त्वमग्रईच्छिनो
 जतवेदोवाहृव्यानिष्ठुरभीणिक्त्वयी ॥ प्रादाःपितृभ्यःस्वधयतेअक्षत्रद्वित्वदेवप्रयताहृवीधि ॥ येचे
 हपितरोयेचेनेहयांश्चविद्वयौर्चचनमंविद्म ॥ त्वेरेथयतितेजातेभेदःस्वथामिर्युजांसुंजनंजुपस्व ॥ येअ
 त्रिदग्धायेअनेसिदग्धामधेद्विवःस्वधयामादयंते ॥ तेभिःस्वराळसृनीतिमेतांयथावशंतन्वैकल्पय
 स्व ॥ ३ ॥ अथदेवसूक्तं ॥ विश्वेदेवाःशास्तनमाययेहृहोनाधुतोमनवेयन्निपद्य ॥ प्रभेव्रुतभागधेयं
 यथावीयेनपुथाहृव्यमावोवहानि ॥ अहंहेतान्यसीदंयजीयान्विश्वेदेवामसूतोमाजुनंति ॥ अहंरहर
 रिवनाब्बर्धवंवाब्रह्मासमिद्धंवनिसाहुतिर्वा ॥ अयंयोहोताकिरुसयमस्युकमयूहेयत्संमूर्जंतिदेवाः ॥
 अहंरहर्जायतेमासिमास्यथादेवादर्धिरहृव्यवाहं ॥ मांदेवादर्धिरहृव्यवाहमपम्लुकंयुहुकृच्छ्राचरं
 तं ॥ अग्निर्विद्वान्युर्जनःकल्पयानिर्पंचयामंत्रिदृष्टंसुसतनुं ॥ आवांपक्ष्यमृतत्वंसुवीरंयथावो
 देवावरिवःकराणि ॥ आत्राहोर्ध्वमिंद्रंश्रधेयामथेमाधिश्वाःपृतनाजयाति ॥ त्रीणिगतात्रीसु

हस्त्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवानवचासपर्यन् ॥ औक्षन्धृतैरस्तृणन्बृहिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ १ ॥
 ॥ अथ यत्याराधनमंत्राः ॥ ॥ नानानवाउनोधियोविप्रतानिजनानां । तक्षारिष्टं कृतं मिषगृह्णासुन्वंतमि
 च्छतीन्द्राथेदोपरिखव ॥ जरतीभिरोषधीभिः पूर्णेभिः शकुनानां कामारो अश्मभिद्युभिर्हिरेण्यवंतमि ॥
 कारुरहंततोभिषगुंपलप्रक्षिणीनना ॥ नानाधियोवसुयवोनुगाईवतस्थिमेद्रां ॥ अश्वोवोळ्हासुखं
 यंहसनामुपमंत्रिणः ॥ शेपोरोमण्वंतौ भेदौ वारिन्मुंडूकइच्छ ॥ १ ॥ शर्थणावतिसोमभिद्रः पिबतु
 वृत्रहा ॥ बलुं दधान आत्मनि करिष्यन्वीर्यमृहदि ॥ आपवस्वदिशांपत आर्जीकात्सोममीदुः ॥
 ऋतुवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुतइद्रां ॥ पर्जन्यं वृद्धं महिपंतं सूर्यस्य दुहिताभरत ॥ तं गंधर्वाः प्रत्येगृभ्ण
 न्तं सोमेरसमादधुरिं ॥ ऋतं वदं नृतद्युम्रसत्यं वदन्त सत्यकर्मन् ॥ श्रद्धां वदन्त सोमराजन्धात्रासोमपरि
 ष्कृतइं ॥ सत्यमुग्रस्य बृहतः संखवंति संखवाः ॥ संथतिरसिनोरसाः पुनानो ब्रह्मणा हरइं ॥ २ ॥ यत्र
 ब्रह्मापवमानच्छंदस्यां ईवाचं वदन् ॥ ग्राव्णासोमेमहीयते सोमेनानंदं जनयन्निद्रां ॥ यत्र ज्योतिरजसं य

स्मिँह्लोकेस्वीहितं ॥ तस्मिन्मांधेहिपवमानामृतैल्लोकेअक्षितइंद्रां० ॥ यत्रराजाविवस्वतोयत्रावरोधं
 नंदिवः ॥ यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्रमागमृतंकृधीन्द्रार्थेदो० ॥ यत्रानुकांमं चरणं त्रिनाकेत्रिदिवेदिवः ॥
 लोकायत्रज्योतिष्मंतस्तत्र० ॥ यत्रकामानिकामाश्रयत्रंब्रह्मस्थविष्टपं ॥ स्वधाचयत्रतृप्तिश्चतत्र
 माममृतंकृ० ॥ यत्रानंदाश्चमोदांश्चमुदःप्रमुदःप्रमुदआसते॥ कामंस्ययत्रासाःकामास्तत्रमाममृतंकृ० ॥३॥
 यइंदोःपवंमानुस्यानुधामान्यकमीत् ॥ तमाहुःसुप्रजाइतियस्तेसोमाविधन्मनुइंद्रां० ॥ ऋषमंत्रक
 तां० ॥ ऋ०१॥ सप्तदिशोनानासूर्याःसप्तहेतारऋत्विजः ॥ देवाआदित्यायेससतेभिःसोमाभिरं
 क्षनुइंद्रां० ॥ यत्तैराजच्छृतं० ॥ ऋ०१॥४॥ चरणंपुवित्रं वितंतंपुराणं॥ येनंपुतस्तरतिदुष्कृतानि॥ तेन
 पुवित्रेणशुद्धेनपूताः॥ अतिपाप्मानमरातिरेमा लोकेस्यद्वारंमर्चिमतपुवित्रं॥ ज्योतिष्मद्भ्राजमानं
 महंस्वत्॥ अमृतंस्युधाराबहुधादोहमानं ॥ चरणंनोलोकेषुधितां दधानु ॥१॥ अग्निमूर्धासुवः॥ अनु
 नोचानुंमतिरन्विदनुमतेत्वां हव्यवाहश्चिष्टं॥ अंतद्ब्रह्म ॥ अंतद्वायुः॥ अंतदात्मा॥ अंतत्सत्यं॥

अतस्सर्वं॥ अतत्पुरोर्नमः॥ अतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु॥ त्वं यज्ञस्त्वं षट्कारस्त्वभिद्रस्त्वं रुद्र
 स्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः॥ त्वं तदाप आपोज्योतीरसो मृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरो म्॥ १॥ लोकोः सरस्व
 त्यायां त्येष वै देव्या नः पंथास्तमेवान्वारो हं त्याकोशतोयां त्यवति मेवान्यस्मिन्प्रतिषज्य प्रतिष्ठांगच्छति
 यदादशशतं कुर्वत्यैकं मुरथानं शतायुः पुरुषः शतैर्द्वियु आयुष्ये वै द्विये प्रतिष्ठंति यदाशतं सहस्रं कुर्व
 त्यैकं मुरथानं सहस्रं संमिती वा असौ लोको मुमेवलोकमभिजयति यदैषां प्रमीयेत यदावाजीये रजथैकं
 मुरथानं तद्वितीर्थं॥ १॥ श्रीषास्माद्वारतः पवते॥ श्रीषोदेति सूर्यः॥ श्रीपास्मादग्निश्चेदंश्व॥ मृत्युयवति पंचं
 महति॥ सिप्रानंदस्य भीमांसा भवति॥ युवास्यात्साधुषु वाध्यायुकः॥ आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः॥ तस्येयं पृ
 थिवी सर्वावित्तस्य पूर्णा स्यात्॥ स एको मानुष आनंदः॥ ते ये शतं मानुषा आनंदाः॥ स एको मनुष्यगंधर्वा
 णां मानंदः॥ श्रोत्रियस्य चाकामं हतस्य॥ ते ये शतं मनुष्यगंधर्वाणां मानंदाः॥ स एको देवगंधर्वाणां मानं
 दः॥ श्रोत्रियस्य चाकामं हतस्य॥ ते ये शतं मनुष्यगंधर्वाणां मानंदाः॥ स एको देवगंधर्वाणां मानंदः॥ श्रो
 ॥ ते ये शतं देवगंधर्वाणां मानंदाः॥ स एकः पितृणां चिरलोको कानां मानंदः॥ श्रो०॥ ते ये शतं पितृणां चिर

लोकलोकानामानुंदाः॥सएकआजानजानदिवानांमानुंदः॥ श्रो० ॥तेयेशतमाजानजानदिवानांमा
 नुंदाः॥सएकःकर्मदेवानांमानुंदः॥येकर्मणादेवानपियुंति॥श्रो० ॥तेयेशंतकर्मदेवानदिवानामा
 नुंदाः ॥ सएकोदेवानांमानुंदः ॥ श्रोत्रियस्य० ॥ तेयेशंतदेवानामानुंदाः ॥ सएकइंद्रस्यानुंदः ॥
 श्रो० ॥तेयेशतामिंद्रस्यानुंदाः॥सएकोवृहस्पतेरानुंदः॥श्रो० ॥तेयेशंतवृहस्पतेरानुंदाः॥सएकःप्रजापते
 रानुंदः॥श्रो० ॥तेयेशंतप्रजापतेरानुंदाः॥ सएकोब्रह्मणंआनुंदः॥ श्रो० ॥ सयश्चायंपुरुषे ॥ यश्चासावा
 दित्ये ॥ सएकः॥ सयएवंवित् ॥ अस्माहोकात्सेत्य ॥ एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामति ॥ एतंप्राण
 मयमात्मान० ॥ एतंमनोमय० ॥ एतंविज्ञानमय० ॥ एतमानंदमय० ॥ तदप्येषश्लोकोभवति ॥ १ ॥
 यतोवाचोनिवर्तते ॥ अप्राप्यमनसासह ॥ आनुंदंब्रह्मणोविद्वान् ॥ नविभेत्तिकुतश्चेति ॥ एत
 ऋषार्वनतपति ॥ किमृहस्साधुनाकवं ॥ किमृहंपापमकरवृमिति ॥ सयएवंविद्वानेनेआ
 त्मानंस्पृणुते ॥ उभेत्थैवपएतेआत्मानंस्पृणुते ॥ यएवंवेद ॥ इत्युपनिषत् ॥ २ ॥

अथोपनिषन्मंत्राः ॥ ॥ विदामधवन्विदागतुमनुशंसिषोदिशः ॥ शिक्षाशचीनांपतेपूर्वीणांपुरुव
सो ॥ आभिष्टमभिष्टिमिःप्रचेतनप्रचेतय ॥ इंद्रद्युम्नायनइषएवाहिशक्रः ॥ रायेवाजायवञ्जिवः
शविष्ठवञ्जिन्मृजसे ॥ मंहिष्ठवञ्जिन्मृजसआयाहिपिवमत्स्व ॥ विदारायःसुवीर्यभुवोवाजानांपतिर्व
शौअनु ॥ मंहिष्ठवञ्जिन्मृजसेयःशविष्ठःशूराणां ॥ योमंहिष्ठोमघोनांचिकित्वोअभिनोनय ॥ इंद्रो
विदेतमुस्तुषेवशीहिशक्रः ॥ तमूतयेहवामहेजेतारमपरजितं ॥ सनःपर्षदतिद्विषःऋतुच्छदऋतंबृह
त् ॥ इंद्रंयनस्यसातयेहवामहेजेतारमपरजितं ॥ सनःपर्षदतिद्विषःसनःपर्षदतिद्विषः ॥ पूर्वस्ययं
त्तेअद्रिवःसुम्नआघेहिनोवसो ॥ पूर्तिःशविष्ठशस्यतईशोहिशक्रः ॥ नूनंतन्नव्यंसन्यसेप्रभोजनस्य
वृत्रहन् ॥ समन्येषुब्रवामहैशूरोयोगेषुगच्छतिसवासुशेवोअद्दयाः ॥ एवात्थैवैवात्थग्राइइ ॥ एवा
त्थैवैवार्हीद्राइम् ॥ एवात्थैवैवाहिविष्णाइउ ॥ एवात्थैवैवाहिपूषाइन् ॥ एवात्थैवैवाहिदेवाःइ ॥ ए
वाहिशक्रोवशीहिशक्रोवशौअनु ॥ आयोमन्यायमन्यवउपोमन्यायमन्यवे ॥ उपेहिविश्वथ ॥ वि

दामघवन्विदोम् ॥१॥ कोयमात्मेतिवयमुपास्महेकतरःसआत्मायेनवापश्यतियेनवाश्रुणोतियेनवागं
 धानाजिघ्रतियेनवावाचंव्याकरोतियेनवास्वादुचास्वादुचविजानातियेदेतद्दृढयंमनश्चैतत्संज्ञानमाज्ञा
 नंविज्ञानंप्रज्ञानंमेधादृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीपाजूतिःस्युतिःसंकल्पःऋतुरसुःकामोवशइतिंसर्वाण्येवैतानिप्र
 ज्ञानस्थनामधेयानिसंवत्येपब्रह्मैषंड्रएपप्रजापतिरेसर्वेदेवाइमानिचंपचमहामूतानिपृथिवीवायुरा
 काशंआपोज्योतींर्ण्धेयेतानीमानिचक्षुद्रमिश्राणीववीजानीतराणिचेतराणिचांडजानिचजारजानि
 चस्वेदजानिचोद्भिजानिचाश्वागावःपुरुषाहस्तिनोर्यात्कचेदंप्राणिजंगमंचपतत्रिचयच्चस्थावरंसर्वतत्
 प्रज्ञानेचंप्रज्ञानेप्रतिष्ठितंप्रज्ञानेत्रोलोकःप्रज्ञाप्रतिष्ठाप्रज्ञानंब्रह्मासएतेनप्रज्ञेनात्मनास्माहोकादुक्क
 म्यामुष्मिन्स्वर्गेलोकेसर्वांकामानास्वामृतःसभसवरसमभवत् ॥२॥ ॥ अथांत्येष्टि मंत्राः ॥ परे
 थिर्वासप्रवर्तोमहीरुंबहुभ्यःपंथामनुपस्पशानं॥ वैवृस्वतंसंगमंजुंजनानांयुमंरानानंहविर्षदुवस्था॥ य
 मोनोर्गानुंप्रथमोर्विवेदेनैपागव्युतिर्षभर्तुवाडं॥यत्रानुःपूर्वपितरंःपर्युरेनाजंज्ञानाःपृथ्याईअनुस्वाः ॥

मालती कुर्व्यर्थे अंगिरोमिर्बृहस्पतिर्ऋकभिर्वावृधानः ॥ यांश्चदेवावावृधुर्थे च देवान्स्वाहान्यस्वथया
 न्येयदति ॥ इमं यमप्रस्तरमाहितीदांगिरोमिः पितृभिः संविदानः ॥ आत्वाभन्त्राः कविशस्तावहत्वेनारज
 न्भविषामादयस्व ॥ अंगिरोमिरागहियद्वियैमिर्यमैवैरूपैरिहमादयस्व ॥ विवस्वतं द्रुवेयः पितान्नेस्मि
 न्यज्ञेवहिष्यानिषद्यं ॥ १ ॥ अंगिरसोनः पितरो न वग्वा अर्थवाणो भृगवः सोम्यासः ॥ तेषां वयं सुमतौ य
 ज्ञियानामभिभूद्रसौमनसेस्थाम ॥ मेहिमेहिपथिसिः पूव्यैमिर्यत्रानः पूर्वपितरः परेयुः ॥ उमाराजो
 नास्वथयामदनायुमंपश्यासि वरुणं च देवं ॥ संगच्छस्व पितृभिः संयुमेनैष्टापूर्तेन परमेव्योमन् ॥ हित्वा
 यावद्यं पुनरस्तमेहि संगच्छस्व तन्वांसुवर्चाः ॥ अपेतवीतु विचसर्पतातोस्मात् पितरो लोकाभक्रन् ॥
 अहोमि रङ्गिरकुमिर्व्यक्तं यमो देवात्यवसानमस्मै ॥ अतिद्रवसारमेयोश्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुनां प
 था ॥ अथापितुन्स्तु विदत्रौ उपेहियमे नये संधुमादं मदति ॥ २ ॥ यौत्तिश्वानौ यमरक्षितारौ चतुरक्षौ प
 थिरक्षीनु चक्षसौ ॥ ताम्यमि नुं परिदेहिराजन्स्वस्तिचास्मा अनमीव च धेहि ॥ उरुणसां वसुतृपा उडु

बलौयमस्यंदूतौचरतोजनानु ॥ तावस्मभ्यंदृशयेसूयपिपुनंदातामसुंभद्येहमद्रं ॥ यमायु०क०
 १ ॥ यमायुपुतवंद्वविर्जुहोतप्रचलिष्ठत ॥ सनोद्वेष्वार्यमहीर्षमायुःप्रजीवसे ॥ यमायुमधुमत्तमं
 राज्ञौह्वंजुहेतन ॥ इदंनमृक्पिभ्यःपूर्वजभ्यःपूर्वभ्यःपथिकृद्भ्यः ॥ त्रिकंद्रुकेभिःपततिषड्वीरेक
 सिद्धुहत् ॥ त्रिष्टुब्गायत्रीछिंद्वसिसव्नायामआहिता ॥ ३ ॥ उदीरता० वर्ग ३ ॥ मेनमत्रेविदंहो
 मामिशोचोमास्यत्वर्चचिक्षिपोमाशरीरं ॥ यदाशृतंकृणवोजातवेदोथेमेनंप्रदिणुतात्पितृभ्यः ॥ शु
 तंयदाकरसिजातवेदोथेमेनंपरिदत्तात्पितृभ्यः ॥ यदागच्छात्यसुनीतिमेतामथदिवानांवशनीर्भवा
 ति ॥ सूर्यचक्षुर्गच्छतुवातंमात्माद्यांचगच्छयुथिर्वीचधर्मणा ॥ अपोवागच्छयदितत्रेतेहित
 मोषधीषुप्रतितिष्ठाशरीरैः ॥ अजोऽज्ञागस्तपसातंतपस्वतंतेशोचिस्त्वपलुतंतैअर्चिः ॥ यास्ते
 शिवास्तुन्वोजातवेदस्तामिर्वहेनंसुहृतामुल्लेकं ॥ अवंष्टजपुनरग्रेपितृभ्योयस्तुआहुतश्चरतित्स्व
 धामिः ॥ आयुर्वसानुपवेतुशेषःसंगच्छतांतुन्वाजातवेदः ॥ ४ ॥ यत्तेकृष्णःशंकुनआंतुतोदपिपीलः

सर्पुतवाश्वापदः ॥ अग्निष्टद्विश्वादेगदं कणोतु सोमं श्रयो ब्राह्मणो आविंशे ॥ अग्नेर्वर्मपरिणो
 मिर्धयस्वसंपोर्णेष्वपीवसामेदसाच ॥ नेत्वाधृष्णुर्हरसाजर्द्धषाणोदृधृग्विधक्ष्यन्पर्धखयति ॥
 इममग्नेचसंसाविजिह्वरः प्रियो देवानामुतसोम्यानां ॥ एषयश्चमसो देवपानस्तस्मिन्देवा अमृतामाद
 धते ॥ क्रव्यादंमग्निप्रहिणोमिदूरं यमराज्ञोगच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहेवायमितरोजानवेदादेवेभ्यो हव्यं व
 हतुप्रजानन् ॥ यो अग्निः क्रव्यात्प्रविवेशेवोगृहमिमंपश्यच्चितरंजानेवेदसं ॥ तंहरामिपितृयज्ञायदेवं
 सधर्ममिन्वात्परमेसधस्थे ॥ ५ ॥ यो अग्निः क्रव्युवाहनः पितृन्यसंहतावृधः ॥ प्रेदुंहव्यानिवोचतिदेवे
 भ्यश्चपितृभ्य आ ॥ उशतस्त्वां ० ऋ १ ॥ यंत्वमग्नेसमदहस्तमुनिर्वापयापुनः ॥ क्रियां बत्ररोह
 तुपाकदूर्वाव्यल्कशा ॥ शीतिकेशीतिकावतिल्हादिकेह्लादिकावनि ॥ मंडुक्या इ सुसंगम इमं स्व १ धि
 हर्षय ॥ ६ ॥ त्वद्यादुहित्रेव हतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं संभेतियमस्यमातापयुत्थमानामहोजायाविवं
 स्वतोननाश ॥ अपागृहन्नमृतमर्थेभ्यः कृत्वीसर्वर्णामददुर्विंस्वते ॥ उताश्विनावसूर्यं तदोसीदज

हादुद्दामिथुनासरण्युः ॥ पपात्वेतश्रयावयतुप्रविद्वाननष्टपशुर्भुवनस्यगोपाः ॥ सत्वेतेभ्यःपरिददत्पि
 वृभ्योन्निदेभ्यःसुविदन्नियेभ्यः ॥ आयुर्विश्वायुःपरिपासतित्वापूपात्वापातुप्रथेपुरस्तात् ॥ यत्रास
 तेसुकृतोयत्रतेययुस्तत्रत्वादेवःसवित्तादधानु ॥ पूपेमाआशाअनुवेदसर्वाःसोअस्माँअसंयतमेनने
 प्रपथेष्टथिव्याः ॥ उभेअभिप्रियतमेसधस्येआचपराचचरतिप्रजानन् ॥ ७ ॥ प्रपथेपथार्मजनिष्टपूपाप्रपथेदिवः
 स्वतीमध्वरेत्तायमानि ॥ सरस्वतीसुकृतोअत्त्रयंतसरस्वतीदाशुषेवार्थदात् ॥ सरस्वतीदेवयंतोद्वंतेसर
 स्वधामिदेवियित्त्रिभिर्मंदती ॥ आसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयस्वानमीवाइषुअर्धेत्त्यस्मे ॥ सरस्वतीयास्रथयथाथ
 पितरोहवतेदक्षिणायज्ञार्मसिनक्षमाणाः ॥ सहस्रार्धमिच्छोअत्रभागरायसोप्यजमानेपुधेहि ॥ आपो
 अस्मान् ० ऋ० १ ॥ इप्सश्चस्कंदप्रथमौअनुद्युनिमंचयोनिमनुयश्चपूर्वः ॥ समानयोनिमनुसंचरंतद्रप्संजु
 होम्यनुससहोत्राः ॥ यस्तेद्रप्सःस्कंदतियस्तेअंशुर्वाहुच्युतोधिषणायामुपस्थात् ॥ अध्वर्योर्वापरि

वायःपवित्रात्तैजुहोमिमनसावषट्कृतं। यस्तेद्रूपःस्कन्धोयस्तेअशुरवश्यःपुरःस्रवा॥ अयंदेवोबृह
 स्पतिःसंतंसिचतुरार्धसो॥ पर्यस्वतीरोषधयःपर्यस्वन्मामकंवचः॥ अपांपयस्वद्विपयस्तेनमासहशुभत ॥
 ॥९॥ परंमृत्योअनुपरैह्रिपंथांयस्तेस्वइतरोदेवयानत्॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेनैब्रवीमिमानःप्रजारीरिषोमेत
 वीरान्॥ मृत्योःपदयोपर्थतोयदैतद्गार्धीयआयुःप्रतुरंदधानाः ॥ आप्यार्यमानाःप्रजयार्धेनशुद्धाःपुता
 मंवतयज्ञियासः॥ इमेजीवाविमृतेरावंचत्रन्मूद्ग्रादेवहूतिर्नोअद्या॥ प्रांचोअगामनृतयेहसायद्रार्धीय
 आयुःप्रतुरंदधानाः॥ इमंजीवेर्यःपरिधिंद्यामिषानुगादपरोअर्थमेतं॥ शतंजीवंतुशरदःपुरुचीरंतमु
 त्युदंधतांपर्वतेन॥ यथाहान्यनुपूर्वमर्वनियथंक्तवक्तुभिर्यर्त्तिसाधु॥ यथानपूर्वमपर्रोजहात्येवाथांतरा
 यंषिकल्पथैपां॥ १०॥ आरोहतायुर्जसंष्टणानाअनुपूर्वयतमानायतिष्ठ॥ इहत्वद्यासुजनिमासजोषादी
 र्धमायुःकरतिजीवैसवः॥ इमानारीरविथवाःसुपत्नीरांजेनेनसर्पिषासंविशंतु ॥ अनश्रवोनमीवाःसुरत्वा
 आरोहंतुजनयोनिमथे॥ उदीर्ष्वनार्यमिजीवलोकंगतासुमेतमुपशेषइहि॥ हस्तग्रासस्येदधिषोस्तने

दंपत्युर्जनित्वमसि संवभूथ ॥ धनुर्हस्ताद्वाददानो मृतस्यास्मेक्षत्रायुवर्चसेवलाया ॥ अत्रैवत्वसि हव्यं सुवी
 रा विश्वाः स्पृधो अस्मि मातीर्जयेम ॥ उपसर्पमानं भूमिमेतामु रुव्यचसं धृथिर्वी सुशेवां ॥ ऊर्णम्रदायुव
 तिर्दीक्षणावतलुषात्वापातु निर्कतेरुपस्थात् ॥ उच्छ्वचस्वधृथिमानिवाधयाः सूपायनास्भभवसूपवं
 चना ॥ मातापुत्रं यथासिचाभ्येनं भूमऊर्णुहि ॥ उच्छ्वचमानापृथिवी सुतिष्ठतुसहस्रं मितउपृद्धि श्रयं
 तां ॥ तेगृहासौघृतश्रुतोसवंतु विश्वाहांस्मैशरणाः संत्वन्नं ॥ उत्तेस्तभ्रामिधृथिर्वीत्वपरीमंलोगं निदध
 न्मोअहंरिषं ॥ एतांस्थूणां पितरोधारयंतुलेत्रायुमः सदनातेमिनोतु ॥ प्रतीचीनेमामहनीष्वाः पूर्णमि
 वादधुः ॥ प्रतीचीजग्रमावाचमश्वंशुनयायथा ॥ १२ ॥ (गर्भेनुसन्नैवामवेदमहं देवानां जनिमा
 निविशवां ॥ शतं मापूर आयसीरक्षत्रधंश्रेनोजवसानिरदीयं ॥ १ ॥ अतिरिक्तं न्यूने जुहोमिन्यूनमति
 रिक्ते जुहोमि ॥ समसं मे जुहोमि स्वाहा कुताहुतिरेतुदेवान्) सूक्तं ॥ निर्वर्तध्वं मानुं गान्तास्मान्तिषक्त्तरे
 वतीः ॥ अशीषोमापुनर्वसू अस्मेधारयतंरथि ॥ पुनरेना निर्वर्तयुनरेनान्यान्याकुरु ॥ इंद्रेणानियच्छ

त्वधिरेनाडुपार्जनु ॥ पुनरेतानिवर्ततामस्मिन्पुंथंतुगोपत्तौ ॥ इहेवाश्रेनिधारेयेहतिष्ठतुयाएयिः॥यन्नि
 यान्न्ययनंसंज्ञानंयत्परार्थणं ॥ आवर्तनंनिवर्तनंयोगोपाऽअपितंहुवे॥ यउदानइव्ययनंयउदानहृप
 रायणं ॥ आवर्तनंनिवर्तनमपिगोपानिवर्ततां ॥१॥ आनिवर्तनिवर्तयपुनर्नइद्रुगादेहि ॥ जीवाभि
 र्भुनजामहे ॥ परैवोविश्वतोदधकुरुजीघृतेनृपयसा ॥ येदेवाःकेचयद्द्वियास्नेरुथ्यासंसृजंतुनः ॥ आ
 निवर्तनवर्तयुनिनिवर्तनवर्तय ॥ मूम्याश्चतस्रःप्रदिशस्ताभ्यएनानिवर्तय ॥ मद्रंनोअपिवातयमनः
 ॥ २ ॥ उँशांतिःशांतिःशांतिः ॥ इतिमंत्रसंहितासमासा ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

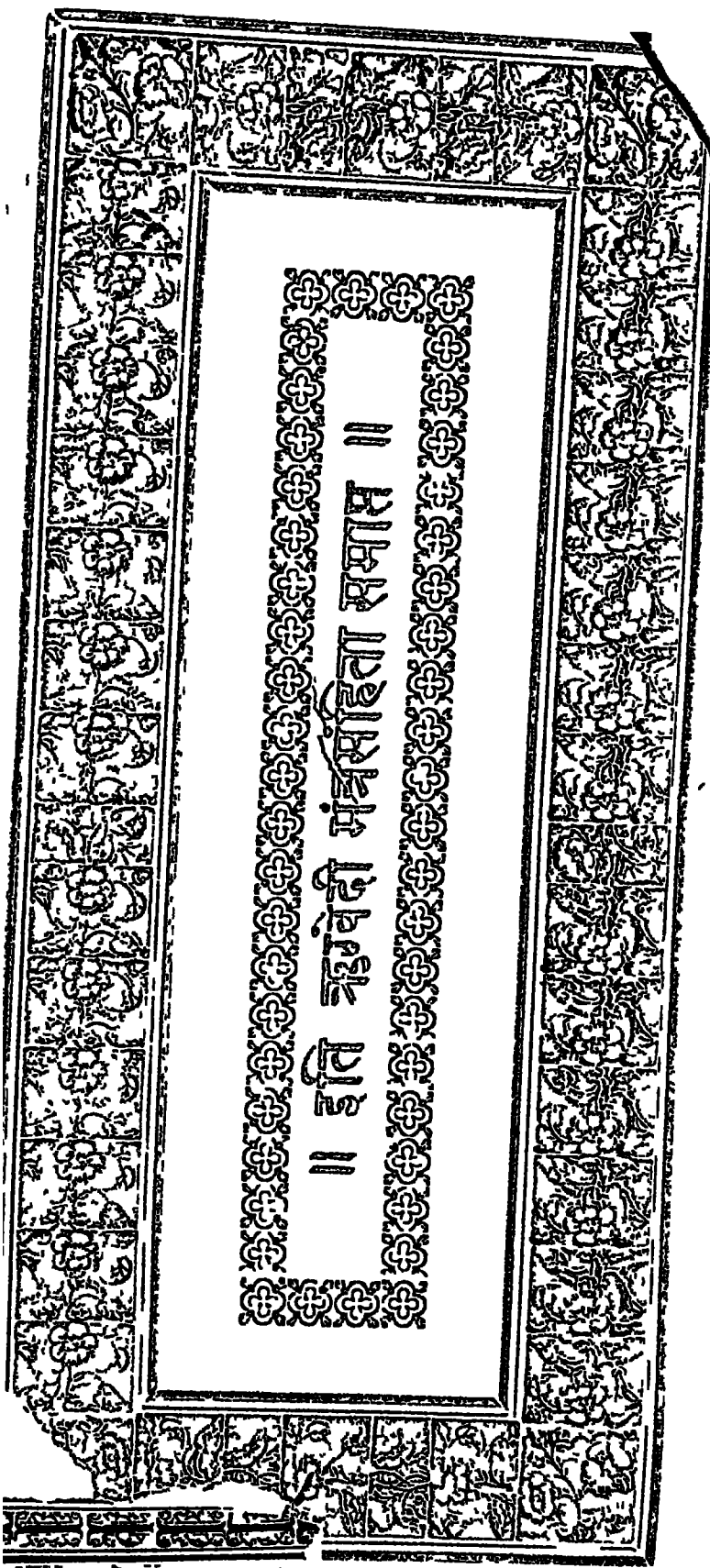


६ प्रस्तक

गजानन चिंतामण शास्त्रीदेव बुकसंस्तर यांनी

सुबईत "गणपत कृष्णाजी" यांचे छाष्वान्यांत छापविळें. शके १८२६

किंमत. साऱ्या कागदाची मूल १॥ रुपये. उत्तम बोडीच सकेन कागदाची मूल २॥ रुपये.



॥ इति ऋग्वेदी मंत्रसंहिता समाप्त ॥

